प्रकाशक रजनी साहित्य-सदन, दिल्ली
मूल्य ५ ५० नये पैसे
प्रमुख वितरक नवयुग प्रकाशन दिल्ली
मुद्रक नूतन प्रेस चाँदनी चौक दिल्ली

एक

(१) हिन्दुस्तान के राज्य प्रतिनिधि
तीस दिसम्बर सन् १८९८ को
लाड कर्जन नियुक्त हुये। भारतीय इतिहास में एक युग पूरा हुआ और दूसरा शुरू।
नये भारत का निर्माण काय प्रारम्भ हुआ।
कर्जन ने अंग्रेजों क सद्गुण और दुर्गुण दोनो का ही पूरी तरह साफ
कर लिया था। वह काय चतुर योग्य विद्वान् और न्यायप्रिय और स्वाभि
कार प्रमत्त था। राज करन के लिए पैदा हुई जाति मे स्वय वह भी राज
करने क लिए ही पैदा हुआ है ऐसा प्रगाढ आत्म-विश्वास उसमें था।
सपूण प्रजा का सुख-दुख उसकी दया पर निभर है इसका उसे विश्वास
था। उसकी इच्छानुकूल ही सब को सुखी रहना चाहिए। कतव्य की इस
सीमा से वह किसी को भी बाहर नहीं आने देता था। स्वयं पश्चिमी—
चाहे जैसे भी हों पर देवता स्वरूप, भारतवासी पौर्वात्य चाहे जसे भी
हों पर इन्सान इस अपवाद के साथ बराबरी का सिद्धात स्वीकार करन
में उसे कोई आपत्ति नहीं थी।
सन् १९ ३ में उसने तीन करोड रुपय व्यय कर सम्राट के प्रति-
निधि की हैसियत से अपनी राजगद्दी की तैयारी की और भारतवासियो
को उत्तेजित किया। इसके प्रशसकों ने कहा द्रव्य के बीचोंबीच झिल-
मिलाते हुए हौदे पर ऊपर सीधा हाथ ऊँचा कर अपने स्वामी की ओर
सबकी सलाम स्वीकार करता हुआ वायसराय बैठा था। वह शांत और
गौरवशील शान और सयमा दीप्त पड़ता था। जिन प्रसिद्ध वीरों ने
अंग्रेजों के लिए भारत को जीता और प्रबन्ध किया उनका यह एक दम

योग्य प्रतिनिधि लगता था। उसके मुख पर मुस्कान थी ओठ मजबूती से बन्द थे मस्तक प्रणामो की स्वीकृति म झुका हुआ था। कुल मिलाकर यह एक शात और स्वस्थ अभिनय था। इस नजारे को देखने के लिए एक पल के लिए भी जिन्दा रहना लायक है।

यह दृश्य जितना अच्छा फ्रेजर के ग्रंथ म वर्णित है उतना दर्शकों को नही लगा। भारतके सही प्रतिनिधि लालमोहन घोषने मद्रास कांग्रेस के अध्यक्ष पद से उसे मृतप्राय जनता के लिये भड़कीले तमाशेका नाम दिया।

सन् १९०५ के अगस्त माह म उसने त्याग-पत्र दे दिया।

एक सितम्बर १९०५ मे उसने बंग विभाजन की सूचना प्रकाशित की। संस्कृति और इतिहास के धम पर बने बंगाल को उसन बिना सोचे समझे दो टुकडो म बाँट दिया।

१९०५ के अन्त म वह भारतवर्ष से विदा हुआ। अपने शासन प्रबन्ध के विषय म कुछ न कहना ही कार्य-क्षमता है' उसन अपने कारनामो पर स्वय ही मर्सिया लिखते हुए कहा।

लार्ड कर्जन के स्थान पर आये लार्ड मिन्टो। दिसम्बर १९ ५ म ग्लेडस्टन के अनुयायी उदार राजकीय भावनाओ के एजेंट जान मार्ले भारत-मन्त्री बनाये गये।

बगाल विभाजन के उपरान्त प्राण-वेधक वेदना का सूत्रपात हुआ।

विभाजित बंगाल के गवर्नर सर बेम्फील्ड फुलर न १४ अप्रल १९ ६ को बेरीसाल-कान्फेंस पुलिस द्वारा भग की।

बंगाल के नवयुवकों में राष्ट्रीयता की आग भड़क उठी। फुलर के इसे बुझाने पर आग और भड़की और जहाँ-तहाँ विद्यार्थियो म से देश भक्त पैदा होने लगे।

सभा बेरीसाल से लौट कर बड़ौदा आने के कुछ माह बाद ही अरविन्द घोष ने बड़ौदा राज्य की नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

(२)

सन् १९०६ का वर्षाकाल। शाम पाँच बजे। अहमदाबाद स

वडोग आने वाली गाड़ी आनन्द स्टेशन पर खड़ी थी।

प्रथम क्लास के डिब्बे के खुले हुए दरवाजे पर हाथ रखे हुए जो प्रौढ़ व्यक्ति खड़े थे उनकी वास्कट और नेकटाई से उनकी गिनती सभ्य और परिष्कृत पुरुषों में हो रही थी। उँगली में चमकती हुई हीरे की अँगूठी और जाकेट पर सुशोभित सोने की जंजीर उनके ऐश्वर्य की सूचना दे रही थी। एक हाथ पतलून की जेब में था और वे आच्छादित आकाश की ओर निहार रहे थे।

श्रीमान् जगमोहनलाल उन्नतिशील बरिस्टर, धारा-सभा के सदस्य तथा बम्बई-कमरी सर फीरोजशाह के सुयोग्य साथी थे। खास तौर से मुँदे हुए होंठ उनकी मजबूती जाहिर कर रहे थे। मरोड़ी हुई मूँछें उनके अहं भाव की अभिव्यक्ति थी और जिस नजर से दूसरे लोगों की ओर देख रहे थे वह उनका अपनी सभ्यता पर अडिग विश्वास की सूचना थी। क्षणभर में संसार जीत लेने के सारे बाहरी लक्षण उनमें स्पष्ट दीख रहे थे।

आनन्द स्टेशन पर एक ओर से दूसरी ओर आने के लिए सुरंग है। आते-जाते कितने वर्ष बीत गये। फिर भी उसके प्रति यात्रियों का ज्यों-का-त्यों कौतूहल है। अक्सर वे इस सुरंग में दो बार चार बार आ-जाकर एक बार लिये हुए टिकट के पैसों को वसूल करने में सन्तोष की साँस लेते हैं।

श्रीमान् जगमोहनलाल आकाश की ओर देख रहे थे कि सुरंग में से एकदम एक सज्जन निकले। कद नाटा, रंग गोरा, शरीर गोल मटोल। चेहरा रोबीला। उनकी बड़ी-बड़ी आँखों में स्वाद और उग्रता के चिह्न, उनके छोटे-छोटे कदमों में सत्ताधीश सी निश्चलता थी। दो सौ गज की दूरी से ही जान पड़ता था कि सरल हृदय और कुलीन हैं।

सौर विजय करने वाले की टिकी आँखें आकाश से धरती पर आ टिकीं और उस पुरुष पर आ ठहरीं। नेत्रों में जरा अमृत का सा संचार हुआ और कृपापूर्ण हास्य उनके चेहरे पर छा गया।

अरे—तुम—प्रमोदराय ! उन्होंने जरा ऊँचे स्वर में कहा ।

प्रमोदराय ने भी जगमोहनलाल को देखा और पलभर मे उनके मुख पर सतोष की रेखाएँ उभर आइ । वह झपाटे से आगे बढ़ा और जगमोहन का स्वस्थ हाथ प्रसन्नता से हाथ में लिया ।

अरे जगमोहन भाई ! तुम यहाँ कहाँ से ?

मैं तो एक केस के सिलसिले म काठियावाड़ गया था पर तुम नवाबपुर छोड़कर यहाँ क्या कर रहे हो ?

मैं डाकोरजी द शन करने गया था । प्रमोदराय ने कहा सोचा थोड़ी देर के लिये गाँव मे हो चलें । क्या सब कुशल हैं ? जमना भाभी कैसी है ?

'ठीक । तुम बम्बई तो आते ही नहीं क्यों ?

अगर किसी दिन अजल-पानी हुआ तो । इब्राहीम । प्रमोदराय ने न ाबपुरा स्टेट क बिल्ले म सुशोभित सिपाही से कहा इस डिब्बे मे सामान रख । जगमोहन भाई ! कहाँ जा रहे हो ?

बड़ौदा । और तुम ? चपरासी के आडम्बर को एक तिरस्कारभरी दृष्टि से घूर घूर करते हुये वे बोले ।

बडौदा !

चलो अच्छा हुआ बहुत दिनो बाद शान्तिपूर्वक बातचीत करने को मिलेगी ।

गार्ड की घीटी के साथ ट्रेन खिसकी और दो बाल मित्र पुन साथ बैठे ।

(३

श्रीमान् जगमोहनलाल तथा रायबहादुर प्रमोदराय एक ही जाति के एक ही जन्मभूमि (अहमदाबाद)होने के कारण बचपन के मित्र थे । गाँव की पाठशाला में साथ-साथ तख्ती पोतते थे । जगमोहनलाल एक धनवान पिता का भाग्यशाली पुत्र था । उसने बम्बई जाकर पढ़ा

लिखा और विलायत जा कर बैरिस्टर बना और हाईकोर्ट में रह कर पैसा मान और महत्ता कमाई। प्रमोदराय ने मट्रिक पास कर चुंगी विभाग म नौकरी की और कारकुन हेन्ड इन्स्पेक्टर प्रथम कारकुन तहसीलदार, डिप्टी कलेक्टर के ऊँचे पदों को पार करता कमिश्नरकी कृपा से नवाबपुरा का दीवान नियुक्त हुआ। दोनो की मित्रता सुरक्षित रही और कहीं भी वे एक दूसरे से जरा भी कम नही हैं यह साबित करने का इन दोनों ने बीड़ा उठा लिया था।

बम्बई के महापुरुष थे पतले-दुबले तथा एक दम उस्ताद। अधिकारी सज्जन थे। उनाथन मोटे तथा उग्र प्रकृति के। दोनो की मुख मुद्रा पर उनकी बुद्धि और उनका चरित्र झलक रहा था।

डिब्बे म आकर प्रमोद ने माथे का पसीना पोंछ कर आस-पास देखा और कहा

कहाँ जा रहे हो तुम ?

वडोदा सुलोचना और उसकी माँ राजा भाई क यहाँ गई हैं उन्हें लेकर बम्बई लौटूंगा। और तुम ? राजाभाई मि जगमोहन का पत्नी का भाई था।

'सुदर्शन से मिलने।

'सुदर्शन वहीं पढ़ता है न ? जसे जानते ही न हो ऐसी सूरत बना कर उसने पूछा।

हाँ बी ए० में है।

तुम लोग तो मानो सब ना। वकील साहब ने साभिप्राय गदन हिला कर कहा पर बम्बई बिना शिक्षा कैसी।

अब तो मुझे भी पश्चाताप होता है। उसे बड़ौदा मैंने तो इसी लिये रक्खा कि कहीं उसे बम्बई की गन्दी फिजा बिगाड न द और रोग से बुरी दवा' वाला किस्सा हो। कह कर प्रमोदराय ने जेब से रूमाल निकाल कर फिर माथा पोंछा।

बात क्या है ? कुछ चिंतित मुद्रा में जगमोहनलाल ने पूछा।
अरे छोड़ो। रायबहादुर ने खिड़की की ओर झाँका और गर्दन नीच
कर धीरे से कहा वहाँ वह कम्बखत अरविंद जो रहता है।

क्या सुदर्शन को भी यह पागलपन सूझ गया ? हँसकर वकील
साहब ने पूछा।

अजी कुछ पूछो मत बड़ा देशभक्त बना फिरता है देशभक्त और
देशभक्त की दुम !

जगमोहनलाल खूब हँसे। बोले ठीक ठीक ! बाप सरकार की
खुशामद कर रायबहादुर हुआ तो बेटा देशभक्त न होगा !

जगमोहन यह हँसने की बात नहीं। मैंने तो यहाँ तक सुना है
लड़का बिल्कुल पागल हो गया है। इन बंगालियों ने तो घर घर में आग
लगा दी है।

अचानक गाड़ी ने झटका खाया। रायबहादुर बोलते-बोलते चुप हो
गये। गाड़ी पुन: चलने लगी। थोड़ी देर बाद जगमोहन ने जोर से मुट्ठी
बाँधी और कहा ये बंगाली बिल्कुल लापरवाह हैं—छोटे-छोटे लड़कों
की व्यर्थ ही बलि दे रहे हैं। मूर्ख कहीं के। अगर यह प्रवृत्ति न रुकी तो
सामाजिक जीवन का सत्यानाश हो जायेगा।

उन्होंने निर्विवाद बात कही हो इस विश्वास से वह देखते रहे।

इसीलिए तो मैं बड़ौदा जा रहा हूँ। मेरा तो यह एक ही लड़का
है यदि वह भी हाथ से निकल गया तो मेरा क्या होगा ?

पर मैंने तो सुना है कि लड़का बड़ा होशियार है। जगमोहनला
ने कहा।

सो तो है ही। उसीका तो यह असर है। वह इतना होशिय
हो गया है कि अब दुनिया का उद्धार करेगा।

हूँ मैं बतलाऊँ ?

'हाँ। पर इसमें चारा क्या है ?

मेरे पास भेज दो। सब ठीक कर लूँगा।

'पर तुम्हारे फिरोजशाही विचारों को तो यह पूरा करता है।

कोई बात नहीं इसमें भी भलाई है।

मैं जानता हूं पर तुम अपनी सुलोचना का विवाह कब करने वाले हो। मैं तो उसकी राह देख रहा हूँ।

अभी में भी कहीं फल पकते हैं? लड़का बड़ा हो लड़की बड़ी हो। शान्ति स वकील ने शाही भाषा में जवाब दिया। सब ठीक-ठाक हो जायगा तो फिर होगा ही।

कहां तक पढ़ाओगे?

मेरा उसे आई० सी० एस० में भेजने का इरादा है।

बाप के सामने बेटा सवाया हो जाये इस लिये न? हंस कर जगमोहनलाल ने कहा एक काम करो। इस समय वह बी० ए० में है ना अतः यह साल तो यहीं पूरा होने दो। फिर अगले साल बम्बई भेज देना। अरविंद घोष भी बबई से बड़ौदा जाने वाले हैं।

तो क्या बदनामी का टीका इस तरह मिट जायगा?

'सब ठीक हो जायगा। वह तुम जैसे सरकारी अफसरों के काबू का नहीं ऐसे लड़कों को असल बात समझानी चाहिए। राजनीतिक जोश बुरा नहीं पर उसका ठीक ढंग से संचालन होना चाहिये। उसे बबई भेजो मैं फिरोजशाह मेहता के पास ले जाऊंगा। फिरोजशाह मेहता ने अनुयायी ने अपना ब्रह्मास्त्र बताया उसे जब तक सही राजनीतिक हलचल का ज्ञान न होगा तो सुधर नहीं पायेगा। फिर विलायत भेज देना और मेरे आगे अगर वह बरिस्टर हो गया तो मैं उसे ठीक ठिकाने लगा ही दूंगा।

भाई तुम अपनी लड़की का विवाह कर दो न उसके बाद तुम जानो और वह जाने।

दोनों खिलखिला कर हंस पड़े।

(४)

समधी का रिश्ता बताने करने के लिए परेशान दोनों खास दोस्तों

की जीवन प्रवृत्ति और उनका दृष्टिकोण बिल्कुल अलग अलग था । राय बहादुर सब प्रामाणिक तेज डंके की चोट पर बात कहते तथा उतावले थे नामदार शानमिजाज के तथा सब बातों में उस्ताद थे । प्रमोदराय नौकरी में तथा समाज में परिश्रम कर छुटकारा पाने में ही भला समझते थे तो जगमोहनलाल थोड़े परिश्रम से अधिक से अधिक लाभ उठाने का मौका ढूंढा करते थे इसलिये दोनों नदी के दो किनारे थे ।

प्रमोदराय को गर्व था ब्रिटिश राज्य का सेवक होने में ही । कर्जन युग के पहिले के घमंडी अंग्रेज अधिकारियों के अपनी भक्ति से वह उनके दुलार पात्र बन गये थे । इस युग के अफसर तेज तथा प्रामाणिक मनुष्य में श्रद्धा रखते थे और अपनी महत्ता तथा स्वार्थ की रक्षा करते हुये मित्रता का व्यवहार जितना उसके साथ रख सकते थे रखते थे । रायबहादुर खुद निर्धन जनता का दुख दूर करने का इरादा रखते और अंग्रेजी राज्य को इसका प्रमुख साधन मानते थे ।

बंबई में तालीम पाने की वजह से जगमोहनलाल की दृष्टिमर्यादा भी विशाल थी । अंग्रेजों की न्यायपालना के वह हिमायती थे और अंग्रेजी प्रजा के स्वातंत्र्य प्रेम में उन्हें श्रद्धा थी । पर जिस सरलता से साधारण अंग्रेज असामान्य भारतीय पर सत्ता जमा कर मौज उड़ा सकता है यह उन्हें भी खटकता था । पर उन्हें यह पक्का निश्चय था कि धीरे धीरे वह और उन जैसे ऐसी शक्ति दिखावेंगे कि उस सरलता का नाम तक भी न रहेगा ।

यह भेद सुदर्शन की बात करने से और भी निखरा । थोड़ी देर बाद प्रमोदराय से न रहा गया ।

तुम जैसों ने ही तो यह सब बिगाड़ा है ।

क्या भई ? जरा मजाक में हँस कर नामदार बोले ।

अहमदाबाद में तुम सब ने ही तो मिल कर कांग्रेस बुलाई और युवकों के दिमाग खराब हो गये । सुन्दर वालंटियर हुआ सुरेंद्रनाथ का भाषण हुआ और लग गई यही धुन । तुम्हारे फीरोजशाह मेहता से

किसने कहा था कि महमदाबाद में कौंग्रेस बुलाये।

जगमोहनलाल हँसे 'राष्ट्रीय जागृति का चिह्न तो यही है।

'तो अब चलो इसका मजा। आधुनिकों के भागने से पृथ्वी भार से धस जायगी।

'लेकिन भी नहीं ऐसे छोकरे क्या कहीं राज्य चला पायेंगे? यह तो कर्जन की मूर्खता से आन्दोलन उभरा है—सब शांत हो जायगा।

जी हाँ। बहिष्कार का ऐलान किया गया है देखा? अपना तो कहीं ठिकाना नहीं और चले हैं अंग्रेजी माल बन्द कराने! प्रमोदराय ने कहा।

है तो ठीक। इन गिने-चुने कपड़ों को जला देने से कहीं देश की गरीबी मिट सकती है?

अंग्रेज हैं तो चैन से भी शठ हैं। प्रमोदराय बोले।

कर्जन भी तो अंग्रेज ही है न? नामदार ने व्यंग किया।

अरे तो किया क्या। यह तो हमारा ही दिमाग खराब हो गया है। मैं पंचमहाल में अकाल आफीसर था तब इसने खुद आकर हमारे कैम्प का निरीक्षण किया था और उस खाने को भी चखा था जो अकाल अधिकारी खाते हैं। कर पायेंगे तुम्हारे फिरोजशाह मेहता? जैसे वकीलों को तो हर दम कोई बात चाहिये!

'जनता की आवाज का तुम्हारे सामने कोई दाम ही नहीं। कर्जन भले ही बड़ा आदमी हो लेकिन राजनीतिज्ञ तो जरा ही नहीं। नहीं तो आज यह तूफान उठता?

दोनों थोड़ी देर चुप रहे।

सुदर्शन उन्नीस वर्ष का हुआ क्यों।

हाँ उन्नीस पूरे हो गये। तुम्हारी सुलोचना कितने की हुई?

सत्रह' सब ठीक हो तो अगले साल विवाह कर दिया जाय। क्या इरादा है?

'हाँ भाई तुम पर तो अभी बुढ़ापा झलकता नहीं पर मैं तो थक

गया हूँ। मेरा तो पेन्शन का समय होने वाला है और गुलामी के पिंजड़े में बन्द होने पर सब बेकार।

सुन्दरम कालेज छात्रावास में ही रहता है न ?

हाँ ?

तुम सीधे आ रहे हो ?

हाँ महो य बसो तुम भी।

'अच्छा।

अन्तत अणीना आ गया और गाड़ी से उतरे। जगमोहनलाल ने अपना बहुत-सा सामान स्टेशन पर ही रक्खा और प्रमोदराय का सिपाही दोनों का थोड़ा थोड़ा सामान ले कर साथ हो लिया। एक गाड़ी में बैठ कर दोनों कालेज को रवाना हुये।

बड़ौदा कालेज का भवन गुजरात की मशहूर इमारतों में से एक है। उस में एल्फिन्स्टन कालेज की व्यवहारिक विशालता है। विल्सन कालेज की निर्जीवता नही और इसमे तो मुगल साम्राज्यों की समाधि का स्वरूप और इंगलैंड के कालेजों की भव्यता का मेल है। इसके गुम्बजों के झरोखों में विद्या-अध्ययन के संयम की अपेक्षा विलास को अधिक स्वच्छन्दता प्राप्त है, ऐसा आभास होता है। इसके ऊँचे विशाल खंडों में बड़ी-बड़ी मेहराबदार कमानों में सरसता की शोभा से तो गंभीरता का अधिक आभास होता है जैसा आधुनिक भारतीय जीवन है वैसा ही यह इमारत हिन्दुस्तानी मुसलमानी और अंग्रेजी का एक दम अद्भुत मिलान।

तिसपर भी यह भवन विकसित कल्पना तथा स्थिर महत्वाकांक्षाओं का भी निर्माता है। नये आने वाले छात्रों को यह भवन विद्वता की महत्ता से प्रभावित कर देता है। तथा उनकी अंकुरित कल्पना की भव्यता का मिलान कराता है उनके अनुभवहीन हृदय में इसके गुम्बदों की गंभीर प्रतिध्वनि एक आवाज पैदा करती है। इस भवन का ध्यान करते हुए एक उन्नीयमान कवि की कल्पना ऐसी उत्तेजित हुई थी कि पत्

भर के लिय उसे पाक है।

क्या यह धलेन्द्र ? पर बरफ नहीं कहीं गया ?

श्रीमद् राज सयाजीराव नगर म यह हम्य किस का बसा ?

फिर तुरत जवाब आ सूझ गया

विद्यार्थीगण दस निश्चय हुआ यहां बसती है सरस्वती।

इन पक्तियो में है हास्यजनक बनावट पर फिर भी बहुत से युवकों के भावो की प्रतिध्वनि इसमें मौजूद है।

इस भवन म सन् १९ ६ के लगभग ३०० विद्यार्थी परीक्षा पास करने के लिये मौज कर रहे थे।

उस समय के बड़ौदा कॉलिज में छात्र पन्न के बन्ले या तो मौज करते या स्वप्न देखते। अध्ययन—स्वर्गीय क्लार्क को काम करने के शौक की अपेक्षा लड़को म लोकप्रिय होना अच्छा लगता था अधेरे म प्रोफेसर तापीदास काका अधिकतर तबूरे के गलफ जस लहंगे पर दक्षिणी ओना पहन कर और हिसाब लड़के समझ हैं या नही इस की परवाह न करते हुए पाक का टुकड़ा नही रह पाया इसका चिन्ता अधिक करते थ। सब उनको चाहते और वह सब विद्यार्थियों को कुटुम्ब के लड़को की तरह समझते थ। उनका You see young man तो इतना प्रचलित था कि प्रत्येक विद्यार्थी बसे ही सहज म तथा प्रेम से इसे दोहराया करता था।

प्रौफेसर शाह—तत्वज्ञान की मन्जस्वी भावना प्रेरणा मूर्ति—मर गये थे। प्रौफेसर मसानी तथा कांगा कॉलेज म विनता के अक्षय कोष माने जाते थे।

पर जिनकी विन्ता से विद्यार्थियो क गव का आरापार न था वह थ अग्रजी क अध्यापक मिस्टर घोष। महोदय म जितना मान था उसके और अधिक उपयोग के लिए गायकवाड सरकार ने उन्हें अपने निजी कारोबार में रोक लिया था हर चार-छ महीने म वह फिर कॉलेज में थोड़ समय के लिये आते थ। अल्प ठिगने नीच

ढंग पर चलने वाले अध्यापक घोष छात्रों के साथ ससग नही रखते और साथ ही लोकप्रियता की उन्हें चिन्ता नही थी। वह ऐसे नोट लिखाते कि जिनसे विद्यार्थी झटपट इम्तहान पास कर ले। एक पद्धति का कौन-सा स्वरूप सर्वोत्तम है ? इस पर वाद-विवाद हुआ। एक घोष साहिब प्रधान पद पर विराजे। छात्रा ने लोक शासनात्मक राज्य-तत्र के अतिरिक्त दूसरा कोई भी राज्यतत्र इस पृथ्वीतल पर क्षण भर के लिए भी न रहने देना चाहिये ऐसा निश्चित विचार प्रगट किया। प्रधान ने इसकी हसी उड़ाते हुए नियन्त्रित एकतत्र शासन' का पक्ष लिया तब से वह विद्यार्थियों के मन से उतर गये। सर्वानुमति से इन्हें पुराने जानवर का खिताब मिला।

लग भग स छात्रा म दो पक्ष थे—एक सुधारक दूसरा सरक्षक। कॉलेज म कितने ही प्रमुख तथा चतुर विद्यार्थी प्रौफसर जगजीवन शाह की प्ररणा से भाजान्ी प्रमी हो गये थे। थोड़े से छात्र वडौदा म धर्म पथ के लीडर छोटेलाल क ज्ञान से धम धुरधर बनकर पुरान विचारो के अनुयाई बन गये थे। दोनों पक्षो का विरोध पढ़ने लिखने मे सब जगह दिखाई देता था। एक दफा जापान के विषय म विवाद छिडा तब प्रौफसर घोष को स्वतन्त्रतावादियो ने प्रमुख चुना। प्रमुख ने सूत्र उच्चारण किया कि वर्णाश्रम धम से स्वतन्त्रता का कोई नुक्सान नहीं हो पाता और भान्नी के लिए जापान की मिसाल दी। इस निर्णय का स्वागत सरक्षकवादियों ने तो तालियों से किया किन्तु स्वतन्त्रतायान्ी धीरे धीरे उड़ गये और देशी राज्य की नौकरी से मस भान्मियो की भी कसी दया हुइ है इसको सोचने लगे।

पर इन प्रसगा के साथ प्रौफेसर घोष के बारे में और भी अनेका अफवाहें प्रचलित थीं और छात्र सभी दतकथाओं को अनन्य श्रद्धा से सच समझ कर उनके शब्दों का तथा आचरण को अच्छे ढग से देखते थे।

इनम से कुछ दतकथायें तो उल्लेखनीय हैं।

वह जब छात्र अवस्था म थे तो परीक्षा मे पूरे अक लेते थे। उन्हे
सिविल सर्विस का इम्तहान पास किया तब द्रपी अग्रजों ने जान-बूझक
उन्हें घुड़सवारी की परीक्षा म फल कर दिया। तेईस भाषायें उन्हें आत
हैं। घर की बावन अलमारियों में पुस्तकें ठसाठस भरी हैं। वह रात
तीन बजे तक मुह म सिगार दबाये दिय के आस-पास इधर उधर घूमते
हुये पढ़ते रहते हैं। य सब बातें सुन कर उछलता हुआ हृदय यदि धक
से बैठ जाय तो इसम अचरज की क्या बात है।

एक कथा और भी है।

आबू क किसी ऋषिराज ने उनको आशीर्वाद दिया था। सरसम
वान्यो की छाती डेढ़ बालिश्त फूल गई। कहा जाता है कि उन्होने
सिगार छोड़ी मांस छोड़ा पतलून छोड़ी और सध्या करना शुरू कर
दिया साथ ही योगसिद्धि के लिये यत्न भी करना आरम्भ किया
आजान्‍ी अभी डगमगाने लग। कितने ही कहने लगे कि वह घटा तक
प्राण-निरोध कर लत हैं। उनके कितने ही छात्रों ने उनको योग द्वारा
पृथ्वी स एक हाथ ऊपर उठते देखा है। दतकथायें तो और भी
हैं।

बेरीसाल सभा में भी वह हो आये वहाँ उन्होंने लक्चर दिया।
राष्ट्रधर्म के सूत्रों का उच्चारण किया। कालेज के सब लड़के मुग्ध हो
गय।

बात फली कि प्रोफेसर घोष बड़ोदा स नौकरी छोड़ कर जा रहे
हैं और कलकत्ते देश-सेवा करने जा रहे हैं। तुरन्त कालेज म ऐसा
लगने लगा कि जसे किसी के पास अरविंद घोष की भक्ति क सिवाय
कोई बात ही न हो।

(६)

कॉलेज के पीछे—छात्र-गृह में—लगभग नब्बे विद्यार्थी हर महीने
पाँच-सात रुपय मासिक खर्च मे दाल पर भावनामय जीवन बिताते हैं।

कॉलिज के अधिकारियों ने उदासीनता अपना ली थी, इस लिये उनका सब प्रयत्न खाने म, गाने में लगभग छुटे हुये सिंधिया कोट में टूटा हुआ जाल बांध कर टेनिस खेल में गर्न्द हांकन म अपनी इच्छा नुसार नवीन स्वतन्त्र-सृष्टि का निर्माण करने म ही बीतता था !

इस बोर्डिंग म आज रायबहादुर प्रमोदराय तथा नामदार जगमोहन लाल को लेकर किराये की गाड़ी ने प्रवेश किया। कितना निर्जन था बोर्डिंग !

कोई भी तो नही है ? प्रमोद ने प्रश्न किया।

इस कहार से पूछो। अरे यहाँ आ ! नामदार ने आवाज दी।

एक कोठरी में स एक कहार निकला। वह उपेक्षा भाव लिये गाड़ी की ओर आया।

सुदर्शन प्रमोदराय यहाँ रहता है यह तुम्हें मालूम है ? प्रमोद राय ने पूछा।

सदुभाई ?

हाँ।

नई इमारत मे रूम न० बीस।

पर कोई दिखाई क्या नहीं देता ? जगमोहनलाल ने पूछा।

प्रोफेसर चोप आये हैं मा उनका लक्चर है सदुभाई वहीं गए हैं।

उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा।

चल बता रूम। कह कर प्रमोदराय गाड़ी में से उतरे। उनके पीछे नामदार भी। गाड़ी वहीं खड़ी रही और दोनो घाटी के पीछे-पीछे चले।

कहार दोनो को नये बोर्डिंग की पहली मंजिल में ले गया और बीस नम्बर का कमरा बताया। आगे छज्जे में आठ लोहे की खाटें पड़ी थी और प्रत्येक रूम के सामने एक-एक हाथ मुंह धोने का बेसिन लगा हुआ था खोजने में कोई भी तकलीफ न हुई और वे बीस नम्बर के रूम

में गये। एक स्टोव, दो टेबिल दो ट्रंक, दो दीपक और दीवाल पर प्रोफ़ेसर शाह का तथा दूसरा घोष का चित्र। इतना सामान इस कमरे में था पर सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाला था मेज पर पड़ा हुआ पुस्तकों का ढेर। एक कोने में मेजीनी की कृतियाँ छितरी हुई पड़ी थीं खाट पर मिक्लेनेट का 'फ्रेंच क्रान्ति, और मेकोल्फ का 'युनाइटेड स्टेट्स का इतिहास पड़ा था, गीजो का इंगलिश क्रान्ति खाट के पाये के पास जमीन पर पड़ा था।

सुदर्शन के सिवाय और किसी दूसरे की यह मेज नहीं हो सकती। प्रमोदराय ने गर्व से कहा।

वह तो भयंकर पढ़ने वाला मालूम होता है। जगमोहनलाल ने भी किताबों के संग्रह से उसके संग्रह करने वाले की बुद्धि का अनुमान लगाते हुए कहा रायबहादुर ! तब राजा भाई के यहाँ चलो।

'भाई, मैं तो यहीं ठहरूँगा, रात को ही मुझे लौट जाना है।

जाना तो मुझे भी है। अच्छा, एक काम करो। मैं राजाभाई के घर जाऊँ और तुम सुदर्शन को लेकर वहीं आ जाना। हम सब लोग फिर वहीं एक साथ भोजन करेंगे और इस बहाने सुदर्शन सुलोचना को देख लेगा। सुलोचना की माँ को भी सुदर्शन को देखना है।

'हाँ' प्रमोदराय ने तद्रूप स्वीकार कर लिया इससे अच्छा और क्या होगा ?

लड़का तो तेज लगता है। नामदार बोले 'यदि तुम इसे न पा सको तो मुझे दो।

'अरे नहीं क्यों न समझेगा ? प्रमोदराय ने आँखें निकाल कर कहा।

जगमोहनलाल हँसे 'लोगों को समझाने के लिए मकानों की जरूरत पड़ती है। प्रमोदराय भी हँसे और जगमोहनलाल चल दिये।

प्रमोदराय ने कमरे में चारों तरफ देखना आरम्भ किया। एक

कोने मे भारतवर्ष का नक्शा पड़ा था, एक दराज में सुपारी और सरौता और लिखे हुए कागजों के ढर थे। इन कागजों को निकाल कर प्रमोद राय ने देखना शुरू किया। हर बंडल पर सुदर्शन ने पतले-पतले अक्षरों में विषय लिख लिया था। विषय पढ़-पढ़ कर रायबहादुर की छाती बढ़ने लगी।

कई विषय थे, जसे —

राष्ट्रभाषा का सवाल।

सर्वव्यापी बहिष्कार।

बहिष्कार प्रवृत्ति के फलाव की योजना।

शारीरिक प्रसार।

विदेशियों पर कड़ी दृष्टि

महसूल विभाग मे ही जीवन व्यतीत करने के कारण य विषय पढ़ते ही रायबहादुर को पसीना आ गया। उन्होंने कागजों में देखा तो उनमें न तो लेख थ और न लेक्चर पर इन योजनाओं को पूरा करने के लिये क्या-क्या करना चाहिये वह लिखा हुआ था। उन्होंने आखिरी बंडल उठा कर पढ़ना शुरु किया। भारतवर्ष में विदेशी कितने हैं व क्या करते हैं उन पर चौकसी रखने के लिए कितने मनुष्य चाहियें इन चौकसी रखने वाले इन्सानों का कसा इन्तजाम रहे, विदेशियों की परराष्ट्रीय नीति को कसे रोका जाय आदि बातें उसमे लिखी हुई थी। उन्होंने एक बार चारों ओर देखा। खुद ब्रिटिश राज का नमकहलाल नौकर और यह उसका विद्रोही बेटा! इसका क्या परिणाम होगा?

बुढ़ापे में बेटा बाप की सफेदी पर धूल डालेगा? उनके मस्तिष्क म चलते क्रोध की भिन्न-भिन्न धाराएँ बहने लगीं। इतने में दूर से आते हुए लड़कों की आवाज सुनाई दी।

झट उन्होंने कागज ठिकाने पर रख दिये और बाहर छज्जे में आ खड़े। आज वह अपने प्रभाव से तथा अपने वात्सल्य से बेटे को सुधारने

के लिये आये थे। पर पुत्र के सम्मुख पड़ कर उसको वे पहचान तक नहीं। ऐसा भयंकर लड़का अब आ ही रहा है यह आभास होते ही उन्हें कँपकँपी छूटने लगी पसीना बह निकला। उस पाछे पर विचार करने लगे क्या उनका इकलौता पुत्र ऐसा भयंकर विकराल सूना और जालिम हो गया! क्या वह बगावत करेगा? क्या वह बम बना लेगा? 'राम राम' उनके मुंह से निकल पड़ा।

दो-तीन लड़के ऊपर आये। रायबहादुर को खड़ा हुआ देख पूछा 'किससे मिलना है आपको।

'सुल्तान को जानते हो?

'भो सत्तुभाई आ रहे हैं। यह कर लड़के अपने कमरा की ओर चले गये।

और दो लड़के आ रहे थे। एक लम्बा और मजबूत दीख पड़ता था और उसका मुँह तेज तथा सुन्दर था। दूसरा छोटा दिखाई देता था। रायबहादुर की दृष्टि इस छोटे लड़के पर पड़ी और पल भर के लिये वात्सल्य ने उन्हें विचलित कर दिया।

(७)

सुल्तान ठिगना पर सुगठित डीलडौल का सुन्दर जिसे कह सकें ऐसा युवक था। रंग गोरा सिर पर बिना कंघी किये हुए बालों के गुच्छे झूमते थे देखने वाले की बुद्धि की तेजस्विता परखते जाते हुए विलासिता की छाप दिखाई देती थी। मुख सज्जा और संकोच छलछलाता था। कटाक्षपूर्ण नेत्र मुख की ग्लानि-द्योतक रेखाओं को लगभग भुला से देते थे खुलने का ढंग ऐसा आकर्षक था कि होता बड़े लड़कों को तो इस पहली बार दूर से देखने पर 'लड़की' का उपनाम देने का विचार होता था पर नजदीक आते ही एक प्रकार की अजीब सुन्दरता दीख पड़ती थी कि उपनाम देने की इच्छा पैदा हुए बिना ही समाप्त हो जाती थी।

सिर नगा और कोट के बटन खुले हुए, धोती का छोर लटकता हुआ और कुत्सित दक्षिणी ढग का जूता जसे वेषभूषा से बहुत लापर वाही झलक रही थी।

उसने अपने पिता की ओर देखा और तेजी से वहाँ आ कर बोला बाबूजी तुम यहाँ ?

मैं अभी अभी आया हूँ, तू गया कहाँ था रे ?'

सुदर्शन ने बाप की ओर देखा आज प्रोफेसर घोष का आखिरी भाषण था। कल वह बडौदा छोड़ने वाले हैं ?

तो उन्होंने त्यागपत्र दे दिया न ?

हाँ राष्ट्रीय पाठशाला म अध्यापक होकर जा रहे हैं।

अच्छा ठीक है मुझे तुझसे जरा काम है ? इसीलिए आया हूँ।

सुदर्शन के मुख पर परेशानी के भाव दिखाई दिये बोला क्या काम है ?

चल बाहर चलें तब बताऊँगा।

एक क्षण भर के लिए सुदर्शन असमजस मे पड गया पर तुरत उसका मुह सम्भला। उसके नेत्र स्वप्न रूप म हो गय। उसके चेहरे की रेखायें म्लान-सी हो गई। जसे बहुत दूर से बोल रहा हो इस प्रकार उसने कहा अभी आया।

वह अपने कमरे में गया। पाठक! उस दूसरे लड़के से बोला पिताजी आये हैं और मुझे बाहर ले जा रहे हैं। अगर मुझे जरा देर हो जाये तो राह देखना।

कब जायेंगे वह ?

पता नहीं पर रात के ग्यारह बजे से पहले तो मैं कहीं से भी आ ही जाऊंगा।

सुदर्शन बाहर आया। प्रमोदराय ने पगडी पहनी और उसके साथ हो लिये। दोनों चुपचाप जीना उतर कर कालेज की तरफ गये। प्रमोदराय क्षोभ का अनुभव कर रह थे। बात कसे शुरू की जाय ? उन्हें

कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। अन्त में गला सँवार कर उन्होंने बताया यह हैं जगमोहन बैरिस्टर।

कब आये ?

मेरे साथ ही। उनकी बेटी सुलोचना भी यहीं है ना।

'ठीक मुझे कमला काकी ने बुलाया था।

'तू ही आया क्या ?

नहीं मुझे समय ही कहाँ मिला ?

वाह ! यह भी कोई बात है। देख इसी समय राजाभाई के यहाँ जीमने जाना है।

'इसी समय ? जरा चिन्ताग्रस्त स्वर में सुदर्शन ने पूछा।

'हाँ तुझे सुलोचना से मिलना है। मैं तेरा विवाह उसी से कर रहा हूँ। रायबहादुर ने प्रयास से क्षोभ को दबाकर कह ही डाला।

सुदर्शन के मुख पर पुन हेर-फेर हुआ। आँखें गंभीर और मुख की रेखायें कठोर हो गई।

मुझे अभी शादी नहीं करानी। दृढ़ आवाज में सुदर्शन बोला।

शादी तो हम भी नहीं कर रहे। पर पक्की तो हो जाये ना। सगाई कर डालनी है।

'बाबूजी अभी इसकी भी क्या जरूरत है अभी तो

मैं बूढ़ा जो होता जा रहा हूँ।

पर बाबूजी यह भूत नहीं नहीं '

प्रमोदराय जरा अधीर होकर बोले, 'सुलोचना को देख तो सही कम से कम। अभी अभी फौरन हो तो तुझे कोई बाँध नहीं देगा ?

'ऐसा ! तो इससे मुझे क्या एतराज होगा ? सुदर्शन ने जवाब दिया।

'और बी० ए० पास नहीं हुआ कि तुझे बम्बई भेजना है—तुझे आई सी० एस० बनाना होगा।

सुदर्शन ने गर्दन हिलाई 'सरकारी नौकरी मुझे नहीं करनी बाबूजी, मैं ।

'तो वकील बनेगा ।

वह भी नहीं । वकील बनना भी तो क्या ठीक होगा ?

/तब क्या नाईगिरी करनी है ? प्रमोदराय चिढ़ कर बोले ।

सुदर्शन चुप रहा ।

तुझे करना क्या है बोल तो ।

मैं एम० ए० करके प्रधानाध्यापक बनूंगा ।

लड़के जब छोटे होते हैं तो सभी का मन प्रोफेसर बनने को करता है । तू बी० ए० कर ले, फिर बात करना । इस विषय पर बात करनी बन्द हो गई । कुछ देर बाद उन्होंने दूसरी बात शुरू की क्यों भाई कुछ पढ़ाई लिखाई भी होती है या इसी तरह भाषण सुने जाते हैं ?'

'पढ़ता तो हूं ही । अभी इम्तहान में बहुत दिन हैं ।

'कितना क्या बाकी है ? तीन महीने ही तो हैं । चल जल्दी पास हो जा और मैं तुझे अपने सामने ही ठिकाने से लगा दूं ।

सुदर्शन ने उत्तर नहीं दिया । बाप और बेटे कालेज के सदर हाल के सामने आ गये ।

चल, तो राजाबाई के यहाँ चलें ।

अच्छा तुम रात को कहाँ रहोगे ?

मैं रात की गाड़ी से ही चला आऊँगा ।

दोनों किराये की गाडी में बठ कर राजाभाई के घर गये ।

वे रात को रवाना होंगे यह सुदर्शन के लिये काफी था ।

(८)

दोनों ही चुप थे । बोलना न रायबहादुर को सूझता था और और न सुदर्शन को अच्छा लगता था । प्रमोदराय बहुत देर तक लड़के की ओर देखते रहे । जो भयकर लेख उन्होंने पढ़े थे क्या वह इस सुकुमार बालक

के दिमाग की पैदावार थी ? क्या ये आँखें उसके भावी जीवन को देखने का इरादा रखती थीं ? क्या उनका बेटा षड्यन्त्र भी रच सकता है ? बिना स्त्री को पीछे लगाये यह कैसे सुधर पायेगा ?

परिणाम निकला कि इसका इलाज है सिर्फ़ शादी।

पर सुल्तान के मस्तिष्क में बाप के लिए, स्त्री के लिए विलास के लिए कोई जगह न थी। घोष के हृदय से निकले हुए शब्दों की याद पर खेल करती हुई उसकी कल्पना देश की गुलामी के मसले को हल कर रही थी और उसके हृदय में क्रान्ति के मसीहों जैसी होली जल रही थी।

दो

भविष्य के दम्पति

(१)

राजाभाई बड़ौदे में अधिकारी थे और रावपुरा टावर के पास इनका मकान था। मकान आज के नाटकों की-दृश्यावली की तरह सस्ता न होकर एक दम टिकाऊ पुराना और सस्कारपूर्ण था। सब कुछ सौम्य सुदर और उनके अनुकूल। पर जो फर्नीचर आ गया था वह ऐसा ही लगता था जैसे कोई बड़ा सज सवर कर सड़क पर निकले।

पर पर पर रक्खे एक आराम कुर्सी पर सुलोचना बठी थी। लड़की बड़े धनी तथा अहकारी पिता की है, इसका ठीक-ठीक आभास होता था। वह ऊँचे कद की और सुन्दर थी उसका रंग बिना अरुणिमा के गोरा सफेद था। वह विचारमग्न सध्या के अधकार में काँच की पुतली जसी दीखती थी। देखने से उसके मुख पर पाउडर के आवरण का वहम होता था। आँखों में विलासिता अभिमान और स्वच्छ'ता की आभा बारी-बारी से चमक जाती थी। हाथ-पैर उसके लम्बे ह जिनसे उसकी गति विशेष आकर्षक बन जाती थी। शरीर की रेखाओं में विलास के चिह्न स्पष्ट थे। एक हाथ अपनी ठोडी पर रखे सु सिर बठी हुई थी और बालो की दो लटें सयम त्याग कर गालों पर गई थी।

प्रख्यात वभवशाली पिता की लाड़ली पुत्री और एलिन कालिज में प्रथम वष क्लास की छात्रा वह अंग्रेजी फटाफट बोल तथा टेनिस खलने में तो एक ही थी। रूपवती, गर्वीली और

होने की सीमा नहीं। सब कुछ उसके चेहरे पर उमड़ रहा था। स्वभाव का प्रतिबिम्ब तो चेहरा ही है।

श्री जगमोहनलाल ने सुदर्शन खाने पर आने वाला है यह बात उसे बतला दी थी। सुदर्शन के साथ उसकी शादी करने की उसके माँ-बाप की योजना थी और इस योजना के लिये सुलोचना को आपत्ति थी। आपत्ति एक नहीं थी बल्कि अनेक थीं। उसे बम्बई हा मानी थी और बम्बई के लोग ही पसन्द थे और उनमें भी केवल धनी। बम्बई के अलावा न तो कहीं रस है और न कहीं पसा। अतः बम्बई के बाहर रहने वाले व्यक्तियों के प्रति उसे नफरत थी। बम्बई के बाहर सरकारी नौकरी जैसा अधम धधा करने वाले लड़के के प्रति तो उसकी कनपटी जल उठती थी।

एलिफिन्स्टन कॉलेज के अलावा और कहीं ज्ञान का सस्कार मिल भी नहीं सकता है यह उसने सोचा तक न था। बम्बई के बाहर बड़ौदा जैसी रियासत राज्य में और वहाँ के तुच्छ कॉलेजों में जो लड़का पढ़ता हो, उससे वह विवाह कर इससे भी अधिक हेटी क्या हो सकती है?

आदि के कितने ही लड़कों से सुना था कि सुदर्शन गवार है वह एकमात्र पढ़ कर पास होना जानता है न तो क्रिकेट खेलना जानता है और न टनिस। यहाँ तो उसे बहुत ही आपत्ति थी।

पर इन आपत्तियों की परम्परा का इतने से ही अन्त न था। उसे मित्रों के साथ रस आता था। फैशन और स्वच्छदता अच्छी लगती थी। विवाह तो पराधीनता—यही उसकी धारणा थी।

पति के रूप में केकी रूस और मयनलाल ही उसकी नजरों मे घूमते थे।

केकी रूस दो घोड़ा की गाड़ी में आता था। टेनिस में उस जैसा कौन था। क्रिकेट में उसकी गेंद किसीसे भी न रुकती थी। वह एक से एक भड़कीले कपड़े पहनता और उसके घुघराले बालों की छटा

सब को मोहती रहती। जब-जब वह घोड़े पर बैठता था तो सुलोचना के मन में यही आता था कि उसे यदि इस जैसा पति मिले तो उसका सारा जीवन घोड़े पर सवारी करते ही कट जाय।

गगन दलाल दूसरी जाति का था। काला लम्बा, पतला दुबला और सुन्दर था। क्रिकेट नहीं वह केवल टेनिस खेलता है पर उसकी जबान में जैसे जादू था। यदि वह हँसता या बोलता तो सब के सब आनन्द से प्रफुल्लित हो उठते थे। छैले की तरह टेढ़ी टोपी लगाता, उसकी सवारी और कलफदार धोती होती। कॉलेज के आन्दोलन में आगे रहता और बम्बई की हर नाटक कम्पनी का वह घुमेच्छु ही था। उसके साथ तो जिन्दगी हँसी का पिटारा हो जायेगी।

ऐसे महान् व्यक्तियों को छोड़कर इस देहाती गँवार के साथ वह विवाह करेगी? अँधेरे में ही वह हँसी। एक मज़ा आयेगा। इस सभ्य के साथ हुई बातचीत से पूरे टर्म भर मजाक का सामान मिल जायगा।

पापा जिद करके शादी करेंगे तो? पर यह हो कैसे हो सकता है। बिना प्रेम के वह शादी नहीं करेगी। गाम जैसी भोली लड़कियाँ भले ही करें, पर वह वैसी थोड़े ही है। वह अपने 'पापा' को पहचानती थी। वह उसकी मर्जी बिना कुछ नहीं करने वाले।

नीचे गाड़ी खड़ी हुई। वह है सुमान—सदुभाई! मुख पर तिरस्कार के भाव थे। फिर भी अपरिचित युवक को–जिसे सब उसका पति बनाना चाहते थे—उससे सुलोचना को मिलते हुए जरा क्षोभ हुआ।

जीने पर पैरों की आवाज सुनाई दी। उसने सिर पर आँचल सरका लिया। कमरे में एक मोटा सज्जन, आनन्द विभोर झपाटे से आया और हाथ फैलाया, 'क्यों री सुलोचना!

सुलोचना जरा गर्व से खड़ी हुई 'कौन प्रमोद काका?

सुलोचना क्षण भर के लिए विचारों में डूब गई। कमरे के द्वार पर

खड़ा हुआ लड़का सुदर्शन ! इतने में जगमोहनलाल तथा राजाभाई आ पहुँचे हैलो सदुभाई ! नायन्गर ने कर मर्दन किया। सुदर्शन ने जरा सकुचाते हुए हाथ मिलाया मन्नर भाभी ने क्यों रायबहादुर—और वह लोग बातों में लग।

रायबहादुर, भाभी न मन्नर भाभी मुझे जरा बात करनी है। नायन्गर ने कहा लड़की ! तुम यहीं बैठो। याद है सुलोचना ? सदु से तू माथेरान में मिली थी—जब प्रमोद काका आये थे तब ?

कुछ विस्मय से सुलोचना ने ऊपर की ओर देखा और हँसी मैं तो उस समय चार साल की ही हूँगी।

तब पुराना परिचय आज फिर ताजा कर लो। रायबहादुर ने भावी पुत्रवधू की ओर प्रसन्न मुख से देखकर कहा।

जब रायसाहब भीतर चले गए तो सुलोचना ने सुदर्शन की तरफ नजर फेंकी।

पहले उसे हंसी आई। यह सुदर्शन ! यह लड़का जिसकी प्रशंसा उसके माँ-बाप किया करते थे ! उसका पति बनने की चाह करने वाला दूल्हा।

बड़ी अभिमान भरी नजर उसने सुदर्शन पर डाली। बेपरवाही से ऊपर की ओर रखी हुई पुरानी सी टोपी, पाँच में से आप बच तीन बटन वाला मैला बन्द का कोट बिना किनारे की मोटी धोती, काले दक्षिणी जूते। यह लापरवाही अगर सुलोचना में भी होती तो भी उसे पति न मानती।

सुदर्शन ने कर-मर्दन के लिए हाथ बढ़ाया यह गवारपन उसने देखा उसके मुंह की हास्य विहीन जड़ता को मन में रखा। मुख से सुन्दर था नहीं— यों जो उपनाम उसके दिमाग में आया था ठीक लगा।

सुदर्शन उसकी ओर झोंई तथा निस्तेज आँखों से देखता रहा। स्त्री के प्रति उसे लगाव न था विवाह को वह त्याज्य समझता था।

समवतः जिस दृष्टि से शुक्र जी ने रम्भा को देखा था, उसी रुचि से वह देख रहा था।

दोनों को थोड़ा सा क्षाम हुआ। गर्वित कन्या और उदासीन वर दोनों ही बेचन थे।

तुम बी०ए० में हो न ?

'हाँ।

सुदर्शन बहुत उत्कता कर चारों ओर देखता रहा। यह प्रसग किस लिए आया है ? 'तुम प्रथम वप मे हो ?'

हाँ तुम टेनिस खेल सकते हो ?

बडी मामूली। मुझे कुछ भी खलना नहीं आता।

सुलोचना ने वक्र दृष्टि से उस ओर देखा। कितना दीन था। वह।

और क्रिकेट !

ना'।

तुम्हारी जिन्दगी किस प्रकार बीतेगी ? अपमान भरी हसी से सुलोचना ने मन म घोंघू शब्द को याद करके पूछा।

सुदर्शन न इस सवाल के अन्तर में छिपे हुए अपमान को जाँचा। स्थानीय कालिज में रह कर उसने स्त्री मान के फजूल पाठ नहीं पढ़े थे। उसकी भवें वक्र हो गईं और उसकी दृष्टि में तेज झलक आया।

बोला, मेरी जिन्दगी खेल-कूद के लिए नहीं है।

सुलोचना चौंकी इतनी जल्दी परिवर्तन इतना आडम्बर और फिर हसी।

बी० ए के बाद क्या होगा ?

मैं यह सोचता ही नहीं। सुदर्शन बोला।

तब यह कौन सोचेगा।

वह—मेरी—माँ— सुदर्शन ने कहा। इस असभ्य लड़की से वह ऊब गया था।

माँ का नाम सुन कर सुलोचना हँसे बिना न रह पाई। वह मुह

पर हाथ रख कर हँसने लगी। इतना बड़ा लड़का पत्नी मैंने माया और माँ की राय बगैर विचार नहीं कर सकता। हँसी में व्यग्य था तिरछा अपमान और अभिमान उसमें दिखाई देता था।

सुन्दन के ि माग मे बादल से घिरे और जसे घनदोप आकाश म बिजली चमकती है इस प्रकार उसकी आँखें चमक उठीं।

'तुम यह सब किसके लिए पूछ रही हो ? उसने अपमान के स्वर म कहा तुम सब बातो को हँसी ही समझती हो। य सब हम दोनों को यहाँ क्यों छोड़ गय हैं जानती हो ?

इतना सचोट यह प्रश्न था कि सुलोचना के मुख की हँसी ज्यां की त्यों धरी रह गई और वह बोली 'ना'

'मेरे और तुम्हारे पिताजी हम दोनों की शादी चाहते हैं।

सुलोचना ने जवाब में कुछ न कहा।

पर मुझे एक वचन चाहिए।

'क्या ?

वचन निभाओ तो कहूँ।

कहो तो फिर पालन करू।

वहन मुझे विवाह नहीं करना तुम मुझे वचन दो कि तुम मुझे अगीकार न करोगी।

एकदम सुलोचना ने ऊपर देखा। 'मैं' शब्द की कल्पना वह क्षण भर के लिए विस्मृत कर गई। प्रत्यक राम रोम में शक्ति का प्रसार सा हुआ, आँखों म भावना की ज्योति जलती हुई सी दिखाई दी मुह पर जिसको उसने जड़ता समझ रखा था वह गभीरता में परिवर्तित होगया। अचानक उस होन सा भाया कितने तिरस्कार स सुदर्शन भी उसकी तरफ देख रहा था।

क्यों ?

'मुझ शादी ही नहीं करनी।

सुलोचना फिर हसी। यह लड़का जरा गावदी सा लगा। उसने

हसते-हँसते पूछा 'यह क्यों ?

माँ की जो मानी नहीं।

माँ—तुम्हारी माँ मुझको विवाहित देखना नहीं चाहती क्यों सुदर्शन के मुख पर ग्लानि दौड़ गई और उसकी आँखें दूर पर किसी को देख रही हों इस प्रकार अधर में ठहर गईं। मेरी माँ भारत माता है !' सुदर्शन की आवाज में पूज्यभाव था पर सुलोचना की निलज्ज हँसी से पूज्य भाव की प्रतिध्वनि कसकिस हो गई।

ओह तुम देशभक्त हो ?

ना अपनी माँ के परों की धूल हूँ।

तुम हिन्दुस्तान का माँ कहते हो ?

हाँ तुम्हारे लिए जो हिन्दुस्तान है वह मेरे लिए माँ है। मुझे एक वचन दो ?

क्या ?

'चाहे कुछ भी हो तुम मुझे पसन्द मत करना।

'ठीक' दिया वचन।

सुदर्शन ने कहा 'हम दोनों शादी के लिए पैदा ही नहीं हुए।

यह क्या ?

हाँ देख रहा हूँ यह कि तुम तो हो वाचाल और शौकीन। मैं ठहरा अल्पबुद्धि एवं रागरहित इन्सान। तुम्हारे दिल में मेरे लिये जगह नहीं। हम दोनों का मेल नहीं हो सकता।

'ओह ! जँभाई लेकर सुलोचना हँसी और बोली, थैंक यू।

अब हमें दूसरी बात करनी चाहिये।

जरूर।

(२)

राजाभाई ने तो बड़ी मुश्किल से मिलने वाले बहनोई के स्वागत में हद कर दी थी। उसने रांगोली रंगी पटला बिछाया। अगरबत्ती की महक से पूरे वातावरण में एक अजीब प्रकार की मादकता छा गई।

शीतल के चमकते हुए ब्रासलोट स्थान-स्थान पर चमक रहे थे।

जगमोहनलाल प्रसग मे मन्छी लगी इस छटा से घर की जाति की गाँव की ओर देश की बात करते जाते थे और तेज दृष्टि से सुदर्शन की चाल-ढाल भी देखते जा रहे थे। थोड़ी थोड़ी देर म उसे बीच मे बोलने के लिए अवसर देते जाते थे।

जगमोहनलाल इन्सान के स्वभाव और शक्ति के गभीर अभ्यासी थे। उन्हें सुदर्शन की अनुचित चुप मुद्रा मे केवल लापरवाही दिखाई दी गदापन कतई नही। सौम्य दिखाई देने वाला बुद्धिशाली सकोचा और मितभाषी लड़का उन्हें अच्छा लगा। थोड़ा प्रोत्साहन थोड़ी पालिश और अच्छा सग मिल जाय तो यह हीरा चमक उठेगा यह उसको यकीन था। सुदर्शन के साथ और अधिक बातचीत कर उसके स्वभाव तथा अभिप्राय से और अधिक परिचित होने की उन्हें इच्छा महसूस हुई।

माजकल सीरियस अध्ययन करने का अवकाश किसे है? देखो न दीनशा वाच्छा और गोखले कितना अध्ययन के बाद आगे आय? और आज तो हमारा सदु भी राजनीतिज्ञ बन गया" मुस्करा कर सुदर्शन से कहा क्यों सदु ठीक है न?

नीचे मुख से खाता हुआ सुदर्शन इस सबोधन से जरा घबराया और शरमाया पर बड़ी मुश्किल से उसने तुरन्त क्षोभ को दूर कर जवाब दिया 'देश भक्त तो भक्ति से होता है' ज्ञान से क्या सम्बन्ध?

इसका अर्थ यह कि वाच्छा और गोखले देशभक्त नही थे?

ज्ञानमार्ग से इन्सान योगी होता है यह बात ठीक है। पर भक्त भक्ति से ही होता है।

तो इसका अर्थ यह कि मजीरे पीटकर वदेमातरम्' गाने से ही देश का उद्धार होगा? नामदार प्रमोदराय की तरफ मुड़े 'यह देखो आजकल के देशोद्धारक! वे खिलखिलाकर बोले।

अजी! इनके तो दिमाग म यह है कि 'वदेमातरम्' गाया कि

अंग्रेज भारत से रफूचक्कर। रायबहादुर ने कहा।

मूर्खता की बात है नामदार ने कहा ब्रिटिश सरकार की मदद बिना तुम क्या कर सकते थे ? सदुभाई जरा विचार करो। तुम्हें और मुझे शिक्षा किसने दी ? देश में शान्ति किसने पैदा की ? यह नयी स्वदेश भक्ति किसने जागृति की ? बोलो सदुभाई !

सुदर्शन को यह विवाद अच्छा नहीं लगा, पर फिर भी जवाब तो दिया ही 'यह बात कहते हैं तो काका, मैं पूछता हूँ, देश को गरीब किसने बनाया ? मुसलमानों के समय जो खुशहाली थी किसने छीन ली।

तुमने किस लिए अंग्रेजों को आने दिया ? प्रमोदराय बीच में बोल उठे।

सदुभाई ! नामदार हँस कर बोला बात का यह मुद्दा नहीं। पर अंग्रेजों को निकाल देने से लाभ क्या ? और फायदा भी हो तो वे कहीं निकलने वाले हैं ? तुम सब में व्यवहार-बुद्धि तो है नहीं। राजनीति का पहला सूत्र है व्यवहारिकता। ऐसे वक्त में हम कर ही क्या सकते हैं ? और कुछ कर भी सकें तो भी जब तक हम स्वयं ही गुलाम हैं तब तक फायदा क्या ?

जगमोहन भाई साहब ! श्रीखंड मगाऊ ना ! राजाभाई ने पूछा। वार्ता का क्रम टूट गया। सुदर्शन चुपचाप खाता रहा। सुलोचना राजनीति की बातों से कतई उदासीन थी इसलिए वह आगामी टैनिस टूर्नामेंट का विचार करती रही।

सब खा-पीकर उठे। नामदार जगमोहनलाल की पत्नी गौरी राजाभाई की पत्नी के साथ बातों में लग गई सुलोचना सामान बँधवाने में घिर गई और पुरुष वर्ग दीवानखाने में जा बैठा। सुदर्शन एक कोने में बैठा हुआ सोचता रहा।

सदुभाई !' नामदार ने कहा सुदर्शन ने चौंक कर ऊपर देखा। 'बी० ए० के बाद तुम क्या करोगे।

'अभी कुछ तय नहीं।'

'मैंने इसे सिविल सर्विस के लिए भेजना है।' प्रमोदराय ने कहा।

'पर तुम्हारी क्या इच्छा है?'

'मैंने कुछ तय ही नहीं किया। तुम सिविल सर्विस में जाओगे तो फिर यह तुम्हारा देश का उद्धार कैसे होगा?'

'सरकारी नौकर हो तो असल में देश की भलाई करते हैं।' पुत्र को कलेक्टर बनाने की इच्छा रखने वाले प्रमोदराय ने कहा।

'पर सदु का कुछ अलग-सा ख्याल है।'

'क्या?' प्रमोदराय ने पूछा।

'बोलो सदु! क्या सोचा?'

'अभी तो मैंने केवल एक ही बात सोची है भारत माँ की सेवा के अलावा मुझे और कुछ नहीं करना।'

जगमोहनलाल हँस पड़े। प्रमोदराय के मुँह पर ज़रा क्रोध-सा दिखाई दिया।

'सब लड़के बचपन में ऐसे ही बातें कहा करते हैं।' नामदार ने हँसना ख़त्म करते हुए कहा, 'पर सदु बचपन के स्वप्न और जवानी के अनुभवों में ज़मीन आसमान का फ़र्क होता है। पाँच वर्ष बाद तुम्हीं अपने विचारों की हँसी उड़ाने लगोगे। पहले अपनी भलाई करो और फिर देश की। बचपन के सपनों को पालने से किसी का भला नहीं हुआ।'

मुग्धराज चुप रहा। नामदार जगमोहनलाल का दृष्टिकोण बिजली हवा की तरह उसमें घुटन पैदा कर रहा था।

वार्तालाप का विषय बदल गया।

(३)

बम्बई के लिए गाड़ी तैयार था।

सुलोचना सदुभाई से बम्बई आने के लिए तो कह। नामदार ने लड़की को शिष्टाचार की सीख दी।

सदु हूँ कम पोजीटिवली, जरूर आना।' उदासीनता स्य तिर स्कार से सुलोचना ने कहा।

'परीक्षा के लिए आओ तब हमारे यहाँ ही ठहरना। गौरी बहिन ने अपनी ओर से शिष्टाचार दिखाया।

और रायबहादुर, हो सके तो तुम भी अवश्य आना।

अजी मुझ तो कजुमल लीव मिल ही नही सकती फिर भी देखूँ गा।

'चलो सीटी हो गई।

'आना जरूर आना साहब जी' गाड़ी चल दी—और सुदर्शन को ऐसा लगा कि नामदार जगमोहनलाल द्वारा रचित वातावरण के एक बुरे स्वप्न का अन्त हो गया हो।

गाड़ी चल दी थी, अब प्रमोदराय ने सुदर्शन की तरफ देखा। सुदर्शन मैं आता हू घर जगमोहन ने जो कहा है उस पर विचार करना और कुछ बवार का पागलपन हो सके तो दूर कर देना।

सुदर्शन चुप रहा।

सुलोचना के साथ अब तेरी शादी कर दूँ गा।

जसे स्वप्न से जगा हो इस प्रकार सुदर्शन बाप की तरफ देखता रहा।

'मुझे शादी नहीं करनी। उसने कहा।

बिना शादी के किसी का काम चला है जो तेरा चलेगा ? प्रमोदराय ने जरा आँखें निकाल कर कहा और सवरन्गार जो सामना किया।

मुझ से शादी नहीं होगी। उसने कहा।

'क्यों ? रायबहादुर ने अधीरता से पूछा।

मुझे अपनी माँ की सेवा भी करनी है।

'सदु ! यह तो तेरा पागलपन है। मैं जानता हूँ। यह मरे आगे नहीं चल सकता। प्रमोदराय ने गुस्से से जल कर कहा ज्यादा गड़बड़

की तो हाथ पकड़ कर घर से बाहर निकाल दूँगा।'

सुदर्शन जरा हँसा बाबूजी बहुत-सी चीजें घर से बाहर अधिक मूल्यवान् हो जाती हैं।

क्या तेरी देश की भक्ति ?

नहीं मेरी मातृ-सेवा।

गधे! इसके सिवाय और भी कुछ बोलना आता है ? कहाँ तो मैं सरकारी अफसर और कहाँ तू मेरा पुत्र ?

तुम सरकार के नौकर हो ऐसा मानते हो पर वास्तव में देखा जाय तो तुम माँ के नौकर हो।

'मेरे यहाँ यह गड़बड़ नहीं चल सकती। मैं सरकार का नमक खाता हूँ समझे।

'बाबूजी सरकार नमक विलायत से तो लाती नहीं। माँ का नमक ही तो माँ के बेटे खाते हैं।

अच्छा अच्छा बहुत हुआ।

सुदर्शन चुप रहा और थोड़ी देर में रायबहादुर अपनी गाड़ी में बैठ कर चले गये।

बम्बई जाने वाली ट्रेन में नामदार जगमोहनलाल ने सुलोचना के साथ बातचीत शुरू की—

'क्यों बेटा सदुभाई पसंद आया न ?

हाँ ठीक है। नाक चढ़ाकर सुलोचना बोली। उसकी आवाज की कठोरता सुनकर नामदार ने ऊपर देखा तथा लड़की के मुख पर फैले विरोध के भाव पढ़े। इसके साथ तेरी शादी है। उन्होंने कहा।

'ऐसा कुछ नहीं' बड़ा ही जोर देकर नामदार की लड़की ने जवाब दिया गंवार से मैं ही शादी क्यों करूँ ? सुलोचना ने कन्धे उचकाकर कहा।

क्या बुराई है ? गौरी ने पूछा 'तुझे तो बम्बई की तड़क भड़क ने चकाचौंध कर दिया है।

यह सबका क्या पढ़ता है, सो मैंने सुन लिया है। होशियार है मेहनती है, सीधा है आँख-नाक का ठीक है फिर तुम्हें क्या चाहिये !

जब तुम इतने खुश हो गये हो तो फिर मुझे क्या कहना ? सिर स्कार से लाड़ली बेटी ने कहा।

कुछ भी नहीं सिर्फ उसके साथ शादी कर लेनी है।

मुझे नहीं करनी।

मूर्ख कहीं की। अपनी जाति में ऐसा लड़का है ही कहाँ ?

मुझे विवाह की जरा भी लालसा नहीं। सुलोचना ने हँस कर कहा।

पर मुझे तो है ?

'तो इसका क्या करूं ? जरा-सी भी बात हो तो माँ को याद करता है।

यही तो पल भर की देर भक्ति की हवा है। आज है कल चली जायगी। जो लड़का बचपन में ऐसा हो वही बड़ा होने पर हाथ मारता है।

पापा ! अब मुझे तो यह बिल्कुल पागल-सा लगा।

तुम को बिगाड़ दिया है एल्फिन्सटन कॉलेज ने। गोरी वालो।

'तो मुझे पढ़ाया क्यों ? लड़की ने लाड़ से जवाब दिया।

सुलोचना बात अब बहुत हो चुकी। निश्चयात्मक बुद्धि से मुट्ठी हिलाते हुए जगमोहनलाल ने कहा चाहे इस कान से सुन या उस कान से पर सदु से विवाह करना ही पड़ेगा।

यह तो मान जायगी। धीरे से कहा।

'मानना ही पड़ेगा। नामदार जोर देकर बोले।

सुलोचना चैन से बाहर देखने लगी।

जगमोहनलाल विचार में पड़ गये। सुलोचना का ख्याल करते हुए सुदर्शन को स्वाल आया। उसका विचार करते हुए सुदर्शन के सिद्धांतों का विचार किया।

आज तक वह किसी भी विप्लववादी के सम्पर्क में नहीं आये थे। फीरोजशाही राजनीति को प्रजा-आवेदन की अन्तिम सीमा मानने के कारण विप्लववाद समझने की उन्होंने परवाह तक न की थी। हरामखोर और बदकार लोग एवं गुमराह नासमझ लड़कों को उत्तेजित कर बलिवेदी पर हाथी के नारियल की तरह चढ़ा देते हैं यही बात उन्हें आजकल के नये राष्ट्रवाद में दिखाई दी।

पर सूदान में उन्होंने साक्षात् विद्रोह देखा। इस सौम्य लड़के की मनोदशा में भयंकरता लिपटी पड़ी थी। ऐसे लड़के यदि पक्के हो गये तो दादाभाई की वकालत के बाद जो क़ानून और शांति देश में आई थी उसका क्या होगा? क्या पूरा देश और समाज विप्लव की चिनगारी से दहक उठेगा? क्या ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलने लगेगी?

ब्रिटिश साम्राज्य ज़ालिम है—काले-गोरे का भेद गिनता है पर बिना उस शासन के व्यवस्थित प्रगति भी तो नहीं हो सकती और उस शासन के उत्तरदायी उदार न्यायी और लोक-शासन के शौकीन अंग्रेज़ थे। उस शासन के संरक्षण के बिना सुख या शान्ति प्रगति या प्रभाव कुछ भी नहीं मिल सकता था। इसके बिना विभिन्न जातियाँ एक साथ मिल कर कैसे रह सकती थीं—धार्मिक झगड़ों का अन्त कैसे हो सकता था और लोक-शासन की भावना किस प्रकार उत्पन्न हो सकती थी? ये न हों तो अफ़ग़ान आ सकते थे रूसी आ सकते थे और महम्मदशाह अब्दाली तथा नादिरशाह के जुल्म का फिर दौरदौरा हो सकता था।

और समाज की प्रगति भी कैसे हो? अंग्रेज़ी शिक्षा ने लोगों को राह दिखाई। अंग्रेज़ी सरकार ने समानता और नारी-सम्मान सिखाया। इन संस्कारों के बिना भारतवर्ष अधोगति से किस प्रकार बच सकता है?

ऐसे उदार भाव हृदय में दबाए श्री नामदार जगमोहनलाल ऊँघते-ऊँघते सो गये।

चिंतित और अस्वस्थ सुदर्शन स्टेशन से वापिस आया। उसके स्वप्नों में जगमोहनलाल ने खलबली पैदा कर दी थी। जिस दुनिया का उसने निर्माण किया था उसमें एक महान् विनाशक जलजला आया था।

उसने अपनी दुनिया की नींव भारतवासियों की देशभक्ति व परदेशियों के प्रति क्रोध पर रखी थी। हिन्दुस्तानी भारतमाता का भक्त था या होने वाला था और हर भक्त माँ की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए विदेशी सरकार और सत्ता का विरोधी था। इन अडिग सिद्धान्तों का विरोध रूप नामदार उसको दिखाई दिया। अपने पिता की राजभक्ति को तो वह प्राचीन काल की खंडहर की अवशेष मनोदशा मानता था, इसलिए उनकी उसे कुछ भी चिंता न थी पर फिरोजशाह और उसके अनुयायियों के सिद्धान्त को वह द्रोह रूप समझता था। उसका पक्का यकीन था कि बड़े होने पर हाथ में प्रजा-जीवन की बागडोर लेकर वह इन बढ़े जाने वाले राष्ट्रवादियों का विरोध करेगा। पर फिरोज़शाही सम्प्रदाय का प्रतिनिधि उसने जो अभी तक नहीं देखा था वह आज देख लिया। अंग्रेजी वेष भूषा अंग्रेजी भाषा की पराधीनता अंग्रेजी शासन के प्रति प्यार भारतमाता से अश्रद्धा पराधीन की वृत्ति के सब अंग जगमोहनलाल में साक्षात् देखे और उनकी आत्मश्रद्धा को देख कर उसकी अपनी श्रद्धा डगमगाने लगी। इनसे सुदर्शन के हृदय में क्रोध और द्वेष की आग सुलगने लगी।

'क्या ऐसे लोग भी अंग्रेजों का साथ देंगे? क्या वे आन्दोलनकारियों के प्रयत्न निष्फल कर देंगे?' उसने घबरा कर ऊपर देखा। चाँद की धवल ज्योत्सना में कालेज के गुंबज नहा रहे थे उसका भयंकर प्रभाव उसके हृदय पर भी हुआ। अचानक कई बातें याद आ गईं।

उसे याद आया कि आधी रात को भीमनाथ तालाव पर उसके सभी

साथी मिलने वाले थे और उसे भी वहाँ जाना था। पर इस समय उसके हृदय में अश्रद्धा का संचार हो चुका था, उसकी निर्मित सृष्टि म नामदार जगमोहनलाल ने धूल डाल दी थी। उसे लगा कि इस समय उसके मित्र जो देश भक्ति के आवेश में सराबोर हो बहाना आये थे उनसे मिलने के काबिल वह नहीं था। उसकी यह योजना फिजूल थी उसके स्वदेश-बन्धु कायर हैं उसके देश का भाग्य फूटा हुआ था वह नीचा सिर कर सीधा ही चल दिया। उसका रोने का मन हुआ पर वह रो नहीं पाया।

अपनी कमजोरी का भास आते ही काँप उठा। बचपन से ही उसे देश प्रेम था असाधारण आकांक्षा थी और किसी को भी न सूझने वाले विचार उसे सूझते थे। बहुत समय से वह राष्ट्रनेताओं की भूल देख रहा था और बड़े-बड़े प्रश्नों का हल आसानी से निकाल सकता था और धीरे धीरे डरते-डरते उसे विश्वास होने लगा था कि महामाया ने उसे भारतमाता को स्वतंत्र करने के लिए ही पैदा किया है।

अब तो अश्रद्धा के बादलों से वह विश्वास ढक सा गया और उसको अपने जीवन का निर्झर सूखता-सा लगा।

अन्तर काँप उठा उसका। 'माँ—माँ! क्या इतना समय मैं मूर्खता में ही व्यतीत करता रहा? माँ! अपनी सेवा मुझे नहीं करने दोगी क्या?

अपनी दुर्बलता के प्रति एक दम उसे क्रोध आ गया। वह पराधीन मनुष्य पशु की तरह पराजित हो रहा था।

'क्या मेरा पुण्य बीत गया? मेरी माँ—आर्यों की देवी—जग ज्जननी—पराधीनता में दुख में इस प्रकार पड़ी रहे—फिर भी मैं जिन्दा रहूँ? उसकी धारणा थी कि भारतमाता उसकी सेवा के लिए प्रतीक्षा में बैठी थी। उसकी अश्रद्धा और द्रोह से उसे कितनी वेदना होती होगी।

'माँ—माँ! क्या होगा तेरा? कह कर वह कॉलेज हाल की

सीढ़ियों पर बड़ गया। उसकी आँखें निस्तेज सी हो गई—और पल भर म मान और भय स वह व्याकुल हो उठा।

जिस सीढ़ी पर वह बठा हुआ था, उसके सामने एक छोटे से खम्भे पर सूय की धूप-छाँह से समय नापने का यत्र लगा था। उस स्तभ के आगे कोई हिला सुदशन की साँस रुक गई

वहाँ फली हुई चाँदनी क मोहक प्रका'' म—कालेज की छोटी बड़ी छाया से रची हुई धूप-छाँह की भद्‌भुत् वातावरण मे एक छाया चद्र किरणो की बनी हुई-सी प्रकाशमान होने पर भी जसे इसी पृथ्वी का ही ऐसा—वहाँ स आगे आई। उसकी तेजस्वी रेखाओं से शरीर की दिव्यता तथा मोहकता झलकती थी।

सुदर्शन उसकी तरफ पागल की तरह देखता रहा उसका हृदय घबराहट से धड़कता रहा।

ज्योत्सना के समुद्र मे सागर की बेटी लक्ष्मी प्रकट हुई हो इस तरह एक स्त्री उसकी तरफ आई। उसकी दह सुन्दर थी पर फिर भी दीन मानवता की विस्तृत सीमा से परे हो ऐसा ही दिखाई दिया। उसके कपड़ो की छटादार सिकुड़न चाँदनी रजत-तरगो सी दिखाई देती था चारों ओर की बिखरी हुई चद्रिका में भी जहाँ वह थी वहाँ काचन गगा के हिमशिखरो जसी निराली और सौम्य तेजोमयता फली थी।

सुद'न ने इस सौम्य और शांत मूर्ति को देखा। उसके आगे बढ़ते हुए चरणों का लालित्य निरखा उसकी अस्पष्ट यह उभरी हुई रेखायें परिचित-सी—दिखाई दी उसके सिर की भव्य शोभा देखी उसकी दृष्टि उसके मुख पर आकर ठहर गई प्रखड यौवन का बल सौं'य-युग परपरा की समृद्धि से दमकता ज्ञान कृपा की सीमा में उपजा परम वात्सल्य—सृष्टा की सहचारिणी को सुशोभित करने वाला दुजय पर दयामय गौरव! यही था स्वरूप।

इन सब को सुदशन ने पहले जाग्रत और फिर सुप्त स्वप्नों म देखा

था। और उसको चिरपरिचित था व। आज उन सब का साक्षात्कार होते ही उसका भक्ति म डूबा हुआ हृदय बेचन हो उठा।

बहुत दर स अकेले पड़ हुये अधीर और भूखे बच्चे की तरह वह कुछ नहीं बोल सका और न रो ही सका केवल दयनीय बन कर हाथ फैलाता रह गया। उसके होठ खुल नहीं फिर भी उसका प्रत्येक रग रग म 'माँ' शब्द गूंजता रहा।

वह देखता रहा। माँ पास आई उसक मुख पर दया भाई हुई स्निग्ध हुई मुस्कुराहट फल गई।

माँ! सुदर्शन न बोलन का कोशिश की और पास आई हुई तेजस्वी छाया का छून क लिय हाथ फलाय उनके चरण स्पर्श किय और माँ कह कर परम स्नेहावेग से सिर चरणों म रख लिया, फिर हसा। उस हसी में आगारय जीवन की प्ररणा मिली था मिट्टी क पुतल में भी वीरता का जोश भर दने का जादू था। आशीर्वाद देने क लिय माँ न हाथ फलाये।

सुदर्शन ने नीचे देखा उसकी आँखों के आगे असह्य तेज नाच रहा था कि पूज्यता के बोझ से दब कर वह औंधे मुँह पृथ्वी पर आ पड़ा।

और उसक कानों में निम्न पक्तियाँ गूँज गइ

अमलां—कमलां सुस्मिता
धरणीं—भरणीं—मातरम्।'

(५)

सुदर्शन ने ऊपर देखा—उसकी चेतना जाती रही। उसन चारो ओर देखा तो चाँदनी जीवित रोशनी युक्त थी। 'धरणीं भरणीं मातरम्' वह बड़बड़ाया और खड़ा हो गया। श्रद्धा और भक्ति की फुआरों ने उसकी आत्मा को निमल बना दिया था।

आत्मश्रद्धा के बल से उसने चलना शुरू किया। भारतमाता ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिया था। अपनी बड़ी बाटन का हथियार

उसे समझा। उसका जन्म सफल हो गया। जगमोहनलाल जैसे द्रोही की ब्रिटिश साम्राज्य जैसे अत्याचारी की अब उसे तनिक भी चिन्ता न थी। उसने अपने जीवन का कर्त्तव्य और भी स्पष्ट रीति से समझाना शुरू किया।

जब वह अपने कमरे में गया तो पाठक करसास्प और पंड्या उस की राह देख रहे थे।

करसास्प उत्साही तथा बुद्धिशाली पारसी युवक था। वह बड़ौदा का रईस था। बाप के पैसे की गर्मी होने के कारण उसने पढ़ना छोड़ कर पर दुःख निवारण की प्रवृत्ति प्रारम्भ की थी। कहीं भी दुःख हो तो वह उसे शांत करे कहीं भी अन्याय हो तो वह उसे रोके कहीं भी क्लेश हो तो वह उसे मिटाये—इसी सिद्धान्त के लिए जीवन अर्पण करने की उसने एक विस्तृत योजना गढ़ ली थी। अपने को वैद्य समझ कर घर बैठ मरीजों को रोज मुफ्त दवा देता हफ्ते में एक बार गरीबों को कपड़ा बाँटता और परिचितों में किसी को भी मुसीबत में पड़ा देखता तो तुरन्त उसकी सहायता के लिये दौड़ पड़ता।

वह लम्बे और भारी शरीर का था। उसमें पहलवान की-सी ताकत थी। उसका सिर बड़ा नाक छोटी सी और आँखें बड़ी बड़ी थीं। एक दम ईरान के वास्तविक वीरों का सौन्दर्य उसमें था।

वह गुजराती और अंग्रेजी सूत्र धड़ाके से बोल लेता था। हर विषय पर उसका मत निर्विवाद है ऐसा वह मानता और दूसरों को भी मत वाने की कोशिश करता था। जब वह अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ बोलता तो उसे लगता कि अब इस सत्ता की अवश्य धज्जियाँ उड़ जायेंगी।

जब वह हिन्दुस्तानियों की निर्बलता का विवेचन करता तो ऐसा डर लगने लगता कि अब सारे भारतवासी मर जायेंगे और हिन्दुस्तान उजाड़ हो जायेगा।

मुकुन्द पाठक तथा मगन उसके परम मित्र थे। हर रोज वह बोर्डिंग में आता और घंटों तक दुनिया के सब प्रश्नों को सुलझाने बैठ

जाता। इस छाटे से समूह का नायक केरघास्प था।

मगन पक्या कॉलेज का छात्र था और छात्र भाश्रम म ही जीवन पूरा करने की इच्छा हो इस प्रकार उस परीक्षा म पास होना भच्छा नहीं लगता था। भाठ साल परिश्रम के बाद बी० एस० सी० के भ्रतिम वष तक भा लगा था। और इस चिरायु परिश्रम क कारण सवसम्मति स उसे पक्या काका की पदवी दी गयी थी। प्रोफेसरों की तरह ही वह भी विद्यार्थियों का प्रमपात्र था।

पंक्या काका पढने की बनिस्वत खाने पर खास ध्यान दता भौर खेलने की भपखता खान पर भौर भधिक। एक दो परीक्षा उसने मुदशन की मदद से पास भी की थीं। पर क्रिकेट टेनिस समाज-सभा वाच नालय इत्यादि का मत्रित्व उसे भपनी योग्यता से हर साल मिल ही जाता था भौर जब भी छात्रागृह में पार्टी होती तब दूसरे लडक स्वय क्या खायेंगे, उस पर ध्यान न देकर पक्या काका क्या-क्या बहादुरी दिखायेंगे इस विचार म उलझ जाते थ। एक दफा म छप्पन रोटी या चौरासी पूरियाँ खाने वाले पक्या की बडाई सुनकर पड़ोस के बस ही दूसरे कॉलेज के विद्यार्थियों क हृदय ईर्ष्या से भाकुल हो उठत थ भौर पक्या के पेट में चिम्बासी पूरियाँ की चालू कहावत के बारे में इस महापुरुष की बड़ाई का गान करते हुए भपनी निबलता स्वीकार करते थे।

पाठक सुदशन भौर केरघास्प की दोस्ती के लिए सरल भौर स्नेह सम्पन्न पंक्या ने राजकीय भाश्रय स्वीकार कर लिये थ। भग्रजों को समुद्र पार भगा देना उसे लगभग इतना ही सरल लगता था जितना 'ओवर बाउडरी' मारना। केरघास्प का भसर पाठक की उस्तादी भौर दशन की भक्ल इन तीन वस्तुओं की मदद से तो भोवर बाउडरी मारने' जितनी भी मेहनत नहीं पड़ेगी ऐसा उसे कितनी ही बार लगा था। वह स्वयं महत्वाकाक्षी नहीं था पर उसके तीन मित्र उसे जो भी काम कहते वही करने को तयार रहता था।

केरघास्प पाठक भौर पंक्या तीनों सुदशन को भाग्यास्पद तथा

आत्मा स्वर्ग से मर्त्यलोक को देखने के लिए उतर आई है।

कुछ साल बाद वह घुटनियां चलने लगा। कुछ सालों में बिना गिरे पड़े चलने लगा। कुछ सालों में वह बोलना भी सीख गया। इन सब खेलों के प्रति सबंधियों के दिल में—या तो प्यार के कारण या बड़े आदमी का इकलौता बेटा था इसलिये—एक प्रकार की ममता-सी हो गई थी। वह कितना खाता है कितना पीता है कितना सोता है जैसी छोटी छोटी शारीरिक सूचनायें अस्पताल की नर्स की भांति बेहद सावधानी से वे इकट्ठा किया करते थे और जिस प्रकार महादेव देसाई, महात्मा गांधी की बीमारी के समय उसका विस्तृत ब्यौरा देश में फलाते हैं उसी विस्तार से जाति में तथा सगे-संबंधियों में प्रसार करते।

बालक का विकास हुआ। और छोटी उम्र में ही उसकी बुद्धि की तीक्ष्णता पर विश्वास हो गया।

बाप ने भानुशंकर मेहता की गाँव की पाठशाला में तख्ती पर खड़िया पातने के लिए बिठा दिया। भानुशंकर मेहता का प्यार बालक पर उमड़ आया और उन्होंने अपने इस आशास्पद शिष्य को घर से साथ लाने और ले जाने का काम भी अपने ही ऊपर ले लिया। मेहता जी का दूसरा शिष्य इस नये शिष्य को दिये हुए मान को जलन से देखता रहा और मन ही मन द्वेष में बड़बड़ाने लगा कि सुदर्शन के घर एक मुट्ठी के बदले दो मुट्ठी चावल मिलें इस इच्छा से मेहता जी यह सम्मान प्रदर्शित करते हैं। भानुशंकर मेहता ने साठ वर्ष के जीवन में सारे लड़कों के हाथ पर जो निष्पक्षता से बेंत मारी थीं और न्यायवृत्ति का प्रमाण दिया था उसे देखते हुए तो यह बड़बड़ाहट एक मात्र जलन ही लगती थी इसमें कुछ भी शक नहीं।

पर बालक तटस्थ रहा। थोड़े ही समय में उसकी पढ़ाई का शौक इतना बढ़ गया कि प्रमोदराय ने उसको मेहताजी की पाठशाला से उठा लिया और घर पर मास्टर रख कर पढ़ाना शुरू किया। इस समय सुदर्शन के मस्तिष्क में पैदा हुई लहरें उस दी हुई आशाओं

की ओर मा स्थिर करती थीं।

जब प्रमोदराय घर से आफिस जाते तो तब वह चुपचाप दीवानखाने में पिता की कुर्सी पर आकर जम जाता। क्षण भर में वह कुर्सी एक प्रकार की सत्ता का स्थान बन जाती। मेज पर पड़े हुए महसूल खाने के पत्र-व्यवहार में राज्यों की उथल पुथल करने के रहस्य भरा बसते। वहाँ पड़ी हुई सात आठ कुर्सियों पर वृद्ध और चतुर सलाहकार आकर जमते और उसके हुक्म की इन्तजार करते। जमीन पर पड़े हुए दो गद्दी-तकियों पर अगणित मुनीम अपनी नीचे झोंककर बहुत ही ज री चीजें लिखते हुए दिखाई देते थे दरवाजे के आगे एक लाइन में गड़ी हुई लकड़ियाँ चौकीदार की तरह उसके हुक्म की बाट देखती थीं। इन सब का उसी पर आधार था कभी कभी अवसर इन सब को चौंकाने के लिए अपनी कुर्सी पर कूदता और सब भयभीत होकर उसे देखते रहते। जल्द ही वह जोर से अपनी मुट्ठी कुर्सी पर ठोकता और फिर सब की तरह काम निमग्न हो जाता।

वह शाम को सिपाही जैसे नौकर के साथ सरकारी बाग में घूमने जाता। वहाँ जाकर उसको एक कोने में बैठने के लिए कह कर बेंत की छोटी सी छड़ी लेकर अकेला एक सुनसान स्थान में जाता चारो ओर गर्व से देखता। कटी हुई घास में उसे अगणित पदल दिखाई देते, फूलों के पेड़ घोड़ों की पलटन बन जाते और उसके स्वागत में चंचल घोड़ों की गरदन ऊँची-नीची होती रहतीं और बड़े वृक्ष जिन्हें वह हाथियों का समूह समझता था उसके सम्मान प्रदर्शन में सूँड हिलाते रहते लगता इतने में दुश्मन के आक्रमण का सन्देशा आ पहुँचा, बायें हाथ की उँगलियों के म्यान में से दायें हाथ में वह अपनी तलवार-बेंत की छड़ी निकालता और सब सेना दुश्मन की फौज को दलने लगती।

वह तलवार लिए हुए घूमता चारो तरफ से दुश्मन घेर लेते। वह बेहद बहादुरी दिखाता। दुश्मन के किले को चकनाचूर कर डालता। उसे घाव लगते उनसे खून निकलता। एक कनेर के पेड़ पर लगे हुए

फूल म हाथी पर चढ़ा हुआ दुश्मन राजा उसको दीख पड़ता। वह एक छलांग मार कर उसकी तरफ कूदता और तलवार के एक झटके म इस पापी राजा को मार डालता। उसकी जीत होती और शाम को मन्द पवन म नीचे झुके हुए पेड़—हारे हुए दुश्मन के रूप में प्रणाम करते। बहुत बार हवा न चने तो हठीले दुश्मन झुकने से इन्कार कर देते। वह थोड़ी देर इन्तजार करता। यदि इतने में हवा थम पड़ तो—कुछ निराधार दुश्मनो को अपने सामने झुकना ठीक समझता नही तो मरते हुए अरी को मारना नही चाहिए यह सूत्र याद कर गर्विष्ठ दुश्मन हो न तुम ! कह कर वह एक विजयी की तरह उदारता दिखाता।

नदी किनारे खड़ रहना उसे बहुत अच्छा लगता। वह अकेला चुप और विजयी खड़ा रहता। एक के बाद एक उठने वाली कई लहरो की दूसरी सेना उस पर हमला करती फिर भी वह उसको छू नहीं सकती थी। उसकी अद्भुत शक्ति उनसे अछूती थी। लहरों के निष्फल हमले पर वह व्यग से हँसता।

कभी-कभी दसों दिशा के राजा उसके पास सुलह का संदेशा भजते और वह दया का परिचय देकर उन्हें मजूर करता।

इस तरह हर रोज घटो बीत जाते। इस राज का वह अकेला स्वामी था फिर भी उसकी विजय को कोई कुछ न जानता था यह जान कर तो उसे बहुत ही आनन्द मिलता था। वह सब की ओर से खास तौर से अपनी उम्र के लड़कों की ओर से बिल्कुल उदासीन था। वे सब इसम से कुछ भी न जानते थे।

धीरे धीरे इस पूरी स्वप्न-सृष्टि का जोर होता जाता। उसका बाप चपरासी के साथ ही आता। गाँव के लोग उसको भेंट देने आते। वह रोज बहुत से खतों पर दस्तखत कर इधर-उधर भेजता। उस पर तथा उसके बाप पर ही सारी दुनिया का काम चलता है यह उसके मन म भाव होता गया।

महमदाबाद में उनका घर एक छोटे से बाजार के आगे था। अन यहाँ से वह खिड़की में बैठ कर कथा भट्ट की कथा सुन सकता था।

वह ब्राह्मण सुदर्शन की समझ में कुछ भी न आने वाला व्यक्ति था। उसे क्या पता कि यह एक गराई देहाती ब्राह्मण है। उसे क्या पता कि यह एक पैसा मुट्ठी भर चावल या लड्डू के लिये कथा कहता है। दोनों में से एक को भी यह तो खबर कहाँ से है कि यह कथा और यह ब्राह्मण पिछले गुजरात में विनोद और लोक कथा पौराणिक ज्ञान और विचारों को फैलाने और उनका सरक्षण करने के महान् साधन थे और आज के उपन्यास पौराणिक साहित्य और प्रारम्भिक शिक्षा अपने अतीत के साथ जो मिलान नहीं साध सकता वह एक पैसा और मुट्ठी भर चावल के लिये एक कथा-वाचक बन जाता था। सुदर्शन तो उसमें दवी स्वरूप देखता था। जिस देव और मदव की वह चर्चा करता था उन सब के साथ उसका गहरी मित्रता था यह तो उसे बिल्कुल साफ सा लगता था और कभी यह महान् पुरुष मिले तो इनकी कृपा से कितने ही बजवीर और रावण जैसे दानव के साथ दोस्ती पैदा करने का अवसर मिलेगा यह उसकी उम्मीद थी।

हर रात को जब तक पूरी तरह से भट्टजी का लड्डू तय हो तथा अतिम आरती हो तब तक सुदर्शन कथा सुनाता। सुनते-सुनते भट्टजी की आवाज में ध्रुव प्रह्लाद और परशुराम भीष्म सगर और भगीरथ विश्वामित्र राम और रावण भीष्म द्रोण और कर्ण कृष्ण भीम और अर्जुन—जैसे बलधारी व्यक्ति मूर्त हो उठते। और उनके विजयी पराक्रमों से यह कथा समाप्त होने पर भी समाप्त नहीं होती थी। रात को जब सब सो जाते तब ये सब केवल सुदर्शन की ही समझ में इस प्रकार अपने कारनामों को सजीव रखते थे और सबेरे सूर्य का प्रकाश जब सृष्टि का जीवन प्रारम्भ करता तब भी ये सब परा क्रम—सुदर्शन ही देखें और सुने इस प्रकार—अपना अस्तित्व बनाये रहते थे।

कभी-कभी तो ये अपने वक्त जगह तथा ऐतिहासिक आधार छोड़ कर एक साथ इकट्ठे हो जाते और सुदर्शन को अपने प्यार और विश्वास का पात्र बना कर उसके आगे अपना दिल खोल देते थे। ध्रुव मित्र बनता, प्रह्लाद आग से जूझने के लिये सुदर्शन से प्रेरणा माँगता, परशुराम सहस्त्रार्जुन का विनाश करने से पहले उसके साथ सलाह करते। विश्वामित्र दुलार और नवनिर्मित सृष्टि की योजना बनाने का रहस्य बतलाते। घर की आग में जलता हुआ भीष्म अपने क्रूर एवं कठोर भावना से विनाश की सृष्टि करने से पूर्व उससे कुछ पहले पूछ जाता। युगों तक वह भीष्म के साथ विचरता और पिता की आकांक्षा के लिये भीषण प्रतिज्ञा से जीवन को भावनामय बनाने वाले पितामह तो उसे अपने परम मित्र से लगते। कृष्ण कालयवन से भागते समय तथा भीम दुर्योधन को कुचलने से पहले उससे मिलते।

बड़े-बड़े पराक्रम होते बड़ी-बड़ी समस्याएं सुलझाई जाती बड़े-बड़े राष्ट्रों की स्थापना और विनाश होता है। जीवन फिजूल हो जाता एक मात्र बड़ा उद्देश्य और भगीरथ भावनाएँ दुनियाँ में पनपने लगती और इन सब के सहयोगी सुदर्शन के दिन और रात जल्दी जल्दी बीतते जाते।

उसे यह लगता कि वह बहुत बड़ा विकराल क्रोधी है। आर्यावर्त की महत्ता और कीर्ति उसके हाथ में प्रक्षण करने के लिये सौंपी गई है। और पूरी सृष्टि उसके सामने संरक्षण की याचना करती उसके द्वार पर खड़ी है। जब उसे शीशे में एक छोटा सा सुकुमार बालक दिखाई देता तो वह सहम जाता पर कृष्ण की तरह लोगों को रिझाने के लिए उसने ऐसी छोटी सी सूरत बनाई है और वह यदि चाहे तो बहुत प्रचण्ड भी हो सकता है ऐसा उसे यकीन होता और शांति मिलती। उसके परम मित्र ध्रुव उस हिम्मत दिलाते कि दानव के पराक्रम भी जवानी में से ही फलदायक होते हैं।

आठ साल का होने पर उसका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। प्रमोदराय ने इस अवसर पर हाथ खोल दिया। घर पुतवाया भाड़ फानूस बस

थाय। बाजे बजे गीत गवाये और वेश्या का नाच हुआ। ब्राह्मणो की प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने के लिये समारम्भ रचा गया। उनका स्त्री गगा भाभी ने आनन्द महोत्सव मनाया। लोगो ने वाह-वाह की और सुन्दान के दोस्त विवाह की प्रस्तावना-स्वरूप इस प्रसग का शुभवसर पाकर उसका अभिनन्दन करने लगे।

पर सुन्दान के सपनो म इस अवसर पर एक खलबली-सी मच गई। यज्ञोपवीत पहनने से वह ब्राह्मण है। गौतम अत्रि वशिष्ठ अब उसे अपनी पक्ति में बिठायेंगे। आज से वह ऋषि भी हो गया है और गायत्री पढ़नी पड़ेगी ब्रह्मचय का पालन करना पड़ेगा तीन बार सध्या करनी पड़ेगी और ब्राह्मणत्व का प्रताप जसा था वसा ही दुजय रखना होगा।

यज्ञोपवीत पहनने की क्रिया के समय पर उसका दिल धडक रहा था। सदी से निकलते हुए धुएँ के स्तूप स उसकी आँखों में आँसू भर आये थ और कुछ-कुछ ऐसा लग रहा था जसे वह एक सूक्ष्म अपार्थिव और अनिश्चित वातावरण म घूम रहा हो।

अतरिक्ष म महारथी अस्पष्ट वातावरण में अनपहचाने रूप म आ गय थ। बडी-बडी आँखें फरफराती दाढ़ियाँ और तेजस्वी मुख चारो ओर छा गये थे। गदा और धनुष परशु और त्रिशूल का समूह भव्यता और भयानकता फला रहा था। महान् आय उसे आदर से बुला रहे थ उसने जनेऊ पहना और वह इन सब म मिल गया। वह न छोटा सा बालक था न बीसवी सदी का प्राणी बल्कि वह था कृतयुग का कमवीर सतयुग क देवो का सखा नरपुगवों ने उसे अपना साथी मान लिया था।

वेदी के गाढ धूमिल वातावरण में उसने एक बूढ़े का —परिचित र स्पष्ट न दिखाई देने वाला चेहरा देखा। उसकी तेजमय रेखाओं अपार तेज था। सुन्दान भयभीत हो काँप उठा। उसे पल भर के ए कुछ भी समझ म नहीं आया

धुएँ के दूसरी ओर से आवाज आई (कौशिकगोत्रोऽत्पन्नोऽहम्) उसने भी कहा (कौशिकगोत्रोत्पन्नोऽहम्) और उसे ज्ञान हुआ कि वह कौशिक जैसे प्रतापी गोत्र का है।

उसका हृदय एक दम उछल पड़ा उसे जानकारी हुई। वह परिचित मुख—वह आभासित मध्यता—आर्यों का श्रेष्ठ वीर और द्रष्टा स्रष्टा के प्रतिस्पर्धी जसे गाधिराज का महाप्रतापी पुत्र और अपने आद्य पितामह कौशिक का गोत्री।

चारों ओर ध्वनि गूंज उठी

विश्वामित्र ऋषि। सविता देवता। गायत्री छन्द ॥ ॐ भूर्भुव स्व । ॐ तत्सवि तुवरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचो यात्।

ये थे उसके पूर्वजो के उच्चारित किये हुए सनातन शब्द। युगों की परंपरा को पार कर उसके पूज्य पिता उससे भेंट करने के लिए आ रहे हैं। उसकी धमनियां म राजर्षि भगवान् कौशिक का उत्साह प्रचण्ड भून लहरें मारने लगा। समय और स्थान का लोप हो गया। वैदिक काल के प्रिय-श्रेष्ठ काल के साथ उसने सम्बन्ध स्थापित किया। रसमय के दो छोरों पर खड़े हुए पिता पुत्र की एकता प्रतिष्ठित हुई। ज्ञान के भार से दब कर सुदर्शन ने आँखें मूँद ली

प्रमोदराय ने उसे सिर से हिलाया। उसने आँखें खोली। स्नेहीजन आनन्द से उसे देख रहे थे। उसका पुरोहित अपने घर ले जाने के लिए धोती में चावल और सुपारियाँ बाँध रहा था।

सुदर्शन बना ब्रह्मचारी। माथा मुड़ाया गया था उसका। छोटी-सी लंगोटी पहन कर वह घूम रहा था और सब हँस-हँस कर उसे भगत जी कहते थे। हीन समझने लगा अपने आपको। उसे इस दशा में अपमान का अनुभव होता पर वह चुपचाप अपना काम कर रहा था। सिर्फ वही जानता था कि स्वयं पितामह जैसा है और उसमें उसके पितामह की तरह ही सब का उद्धार करने की शक्ति है। इस ज्ञान के गर्व में वह सब की ओर अपमान तिरस्कार से देखता।

परन्तु न्नि रान भपनी नई पदवी के उत्तरन्गयित्व क भार से वह
दबा रहता कभी सो क्या क्या करना है इसी विचार म उसकी नीन्
जाती रहती थी। वह जानता था कि वनिष्ठ क साथ उसे लडना
पडेगा वशिष्ठ के साथ हरिश्चन्न को दुःख देना पडेगा और आवन्यकता
पडने पर नये स्वग को भी बनाना पडगा। उसे लगता जो छोटा सा
ड डा सके पास है उसम परशुराम के फरसे की तरह पृथ्वी को क्षत्रिया
स रहित करने की ताकत है। जब कही वहिन के यहाँ वह भिक्षा लेने
जाता तो जसे दिग्विजय करने जा रहा हो एसा लगता।

भवति भिक्षा देहि —यह याचना के स्वर में कहता।

कसा अद्भुत प्रभाव था उसके दड मे। यह बिल्कुल फरसे जसा
लगता। उस पर बँधा हुआ लाल टुकडा फौलाद की तरह चमक
उठता। कभी ऐसा न्खिाई देता कि वह किसी राक्षस के खून से रगा
हुआ हो। यह प्रभावशाली हथियार उसके पास है यह देख कर इद्र भी
भयभीत हो जाय—घबराकर मुमकिन है विष्णु भगवान् के पास
भी जाय। इद्र को अभयदान दने के लिये किसी योद्धा को उसके पास
से यह शस्त्र छीनने के लिये वे भेजें। तो फिर ? वह स्वय अकेला
क्या करेगा ? किसी देवता की मदद चाहिए। उसके पडोस मे जो
महादेव का मन्दिर था उसका पुरोहित उसे सध्या सिखाने ले जाता
था। महादेव—शकर। प्रत्येक वीर को शस्त्र तो वे ही देते हैं प्रत्येक
ब्रह्मचारी की रक्षा वे ही तो करते हैं और साथ ही भोले कृपालु, उग्र
और शस्त्र-सुगम भी हैं। जरूरत पडे तो नदी पर विराजमान होकर
पल भर में ही सहायता के लिये आ सकते हैं। उनकी मदद के बिना
कुछ भी नही हो सकता वह उसे विश्वास हो चुका था। एक दिन रात
को वह चुपचाप दड लेकर महादेव के मदिर में घुसा। उसने दड महा-
देव के पास रख दिया और उनसे बातें कहीं विश्वामित्र का परिताप
और इस का डर, कह सुनाया विष्णु का डर लगता था वह भी कहा
और हाथ जोड कर क्षमा मांगी उसने पृथ्वी पर सिर टेक दिया। वह

रोया। थोड़ी देर में थककर प्रसन्न होने लगे। उसको अभय दान दिया। वह शीघ्र ही खड़ा हो गया और देवो पर सगर्व नजर किया। उसे आज से दवो के दव शकर की सहायता तो मिल गई थी।

उसी रात को एक बड़ा सवाल उठा। यह दड तो है पर इसका उपयोग क्या ? ससार लड़ना भूल गया ऐसा लगा। एकमात्र उसके पिता की जग खाई नगी हुई नगी तलवार शोभा के लिए दीवाल पर टेढी रक्खी हुई थी। और जिले के दौरे से आते तब एक पिस्तौल साथ में रखते थे। इन वस्तुओ का उपयोग कभी होता ही नहीं। अब क्या होगा ? ग्रन्थ का क्या उपयोग हो ? देवता दानवो को मारने के लिये शस्त्र रखते थे परशुराम क्षत्रियों को मारने के लिये परसा रखते थ सगर ने विदेशियों को निकाल बाहर करने के लिए जमदग्नयास्त्र और्व के पास से लिया था। जब यज्ञ भग हों गो ब्राह्मण की हत्या हो दुखी धरती की पुकार करती हुई शरण में आए तब ऐसे शस्त्र का उपयोग हो और अब तो यज्ञ भी निर्विघ्न पूर्ण होते थे ब्राह्मण भी सुख से निश्चित फिरते थे गाय गली-गली मे घूमती थीं और पृथ्वी को सरक्षण की आवश्यकता हो ऐसा भी दिखाई न देता था। परशुराम के समय मे क्षत्रियों ने पृथ्वी पर अत्याचार किया था सगर के समय म शक पह्लव ने अ याचार किया था पर अब तो मुसलमान तक भी उसके बाप से मिलने आते थे साथ बठते और फलों की डाली भेजते थे अग्रजों के उस के बाप क साथ अच्छे सबध थ और फलो की डाली क्रिसमिस के समय पर लेकर आते थे। अंधेरी रात मे अकेले पड़ हुए उसने दांत पीस। वह पदा हुआ तो पृथ्वी को दुखी होने की भी फुरसत नहीं यह उसे बहुत बुरा लगा। उसे लगा कि यह उसके साथ अत्यन्त अन्याय हो रहा है।

दूसरा क्या उपाय ? धरती पर अत्याचार करने वाला न हो तो भी उसके सरक्षण के लिये तयार रहने की जरूरत उसे प्रतीत हुई। कल कोई राक्षस पदा हो जाय तो ? उसने सोचा कि उस जैसे ब्राह्मणो

को सब कुछ सीख कर तयार रहना चाहिए ताकि समय आने पर कठिनता का सामना न करना पड़। तब फिर ब्रह्मचारी भेष में हाथ म शास्त्र लेकर पर में खड़ाऊँ पहन कर पृथ्वी की ओर धर्म की रक्षा करते हुए और धम की विजय-पताका लेकर फहराते ही ब्राह्मणों के जत्थे की वह खोज करने लगा। यह सब तो भ पर वे क्या नहा दिखाई देत। वे भी सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, यह बात उसको निस्सदेह ठीक लगा।

सातवें दिन उसे गृहस्थ बनाकर उसकी घुड़चढ़ी होगी। प्रमोदराय ने वर घोड़ा निकालन की तयारी गुरु की पर ब्रह्मचय का त्याग करना सुदशन को अच्छा नही लगा। जीवन भर नहीं तो कम से-कम चार साल तो ब्रह्मचारी रहन की उसे तीव्र इच्छा थी। उसने यह बात प्रमोदराय के सामने हो रखी पर उन्होंने हँसी में टाल दी। उसे यह बात बहुत विचित्र लगी कि इतनी बुद्धि वाले पिता भी इतनी-सी बात नहीं समझत पर बार की धाक स वह बोला कुछ नहा। रात को असतुष्ट हृदय लेकर सोया। सोने के बाद उसे याद आया कि वह तो विश्वामित्र का लड़का है। भला कहीं विवाह क बिना लड़ होत हैं।

उसने एकदम उठकर पूछा माँ—माँ! गंगा भाभी घबराकर उठ ब ।। क्यों भाई?'

विश्वामित्र का कोई लड़का न था?

माँ ने झुँझलाकर जवाब दिया 'हाँ।

तब वह ब्रह्मचारी तो नहीं थे?

ना। कहकर माँ ने पीठ फर कर ऊँघना शुरू किया। सुदशन को चन-सा आ गया।

वह गृहस्थ हो गया और जनाई क समय की चहल पहल मिट गई। किन्तु उसकी धुन ज्यों-का-त्यों बनी थी। वह शिव कवच का जाप कर महादेव की पूजा करता था, तीन बार सध्या करता और

परशुराम और राजा सगर जसे क्रोध नेत्रों स मुसलमानों को देखने लगा। क्या मुसलमान हिन्दुस्तान के दुश्मन हैं ? क्या उनका विनाश करना ही पडगा ? क्या इस्लाम के अनुयायी विदेशी है ?

महीनो तक उसे चन नही पडो। मुसलमान क्या हिन्दू हो जायेंगे ? क्या ब्राह्मण सना उन्हें मार डालेगी ? क्या व शिवाजी की तरह उसे भी बाँध कर किसी इस्लामी राजा के पास ले जायेंगे ? अन्त म जीत किसकी होगी ? रात को सपना म त्रिपुण्डधारी ब्राह्मण और लम्बी दाढ़ी वाले मुसलमान ही लडते दिखाई पडते। वह एक दम जाग उठता और चिंतित हो विश्वामित्र इत्यादि प्राचीन मित्रा से मन्द के लिए माँग करता। दिन म वह रास्ते म आते हुए मुसलमानों को देखा करता शाम को मुसलमानी मुहल्ले मे घूमने जाता। नाटक द्वारा पड़े संस्कारो के कारण मुसलमान शत्रु दीख पडते लेकिन फिर भी उनका वर दिखाई न दता।

अग्रजी शिक्षा और राजनीति पेन इस्लाम और खिलाफत ने विरोध का बीज बोया इससे पहले गुजरात म यह भी पता न था कि हिन्दू और मुसलमान अलग अलग हैं, या एक दूसरे के दुश्मन हैं और गुजरात म पदा होने के कारण उस यह दिखाई नही दिया यह भी स्वाभाविक ही था। द्वष के चिह्न देखने की उसने कोशिश की।

उसके घर दो मुसलमान चपरासी थ। वे न रसोई म आ सकते थे वे दाढी रखते पायजामा पहनते और श्री राम के बदल या अल्लाह ! कहते, इसके अलावा उनम तथा हिन्दू नौकरा म कोई फक न था। वे उसको खिलाने और घुमन फिराने ले जाते दूसरे नौकरों की तरह वे भी बोलते और उसको तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते। कहानियो म एक मुसलमान सिपाही सदा ही इस्तबूल म एक राजा था यह और दूसरा एक राजा था इस तरह शुरू करता। दोना बडे परिश्रमा साथ साथ खुश मिजाज तथा नमक हलाल थे।

उसके बड़े मियाँ काका भी मुसलमान थे। तीन पीढ़ियों से इनके

सम्बन्ध चले आ रहे थे। वह उसके पिता के बड़े भाई साहब के दोस्त थे और उसके मर जाने पर वृद्ध ने प्रमोदराय से अपना सम्बन्ध बना लिया था। वह वृद्ध लम्बा थे लम्बी दाढ़ी रखते और मकरू गाल पगड़ी तथा लम्बा मूला हुआ अंगरखा पहनते थे। दूसरे-तीसरे दिन उसके यहाँ आते और बड़ी ममता भरे स्वर में कहते 'क्यों लड़के ?' और उसे उठाकर चूम लेते। प्रमोदराय न हो तब भी वह आकर घर के सब लोगों की खबर ले जाते थे।

उनके बोलने बुलाने और सलाम करने के ढंग में एक प्रकार की गौरव सभ्यता खूबसूरती थी। सुदर्शन ने ऐसी विशेषता किसी में भी नहीं देखी थी।

त्योहार को बड़े मियाँ जीमने आते और सबसे दूर बैठ प्याला दोनों हाथों से पकड़ कर दाल या खीर पीते और लाल दाढ़ी को दाल या खीर में भाग जाते देखकर सुदर्शन को बहुत मजा आता था। कभी कभार बड़े मियाँ उसे और उसके बाप को दावत पर बुलाते और अपने बाड़े में ब्राह्मण रसोइया को बुलाकर उनके लिए भोजन बनवाते और बाप-बेटे दोनों पीताम्बर+पहनकर उनके यहाँ जीमते।

बड़े मियाँ अकेले सुदर्शन को तो बहुधा अपने घर ले जाते थे। कभी-कभी एक मोटी पुरानी मखमल की जिल्द चढ़ी हुई किताब के पन्नों में जो आतके चित्र थे उन्हें दिखाते। यह चित्र इतने प्यारे थे कि वह किताब सुदर्शन के मन बसती थी।

घर ले जाकर वे उसे एक गद्दी पर बिठाते और हुक्का सुलगा कर गुड़गुड़ाते रहते। सुदर्शन के मन में बड़े मियाँ अर्थात् लाल दाढ़ी सोने चाँदी से विभूषित हुक्का मखमली गद्दी शान्त हुक्के की गुड़गुड़ाहट और वृद्ध मुख पर फैली हुई आनन्द मौज और सुखपूर्ण मंद हास्य की रेखायें चमकती रहतीं। आधा मुँदी हुई आँखों में से वे उसे देखा करते और

+रेशमी वस्त्र, जिसे पहन कर गुजराती ब्राह्मण भोजन करते हैं।

लगता था ये सब इकट्ठे होकर क्या दूसरों को दुःख दे सकते हैं ? ये खानदानी मुसलमान दोस्त बीबी और प्यार क्या अंतर में द्वेष रखते हैं ? क्या बीबी चाची का बाप नवाब चाचा जीवित होता तो सुदर्शन को मरवा डालता ? शिवाजी इन सब को मारने के लिए क्या तत्पर हुए ? उसकी समझ में कभी नहीं आया।

इन विचारों के चक्र में बालक सुदर्शन को कुछ नहीं सूझ पाता। उसके ऋषि मित्र, उसकी ब्राह्मण संता शिवाजी बीबी चाची के नवाब चाचा तथा दूसरे का दुःख दूर करने वाले हातिमताई ये सब उसे दुलारे थे। और उसकी सपनों की दुनिया में नया पचरंगा ताना-बाना बुनने लगे थे।

(७)

कुछ दिन बाद ही सुदर्शन अंग्रेजी स्कूल में दाखिल हुआ और अपनी होशियारी से और बाप की देख भाल से थोड़े ही समय में वह आगे बढ़ने लगा। प्रमोदराय के मन में बेटे को कलेक्टर बनाने की इच्छा थी और अठारह वर्ष की उम्र में वह बी० ए० पास करले इस उद्देश्य से छोटे दर्जों से जल्दी जल्दी पास करा लेने की योजना उन्होंने बनायी थी। चुपचाप पढ़ते हुए तथा पालकी में झूलते हुए सुदर्शन अंग्रेजी की पाँचवीं कक्षा में आ गया। शांत और सीधे लड़के के जीवन में कुछ विशेष बदलाव नहीं हुआ।

पाँचवीं जमात में उसने औरंगजेब तक भारतवर्ष का इतिहास तथा एलिजाबेथ तक अंग्रेजी इतिहास पढ़ा। दोनों विषयों में उसकी स्वप्नों की दुनिया की सीमा बढ़ गई।

अब जो भारतवर्ष का इतिहास पढ़ाया जाता वह लाचार निर्जीव उत्साहहीन पादरी का लिखा हुआ था। फिर भी सुदर्शन को उसमें आनन्द आया और साथ ही हंटर द्वारा लिखा इतिहास का गुजराती अनुवाद भी उसने पढ़ लिया। उसने उसे इतनी बार पढ़ा कि एक महीने का जीवन उसने अपना उसी में लगा दिया।

सुन्चन को गौतम बुद्ध से शांति नहीं मिल पाई। तस्वीर म और चरित्र म वे बहुत पूज्य लगते थे पर उनकी अपूर्वता और निर्विकारता सुन्दन को हिम स्थिति गौरीशंकर की तरह और भी अछूती बना डालती थी। उनके साथ किसी प्रकार का भी मानवी सम्बन्ध स्थापित करना कुछ असम्भव सा लगा। अक्सर वह दिग्विजय का रहितपथी का ब्राह्मण सेना का या शिवाजी का विचार करता तब वे भी एक दम आ पहुँचते। बुद्ध का अडिग आसन भयकर निश्चलता के ओर से उसके उत्साह को दबा कर चूर-चूर कर देता था। उनकी पाषाण सी स्थिर निर्जीव आँखें अतर को भेद डालती थी और क्रूर कृपा से झल कर देती। वह उसे अधिक नहीं भाते थे।

उसकी मुलाकात चन्द्रगुप्त के मंत्री के साथ शुरू हो गई। थोड़ी सी दूसरी पुस्तका म भी वह परिचय और गाढ़ा हो जाय ऐसे सुयोग भी थे। परिचय बढ़ते ही वह प्रिय लगने लगा। बस तक्षशिला के ब्राह्मण म भीष्म की दृढ़ता का अौर का सा आवेश था। उसका तेज दवी भगवान कौशिक जैसा नहीं था पर ऐसा था कि एक बार आँख में बस जाय। वह नन्द का विनाश करने के लिए सदा ही उत्सुक दिखाई देता और अपनी प्रतिज्ञा में बंधी अपने सिर की चोटी खुली रखता। जल्दी ही वह स्वप्न मित्र हो गया और हमेशा स्वप्नों में आने और बातें करने लगा। सुन्दन को कभी ऐसा लगता था कि इस नये मित्र पर उसका बढ़ता हुआ सद्भाव देख कर उसके पुराने मित्रों को जलन होने लगी थी। पर एक व्यक्ति बहुत पीछे दोस्त हो और उसको पुराने मित्रों से छोटा गिना जाय यह उसको न्याय वृत्ति को अच्छा नहीं लगा।

नव परिचितों म उसे मुहम्मद गजनी पर गुस्सा आया। उसकी की लम्बी दाढ़ी थी। उसकी आँखें विकराल थीं। कौन जाने क्यों उसका एक दाँत बाहर ही दिखाई देता था। वह लूटने और मन्दिरों को तोड़ने का ही काम करता था। सुन्चन ने उसे सपनों म न आने का

हुक्म दे दिया पर फिर भी वह आया करता और किसी महाग्रंथ को नष्ट भ्रष्ट करते या किसी धन कोष को लूटता दिखाई देता। तुरन्त सुदर्शन गर्जता उसकी सेना और घबराया हुआ गजनी अपने पर्वत प्रदेश में छिप जाता। उसके और सुदर्शन के बीच एक दारुण वैर हो गया था। जहाँ भी हो इस पापी को हराने की उसने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी।

पृथ्वीराज चौहान उसके सपनों की दुनियाँ में एक महान् तथा असहाय प्राणी था। वह जानता था कि अकेला वह बराबर लड़ नहीं सकता था। वह संयोगिता के प्रेम पाश में पड़ कर शक्ति और समय गँवाता रहा है अतः सुदर्शन को उसके प्रति नफरत हो गई। वह कभी यहाँ तक कह देता था कि यदि इस तरह मेरे सपनों में अपनी स्त्री का प्रेम दीवाना बनेगा तो मैं तेरी मदद नहीं कर पाऊंगा। पर वह चंद्र बरदायी को जरूर चाहता था। चंद हमेशा आकर उसे मना जाता और दया के निमित्त वह चौहान की मदद के लिए दौड़ता पर दो चार दस पीछे हट जाता। कौन जाने क्यों उसे दुश्मन की फौज मासुओं के झुंड की तरह लगती और जैसे कोई मदारी रीछ का तमाशा दिखाने आया हो। उसकी वीरता का क्या मूल्य? सुदर्शन तलवार लेकर पृथ्वीराज की मदद के लिए आ जाता दुश्मन की सेना के टुकड़े टुकड़े कर डालता और फिर शान्ति से भारत के शासन निर्माण करने बैठ जाता। उदारता से वह पृथ्वीराज को चक्रवर्ती के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करता और आर्यावर्त में धन धान्य और कांति की रेल-पेल मच जाती।

बाद के पृष्ठ तो भारतवर्ष के इतिहास में हैं ही कुछ नहीं वह विचारता और अकबर से उसकी सृष्टि का आरम्भ हो जाती।

अकबर को उसके प्रति अत्यंत ममता रहती थी। वह बिना सास दाढ़ी के बड़े मियाँ बाबा जैसा लगता था। वह उसी की तरह धुनी में तथा उन्हीं भावों से हँसता। वह हमेशा बूढ़े की तरह मखमल की गद्दी पर बैठ कर हुक्का गुड़गुड़ाता और बार बार देश को जीत कर

था कि वह उसकी सलाह को कभी अमल मे न ला सकता। एक बार सुदर्शन को शंका हुई कि उसकी दृढ़ता तथा अडिग महत्वाकांक्षा देख कर नूरजहां ने पर स्त्री को शोभा न दे—ऐसी प्रशंसाभरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा। भीष्म का भी दुष्प्राप्य भयंकर और कठोर निर्ममता से सुदर्शन ने उसको और देखा। सम्राज्ञी का दृष्टिविकार उसी क्षण पैदा होते-होते तुरत मिट गया।

और फिर तो उसका पुराना और प्रिय मित्र शिवाजी। नाना त्र्यंबक की मुख-मुद्रा में आ बैठता। उसने गुजराती में बोलना जारी रखा और सुदर्शन को साथ म रख कर छोटे से इतिहास में दिये हुए पराक्रमों को काल्पनिक रंगभूमि पर तबले और हारमोनियम व संगीत के साथ साथ वे ही दृश्य फिर उपस्थित कर दिये।

और ये सब महान् पुरुष एक साथ मिलकर अनेक प्रकार के पराक्रमों द्वारा सुदर्शन के बाल-जीवन को बहुत आगे ले गये।

(६)

इन सब से दोस्ती होते ही सुदर्शन उनके साथ मुलाकात का मौका खाजने लगा। और पादरी का इतिहास छोड़कर मोरवी और बांकानेर के एतिहासिक नाटकों के सौंदर्य से परिपूर्ण गुजराती ग्रंथों तथा नारायण हेमचन्द्र के अनुवादों की विशाल सृष्टि में इन मित्रों के साथ घूमने लगा। कालंबस की तरह उसकी विस्मित आंखों के आगे एक नवीन भूखंड की अपरिचित समृद्धि आ उपस्थित हुई और इस समृद्धि की चमक मे पुराने परिचितों के नवीन रूप तथा नवीन सम्बन्ध परखे।

उसकी सृष्टि मे बगावत होने लगी। पुरुषों म यातनाओं में और भावनाओं में परिवर्तन हुआ। पुराने सोने का नया मूल्यांकन हुआ। प्राचीन सम्बन्धों में एक नये प्यार का प्रसार हुआ। चारों तरफ डर फैल गया। देश और धर्म खतरे में पड़ गये भारत-खंड की आजादी जाने लगी। देव मन्दिरों की पवित्रता खतम होने लगी। इस्लाम के असंख्य अनुयायी भारतवर्ष पर अपने दांव लगाने लगे।

सुदर्शन की बेचनी बहुत बढ़ जाती। उसे खाना अच्छा न लगता रात को नींद न आती। मध्य कालीन राजपूत शौर्य तथा मुस्लिम जातियों ने उसके जीवन म अशांति भर दी। कितने ही प्रश्न उसकी राह देख रहे थे।

सोमनाथ की पवित्रता की रक्षा उसे करनी थी। मेवाड़ की नष्ट होती स्वतन्त्रता की रक्षा करनी थी। अकबर के समय की राजनीति को हराना था। शिवाजी के प्रयास सफल करने थे। हिन्दू और हिन्दुस्तान दोनों का यह सोचना था कि क्या होगा ?

मुसीबत दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। उसे अब खाने म पढ़ने म या घूमन म आनन्द न आता था। वह सोते-जागते यही विचार किया करता था।

परिस्थिति चिन्ताजनक थी। राजपूत अपने घमंड म एक दूसरे का गला काटने पर उतारू थे। मुसलमानों का सारा बल उमड़ पड़ रहा था। छोटी-छोटी अँधेरी गलियों म महमूद गजनी हमले के लिए उत्सुक दिखाई देता। अँधेरी रात म परछाईं में गोरी और गुलामों की सेना उसकी राह देखती थी। आधी रात म बहुत से मुसलमान उसके खून के प्यासे बनकर उसकी चारपाई को घेरे रहते। हर छप्पर पर मस्जिद की मीनारों का निर्माण करते। अर्ध चन्द्राकार विजय चिन्ह हर रोज आकाश म चमकने हर ध्वनि में अल्ला हो अकबर का नारा सुनाई देता। वह जानता था कि उसको पकड़ने के लिये व सब उत्सुक हैं। उसने इस्लामियों का अपना क्रोध सिर पर ले लिया था क्योंकि उसने धर्म को आजाद रखने की शपथ ली थी।

वह जहाँ जाता पठान उसका पीछा करते। उन्होंने भी अपने पैगम्बर की दाढ़ी की कसम खा ली थी कि उसको अवश्य पकड़ेंगे। उसकी चोटी काटने के लिये वे तलवार पर धार रखते। मौलवी उसको धर्म विरुद्ध कहते। वह अक्सर चारों ओर सावधानी से देखता और चिंतित और हाँफता हुआ—चारपाई पर बैठा जागा करता।

हिस्ट्री अर्थात् पाठ्यीकृत पुस्तक नहीं, बल्कि अंग्रेजी के राष्ट्रीय वैभव से परिपूर्ण—सक्षिप्त पर सजीव—इतिहास। अंग्रेजी में वाल्टर स्काट के आइवेनहो में से कितने ही भाग भी पढ़ने आये।

हिंदू मुसलमानों से निर्भय हो गया था अत उसको दूसरी ओर ध्यान देने का समय मिला। उसने इतिहास और आइवेनहो पढ डाले। उसके पिता ने स्काट के उपन्यास उसको उपहार के तौर पर दिये थे उनको समझ बिना समझे पढ गया। किंग्सले के एक-दो उपन्यास भी उसे सके पढ़ डाले गये।

महीनों तक अनवरत रूप से वह इन पुस्तकों को दिन रात पढ़ता रहा। वह अँग्रेजी अच्छी तरह नहीं समझता था। कितनी बातों का आशय समझ म न आता था। इस पर भी स्त्री पुरुषों की इच्छायें और पराक्रम उसके हृदय म स्थान बना लेते। अक्सर पुस्तक अधूरी छोड़कर उसके पात्रों के पराक्रम स्वय अपने आप पूरा करने लगता।

धीरे धीरे एक नया विचित्र भूगोल और समय-क्रम स परिपूर्ण सृष्टि प्रगट होने लगी।

बेचारे क्रुसेडरी को—पापी सलीदान के हाथ से येरूसलम बचाने के लिये निकली हुई धर्मवीरों की भटकती हुई सेना को—उसकी सहायता की आवश्यकता पड़ी। उसने 'ब्लैक नाइट' की तरह काला लोह-कवच पहना सिर पर टोप पहिना, मुह ढाँपा काले घोड़े पर चढकर हाथ म भाला लेकर सलादीन को पराजित करने क लिये निकल पड़ा। शहर से थोडी दूर पर पढने वाला एक स्कूलालय येरूसलम बनाया गया गाँव के बाहर जहाँ खेतों की बाड खत्म होती या वहाँ से हिंदुकुश पर्वतों में खुरासान की इस्लामी हद छिपी बैठी थी। और इन पहाड़ों के पीछे जहाँ महमूद गजनी की फौज छिपी हुई थी उसी तरफ उसके मित्र सलादीन की फौज थी स्कूलालय— येरूसलम को इन राक्षसों से छीनना था।

अब बहुधा वह येरूसलम की ओर घूमने जाता। काला घोड़

पहने हुए उसके साथ आने वाला चपरासी उसका परम मित्र इंगलैंड का शरन्ति प्रथम रिचार्ड—'ब्लैक नाइट'—काले योद्धा के नाम से प्रसिद्ध महारथी था। उसके बाद और हमेशा उसके छोटे भाई की तरह 'माइविनहो' चलता था और उसकी सेना जनेऊ और त्रिपुण्डधारी वख्तर में सजी हुई उसके पीछे-पीछे आती थी। वहुधा प्रसादीन की विजय होती और वह तब 'काला योद्धा' अपना नाम बताकर अनेक विपत्तियों का सामना कर स्वदेश लौट आते।

अनेक शताब्दियों की घटनायें इकट्ठी कर उनको एक ही स्थल तथा काल में सजीव करने की उनमें शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती गई। बढ़ी हुई शक्ति से इंगलैंड के इतिहास में रस का अनुभव होने लगा।

जब वह घर से निकला तो जंगली जसे इंगलैंड का हाथ में मिलाता। तुरन्त बोमाडिसिया रानी अपनी बहादुरी दिखाती हुई उसके साथ हो लेती। वे तीनों बढ़ते जसे-जस आगे बढ़ते और इतने में नौरमंडी का ड्यूक विलियम उनको पकड़ लेता। एक क्षण बहुत पूरे न होने पर मन में जीत कर एक महान् साम्राज्य स्थापित करने का विश्वास हो जाता। जो कुछ भी हो उसकी अपनी सेना की मस्ती निकलती थी।

धीरे धीरे वह शक्ति संजोता। एडवर्ड आ जाता। फिर एडवर्ड तृतीय से उसकी मुलाकात होती और नगर की सड़कों पर पहुँचने से पहले ही स्काटलैंड जीत लिया जाता। फिर फ्रांस के साथ लगातार युद्ध करता होता। उसके दिल में हमेशा फ्रेंचों के प्रति सम्मान रहता। उनसे वह विनम्र-पूर्वक कहता "किस लिये सड़ते हो? मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। मैं तुम्हें सुख दूंगा" लेकिन वे न मानते और हेनरी पंचम कोसे अकर उन्हें जीतना पड़ता।

फिर आती वही बालिका जोन आफ आर्क। वह दुश्मन की सेना को प्रसित करती पर फिर भी वह उसे बेहद अच्छी लगती। कभी-कभी तो उसे अपनी तरफ मिलाने का मन होता पर उसे जसे विशुद्ध संयमी को

स्त्री का सहवास जरा भी न चाहिए यह सकल्प कर वह अपने मन की भावना को दबा देता। वह बहुत बहादुरी जतलाती। वह चाहे तो उसको पल भर में हरा दे पर ऐसी सुकुमार बाला को हताश करने का उसका मन न हुआ। उसने अपने प्रिय मित्र भीष्म की तरह स्त्री से लड़ने के लिये मना कर दिया—स्त्री को जान-बूझ कर जीतने दिया।

सात पटरानियों के साथ आता हुआ वह मोटा हेनरी उसे कतई भाता न था पर ऐलिजाबेथ पर उसने अधिकार कर स्पेन का समुद्री आक्रमण पीछे लौटा दिया चार्ल्स प्रथम उसे थोड़ा ही अच्छा लगता था। वह बड़ी मुश्किल से उसको डरा धमका कर सीधा रखता कि इतने में उसका मित्र ओलीवर क्रामवल आ पहुँचता।

क्रामवल उसका परम मित्र था। वह भी उसकी ही तरह कठोर संयमी तथा सत्ताशाली था। उसके आने ही सुल्तान और सबको भूल कर अंग्रेजी सत्ता की नींव जमा लेता।

इसके बाद उसे कोई भी न अच्छा लगता था अतः वह क्रामवेल का ही साथ रखता और उसके साथ रह कर अंग्रेजी इतिहास की बहुत सी भूलों को सुधारता। परन्तु वीर—बेंघाम के आते ही उसकी आवश्यकता न रहती। भारत कनाडा इत्यादि जल्दी-जल्दी जीत लिये जाते।

पर इतने में पानी के रास्ते में नेपोलियन से उसकी भेंट हुई। उसके योग्य ही यह प्रतिस्पर्धा लगी। उसकी मदद करने के लिए उसका मन होता। पर इंगलैंड को कहीं छोड़ा भी जा सकता है? उसने तुरन्त ही नेपोलियन को हरा कर एक दूर टीले पर एक छोटे-से घर में उसे कैद कर लिया।

इसी बीच स्कूल आ जाता। उस खुले हुए मैदान में म्युनिसिपैलिटी चर्च सरकारी दफ्तर और स्कूल था। वहाँ अंग्रेजी राज्य था। बड़ी मुश्किल से उसने इसका निर्माण किया था। उसके पिता उस साम्राज्य के स्तम्भ थे। उसको बड़ा ही गर्व होता और इस साम्राज्य को सदा ही सुरक्षित रखने की वह प्रतीक्षा करता।

वह गाता —

> झर गयो न धर गयो
> बली काला कर गया करतार
> म उपकार गणी ईश्वर नो
> हरख हत्र तु हिन्दुस्तान।

मुन्शन के मन में अंग्रेजी साम्राज्य का एक भाग था और इसलिये अंग्रेजी गौरव से परिपूर्ण था। क्रामवेल चैथाम और नल्सन उसी के पूर्वज लगते। ब्रिटेन कभी गुलाम न होगा इन पंक्तियों का उच्चारण करते समय उसकी छाती फूल सी जाती।

विश्वामित्र परशुराम तथा सगर का अनुज और राणा सांगा प्रताप तथा शिवाजी का भक्त ऐसा यह नन्हा-सा ब्राह्मण बालक अपूर्व संस्कृति के अपने सरगरा का अंग्रेजी कीर्ति की चमक से चमका कर साम्राज्य को विश्व विजयी करने के सपने देखता रहा।

चार

कटु अनुभव

(१)

एक दिन शाम को सुदर्शन प्रमोदराय के साथ गाड़ी में बैठा हुआ आ रहा था उसी वक्त पीछे से एक अंग्रेजी घुड़सवार आता हुआ दिखाई दिया।

जब सुदर्शन गाड़ी में बैठता तो उसके सपनों की सीढ़ बढ़ जाती और जल्दी जल्दी परिवर्तन हुआ करते। वह चुपचाप सब देखा करता। जब उसकी नजर गाड़ी के आसपास पड़ती तो उसे अपनी सेना की टुकड़ी ही दिखाई देती और रास्ता चलते हुए सब उसकी आज्ञा लेकर किसी महा प्रयोजन के लिये चल देते। सुदर्शन ने इस आने वाले घुड़सवार को कभी का देख लिया था और उसके बाल सहोदर आइवेनहो का सन्देशा ले आने वाले नौकर की तरह उसे कभी का पहचान भी लिया था।

रायबहादुर का एक हाथ पगड़ी ठीक करने के लिए बढ़ा। दूसरे हाथ से कोट खींच कर सीधा किया। और फिर सुदर्शन का हाथ दबा कर मानयुक्त स्वर में कहा कलेक्टर आ रहे हैं, नमस्कार करना।

अपने विद्वान बाप को ऐसे स्वर में बोलता देखकर वह चकित रह गया। उसने पिता की तरफ देखा। विश्वामित्र से मिलते समय जो नम्रता उसके मुख पर छाई रहती थी वैसी ही प्रमोदराय के मुख पर आ गई थी। एक सम्मान पूर्ण हसी से गाड़ी में भी नीचे झुके और घुड़सवार को सलाम किया। सुदर्शन ने आइवेनहो के नौकर की तरफ देखा। बाप ने सलाम कर उसके कान में कहा उसने सुना और यन्त्र की तरह

हाथ ऊपर को उठा लिया। माथा झुका कर घुड़सवार ने सलाम की और पास आकर घोड़ा मन्द किया।

'हलो! राय!' उसने सुन्दर को अप्रिय स्वर में कहा 'यह तुम्हारा ही लड़का है क्या?'

'जी हाँ! है मेरा इकलौता लड़का तो साहब!' प्रमोदराय का मुख रूप से चमक उठा।

'प्रमोदराय!' साहब ने कहा 'मिसेज स्मिथ बस है तुम आना सुबह नौ बजे।'

'जी बहुत खुशी की बात है।'

'और अपने इस लड़के को जरूर लाना' कह कर जवाब की प्रतीक्षा किये बगैर ही घोड़े को एड़ लगाई और कलक्टर साहब तो रवाना हो गये और लड़के को देखा हा साहब ने ख्याल किया यह सोच कर प्रमोदराय गर्व से तन गया।

पर उस लड़के के हृदय प्र गहरा ग गई थी। उसके पिता के रूप तथा आवाज में हुए परिवर्तन ने उस अंग्रेज के बोलने और निमन्त्रित करने के ढंग ने उसकी भावना की दुनिया में भूकम्प ला दिया था। अगर ऐसा भयंकर क्रोध उसके छोटे से शरीर में व्यक्त हो गया।

अपने बाप अगोचर का तरफ उसने ध्यान से देखा। वे ऋषियों व महानता और अंग्रेजी गौरव के सम्बे नहीं बल्कि अंग्रेज अधिकारियों के एक मात्र मददगार थे। वे न तो प्रतापी और दुर्जय अधिकारी इन सब में थे। बल्कि इस 'साइवेनहो' के नौकर के आगे दीन-हीन परा धीन और निर्जीव इन्सान थे। पगड़ी ठीक करने के लिए रखा हुआ हाथ कोट सीधा करने के लिये खड़ी हुई उँगलियाँ सलाम करने के लिये उठे दिया हुआ प्रत्येक शब्द के साथ मिली हुई नम्रता पूर्ण हँसी और मुँह से निकला हुआ 'साहब' शब्द इन सब की चोट उसके दिल पर पड़ी। यह ही है उसका पिता—जिसको यह पूजता था।

आज तक उसने कई बार दूर से अंग्रेजों को देखा था और उनको

पिता को इस प्रकार घर से बाहर उतरने को कहता तो कभी भी वह उसके घर न जाते पर वह क्योंकि साहब था और वह उसके नौकर इसी कारण यह अवज्ञा चुपचाप सहन कर ली थी। उसे अपने पिता पर नाज आई और वहाँ से भाग जाने का मन हुआ।

घरा से जरा भी आवाज न करते हुए वे भीतर गये। बरामदे की सीढ़िया के आगे एक सिपाही मिला। उसने रायबहादुर से सलाम किया और खडे रहने को कहा। वह अन्दर सूचना पहुँचाने गया। थोडा देर म वह लौटा और चबूतरे पर दो कुर्सियाँ डाल दी और उन स बैठने के लि उसने कहा – साहब काम म हैं। उसने नाम बतलाया।

सुदर्शन के आत्मसम्मान को पुन घात पहुँचा। वह सतेज हो गया। उसकी असहिष्णुता बढ गई। सिपाही के बर्ताव म उसको अपमान की झलक मिली। साहब ने चबूतरे पर बिठाया इस मे अनादर के चिन्ह दीख पडे। उसका पिता तो सौम्य मूर्ति बना हुआ था। वह हमेशा कहा करते थ कि साहब लोगो के साथ बहुत भला मालूम होता है। क्या यही भलापन था।

थोडी देर में वही घुडसवार हाथ म सिगार लिये हुए आया और रायबहादुर ने काफी नीचे झुककर सलाम किया। सलाम करते हुए उसका बाप कितना नीचे झुका यह सुदर्शन ने सूक्ष्मता से देखा और उसी अनुपात स स्वयं भी सलाम की। उस समय भी वह अपने को 'रतनबाई' कह बिना न रह सका।

हलो मास्टर कसे हो तुम ? साहब ने उसकी पीठ थपथपा कर कहा।

ठीक। सुदर्शन बोला। रायबहादुर ने उसे ठीक-ठीक कर सम झाया था। कि साहब को 'यवर्' कहना पर उससे वे शब्द निकल ही न पाये।

क्या पढते हो ?

मट्रिक में है। प्रमोदराय ने बतलाया।

तुम्हारी सकंड लैंग्वज क्या है ?

संस्कृत । सुदर्शन ने कहा ।

प्रो तुम भी रायबहादुर की तरह डिप्टी कलेक्टर बनोग न ?

सुदर्शन का पूछने को तो मन हुआ ताकि तुम्हारी खुशामद कर सकू । पर यह जवाब देन से पहले ही मडम साहिबा' आ गई ।

हलो रायबहादुर ! उसने जोर स चिल्लाते हुए कहा । मिसेज स्मिथ लम्बी पतली और प्रभाहीन थी । उनके लम्ब हाथ की कुहनियाँ बिल्कुल ठीक ठीक कोण बना रही थी । प्रमोदराय उठ और मुस्करा कर सलाम किया । सुदर्शन को इस सलाम करने के ढंग पर अपमान उत्पन्न हुआ । उसने मात्र सिर पर हाथ ही रक्खा ।

मेरी शुभ कामनायें साल शुभ हो ! रायबहादुर ने जेब से एक डिब्बा निकाल कर उसकी नजर किया ।

'हाऊ लवली । मिसेज स्मिथ ने चिल्लाकर नजराना स्वीकार करत हुए कहा । उसके मुख पर हास्य छा गया । उसने डिब्बा खोलकर एक छोटा-सा कगन निकाल कर हाथ म पहना ।

बोली जॉन ! जरा देखो तो कितनी अच्छी ! इज नाट राय बहादुर डीयर उसने सुदर्शन को देखा और मुख पर कृत्रिम स्नेह के भाव व्यक्त किये 'यह किसका चोकरा ? उसने पूछा और गुजराती भाषा का ज्ञान जताने क लिय चोकरा शब्द उच्चारण किया तुम्हारा ?

यस मडम ? हसकर प्रमोदराय ने कहा ।

जरा तिरस्कार भरे उच्चारण के साथ बोला हुआ, 'चोकरा शब्द न सुदर्शन क मस्तिष्क म आग-सी लगा दी । यहाँ आओ दारुआओ नहीं मिसेज स्मिथ ने कहा । सुदर्शन क्या करे यह सूझने से पहले ही सब का ध्यान एक नये व्यक्ति की तरफ खिच गया ।

सुदर्शन ने उसको पहचान लिया । बूढ़े रायबहादुर माधवलाल प्रमोदराय क मित्र रिटायड डिप्टी कलेक्टर नगरपालिका बोड आदि आदि सरकारी संस्थाओं के प्रमुख कौंसिल के सदस्य और सरकार के कृपा

नये चमकते हुए कोटिंग के कपड़े का ढीला-ढाला कोट सूखे शरीर पर भूल की याद ताजा करता था। उसके मुख पर कृत्रिम और खुशामदी हँसी नाचती। चलने के ढंग में कमजोर कमर और परा की मदद से जितनी भी सुन्दरता आ सकती थी उसे लाने का इरादा दिखाई देता और यह इरादा सभ्यता के लिये पुरुष कहलाने वाले आदमी को अच्छी लग ऐसी चाल में वह व्यक्त करता।

सेठ माभाई आय। एक सामान्य मनुष्य में जो दोष होते हैं अज्ञान के जो चिह्न होते हैं और खुशामद के जो लक्षण होते हैं वे सब इन जमीदारों के नेता माभाई सेठ म थे और कहीं वह भी स्वय पीछे न रह जाय इस डर से प्रकृति ने अपनी तरफ से भी उसको तिरस्करणीय बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। लक्ष्मी और अंग्रेज सरकार दोना की ही कृपा उस पर थी।

सरकार के इस नये कृपा-पात्र के हाथ में एक काले रंग का डिब्बा था।

माभाई न आते ही डिब्बा नीचे रक्खा और हाथ झाड़ दिये जैसे धूल लगी हो। उसके होंठ और शरीर कलक्टर साहब का रिझाने की इच्छा से पुलकित हो गय।

स्मिथ इस सज्जन की तरफ देखता रहा—तिरस्कार भरी नजर से। श्रीमती स्मिथ न मुँह पर हाथ रखकर हँसी छिपान का प्रयत्न किया। माधवलाल एक स्नेहशील पिता की तरह से देखता रहा। अमोलराय गम्भीर और कठोर बनकर दूसरी तरफ देखते रहे और सुमन ने नीचे से ऊपर नजर न की। उसे एकाएक ध्यान आया कि माभाई अपना है—स्मिथ पराया है। माभाई का दिखावा व्यवहार और रिझाने की उत्कटा उसकी अपनी अधमता क साक्षात् प्रतीक थ। सुमन को घोर लज्जा जलाय डाल रही थी।

थोड़ी देर तक स्मिथ देखता रहा और माभाई को कुर्सी तक देने क लिय कोई आदेश न दिया।

'वेल! पाँच मिनट के अविरत मौन के बाद कलेक्टर ने कहा।

गुड मार्निंग साहब गुडमार्निंग मडम साहिब—

हर शब्द पर नीचे झुक कर टूटी फूटी अंग्रेजी में मामाई बोला आई होपर टूडे मेम साहिब वय डे—ग्रेट जाय आई मेम, मेडम साहिब नावल वुमैन मन्र आप पिपुल आई हानर गिवस—नो फन्ट्री।

एसी अनुपम अग्रजी का प्रयोग कर सेठ मामाई यह देखने लगा कि उसका असर क्या होता है पर इतने मे दो चपरासी एक बड़ी भारी फलो की टोकरी उठाकर ले आये। उसे देखकर मेम साहिबा प्रसन्न हुई ओ ! ए टुमारा है ? उत्साह मे खड़े होते हुए उन्होंने कहा।

सेठ मामाई यह मेहरबानी देखकर प्रेम से पुलकित हो उठा। यस मेम साहिब आल गाडन—योअर हमबल सरवैंट आल फस्ट—योअर हमबल सरवैंट आल अन्डर योअर हारनस फीट ग्रेट जाय मेम साहिब बमरे।

मेम साहिब के टोकरी का ढक्कन खोलते ही वातावरण आनन्दमय खुशी से गूज उठा। इस आनन्द के भागदार लोग मुह पर एक कृत्रिम हास्य प्रकट कर देखते रहे। रायबहादुर माधवलाल बूढ़ दरबारी की तरह हँसे। सेठ मामाई भी पहले की भाँति मुस्कराता रहा।

स्मिथ ने एकाएक ताली बजाकर तथा जोर से चिल्ला कर पुकारा, रे जमादार ! गधा ! बेवकूफ ! कुर्सी ला ! देखता नहीं मामाई सेठ खड़ा है ! साहब के चिल्लाने से सब चौंक पड़े लेकिन देखा कि यह तो सिर्फ मजाक था अतः सब के सब खिलखिलाकर हस पड़े। इस हँसी के बीच जमादार ने कुर्सी लाकर रक्खी और सेठ स्मिथ और मिसेज को सलाम कर कोई बात नहीं कोई बात नहीं कहते हुए कुर्सी पर बैठ गया।

जब तक मेम साहिब ने टोकरी से इधर-उधर देखा भाला तब तक सब बैठे रहे फिर उसने उठकर मामाई से कहा, 'मामाई सेठ, इस बाक्स में क्या लाया?

हाथ मलते हुए सेठ मामाई उठे पगड़ी ठीक करने के लिये सिर पर हाथ रक्खा और काले डिब्बे की ओर बढ़ा। मेम साहिब योअर अनमदिन घट खुशी ग्रेट बे आई, हमबल सरवट मेम साहिब आई पिक स्पलाइडे स्पगल डाईनर। आई ब्रिंग माई वाटर माई टी, माई मिल्क माई सुगर माई स्टोव माई केरोसिन आइल। आई मेक टी विद माई हैंडस मेम साहिब डरिंक टी हूर ग्रेट हैड स्पलैंडे स्पेशल डानर। इतना सब बोलने पर जोर पड़ने के कारण हाथी दाँत के कालर में अँगुली डाल कर सेठ ने उसे ढीला किया।

सब हैरान रह गये। पहले तो मामाई क्या कह रहा है किसी की समझ में आया नहीं पर हाथों के इशारे से उस के मुँह पर के भावों से उसकी टूटी-फूटी भाषा से कुछ थोड़ा आभास पड़ा लेकिन नीचे बैठ कर जब उसने पेटी से मदारी का झोली की तरह सब चीजें निकालना आरम्भ किया तो सब चकित रह गये। इन प्रशंसा-चकित प्रेक्षकों के सामने मामाई ने खेल दिखाना जारी ही रक्खा दिस स्यू स्टाव पर केज बवे दिस मिल्क माई मिल्क मेम साहिब माई काउस मिल्क दस इज टी चाइना टी माई वार ब्रिंग संग घो धाप कालबादेवी रोड बम्बे।'

जैसे-जैसे मामाई इन चीजों को निकालता वैसे-वैसे ही दूर खड़े हुए सिपाही स्मिथ और श्रीमती स्मिथ तथा मायकसाल के हँसने का पार न रहता। सुदर्शन का मुख गंभीर हो गया था। उसकी आँख में उग्रता छा गई और होंठ गुस्से से काँपने लगे। पिता के इस स्वरूप को सुदर्शन ने बड़े गम से देखा।

इतने मे आँगन में कोई आया। चपरासी ने कार्ड लाकर रखा। स्मिथ की कार्ड पढ़ते ही भौंहें तन गई।

'कौन है?' वृद्ध माधवलाल ने पूछने की हिम्मत की।

'मुझे परेशान करने वाला कायरामन!' कठोर तिरस्कार से स्मिथ ने उत्तर कहा। मिसेज स्मिथ ने कन्धे उचकाए। नया आगन्तुक एक प्रतिष्ठित वकील था पर कुछ दिनों से कलेक्टर पूजा की उपेक्षा करने से साहब की डायरी से उसका नाम निकाल दिया गया था।

कौन दलाल! माधवलाल ने कहा यह अब आपके पास आने लगा है! सब रास्ते रोक के। कांग्रेस में तो वह बहुत वर्षों बाद गया था।

'प्रमोदराय तुम तो जानते हो। स्मिथ ने कहा 'इसे सरकारी वकील होना है इस लिये चक्कर लगाता है। दो-तीन बार तो मैंने मिलने से मना तक कर दिया था। आज उसे उसके योग्य स्थान बता आता हूँ। कह कर स्मिथ गुस्से से उठा। उसके मुँह पर आने वाले का अपमान हो उसका मन दुखे ऐसे प्रत्येक भाव झलक रहे थे।

बुलाओ।

स्मिथ वहाँ से उठ कर पोर्टिको के आगे आ खड़ा हुआ। दोनों तरफ चपरासियों की पंक्ति खड़ी थी। दूर चबूतरे पर सरकार के कृपा पात्र व्यक्तियों का समूह था। साहब सीधा कमर पर हाथ रक्खे मुँह पर तिरस्कार का भाव ला कर खड़ा रहा और सामने से दलाल वकील नया अंग्रेजी का कोट सफेद साफा और सफेद दुपट्टे में मुस्कराते-मुस्कराते आया। जैसा कृत्रिम और अधम हास्य इस बंगले में आने वाले प्रत्येक दरबारी के मुख पर फैला रहता था वही उसके मुँह पर भी फैला हुआ था।

एक दम जैसे बिजली कड़की हो स्मिथ गरजा 'ह्वाट डू यू वान्ट?'

'गुड मार्निंग सर!' मुस्कराते हुए वह नीचे झुका दुपट्टा ठीक

कर फिर सरकारी वकील होने के इच्छुक नवागत ने कहा, 'नथिंग सर ! ग्राई केम टू सी यू सर !'

स्मिथ का छः फुट लम्बा शरीर इस प्रकार सीधा तन गया जैसे फौज की कवायद में हो। उसने एक दम दोनों हाथ सिर पर सीधे उठाये। वल हेयर ग्राई एम। सी मी। डिड यू ? गाऊ गुड मार्निंग ! कह कर स्मिथ वहाँ से तिरस्कार-पूर्वक घूमा और लम्बे डग रखता हुआ चला गया।

सिपाहियों की हँसी में माधवलाल मिसेज स्मिथ और माभाई के दूर से सुनाई देते हुए अट्टहास में अपमानित वकील साहब भड़कदार कपड़ों की दयनीय स्थिति में अल्पता का अनुभव करते हुए बहुत दिनों वाले सरकारी वकील बनने के स्वप्नों को अदृश्य होते हुए देख रहे थे।

स्मिथ जब दलाल से मिलने गया तब प्रमोदराय माभाई की तरफ गये। बोले—

सेठ यह सब क्यों लाये थे ?

माभाई ने वही सूत्र उच्चारण किया।

ठीक है लेकिन यह सब अच्छा नहीं लगता। चाय तो यहाँ साहब ही देगा। अपने देशवासी का साहस देखकर प्रमोदराय को भी लाज आने लगी थी।

माभाई ने जरा तैश में देखा मेरे हाथ की चाय मेम साहब अब पीने वाली हैं।

प्रमोदराय चुप। सुमन ने पिता की ओर कृतज्ञता की दृष्टि से देखा। इस फिसलन पैदा करने वाले मक्खन के अगाध सागर में एकमात्र यही तो स्थिर बिन्दु था।

दलाल को विदा कर साहब लौटा और उसने आराम कुर्सी पर जरा आराम करने का बहाना कर पर फैला दिये। अब और कैसे बोलना चाहिए यह निश्चय करने के लिए वहाँ बैठे हुए भारतीय बोने

के लिए तैयार किसान जस बादलों को नरक देखता है—वह ही। हम अंग्रेज की तरफ देखते रहे।

वैल सवड। श्रीमती स्मिथ ने सहानुभूति प्रदर्शित की।

ऐसे आदमी का मेरे यहाँ कोई काम नहीं। अच्छा माभाई! अब तुम्हारी चाय का क्या हुआ?

यस सर! यस मडम साहिबा। माभाई एक दम कुर्सी पर से उछला और स्टोव की ओर मुड़ा माई टी रैडी फाईव मिनटस।

गुड। श्रीमती स्मिथ ने कहा 'पर मैं ही चाय मँगा रही हूँ तुम्हें बनाने की जरूरत नहीं। व्हाय चाय लाओ!

नो नो! नो मडम साहिब! माई टी माई मिल्क रडी माई हैंडस। स्पेशल के स्पेशल आनर—मस्ट टेक माई टी। युअर टी—थ्रस, पुअर माई टी रफ। मेहरबानी, आप पुअर सरवट—मी। माई टी—मैडम साहिब। सेठ माभाई की रुक-रुक कर बोला।

पर श्रीमती स्मिथ पक्की निकली। सेठ माभाई को स्वयं अपने ही द्वारा प्रदर्शित की हुई सेवा—भवना बुरी लगी। अत मे समझौता हुआ। सेठ की सामिग्री मेम न अपने नौकर को दी और व्हाय की लायी हुई चाय माभाई ने सब को पेश की। गाँव की गप्प और साहब की खुशामद के बीच आधा घंटा कट गया। चाय खत्म होते ही सब ने विदा ली। माभाई न हर्षित होकर कोर्निस अदा की और अँग्रेजी भाषा की मिट्टी पलीद करनी जारी की। अपनी प्रतिभा का छाप सब पर छोड़ गया। जाते वक्त स्मिथ ने हंस कर पीठ ठोकी तो सेठ की खुशी का पार नहीं रहा।

यू आर ए ब्राउन राईट। साहब ने एक दम रुक कर शब्द बदल दिये, ऐ राटर—वैल मी विल ऐक्सपेक्ट यू आन मिस्टरज स्मिथ'ज नक्स्ट थर्स डे।

अब अमोलराय की बारी आई।

अमोलराय तुम्हारा लड़का ठीक तुम्हारे जैसा ही होना माँगता है।

कह कर मिसेज स्मिथ ने सुदर्शन की ठोडी उँगली से उचका कर कहा, मेरे ख्याल में तो माभाई ने इस बेचारे को घबरा दिया है।

सिर पर हाथ रख अपनी सलाम बजा कर सुदर्शन ने विदा ली।

आती बार सब माधवलाल की फिटन में आये। सेठ माभाई रोटर—रोटर शब्द याद कर रहा था। इस शब्द तक उसका अंग्रेजी का ज्ञान पहुँचा न था पर बादशाह के अगले जन्म दिवस पर उस में रावसाहब' बनने की शक्ति थी, *यही विचार उसे कौंध रहा था।*

(५)

सुदर्शन एक अजीब-सी अवस्था में घर आया। आज का पूरा संग उसे प्राणघोट लगा।

गुलामी कल दिवस के निमंत्रण ने उसको चोट पहुँचाई अपने पिता की पराधीनता से उसकी आत्मा छटपटा उठी। आँगन के बाहर गाड़ी छोड़कर अन्दर जाने के अनुभव से उसके आत्म-सम्मान को ठेस पहुँची और उसके पिता की और माधवलाल की चाटुकारिता भरी बातों ने उसे क्रोधित कर दिया पर माभाई के रूप रंग और ढंग उसकी खुशामद और बोलचाल दलाल के प्रति स्मिथ का व्यवहार इनमें से हर वस्तु ने उसके गौरव और अभिमान पर बेहद चोट पहुँचाई थी। इन आघातों के असर से उसका गर्व मिट्टी में मिल गया था।

उसे केवल एक बात का ध्यान रहा कि उसका और उसके पिता का गौरव उसकी और उसके पूर्वजों की महत्ता केवल उनकी झूठी कल्पना है। सबके सब—माधवलाल, प्रमोदराय यह स्वयं—एक—मात्र अलग-अलग स्वरूप में सेठ माभाई और दलाल वकील थे। अभी कुछ दिन पहले सीखी हुई संस्कृत सूक्तियों में से एक चित्र उसके मस्तिष्क में आया। उन सब की क्रिया में जीवन का अभाव था।

उसकी पीड़ित कल्पना-सृष्टि ने एक महान् मूर्त्ती की *व्यापकता का निर्माण किया। वह स्मिथ के बँगले की तरफ जा रही थी। माभाई सेठ* जैसे बँगले में बैठकर चाय पीकर पूछ फिटकार रहे थे। दलाल जैसे

कुछ बँगले में न जा सकने के कारण निराश हृदय से बाहर ही बठे हुए अपनी पूछ हिला रहे थे और चबूतरे पर बठकर चाय पीने की लालसा के लिए एक दूसरे की तरफ देख रहे थे।

परशुराम और सगर भीष्म और कृष्ण चाणक्य और शिवाजी बादलों मे दिखाई देने वाले बस मेघ थे। क्रामवेल, चैथाम खान आफ आक नेपोलियन और दूसरे वीर—स्मिथ के वीर मास्टर की तरह थे। वह खुद भी तो एक छोटा मामाई था। वह उनकी तरह पूछ हिलाता। उसके सम्बन्धी दूसरो से भीख माँगकर जीते थे दूसरों के पर चाटकर नाचते थे। उसकी मानवता एकमात्र दूसरों के टुकडे खाकर जवित रहने में ही थी। मक्खी की नही रतनबाई की नही। किन्तु उससे भी निर्जीवता मामाई की सी पराधीन अधमता के आस्वादन मे ही उसके जीवन का साफल्य था।

गुम्शान इस प्रकार शम के गड्ढ में पड़ा हुआ था। अब डुबकियाँ लगाने की शक्ति भी बाकी न रही थी। अपनी प्रिय पुस्तकों को अपने नीच और पतित स्पश से वह कलकित न कर सका। वह दीन अधम खुशामदी और पराधीन मनुष्य जतु था। उसके जसों की अधमता पसार प्रसिद्ध थी। उसके कलक को दसों दिशाओं मे फलाने के लि सूरज प्रतिदिन उदय होता था और तीनों लोकों मे कोई भी जगह ऐसी नही थी कि जहाँ छिपकर वह अपनी दीनता की लज्जा छिपा सक। उसे याद आया—

साङ्गुलघासनमधरचरणावपात
भूमौ निपत्यवदनोदरदर्शनं च।

अपने को तथा अपने जसे दूसरे व्यक्तियो को धिक्कारता हुआ दिन सारे दिन सिर मे दर्द का बहाना लेकर सोता रहा। उसकी आँखो में कई बार आँसू निकले कई बार उसका मन मसक र रोने का हुआ। इस कमजोरी का अनुभव करते हुए उसने अनेक बार मृत्यु को बुला दिया।

पर रात में उसकी आकुलता का पार न रह पाया। अंधकार के प्रभाव से उसकी अहमन्यता और भी क्षुद्र और निर्जीव हो गई। उसको किसी तरह भी नीन्द नहीं आई।

हर तरफ से कुत्ते जीभ बाहर निकालकर भागे चले आ रहे थे। चारों दिशायें पूछों की फटकार से गूंज रही थी। पूछों की कतार की कतार पानी के रेले की तरह उसके आगे घुसी चली आ रही थी। कितने ही पूछ वाले पगड़ी पहने हुए कितने ही टोपी लगाये हुए उस तरफ आ रहे थे। उस निविड अंधकारपूर्ण कुत्तों की दुनिया में भी वह माधवलाल मामा और अपने पिता की पूछ पहचान सकता था। वास्तव में वे सब सूखी हड्डियों की कतार जैसे मरियल और रोमांचित कर दें ऐसे रंग के अहमदाबाद की गलियों के सड़ियल कुत्तों की तरह ही थे।

आस-पास के कुत्ते छिप से गये थे और उनका समूह क्षितिज पर जहाँ तारे चमकते हैं फैल गया था।

वह बीच में खड़ा था और उसपर भी जोर से हिलती हुई पूंछ थी। उसकी कमर में और पैरों में 'रतनबाई' के जैसे घुंघरू बंधे हुए थे। उन घुंघरुओं की झनकार से सब खिंचे चले आते और लटकती हुई जीभ और हिलती हुई दुम का तमाशा दिखाने के लिये कहते और आगे चलने के लिये प्रार्थना करते। किसी जगह—कहाँ यह तो स्पष्ट नहीं वे जाना चाहते थे। और वहाँ जाने का रास्ता भी केवल उसे ही मालूम था। महाशोक से उसका दिल भर आया। वह अकेला ही रास्ता जानता। इस पर भी उसे वह मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था।

समूह बढ़ता गया। आसमान में भी पूछ, जीभ और आँखें उड़ने लगीं। सब उसकी विनय कर रहे थे और साथ ही उनको घबरा देने के लिए गुर्रा रहे थे। सब कोई वहाँ जाना चाहते थे लेकिन रास्ता तो वही जानता था वह चलने लगता पर चलते न बनता। उसने बोलना

चाहा किन्तु बोल न सका। उसकी पूँछ में हिलने की शक्ति भी घटने लगी।

पर कोई आवाज हुई और सब डर गये। सब डर से व्याकुल होकर एक दूसरे पर कूदने लगे। फिर आवाज हुई और सब भाग निकले। चारों ओर वे दौड़े। किसी का जी भी ठिकाने न था। किसी की पूँछ या पर दिखाई नहीं दे रहे थे। एक बार कूदते एक दूसरे को पीछे ढकेलते सब भाग निकले और विशाल पर्वतों के खण्डहरों में छिपने लगे।

पर उसके लिए कहीं भी जगह न थी। जहाँ भी वह जाता वहीं एक अनिवार्य-सा भय दिखाई देता था। चारों ओर से रास्ता घिर जाता और वह पीछे लौटता। न भौंक सकता था और न पूँछ हिला सकता था। उसे कोई दिखाई ही नहीं देता था। फिर भी अपने प्राणों में एक प्रकार की घुटन का अनुभव कर रहा था। वह मीलों तक दौड़ा—युग युग तक, पर न तो डर मिटा न दौड़ना ही रुका और न सफर ही खत्म हुआ। दिशाओं में उसके लिए स्थान नहीं पर्वतों में उसके लिए जगह न थी नदियों का जल भी उसे अपने मुख में नहीं लेता था। उसने कोई काम ऐसा किया था कि जिससे दुनियाँ ने उसका बहिष्कार कर दिया। भयंकर शाप से पीड़ित, अनन्त काल तक वह परों में पूँछ दबाये हुए दौड़ता ही रहा कारण समझ में न आता था अन्त में कारण समझ में आया उसने भाभाई सेठ की गाय का दूध पी लिया था, और उस अपराध को क्षमा करने की शक्ति क्षीरसागर वासी विष्णु में भी नहीं थी

सुन्दन काँपता हुआ खड़ा हो गया। उसका शरीर पसीने से भीगा हुआ था। उसने आँखें खोलने की कोशिश की। दिये के क्षीण प्रकाश में फिर उसे पूँछ पटकती हुई दिखाई दी। पर उसने थोड़ी देर में गंगा भाभी और प्रमोदराम को अपने-अपने बिस्तर पर सोते हुए देखा।

यम से अधिक भयकर भय से काँपता हुआ वह अपने मुह को रजाई लपेट कर पड़ा रहा ।

प्रात काल होते ही रात्रि का त्रास तो जाता रहा, पर अधमता का भास और अधिक तेज हो गया था। सेंट हेलेना में तड़प कर मरते हुए विश्वविजेता नेपोलियन की क्रोधपूर्ण निराशा ने उसके हृदय में अपना घर बना लिया था। सुदर्शन मे साहस था अत उसने तुरन्त ही इस निराशा की सीमा तथा गहराई को खोजना आरम्भ कर दिया। सगर शिवाजी तक जिन्होंने हमेशा विजय का गौरव धारण किया था वे आज मामाई सेठ कैसे बन गये ? उसे अपनी बल-बुद्धि की चरम सीमा का पता लगा उसके अध्ययन म उसके विचारो और स्वप्नों में इस प्रश्न का निराकरण नही मिला ।

उस दिन के प्रसगा म उसे स्मिथ का अपराध तो जरा भी दिखाई नही देता। उग्र प्रमोदराय विनीत हो जाय प्रतिष्ठित माधवलाल चाप लूसी करे, धनी मामाई विदूषक-सी हास्यपूर्ण नीचता दिखावे विद्वान् दलाल लालच का मारा हुआ नाक रगड़े फिर स्मिथ और क्या करे ? स्मिथ ठहरा शक्तिशाली स्वतन्त्र और सत्ताशील। इन सबको शक्तिशाली स्वतन्त्र और सत्ताशील होने से रोकता कौन था ? ये सब प्रस हाथ गुलाम नीच और दुम हिलाने वाले कुत्ते हो कसे गये थे ?

उसका ध्यान पादरी की लिखी हिन्द के इतिहास की ओर गया सिहगढ़ से स्मिथ के बँगले तक की भारतीय घटनाओ को समझने का प्रयत्न उसने किया। पादरी ने अँग्रेजी धृष्टता से इतिहास लिखा था और भारतवासियों की शक्ति न्याय अथवा विचारों को सम्मान देने की परवाह न की थी। उसकी समझ में यह हिन्दुस्तानी यानी जगली और अशक्त अँग्रेज यानी देवदूत और पूरा इतिहास यानी काले रावण पर स्थापित की हुई गोरे राम की विजय रामायण थी। सुदर्शन ने इस अधमता के विष को घूट घूट कर पिया। हर घूँट में पराजय, निर्वीर्यता और अव्यवस्था जाग्रत हुई। कम्पनी भाई पट्टा लिया मेग बनाये

भारतियों को ही भारत के खिलाफ तैयार किया, देशी राजाओं को आपस में लड़ाया, पलासी के मदान में कम्पनी ने हिन्दुस्तानियों के खून से ही भारत की सत्ता खरीदी मसूर का पतन हुआ अवध का पतन हुआ और बगाल का पतन हुआ अन्धकार में भागते हुए—घबराये हुए—सनिकों की तरह हिन्दुस्तानियों का ही गला काटा। मुगल राज्य का विशाल गौरव धूल में मिल गया। मराठों की सत्ता गिर गई। खिड़की के मदान में व्यापारी कम्पनी हिन्दुस्तान की मालिक बनी। सन् सत्तावन के विद्रोह म अंग्रेजों ने मुगल सिंहासन पर भी अधिकार कर लिया और सुदर्शन फटी हुई आँखों से लज्जा से काँपता पराजय की तीव्र वेदना से तड़पता हुआ हाथ से पुस्तक फेंक कर निराश होकर जमीन पर पड़ रहा और देश की नीचता का कलक अपने गर्म-गर्म आँसुओं से धोने का व्यर्थ प्रयत्न करता रहा।

(६)

दुःख के पाताल में सुदर्शन जरूर दब गया था पर फिर भी उसकी कल्पना नहीं घटी थी। लज्जा से तीव्र वेदना का अनुभव वह कर रहा था इस पर भी अपनी कमजोरी का स्पष्टीकरण और उसके मूल में छिपी हुई कल्पना का संशोधन उसने जारी रखा।

अपनी कमजोरी का स्पष्टीकरण उसने अपने दिमाग में उत्पन्न होने वाले विषय अविचार से किया था। उसने देखा वह—और उस जैसे सब ही निर्जीव थे और इसी कारण उन्होंने पलासी और खिड़की के मैदान में भारत हाथों से निकल जाने दिया और आज भेड़ों के झुण्ड की तरह एक गड़रिये द्वारा हाँके जा रहे थे।

कितने ही सवाल उसके कान में गूँजा करते थे। वह खुद और सारे भाभाई कैसे थे? विषय सत्ताधारी क्यों? पलासी और खिड़की के मैदान में क्या हारे? विषय क्यों जीता। इगलैड ने भारत पर कसे विजय प्राप्त की? भयंकर सवाल! इतिहास समाज-शास्त्र राजकीय विकास के इन बड़े प्रश्नों का निराकरण एक अजान बालक की धृष्टता से उसने

मांगना चाहा। त्रिकालज्ञ को भी दुर्लभ प्रश्नों का निराकरण न होने से वह अपने विचारों से दृढ़ होकर और भी गंभीर अध्ययन गहन निरीक्षण और सूक्ष्म संशोधन करने बैठा।

थोड़े दिनों बाद वह अपने पिता के साथ वहाँ के क्लब में गया। उसके माधवलाल प्रमुख तथा सेठ मामाई और दलाल बड़े सदस्य थे। सुदर्शन को ऐसा महसूस हुआ कि इस क्लब की स्थापना इस मतलब को लेकर हुई कि सरकारी कृपा में एक दूसरे को आगे बढ़ने या पीछे रहने का मौका मिले। वहाँ के वातावरण में खुशामद मतलब ईर्ष्या और अधमता थी। वहाँ सब की दृष्टि जज कलक्टर सुपरिटेंडेंट पर अनिमेष नयनों में तथा पूज्य भाव से ठहरी हुई थी। वहाँ जाने से उसे मामाइयों की मनोदशा का काफी ज्ञान होने लगा।

कुछ माह के बाद उसके गाँव में वायसराय महोदय पधारे। गाँव में महोत्सव पूरी तड़क-भड़क से मनाया जाय इसलिए एक समिति बनी। माधवलाल प्रमुख थे मामाई मन्त्री और उसके पिता उत्साह प्रेरक थे। सब लोग एकत्रित हुए और चन्दा एकत्रित किया गाँव तोरन और फूल-पत्तों से सजाया गया। एक दिन नौ बजे चार घोड़ों की गाड़ी में एक गोरे साहब गाँव के बीच में से घोड़े दौड़ाते हुए निकले। दोनों तरफ पुलिस ने लोगों को रोक रक्खा। लड़कियों ने गीत गाकर फूल बखेरे। सभा हुई और इनाम बाँट गये। रात को कलेक्टर के बँगले के सामने जोरदार आतिशबाजी की गई।

जब सारा गाँव इस महोत्सव का आनन्द ले रहा था उस समय सुदर्शन होठ भींचे हुए अजीब बेचैनी अनुभव कर रहा था। इस महोत्सव का कार्य का भार उसके पिता पर था और इस स्वागत और सम्मान की तैयारियाँ किस तरह हुईं यह भी उसने देखी और सिपाहियों को प्रसन्न करने के लिए उत्साह प्रकट करने के जो प्रयत्न किये गये थे वे भी उससे छिपे न थे। लज्जा के मारे उसने आँखों को ढक लिया।

पाँच

भड़कती हुई चिनगारियाँ

(१)

निराश हृदय म सपन नहीं उपजते अत स्वप्नहीन सुदर्शन आसानी
स मट्रिक परीक्षा म पास हो गया। पिता-माता सग-सम्बन्धी सभी खुश
हुए पर एक मात्र सुदर्शन को ऐसा लगा कि जस 'रतनबाई' को एक
घु घरू और अधिक बाँध दिया गया।

अब सुदर्शन ज्यादा गम्भीर ज्यादा एकान्तप्रिय तथा अल्पभाषी हो
गया था। निर्जीवता का ज्ञान सचय करने म उसका सम्पूर्ण उत्साह
विलीन हो गया। किन्तु पहले प्रयास म ही मट्रिक पास कर लेने वाल
इस महारथी को निरुत्साही कौन समझ सकता है?

उसके अनुभव के साथ-साथ उसकी व्यवहार की बुद्धि भी बढ़ी
और उसकी तीव्र दृष्टि ने वस्तु का सही रूप म देखना आरम्भ किया।
और परीक्षा के बाद की छुट्टियाँ उसने चारा ओर का निरीक्षण करन
ी तथा इतिहास पढ़ने म और अपने स्वप्नो के भग्न-गौरव खडहरों म
ी बिताई।

कमी क विष का पूरा-पूरा आस्वाद लने क लिय भावना ने उसक
य म डक-सा मारा और जो पुस्तक इस भावना का पोषण करे वही
न पढ़ना आरम्भ किया। अपनी अक्षमता को अपनी आँखा से न
र दूसर की आँखों स देखने की इच्छा पदा हुई।
क्रोध द्वप और लालसावश उसने बंगाल का बगाली बाबू का

दो एक साल छोटी थी। बार-बार वे दोनों मिलते हँसते और यदि सुदर्शन का मस्तिष्क गम्भीर न होता तो खेलते भी।

सुदर्शन को स्त्रियाँ जरा भी अच्छी नहीं लगने पाती। उनको देख कर उसे जरा क्षोभ हुआ करता। उसकी धारणा थी कि स्त्रियाँ सयोगिता की तरह पृथ्वीराज का पर पकड़कर नीचे गिराने के लिए ही पदा हुई थी। उसके जीवन में स्त्री के लिये कोई स्थान है यह उसे दीखा नहीं। एक दिन उसके माँ-बाप उसके विवाह की बात कर रहे थे उसने सुनी। यह बात उसके मस्तिष्क में कभी भी न आई थी कि किसी दिन उसे भी विवाह करना पड़ेगा बात आज आई। दूसरे दिन उसे गमन मिली। उसकी शादी होने वाली है ऐसी बातें होती हुई उसने सुनी थी।

गमन! तेरी शादी होने वाली है?

हाँ मेरे बाबूजी कह तो रहे थे। लज्जा से हँसते हुए गमन ने कहा तुम्हारी शादी कब होगी?

मैं शादी नहीं करूँगा।

यह कैसे हो सकता है? जरा रुक रुक कर गमन ने कहा।

अरे बहुत से लोग ब्रह्मचारी रहते हैं।

संसार में रस लेने वाली गमन हँसी 'तुम से भी कहीं ब्रह्मचारी रहा जा सकता है? तुम्हारे बाबूजी जरूर ब्याहेंगे। पर कहो तो सही। जरा नीचे देखकर लड़की ने कहा तुम्हें विवाह करना अच्छा क्यों नहीं लगता?

मैं किसी को जानता ही जो नहीं। किससे शादी करूँ? सोचते हुए सुदर्शन ने कहा।

तुम्हारी माँ जानती होगी न?

इससे मुझे क्या लेन देन? सुदर्शन ने गम्भीर होकर कहा और हर एक बात में उम्र से अधिक गम्भीरता रखने की आदत होने के कारण एक अनजान लड़की के साथ विवाह होने के डर से बहुत अधिक

डरावना हो उठा और उसके मुँह से निकल ही गया मैं तो तुम्हें जानता हूँ। छोकरी खिलखिला कर हँस पड़ी हाय माँ! कहीं मुझ से भी तुम्हारी शादी हो सकती है? वह हँसा। उसने सुदर्शन की ओर भय से देखा।

'क्या नहीं?

मैं कहीं तुम्हारी जाति की भी हूँ?

तो इससे क्या होता है? सुदर्शन ने कहा।

तो मैं दूसरी जाति की जो हूँ।

इससे क्या?

'शादी नहीं हो सकती। पागल हो गये हो? कह कर गमन चली गई। इतना बड़ा लड़का इतना भी नहीं समझता? उसे कुछ अजीब सा लगा।

सुदर्शन एक भयंकर वृत्त के पंजे में था। भयानक व्यग्रता तो उसकी आत्मा में बैठ गई थी—और इस लड़की की हँसी और जिस निश्चलता से उसने प्राप्त किया था इन दोनों से वह जिद में भर गया। विस्मृति का आवरण मस्तिष्क पर छा जाने से पहले ही वह अपना जिद को अंतिम थोड़ लगाकर ऊपर आया।

वह अपनी माँ के पास आया। माँ! तुम कुछ मेरी शादी की बातें कर रही थीं पर मुझे शादी नहीं करनी।

गंगा मामी हँसी तू इतना बड़ा हो गया पर कभी ऐसी बात है कि !

'यदि मेरा विवाह करना ही हो तो गमन के साथ करना। उसने हकम सा दिया।

'अरे पागल हो गया है। उसके मस्तिष्क में वही धन्ध गूँज उठे बान्स हटा। उसने दाँत पीसकर पर पटके और आँखें निकाल कर बोला हाँ मैं पागल हो गया हूँ। अब कुछ और कहना है? यह

न करो और वह भी न करो। मैं कुछ मानने वाला नहीं। कह कर
क्रोध से पर पटकता हुआ जीने पर चढ़ गया।

(२)

सुदर्शन की रग रग में एक ऐसी विचित्र सरसराहट हुई जैसी देवदारू के वनों में होती है। उसका छोटा-सा शरीर उग्रता से काँप उठा। उसकी आँखों में एक प्रकार का तेज चमका। उसके हृदय-सागर में तूफान आया। इस निर्जीव प्रसंग से उसके जीवन को लपेटे रहने वाला भयंकर बादल अपनी घुटन का अन्त कर छिन्न भिन्न हो गया।

मेरे पूर्वज बुरे मेरा देश गरीब मेरा इतिहास कायर मेरी दुनिया छोटी मेरी जात छोटी-सी मेरे पिता नौकर मेरे रिश्तेदार कुत्ते मैं रतनबाई मैं कैसे सह सकता हूँ मैं वायसराय कैसे हो सकता मैं शिवाजी कैसे बन सकता मैं विश्वामित्र कैसे हो सकता मैं अविवाहित कैसे रह सकता मैं गगन से विवाह कैसे कर सकता हूँ—मैं कुछ नहीं कर सकता। सब ने मेरे लिये सब कुछ तैयार कर दिया है और मुझे सब के तलवे चाट-चाट कर जिन्दगी पूरी करनी है। मैं कुछ नहीं करूँगा। मेरा कोई नहीं है। मेरे पूर्वज नहीं—बाप नहीं माँ नहीं—स्त्री नहीं मैं ब्राह्मण भी नहीं—मैं हिन्दुस्तानी नहीं। नहीं—नहीं—हूँ वह तो मैं ही हूँ मैं किसी का बनाया हुआ स्वीकार नहीं करूँगा। मैं किसी का कहा मानने को तयार नहीं। मैं सब कुछ तोड़ डालूँगा। मुझको चारों तरफ से कुचलना शुरू कर दिया है पर मैं कुचला नहीं जा सकता। यदि निर्माण नहीं कर सकता तो सत्यानाश तो कर सकता हूँ। मैं बदिरा की दिशा में नहीं। मैं मर भले ही जाऊँ पर सब तोड़-फोड़ कर चौपट कर दूँगा।

उसकी घुटन समाप्त हो गई। आँधी की विनाशक वृत्ति ने स्वभाव और संस्कार के मूल को हिला दिया। प्रलय की मूसलाधार वर्षा में सब धुल धुल कर बहा जाने लगा। बाल्यकाल का क्रोध उसे प्रेरणा देता रहा। वह अपनी मेज के पास गया और इतिहास तथा उपन्यास

की प्रिय पुस्तकें मेज़ के नीचे फेंक दी। दगाबाज़! यहाँ पड़ी रहो मुझे अब तुम्हारे साथ कुछ लेना देना नहीं। उसका छोटा-सा शरीर चढ़ाये हुए धनुष की तरह तन गया था और बाण छोड़ने की अधीरता में जरा ही देर के बाद ही कांप उठा। उसके दिल में तूफान ने हास्य-जनक पागलपन का रूप ले लिया।

लम्बे-लम्बे कदम रखता हुआ वह पड़ौस के मन्दिर में जा पहुँचा। महादेव की प्रार्थना या फ़रियाद करने की उसे जरा भी परवाह न थी। वह धृष्टता से अपने देवता के पास गया।

'यहाँ बैठ-बैठ क्या करते हो? कितने साल हो गये तुम्हारी पूजा कर तुम्हें रिझाया तुम्हारी पूजा की फिर भी अन्त में हमारी और तुम्हारी यह दशा! बुड्ढे और निकम्मे देवता। तुम्हारे जैसे आसक्त की पूजा मैं आज से नहीं करूँगा। तुम मेरे देवता नहीं मैं तुम्हारा भक्त भी नहीं तुम अपने रास्ते और मैं अपने रास्ते?' इतने में उसकी नजर अपने जनेऊ पर पड़ी। उसने एक दम जोर से जनेऊ निकाल डाला और इतने वर्ष तक जिसे पवित्र से पवित्र गिना था उसे तिरस्कार से देखने लगा। 'डोरी! धागा! आज तुझे कतई न पहनूँगा!' वह खिल खिलाकर हँसा बलस्तु तेज'।

बल और तेज तुझमें और हमारे में। नहीं—नहीं तुझे पहना कि बल गया तेज गया। तुझे पाकर हम क्या मिला? जब खिड़की के मैदान में मेवाड़ की पराजय हुई तब तू कहाँ चला गया था? रे जा जा! कहकर उसने असाधारण जोर से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये और पीछे देखे बिना ही मन्दिर चला गया। अपनी पुस्तकों अपनी पूजा और यज्ञोपवीत के बन्धन तोड़ दिये तब उसके अपने प्राणों की घुटन कुछ हल्की हुई। वातावरण कुछ साफ हुआ और अब उसने श्वास लिया। वह फिर अपने घर आया और प्रमोद के दीवानखाने में आकर उनकी मेज़ की ओर देखता रहा।

"तुम्हारा भी हमने स्वागत किया तुम्हारी गुलामी को और फिर हमारी यह दशा !

पत्रों के ढेर को अँग्रेजी सत्ता का प्रतिनिधि समझ कर उसको सबा घित किया जहन्नुम में ! आज से मैं तुम्हारा गुलाम नहीं। जो हो सो कर लेना। मैं देख लूगा। उसने मुट्ठियाँ बाँध कर कहा।

सहसा उसने सामने पड़े हुए शीशे में अपनी फरफराती हुई चोटी देखी। एक दम उसमें जलन का उफान आया। और मेज पर से कैंची उठाकर एक ही झटके में ब्राह्मणत्व के अन्तिम चिन्ह का भी अंत कर दिया।

अब उसे ठीक लगा। अब वह आजाद था किसी का बँधा हुआ नहीं। तीसरी मंजिल पर जाकर खिड़की से वह अपने चारों ओर की छतों को विनाश वृत्ति से देखता रहा।

छत के नीचे पलता अधमता मामाइपना और अधकार ही उसे दीख पड़ा। छोटे-छोटे आदमी बरसाती कीड़ों की तरह गंदे छप्परों के नीचे सरसरा रहे थे। हर पत्थर की निश्चेतन महिमता उसे घब राया करती थी या कुचला करती थी। पहले के डर से वह जनेऊ पह नता था दूसरे पत्थर के डर से वह मन्दिर में जाता था तीसरे पत्थर के डर से वह शादी भी कर लेता और पत्थर के डर से वह एक दूसरे को रिझाता पत्थर के डर से ही वह मामाई सेठ बनकर चाय बनाने जाता पत्थर के डर से वह उन्हीं पुराने संस्कारों से लिपटा रह कर अपनी पुरानी पीढ़ियों का ही निर्जीव अभ्यास करता। अगणित पत्थर थे। पत्थरों की छाया जीवन के हर क्षण पर फली हुई थी। कोई भी इस दुनिया में इन पत्थरों के बिना जीता न था। वह अकेला ही इन सब पत्थरों को फटकारता रहा। उसने अकेले ही इन पत्थरों की छाया का अपमान किया और आकाश के नीचे अकेले ही रहने का निश्चय कर लिया था। वह अकेला था। अनेक पत्थर थे वह उन्हें डराता पर स्वयं निडर था। उसने छतों की ओर घूसा तानकर कहा

'एक-एक पत्थर को तोड़ तोड़ कर चूर चूर कर दूंगा ! वह बड़बड़ाया मैं अकेला ही बहुत हूँ मुझ अकेले न ही तुम्हारे जाल म से निकलने की हिम्मत का है मैं अकेला ही तुम्हारा खातमा कर दूंगा ? और हर छत को कैसे तोड़ा जाय इसका विचार वह करता रहा।

उसकी अपनी छत सबस खराब थी उसके नीचे उसन अपनी कल्पना का स्वर्ग जो बनाया था। उसका ब्राह्मण जीवन नष्ट भ्रष्ट हो चुका था। उसकी स्वप्न-सृष्टि विनाश के गम म विलीन हो गई थी। सब पत्थरा म यह पत्थर अजीब रंग का तथा अधिक नाम न वाला था। उसम आज छुटकारा मिला। उसके नीचे से निकलकर दूर जाकर वह उसके खिलाफ खड़ा हो गया। इस पत्थर को तोड़कर अपनी नवीन आज़ादी का उत्सव मनाने का सकल्प उसने किया। यह पत्थर तोड़ना भी आसान लगा। वह एक दम उठा और एक छलांग मारकर उस पत्थर पर उस छत पर जा बैठा। अब इस पत्थर क ऊपर वह था—नीचे नही। उसने नीचे झुककर पत्थर तोड़ना शुरू किया। उसके हाथ म पत्थर के टुकड़े जल्दी जल्दी आने लगे और उनको फेंकते-फेंकते वह थकने लगा। उसे जीत की धुन सवार हो गई। उसन जल्दी जल्दी पत्थर को चूर-चूर करना आरम्भ कर दिया।

प्रमोदराय शाम को घर आय तो मेज पर सुदान की शिखा क बाल पड़े हुए देखकर उनके क्रोध का पार नही रहा। क्या लड़का इतना हाथ से निकल गया कि चोटी काट डाला ? उग्र स्वभाव राय बहादुर ने सदु ! सदु ! कहकर पुकारा पर कुछ जवाब नहीं मिला। पर इतने में छत के ऊपर पत्थर तोड़ने की आवाज सुनाई दी। उनकी कुछ समझ में नही आया और गुस्सा और तेज हुआ। वह एक दम रोशनदान क पास गये और देखा तो सुदान पत्थर के टुकड़े उठाकर चारों ओर फेंक रहा था और हँस रहा था।

सदु क्या हो रहा है ?

जवाब में एक मोटा पत्थर का टुकड़ा उनके पास भी पड़ा।

सुदर्शन खिलखिला कर हँसा। रायबहादुर ने उसे पास बुलाया पर वह आया नहीं। आखिर रायबहादुर छत पर चढ़े और बड़ी मुश्किल से सुदर्शन को पकड़ लाये।

उन्होंने जैसे ही सुदर्शन को पकड़ा कि वह बेजान सा उनके हाथ पर आ गिरा। रायबहादुर ने चिन्ताग्रस्त हो कर उसके माथे पर हाथ रक्खा। सुदर्शन का माथा अँगारे की तरह दहक रहा था।

परीक्षा की मेहनत निराशा और चिन्ता इन तीनों ने सुदर्शन के सुकुमार शरीर पर और मस्तिष्क पर एक न सहने योग्य भार डाल दिया था अब बहुत दिनों तक वह बीमार रहा और उसकी चिन्ता म माँ बाप उसके अंतिम पराक्रम को भूल गये और उसके विवाह का विचार तभी ही बदल दिया।

जब बीमारी चली गई तो सुदर्शन का स्वभाव भी बदल गया। वह जिद्दी और चिड़चिड़ा हो गया। वह इकलौता था और अकेले हाथ ही उसे सबका खण्डन करना है यह ख्याल माँ-बाप के लाड़-प्यार मे सम्बन्धियो की स्नेहमय परवशता मे भी भूला नहीं और बीमारी की रोगिष्ट एकाग्रता मे भी उसको बार-बार स्मरण आया करता था और जैसे-जैसे वह अच्छा हुआ वैसे-वैसे लाड़ले बेटे की सुकुमार मनोदशा के बदले एक आजन्म विद्रोही की-सी कठोर एकांत और आवेशपूर्ण मनोदशा का अनुभव उसे होने लगा।

उसकी उम्र स्वास्थ्य माता-पिता के स्नेह इत्यादि अनेक कारणों से उसको बड़ौदा कालेज में भेजा गया। बोर्डिंग का नया जीवन, दूसरे लड़कों की संगति और स्वतंत्र जीवन व विविध भावपूर्ण पहले तो उसको मुग्ध करने लगे पर थोड़े काल में यह मोह कम हुआ और पहले की वृत्तियाँ फिर सतेज हुई।

रोगमुक्त स्वस्थ और स्वतंत्र वातावरण में उसको नवीन प्रकार और नवीन ताकत मिली। उसको अपना ज्ञान कम, निरीक्षण उसे अल्प दृष्टि-मर्यादा काफी संकुचित और बुद्धि निष्प्रयोजन लगी। उसे

यदि प्राचीन सृष्टि के स्तम्भ उखेड़न हों तो उस सृष्टि का उसकी रचना का उसकी नींव का और उसकी भावनाओं का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिये और विनाश के साधन पद्धति और क्रम निश्चय करना चाहिये। उसे पक्का यकीन हो गया कि केवल एक मात्र इच्छा से ही कार्य नहीं हो सकता।

बहौन कालेज के पुस्तकालय और वाचनालय उसकी पहली उम्मीद को पूरा करने में उपयोगी सिद्ध हुए और प्रथम वर्ष के लड़कों की समझ में न आने वाले विषयों में तथा विचारों में वह डूब गया। यह सम्पूर्ण अध्ययन विद्वत्ता प्राप्त करने के लिए नहीं किया गया था बल्कि विनाश वृत्ति को और सबल तथा समृद्ध बनाने के लिये किया गया था। किसी को ख्याल भी न होता था कि यह छोटा-सा लड़का जैसा पन्द्रह वर्ष का बालक रात-दिन अनवरत रूप से पढ़ता रहता और स्वयं सामाजिक विज्ञान-शास्त्री बनने के और अपने को सामाजिक डाइनेमाइट बनाने के दोहरे प्रयोजन से प्रेरित हो रहा था और इसकी कल्पना ने आगे सदा हो समाज सत्ता और धर्म के अत्याचारी पत्थरों को तोड़—इसी परब्रह्म प्राप्ति के रूप में रमा करता था।

पर इस समय इसके वास्तविक स्वप्न मित्र भी उसे छोड़ गये थे। उसे लगा कि इससे केवल शुद्ध विनाशक ही प्रयोगों में वे बहुत सहानुभूति न दिखाते थे अर्थात् वे स्वयं ही उसकी ओर से भी उदासीन हो गये थे।

पुराने स्वप्नों में एकमात्र द्रव्य भगवान और्व उनके नजदीक रहे कुल और संस्कृति के विनाशक के गम में से जलन करने वाले महर्षि जिन्होंने जीवन भर अपने कोष से मुर्दों तक वर-वह्नि की ज्वाला को फैलाया वह अग्नि दृष्टानुदान के निरुत्साही पलों में उसको उत्तेजना देते। उनका ऊँचा और दुबला पतला शरीर उनकी सफेद लम्बी और विकराल दाढ़ी उनकी अंगारों की तरह दहकती हुई आँखें और उनके

पत्थर एवं क्रूर मुख के भयानक भाव उसके निरुत्साही हृदय को हमेशा प्रेरणा देते रहते।

नय स्वप्नो म भी केवल उसका एक मित्र रह गया था। अंग्रेजो का कट्टर दुश्मन नेपोलियन। छोटे से इतिहास म दी हुई उसकी विस्तृत रूपरेखाओ ने उसे खीच रखा था और उसकी भव्य मुखाकृति ने उसको मुग्ध कर लिया था। जसे ही वह कालेज मे गया कि तुरन्त ही हाथ म आये हुए पसे का पहला उपयोग उसने बम्बई के पुस्तक बेचने वाले के पास उसका जीवन-चरित्र मँगवाने म किया। पुस्तक विक्रेता ने उसको 'एबट का नेपोलियन' भेज दिया।

एबट का 'नेपोलियन' खराब हो अतिशयोक्ति भरा हो या भक्ति स्तोत्रो से परिपूर्ण हो पर गाथा की तरह प्लुटार्क की तरह इसम मानवता का प्रेरित करने के परम लक्षण जरूर हैं। उसम फ्रेंच सम्राट का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। उसकी मदद से उसके पराक्रमी कारनामो में सहयोग मिलता हो ऐसा भ्रम होने लगता है। सुल्तान ने उसे पढ़ना शुरू किया। और जसे-जसे वह उस पुस्तक को एकाग्रता से पढ़ता रहा वसे वसे उसमे वर्णित जीवन महत्ता की धारायें उसको सराबोर करती रहीं भिगोती रहीं और उसकी मानवता का प्राचीन रूप बदल कर उसको नवीन रूप देने लगीं।

उस वक्त भर के लिये पहली बार भास हुआ था। भारत—कान्ति और शान्ति धर्म से सुशोभित यह भारत—सिंहासन पर विराजमान था

सन् १६०२ के जमाने म सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का स्थान बालको के हृदय म क्या था यह तो मुश्किल से ही समझ सके पर सुरेन्द्रनाथ के बाद तिलक तिलक के बाद एनीबीसेंट एनीबीसेंट के बाद गाँधीजी—इस प्रकार ही लोकप्रियता का क्रम कहा जाता है। इन सब से पहले लोकप्रिय व्यक्ति का मोह कुछ अद्भुत था और अन्तिम तीनों—पत्थर

विदेशी और स्वदेशी महात्मा-से तो प्रोफ़ेसर पर छात्र वर्ग की भक्ति आन्तर रूप से बढ़ी चढ़ी थी।

सुदर्शन केवल एक साधारण छात्र नहीं था, पर बचपन से ही उसे स्वप्न देखने की प्रकृति थी। सुरेन्द्रनाथ उसकी आँखों में स्वदेश का नेता नहीं बल्कि स्वदेश की मूर्ति दिखाई दिया। इतने में गान सुनाई दिया

गाओ अपने भारत की जय।

कैसा भय—कैसा भय ॥

और उसकी आकृतियाँ बढ़ती तथा इस गान के बहाव में डूबती गई। उसकी रग रग से यही प्रतिध्वनि निकली 'कैसा भय! कैसा भय!

और अम्बालाल माकरनाल का न सुना जा सके ऐसा भाषण कुछ-कुछ अस्पष्ट सा और दूर से आता हुआ गरजते हुए धारा प्रवाह का प्रसन्न स्रोत उसकी आत्मा को तृप्त करने लगा। उसने सुना न सुना वह समझा न समझा। ऊँचे श्वास से वह देखता रहा हँसा खुश हुआ और ताली पीटता रहा।

साढ़े तीन घंटे बाद जब इस अचेतन अवस्था से जगा तब क्या क्या हो गया। यह भी इसे समझ में नहीं आया।

कालेज खुलने पर जब सुदर्शन पुनः बड़ौदा आया तो उसके दिल में निराशा घर बनाने लगी। स्वदेश और सुरेन्द्रनाथ दोनों का वह भक्त हो सा गया था पर सुरेन्द्रनाथ के भाषण ने तो उसे बेचैन कर दिया। यह भाषण उसने कई बार पढ़ा उसका जितना ही भाग रट सका लिया—और परिणाम-स्वरूप उसे अपने देश की दशा का विचार आया। अंग्रेजी राज्य से क्या माँगा और क्या मिला इसका उसे भान हुआ—और सुरेन्द्रनाथ के सुन्दर शब्दों में निराशा छिपी हुई दिखाई दी। आशावादी वचन—ईश्वर के न्याय में श्रद्धा—और अंग्रेजों की समसमनसाहत में भरोसा—इन तीनों से भरे हुए इस भाषण में उसे कुछ

छात्र का दिमाग चंचल और सुकुमार अनुभव से परे और आशा वादी उत्साही और अधीर होता है। उसे परिस्थिति की जरा परवाह नहीं होती वह सयोग की जरा भी खोज नहीं करता वह साधनों पर जरा भी विचार नहीं करता और इन्ही कारणों से वह राजकीय आन्दोलनों में अपने जीवन की बलि चढा देता है और एक जरा-सी बात पर भी अपने प्राण दे देता है। ऐसी ही हालत इस समय सुदर्शन की था। फ्रेंच बगावत ने उसे रास्ता सुझाया। विप्लववाद की भयकर भावना ने उसे आशा दी। उसे याद आया —

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

सुदर्शन के विद्रोह की सीमा न रही प्रत्येक महापाषाण को तोडने की आशा उसमें समाई हुई थी। राज के पत्थरों से पहले उसे सामाजिक और धार्मिक पाषाणों को तोडने की अधिक आवश्यकता दिखाई दी।

इसी बीच में बोर्डिंग में आजाद तथा सरक्षण वादियों के बीच जैसा कि पहले बतलाया है—युद्ध शुरू हुआ। प्रोफेसर शाह की प्रेरणा से आर. बा. ने आजाद सेना का निर्माण किया। नृसिंहाचार्य के पट्टशिष्य छोटे लाल मास्टर ने सरक्षणवादियों को अपने साथ ले लिया। वाग्युद्ध की परम्परा फैली। सुदर्शन को यह एक मात्र हंसी-सी लगी। केवल जात-पांत तोडने में या अन्धश्रद्धा के त्याग में उसे कुछ बनता दिखाई नहीं दिया।

उसका पूरा क्रोध सामाजिक अन्धकार के स्रष्टा—धर्म गुरुओं पर आया निकला। अपनी जाति पर धर्म और संस्कार के ठेकेदार ब्राह्मणों पर अपार क्रोध वह जानता था कि इन धर्मगुरुओं ने इनको ही कायर बनाया और महापाषाणों को पवित्रता का वरदान दिया असमानता को स्वाभाविक-सा दिखा कर मानसिक विकास की मर्यादा का निर्माण किया नियम का भयग्रस्त होना और गौरवशाली को पुटनों में बस

गिराना सीखा था। धर्म के नाम पर मानवता को निर्जीव करने वाले का विध्वंस करने के लिये वह अपना खौलता हुआ खून लेकर तत्पर हो गया।

इस अधीरता और गुस्से में—इस दृश्य और द्वन्द्व के जाल में—इस विनाशक वृत्ति को विकास पाती हुई धुन में—कभी-कभी उसको सपनों की दुनियाँ में भावी सृष्टि का दृश्य भी आ जाता था। उसकी अनात्मवादी राजा और गुरु से हीन सत्ता और असमानता से रहित सृष्टि—जहाँ गर्वित और प्रतापी नरपुंगव शान्ति के गौरव में शक्ति की निर्भयता में भावना की खुशी में हरित कुंजों में या गगनभेदी गिरिशृंगों में शीतल सरिता के किनारे या गरजते हुए सागर के सान्निध्य में, अमरपुरी की देवांगनाओं को भी लजाने वाली सुन्दरियों के साथ विहार करते हुए जहाँ आधिपत्य केवल अपने आदर्शों का था अमर एकमात्र अपने संस्कारों का था बन्धन था एकमात्र अपने प्यार का जहाँ कोई झुकता था तो अपनी महत्ता के भार से कोई हँसता तो अभिलषित सेवा के उत्साह से कोई रोता तो दबाव के अविचार से जहाँ मनुष्य था अपने जीवन से स्वाधीन और स्वतन्त्र निर्माता और अधिष्ठाता। वहाँ उल्लास की लहरें हमेशा आतीं निर्मल मानवता की सुरभि फैलाना और इन सब से सरल स्वातंत्र्य का संचार वहाँ ऐसा अनुपम वातावरण रचता कि विधाता की सृष्टि एकमात्र बुरे स्वप्न जैसी हो जाती।

पर इस सृष्टि के दर्शन कर पाछे लौटते हुए उसकी निराशा का अन्त न होता। इस दृष्टि का कब सृजन होगा? क्या वह खुद ऐसी सृष्टि का सृजन कर सकेगा?

सुदर्शन ने जब १९०३ में दिल्ली में हुई राजगद्दी की कहानी सुनी और उसके चित्र देखे तो उसकी आकुलता बढ़ी।

दिल्ली के सिंहासन पर—जहाँ पार्थिव ने पद भी नहीं रखा था जहाँ पृथ्वीराज के शौर्य स्मरण अभी दिखाई देते थे जहाँ मुगल बादशाहों ने भारतीय गौरव प्राप्त किया था—वहाँ परदेशी राजा प्रतिनिधि का बैठना देख कर उसके हृदय में आग भभक उठी। भारत का कुछ गौरव अब अवशेष रह गया हो यह पता नहीं चला। कहाँ जापान और कहाँ भारत?

जब कर्जन ने कहा—विकास की वर्तमान स्थिति को देखते हुए तो हिन्दुस्तान को राजकीय क्षेत्र में मुक्ति मिलनी नहीं। भारत में साधारणतया बड़े-बड़े पद अंग्रेजों को मिलने ही चाहिये—और वही नीति काम में लायी गयी तो सुदर्शन को तमाचा मार कर भान दिलाया गया हो ऐसा उसे लगा।

उसके स्वप्न उसे व्यर्थ दिखाई दिये। वह पागल की तरह एशिया की सत्ता की बात करता था और सच पूछा जाय तो उसके देश में सत्ता दूसरे के हाथ में थी। एकदम उसे जापान और हिन्दुस्तान के बीच का भेद स्पष्ट दिखाई दिया।

जापान स्वाधीन था और भारत पराधीन। इस भेद का विश्वास उसके अन्तर में जहर की तरह फला।

पर नवीन घटनायें जल्दी जल्दी घटती रहीं और सुदर्शन की दृष्टि बंगाल पर ठहर गई और उसका हृदय वहाँ पदा हुई भावनाओं के साथ सम मिलाकर नाचने लगा।

सन् १९०४ में बंग भंग की योजना बनी यूनिवर्सिटियों ने स्वतंत्रता खो दी। सन् १९०४ की कांग्रेस में बम्बई में एक तूफानी दृश्य सामने आया।

सन १९०५ की ११ वीं फरवरी को कर्जन ने हिन्दुस्तानियों को झूठा बतलाया। जौ जुलाई को बंग भंग का निश्चय ही अखबारों में

निकला। ७ अगस्त को सम्पूर्ण बंगाल ने स्वतन्त्रता का व्रत लिया।

पहली सितम्बर को नये प्रान्त की घोषणा प्रकाशित हुई।

जैसे शरीर कांप उठा हो इस प्रकार बंगाल के—भारत के—नेता बिगड़ गये। ज्वाला में नई चेतना जाग्रत हुई। सुरेन्द्रनाथ की जीभ पर सञ्जीवनी मन्त्र आ बसा और राष्ट्र जागा तथा उग्र और भयंकर बन गया। उस की शक्ति ने स्वरूप लिया स्वदेश का उसके क्रोध ने स्वरूप लिया बहिष्कार का।

१६ अक्तूबर को बंग भंग अमल में लाया गया। उस दिन समस्त बंगाल ने शोक मनाया वन्देमातरम् गीत से कलकत्ता गूंज उठा बंगाल वासियों ने एक दूसरे को स्वदेशी व्रत की राखी बांधी शाम को राष्ट्र की एकता की रक्षा के लिए फेडरेशन हाल की नींव रक्खी गयी। बंगालियों ने चुनौती दी कि जिस इतिहास और संस्कार ने एक बनाया है उसको छिन्न भिन्न करने की हिम्मत किसकी है।

बड़ोदा कालेज की सामग्री में बंगाली प्रोफेसर की प्रेरणा से पैदा हुए वातावरण में बैठा हुआ मुन्शन नये-नये स्वप्न देखने लगा और नये नये भावों का अनुभव करने लगा।

उसका मुल्क समस्त महापापाणों को तोड़ने की तैयारी कर रहा था। उसने कई मीटिंगें इसी काला घाट पर रक्षा बन्धन मनाया और कराया। उसने बंगाल को अविभाज्य रखने का व्रत लिया।

लेकिन जब उसको स्वदेशी व्रत का ख्याल आया और वन्देमातरम् का गीत सुना तो उसकी आंखें इस नवप्रकाश को सहन नहीं कर सकीं।

मां की भावना अपरिचित और आकर्षक थी। वह अब तक उसके मस्तिष्क में क्यों नहीं हुई यह उसे कुछ विचित्र-सा लगा। इसीसे उसके अंधकार पर एक झिलमिलाता हुआ प्रकाश पड़ा था वह उसकी आंख पर का पर्दा हटा गया।

जो दिखाई नहीं देता था वह दिखाई देने लगा। हृदय की आशायें और भावनायें कल्परूप हो गई। स्वदेश यह मिट्टी और पत्थरों का

बना देश नहीं था बल्कि एक जीवित व्यक्ति था । यह एक मात्र व्यक्ति न था बल्कि दुखार्त माता थी ।

भारतवासी इन्सान नहीं थे बल्कि माता के शरीर के परिमाणु थे । स्वदेशी व्रत यह व्रत नहीं था और न मनौती ही थी बल्कि यह तो माता की आत्मा का दर्शन था ।

जैसे जैसे वह सोचता वैसे-वैसे माता का दर्शन स्पष्ट होता गया । वह बोलता जाता सुजलाम् सुफलाम् मातरम् । और एक तेजस्वी माता उसकी आँखों के सामने झलक मारने लगी थी ।

(३)

नम्बवर दिसम्बर की छुट्टियों में वह अपने घर आया ।

उसका सारा संसार बदल गया । वह जहाँ-तहाँ माता को देखने तथा पहिचानने का प्रयत्न करने लगा और व्यक्तियों की संस्थाओं की प्रणालिकाओं की अपने छोटे-मोटे अंगों की तरह एक व्यवस्था बनाने लगा । घर में जाति में और गाँव में से पकल्पित भावन में जन्म लेने लगी । तालाब और नदी प्राचीन मन्दिर और मस्जिद खेतों की हरियाली और गाँव की गन्दगी में रहस्य दिखाई दिया । इन सब में माँ की तेजस्विता दिखाई देने लगी ।

स र्दी में वह सवेरे में उठकर गाँव के बाहर घूमने जाने लगा । निर्जन और अन्धकारमय भूतों की तरह सुनसान घरों की अन्धेरी पंक्तियों के बीच से वह गुजरता और फिर भी उसकी आँखों के आगे एक अवर्णनीय प्रकाश रहता । दूर से सुनाई देते हुए बलों के घुंघरू मधुर स्वर और लय के साथ सुनाई देती हुई घंटियों की घनघनाहट सुबह की सर्दी काँपती हुई पनहारिनों से बातचीत उसे माता के सौन्दर्य का भान कराते । और जाड़ों की कड़ाके की सर्दी में गाँव के बाहर खेतों की मेड़ों पर से होकर जाता तो पाला में मार से दबे, हुए पौधों को प्रभात के समीर में नर्तन करते हुए देखता, तब सुबह के बढ़ते हुए प्रकाश में पूर्व में झिलमिलाते हुए स्वच्छ सरोवर में से निकलती हुई नदी कासनी रंग

धारण कर पश्चिमी क्षितिज पर टँग हुए बादलों में मिल जाती तो वह देखता जब किसी टीले हर सरसराते हुए पवन में खड़ा रहकर छोटे-छोटे पवतों की अस्पष्ट भ्रू लता के पीछे से सूयनारायण का सुनहरा भानास नवजीवन ने सत्व की तरह ऊपर आता था उसमें समाई हुई विनाश प्रवृत्ति और क्रोध नष्ट हो जाता। और माता के देह-लालित्य की प्रेरणा से उसके हृदय में भक्ति के अकुर फूटने लगते।

एक बार प्रेम के अधीर आवेश में उसके मुह से निकल पड़ा मां मां! तू अदमत है!

एक दिन सवेरे पांच बजे उठकर वह गांव के बाहर घूमने निकला। रात में उसको नींद नहीं आई थी। गांव से थोड़ी दूर एक टीले पर जाकर वह नदी की ओर देखने लगा। सोचता मां सो रही है। कसी सुन्दर लगती है!

वहां से कब उठा यह उसे याद नहीं रह किस ओर गया यह भी कुछ ख्याल नहीं। पर वह दूर बहुत दूर चला गया दूर बहुत दूर जाने पर खेत भी अदृश्य होते हुए दिखाई देने लगे पगडंडियां मकरी तथा अस्पष्ट दिखाई देने लगीं।

एक दूसरे से सटे हुए घरों का समूह जहां-जहां दिखाई देने लगा और जुगनुओं की चमक स्थान-स्थान पर कुछ-कुछ चमकने लगी।

अपरिचित स्वर सुनाई दिया।

अधकार फैला हुआ था पर फिर भी किसी-किसी पेड़ के नीचे उजाला दिखाई दे रहा था।

एकाएक वह किसी चीज से टकराया। उसने अधेरे में घबराकर भय से चारों ओर देखा। पेड़ के नीचे माथे पर हाथ रखे हुए एक स्त्री बैठी थी। उसके आस-पास ही थोड़ा सा अच्छा प्रकाश था।

उसका मुख उसने कहीं देखा था—कहां यह उसे याद न पड़ा। उसकी सौंदय से सुशोभित भव्यता की किसी दिन उसने प्रशंसा की थी—तब इसका भान न था। उसकी आंखों में वेदना थी—ऐसी कि न

देखी जा सके और न कल्पना की जा सके। उस पर कुलीन सुन्दरियों के शरीर की-सी स्वाभाविक मृदुता थी और उसके अग अग पीड़ित हों एसा दिखाई देता था।

सुदर्शन उसे देखकर घबराया। एसी स्त्री इस निर्जनता म अकेली और असहाय क्यो आई ? क्यो खड़ी है ? साथ मे कौन है ?

उसके पर कांपे। उसका मन भाग जाने को हुआ पर उसके पर पीछे न लौट सके। एकाएक उसके हृदय में एक प्रश्न उठा और वह प्रश्न उन वदना भरे नयनो की तरफ बढ़ता ही गया।

घबराते घबराते भी उसके मु ह से निकल पड़ा तुम कौन हो ? इस समय यहाँ क्यो आई हो ?

उस स्त्री ने अपना मु ह ऊंचा किया। उसके मुख पर अद्भुत सौंदर्य का तेज था—विषाद क आवरण में।

मैं अभागिनी हूँ। यह इ तजारी कर रही हूँ। उस के मुख स दुख से कांपती हुई यह आवाज निकली।

सदर्शन की आंखो में आंसू आ गये। उसकी छिपी हुई वीरता जाग उठी। इस स्त्री की मदद के लिए यदि वह तयार न हुआ तो पुरुष ही कसा ?

कौन हो ? किसकी राह देख रहा हो ? और वह भी यहाँ ?

बेटा मेरे दुख की कहानी तो बड़ी है। मेरी दुर्दशा का पार नही। भाई ! वन या पहाड मे निजन स्थान क अतिरिक्त कही भी बाट जोहने का मुझे अधिकार नहीं।

क्यों

मै गुलाम जो हूँ पराधीन मुझे कोई शांति से इन्तजार भी नहीं करने देता ?

किसकी बाट ? दसों दिशाओं में खोज करने के लिए तत्पर हुआ सुदर्शन अधीरता से बोल उठा।

अपने प्राण की। वर्षों बीत गये पर फिर भी वह दिखाई नही

दिया।'

सुन्दन उसके पास गया। इस विरहिणी की वेदना उससे नहीं देखी गई।

बहन! मुझे बताओ वह कौन है? मैं ले आऊंगा।

'भाई। उसस तो—मेरा पालनहार जीवित नहीं लाया जा सकता।

क्यों नही लाया जा सकता?

तुम जसे बहुत से आये और चले गये। बहुत से वचन दे गय—फिर दिखायी भी नहीं दिये। बहुतों ने बीड़ा उठाया पर बेमौत मारे गये।

'पर मुझे तो बताओ इतने गय तो एक और सही सुन्दन ने कहा।

'वह सुनकर क्या करेगा?

कहो कहो। क्या पता तुम्हारा दुख मेरे ही हाथों कटना हो ता?

वह सुन्दरी हँस गई। निराशा स वह अश्रद्धावन् हो गई था। तो सुन' उसने कहा जरा और धीमी होकर गला खखारा।

(४)

बहुत साल बीत गये इस बात को। उस स्त्री ने कहना प्रारम्भ किया मै पन्न हुयी थी सरस्वती के घर कल्लोल करती लेकिन अपनी माँ-बाप को पहचानती ही नहीं। जबसे मैंने होश सम्भाला तभी से हिमालय को मैंने पिता समझा है और विशाल हृदय सिंधुदेवी अपनी माता मानी है।

मैं सुन्दर थी मेरे बाल रूप मे सब को मायाओं का अपार समूह दिखाई देता था। सरस्वती के किनारे पर रहने वाल कवि मुझे स्नेह से खिलाते और मेरे सुकुमार हृदय में अपूर्व संस्कारों का बीजारोपण करते थे। मैं उनकी बेटी थी। वे मेरे लिए पिता के समान थे। निर्दोष आनन्द का स्वादन करते हुए बचपन खेल में बीत गया।

वशिष्ठ और अरुधती ने मुझे पाला-पोसा। उनकी ही कुटी की छाया में मैं बड़ी हुई। पति ने मुझको पवित्रता का पाठ पढ़ाया स्त्री ने मुझे श्रद्धा के संस्कार बतलाए। वशिष्ठ के तप की भव्यता और अरुधती के आत्मसमर्पण की महत्ता—दोनों की प्रेरणा मैंने पायी। उनके ममता भरे सरक्षण में बढ़ती गई और कामनामयी, और आशाभरी होती गई।

सब मुझे देखकर मुग्ध हो जाते और एक दूसरे की ओर गर्व से देखते। मुझे देखकर सब लड़के उत्साह से पागल हो जाते बूढ़े अपने समस्त जीवन की सफलता को सिद्ध हुआ समझते। मुझे संस्कारी और समृद्ध बनाने में ही सब जुटे रहते और मेरा गौरव बढ़ाने में वे अपने प्राणों की परवाह न करते थे।

फिर आया मेरा प्राण—भारत में श्रेष्ठ एसा मेरा अभिलाषी विश्वविजेता की तरह मेरा राजर्षि। उसके पैरों में विजय की धमक थी। उसकी आँख में गर्व की मस्ती थी उसकी भुजाओं में विनाश की कातरता थी। उसकी वाणी में आग थी। उसकी बुद्धि में सविता व 'भगवरेण्य वास करते थे। वह था और मेरा द्रष्टा और मेरा स्वामी।

उसके मोह में फसकर मैंने आत्म-समर्पण किया। उसकी मैं प्रेयसी बनी। मेरी आयता से वह आर्य हुआ। मेरा पति अमरता का प्रिय और अधिपति था। उसके मत्रों से जीवन फलता। उससे पृथवी गर्वती। उसकी आर्य-दृष्टि के आगे तीनों काल लुप्त से हो जाते।

मानवता के प्राबल्य में और उत्साह के आवेश से जिस प्रकार वीर पुरुष पत्नी को ग्रहण करता है उसी प्रकार से मुझे ग्रहण किया। पल भर में एक नन्ही सी बालिका से मैं वीरांगना हुई—और उसके साथ महाराज्ञी पद लेने के लिए तरसने लगी। उसने दया की। पुनःशेप को बचाया तथा द्रुप के वशीभूत हो हरिश्चन्द्र को भटकाया। उसके वीर्य से ही सुदास का उद्धार हुआ और क्रूरता से शतपुत्र का पिता वशिष्ठ सतानहीन हुआ। रसिकता से उवशी को वश में किया औत्सर्य से

अनार्यों को सस्कारी बनाया और विचारे त्रिशंकु का उद्धार करने के लिए नये स्वर्ग बनाकर इन्द्र की महत्ता को भग किया और फिर भी महत्ता-सुलभ नम्रता से उसने अमर प्रार्थना को उच्चारण किया

धियो योन प्रचोदयात् ।

भरत-श्रेष्ठ के योग से— 'अपने स्वामी की देवी मैं—भारती कहलायी । अपने असंख्य पुत्रों के पथ की आधार—भारतमाता कहलायी । गौरव और सत्ता से पागल बनी हुई मैं अपनी मोहनी से तीनों भुवनों को पागल बनाये रही । मेरे आँगन में भगवान् अवतार के रूप में आने लगे ।

'मुझमें विश्वविजेत्री की महत्वाकांक्षा ने जन्म लिया जगज्जननी की अतुल शक्ति मुझमें आयी, पर फिर भी मेरी धमनियों में उछलते हुए प्रणय का ज्वार भाटा आता ही रहता और मेरी दृष्टि जहाँ पड़ती सौन्दर्य के अदभुत रंग खिल जाते । मुझे लगा कि मेरा विजय प्रयाण असीम था । मेरे प्रेरणा-बल से पंख और सीमायें विलीन हो गई ।

यह बात कहते समय सुदर्शन ने उस स्त्री की आँख में विचित्र विद्युत तेज देखा । उसके स्वर में विजयोल्लास की ध्वनि सुनाई दी ।

उस सुन्दरी के यन्त्र का रहस्य वह समझा नहीं फिर भी समझाया गया हो ऐसा ही लगा । इस सम्पूर्ण जीवन-कथा से वह स्वयं परिचित हो ऐसा लग रहा था पर फिर भी वह नवीन लगी ।

लेकिन भाई ! उस स्त्री ने खिन्न स्वर में बात आगे शुरू की मेरे सुख के दिन लौट गए । एक दिन हमेशा की तरह मैं बैठी-बैठी प्रतीक्षा कर रही थी —पर वह नहीं आया । मेरा वियोग रो दिया । मुझे यह कभी भी विश्वास नहीं था कि वह मुझे छोड़ जायगा फिर भी वह नहीं आया ।

समय बीत गया—मैं वियोगिनी ही रही ।

वह जरूर आयगा ऐसा तो मुझे लगता था फिर भी वह नहीं आया । उसके और मेरे संयोग से पैदा हुए वीर-पुत्र पिता का तेज

दिखाते रहे। नदी और पर्वत को पार कर मेरी कीर्ति समुद्र के अन्त तक ले गये।

सालों बीत गये पर न आया मेरा स्वामी और न छूटी मेरी आशा। मैं तो प्रतीक्षा कर ही रही थी। वह नये जन्म में आयेगा ही ऐसी श्रद्धा से मैं अपने विरही हृदय को आश्वासन देती रही।

एक दिन किसी ने मुझसे कहा कि जिस मानवता ने मुझे मोहांध कर दिया था उसे यमुना किनारे देखा है। मेरा हृदय उत्साह से भर आया। अपने मीत के साथ जो दिन व्यतीत किये थे उनके सपने आने लगे। मैं उससे मिलने के लिये तत्पर हुई।

मैं मिली पर मेरा हृदय निराश हुआ। यह मेरा मीत नहीं था। मैंने उसमें स्वस्थता देखी कुशलता देखी ज्ञान देखा—पर गगनभेदी उत्साह और प्राबल्य से उछलती हुई प्रचण्ड मानवता—अपने प्रियतम का चिन्ह—*मैंने नहीं देखा। आशाभग्न स्त्री की तरह मैं भूखी रोई।*

इस नये बहादुर को अपनी देवी सम्पूर्णता के दर्प के आगे मेरी निराशा की मूर्छा में पड़ी हुई मुझे ये सब भूल गये और छोटे-मोटे अभिमानों को भग करने में मेरी निराधारता बढ़ रही इस देखने की किसी ने भी परवाह न की।

आशा को छोड़कर अपने पति के अपरिचित स्थान पर बैठी-बैठी मैं एक दिन आंसू बहा रही थी। मुझे ऐसा लगा कि अपने स्वामी के बिना फिजूल है। इतने में एक वृद्ध और शान-गम्भीर द्वैपायन नाम के थे महात्मा आये।

उन्होंने मुझे विरह-व्याकुल देख सलाह दी बेटा! श्रद्धावान कभी आशा नहीं खोता। उनकी ममतमयाहट से आकर्षित होकर मैंने उनसे अपनी कहानी कह सुनाई।

ज्ञानरत हृदय के प्रोत्साह से द्वैपायन ने मुझसे कहा सुन! आशा श्रद्धा दायक नहीं श्रद्धा बिना सिद्धि सम्भव नहीं। मैंने उत्तर दिया कि मैं वह किस तरह रखूं?

उन्होंने मुझे जवाब दिया 'संस्करणों के संस्मरण से श्रद्धा निश्चल हो जाती है। पुत्र! अपने स्वामी के संस्मरण मुझे बताओ। मैं उनकी संहिता बनाकर दे दूँगा। उस संहिता के पाठ से तेरी व्यवस्था बनी रहेगी। इसके बाद उन्होंने मेरा इतिहास सुना और उसकी स्मरण संहिता बनाना आरम्भ किया। उन्होंने वह थोड़ी सी बनाई और उसके बाद नैमिषारण्य में इकट्ठे हुए उनके शिष्यों ने उसको पूरा किया। और संहिता का पाठ कर श्रद्धा की ज्योति सजीव रखने का प्रयत्न करती हुई मैं जैसे तैसे जीवन व्यतीत करती रही।

देवी! चाणक्य ने भृकुटी चढ़ाकर मुझसे कहा 'तुम यह क्या ले बैठी हो? अपने प्राण के संस्मरण भुला दिये क्या? क्या उसकी प्रतीक्षा करना बन्द कर दिया? युवा प्रणय द्रोही विधवा की तरह तुम भी सतीत्व को साधुता में खोजने लगीं?

देवी जो निर्बल है वही विस्मृति की शांति की खोज करता है। देवों को भी दुर्लभ तुम्हारी जैसी जननी को क्या यह शोभा देता है? चलो घर लौट चलो! तुम्हारा प्राण लौट कर आयेगा तो क्या उसको अपने मन्दिर की समाधि के शयनागार में उतारोगी?

उसे पितृयज्ञ करना होगा तो क्या यवनमानों और चीन सघ के पादस्पर्श से मलीन हुई वेदी की ओर इशारा करोगी? उसका जी तुम्हारे कुंजों में तुम्हारे सौंदर्य को निखरने का होगा तो क्या यह व्रत से शुष्क शरीर का उपहार उसे दोगी?

चलो लौट चलो। तुम्हारे स्वामी की गोद में आयेंगे और तुम अपना आँगन सजा कर, तयार हो जाओ।

जब उस प्रतापी चाणक्य को मैंने बोलते हुए सुना तब मेरा भ्रम दूर हो गया और मैं कैसी अधम हो रही थी इसका खयाल आया। तुरन्त साधुता का आडम्बर छोड़ मैं घर गई। मेरे हृदय में बचा हुआ प्रणय फिर जाग उठा और नवोढ़ा के उत्साह से प्राण मिलन की प्रतीक्षा

य में ही बड़प्पन का अनुभव करने लगे।

जैसे युगों की निराधारिता मेरे सिर पर आ पड़ी हो, इस प्रकार मैं शक्त और अस्वस्थ बनी पड़ी रहती और पराधीनता तथा विरह की व्र वेदना भुलाने के लिये अपनी स्थिति का ही विचार करती रहती।

मेरे बेटों ने मेरे स्वामी को भुला दिया और मुझे भूलने लगे। रे भवनों में पराये रास क्रीड़ा करते मेरे उद्यानों में परियों के परों की आवाज सुनाई देती और पराये ही मेरे मेरे बेटों और मेरी समृद्धि के स्वामी बन कर आनन्द लूटते।

सृष्टि के सौंदर्य की मूर्ति-सी मैं दूसरों की सम्पत्ति बनी रही। सने मुझको हीरों से मढ़ा और मखमल से ढका। अगणित बाँदियाँ री सेवा करतीं। मेरे द्वार पर हाथी झूमते और धौंसा गजता। मेरे महलों में गवैयों की तीन और सुवर्ण की पजनियों से सुशोभित मोर चे। मेरा ठाठ बगमों जैसा था मेरी गुलामी परदानशीन थी।

—उफ! हजारों वर्षों के ऐसे वैभव विलास को मैं क्या कहूँ? ण भर के लिये मेरा प्राण वापिस आ जाय—एक पल भर के लिए उसके साथ रह कर संयुक्त स्वर से अपनी भुजाओं को गुंजा दूँ—एक ल भर हम संयुक्त बल से अपना विजय प्रयाण आरम्भ करें। पर ह हो कहाँ से?

आनन्द और विलास के अन्धकारमय वातावरण में कभी एक बार झ अपने स्वामी की याद आती और थर थर काँपती हुई आँखों को ाड़ कर मैं चारों ओर देखती। मेरा प्राण आ जाये तो? क्या मुझ सी अधम देखकर लौट जायगा? उस देवी सन्ध्या तेजस्वी स्त्री ने स्वासें छोड़ीं और पेड़-पत्ते तथा पृथ्वी ने निःश्वास परम्परा से विदायें या दी।

सुदर्शन की आँखों में आँसू झलक आये।

एक दिन सह्याद्रि शृंग से एक वीर उतर आया— देवी आगे बोली और अनेक विघ्नों को दूर कर वह मुझसे मिला। अपनी तीक्ष्ण आँखें

तिरस्कार से फाड़कर उसने मुझसे कहा   माँ ! मुझे शर्म आती है ! तू भी अपने अप्रतिम से प्राणाधार की बाट देखना भूल गई है और इस क्षुद्र विलास में बेहोश हो गई है ? तू यदि उस इसको भुला देगी तो हम उसको कैसे खोज सकेंगे ? उसके स्मरण किस प्रकार सचेत रख सकेंगे ? माँ तू भी अपना गौरव और अपनी टक भूल गई ? अब हमारा क्या होगा ?

बेटा ! दुखी हृदय से मैंने कहा सब मुझे भूल गये तो फिर मैं यदि अपने व्यक्तित्व को भुला दू तो इसमें क्या विस्मय ?

मैं तुझे नहीं भूलने और न भुलाने दूंगा । शंकर के अवतार सदृश वह उग्रवीर बोला मुझे अपने पिता का चिन्ह और अपना आशीर्वाद दे । मैं जाकर तेरे और अपने प्राण का पता लगा कर रहूँगा ।

कृतज्ञ हृदय से मैंने उसको आशीर्वाद दिया और अपने प्राणाधार के स्मरण चिह्न की भवानी उसे दी। मैंने उस सोंधी और हरामी की शान-शौकत भूलकर मैं पति की बाट जोहने लगी ।

लेकिन मैं क्या राह देखूंगी ! मेरा भाग्य ही फूटा हुआ था । जो विदेशी विलासी मेरे घर में बस हुए थे उन्हें जीतकर मैंने अपना बदला लिया था । वे सब और मेरे पुत्र ऐसे मौजील बन गये थे कि जान-बूझ कर अनुभवी व्यापारियों के हाथ अपने आप को बेच देने में ही आनन्द मानने लगे । हमारा सर्वस्व उनके हाथों में चला गया ।

उनके लिये न थी मैं महादेवी न थी हरम की सुन्दरी—मैं तो एक-मात्र थी काम करने वाली दासी । मेरी समृद्धि उनके भवन शोभित करने के लिये गई मेरे पुत्र उनकी सेवा करने में रोक लिये गये । और मैं आप बेटी, जिसके उद्धार के लिए द्वैपायन जैसे मानी और कौटिल्य जैसे राजनीतिज्ञ मर मिटे थे दासों की दास बन गई ।

(६)

मैं और नीच हो गई । और इससे अधिक अधम दशा की मैं कल्पना

उस सुन्दरी ने ऊपर देखा। उसकी भव्य मुख मुद्रा पर अवर्णनीय वेदना दिखाई दी उसकी फैलती जा रही आँखों में तिरस्कार था

मुझको मुझको मुझको! उसका अनुमान हुआ हो इस प्रकार उसने कहा बिना बाप वाले प्राणियों को माँ से मिले भी कहीं? और दिशाओं ने रोना प्रारम्भ कर दिया। चारों ओर दूर तक दिखाई देने वाले तरुओं का आक्रन्दन सुदर्शन को बेधने लगा। उसे पसीना आ गया और प्राण व्याकुल हो उठे।

मैं जानता हूं! पहचानता हूँ! कहता हुआ वह माँ के पास जाने लगा एकदम सूर्य के ताप से वह जलने लगा। चारों ओर देखा तो सुनसान टीले पर बैठा वह आँखें मल रहा था। धूप के प्रकाश में पास बहती हुई सरिता चमक रही थी।

सुदर्शन ने आँखें मलीं माथा दबाया क्या वह सो रहा था? क्या वह स्वप्न था? क्या उसने स्वप्न ही देखा! क्या वह हृदय में रहने वाले भावों का सङ्कलन कर रहा था? क्या उसने दर्श संदेश सुना था उत्तेजित देश भक्ति से निबन्ध लिखने की सामग्री एकत्रित की?

वह उठा। सत्य की खोज करने का ध्यान उसे न रहा।

उसने माँ को देखा था उसका सन्देश सुना था उसका दुःख अपनी आँखों से देखा था। माँ ने उससे अपनी दुर्बलता का रहस्य कहा था वह अपने प्राणाधार की प्रतीक्षा में थी।

उसका पति जब देख ले तो पहचान लेना मेरे प्राण को कह कर स्वप्न में सुने हुए वाक्यों को वह याद करता रहा।

माँ! माँ! मैं तुम्हारे पति को वापस ले आऊंगा। वह धीरे से खड़ा हो गया— नहीं तो मैं प्राण दे दूंगा!

कहकर वह वहाँ से चल दिया और दौड़ता-दौड़ता टीले पर से नीचे उतरता हुआ बोला नमस्कार माँ!

माँ के दर्शन के उपरान्त उसकी चिन्ता और बढ़ गई। लगभग

प्रतिदिन रात को माँ उसे दर्शन देती और दिन भर उसके स्वरूप उसके सौंदर्य और उसकी मुक्ति का वह विचार किया करता और इन विचारों में वगाली पत्र उसे बहुत मदद देता।

'स्वदेशी' की बगाल से उठी आँधी चारों दिशाओं में बही। स्वदेशी विचार, स्वदेशी आधार स्वदेशी वस्तु स्वदेशी भाषा ये सब आदरणीय दिखाई देने लगे।

सुदर्शन को माँ अपना गौरव फिर से प्राप्त करती हुई दिखाई दी। पुत्र 'माँ' को फिर पहचानने लगे।

कुछ न कुछ नई बात प्रतिदिन होती थी। कलकत्ता में स्वदेशी व्रत के लिए युवक अपने प्राणों की बलि देते थे विदेशी कपड़ा खरीदने जाने वाली सुन्दरियों के चरणों के आगे लेट कर उनसे स्वदेशी होने की प्रार्थना करते थे और 'वंदे मातरम' से माँ का विजय घोष गूँज उठता था।

स्वदेशी होने के लिए 'वंदे मातरम्' गान गाने के अपराध में विद्यार्थियों को दण्ड दिया जाता था शिक्षासंस्थाओं को दी जाने वाली मदद रोक दी जाती थी और लोगों को डराने के लिए पुलिस स्कूलों में और गुरखे गाँव में बठाए जाते थे। सरकार ने सरक्यूलर निकालकर 'वंदे मातरम्' गान पर पाबन्दी लगा दी थी। वंदे मातरम गाने के लिए बंग युवकों ने 'ऐंटी सरक्यूलर समिति' का निर्माण किया।

१४ अप्रल १९०६ को बरीसाल में रसूल बरिस्टर की अध्यक्षता में कान्फ्रेंस होने वाली थी।

दोपहर को दो बजे कान्फ्रेंस के सदस्य शांति से तीन-तीन की लाइन में राजा की हवेली से निकले। पहली पंक्ति में सुरेन्द्रनाथ मोतीलाल घोष और भूपेन्द्र बसु—बंगाल के अमर नेता। दूसरी पंक्ति में रहे अरविंद बाबू तथा और दूसरे लोग थे। पुलिस लाठियों से लैस थी।

जैसे ही ऐंटी-सरक्यूलर समिति के सदस्य बाहर निकले कि पुलिस उन पर टूट पड़ी। निःशस्त्र लड़कों को मारना तो आसान बात थी

लड़के 'वंदे मातरम्' की ध्वनि से जवाब देते, यह भी स्वाभाविक सी बात थी।

परिणाम में सिर फटे देश भक्तों का दल था। चितरंजन ग्रुह कर तालाब में डाल दिया गया। सुरेन्द्रनाथ को पकड़ कर मजिस्ट्रेट के पास ले जाया गया। दूसरे दिन पुलिस ने कान्फ्रेंस को तितर बितर कर दिया।

युद्ध छिड़ गया। सारे भारत में हजारों हृदय समरांगण में प्राण देने के लिए कूद पड़े। सुदर्शन के उत्साह का पार नहीं रहा। 'मां का प्राण अनेक युगों के उपरांत वापस लौटता हुआ दिखाई दिया।

बरीसाल के कटु अनुभव के बाद अरविंद घोष वापस लौट आये और बड़ौदा कालेज के विद्यार्थियों में माता की महत्ता पर भाषण दिया। उसमें उन्होंने बरीसाल की कहानी पर भी थोड़ा बहुत प्रकाश डाला। सुदर्शन को ऐसा लगा कि बंगाल में जो चेतना फैल रही थी उसमें उसका भी हिस्सा था।

माता की मुक्ति के स्वदेशी के स्वतन्त्रता आदि के अनेक स्वप्न उसके मस्तिष्क में विचरण कर रहे थे और उन सब को वह स्पष्ट स्वरूप दे रहा था।

ऐसा लगता कि मां के प्राण को वापस लाने का उत्तरदायित्व उस अकेले के कन्धों पर ही था।

धीरे धीरे कितने ही समान स्वभाव वाले छात्र एक-दूसरे का परिचय प्राप्त कर मां की भक्ति के सम्प्रदाय की राखी एक-दूसरे को बांधने लगे।

अरविंद घोष ने इतने में स्तीफा दे दिया। मां की मुक्ति के लिए उन्हें बंगाल जाना था। उनका अन्तिम भाषण सुनने के लिए समस्त मातृ भक्त युवक आये थे और रात को सोमनाथ के तालाब पर मिलने का निश्चय हुआ।

आठ

सोमनाथ ताल पर

(१)

सोमनाथ का तालाब इस समय कहाँ है यह बता देना तो मुश्किल है क्योंकि उस पर बंगले खड़े कर दिये गये हैं। १९०६ में कीचड़ और पत्थरों से भरा हुआ यह गंदा तालाब ढोरों को पानी पिलाने के काम आता था।

कभी-कभी कालेज के विद्यार्थी तैरना सीखने का बहाना कर उसमें आ कूदते और उसमें रहने वाली असंख्य जोंकों के प्रभाव से अपना खून साफ करने का अवसर पाते थे।

जब पाठक केरशास्प पंड्या और सुदर्शन वहाँ पहुँचे तो किनारे पर पाँच लड़के दो लैंप बीच में रखकर बैठे थे। वहाँ फैले हुए अंधेरे या भिनभिनाते मच्छरों की परवाह किये बिना ये उत्साही युवक देश का उद्धार करने के लिये यहाँ इकट्ठे हुए। ये विद-बाबू के भाषण के नशे में चूर थे। उनके हृदय साहस और कार्य-तत्परता से भरे हुए थे।

उनकी आँखें स्वदेश भक्ति से चमक रही थीं। कुछ करने के लिये और समय पर मरने के लिये भी वे तैयार थे।

सुदर्शन के साथ आये हुए तीन आदमियों में से केरशास्प और मगन पंड्या के चरित्र की रूप रेखा तो पीछे भी बता दी गई है। पाठक इन सब से निराले स्वभाव का था। सुदर्शन उसका प्रिय मित्र था पर उसके प्रेमभाव की सीमा उस मित्र से जरा भी आगे न बढ़ती थी।

वह दूसरों को शांति से या नफरत से देखता और किसीको जब

राजकीय विप्लव के स्वप्न आते तो उनका मजाक उड़ाने में उसे मज़ा आता। इतना ही नहीं बल्कि किसी दिन गायकवाड़ सरकार का दीवान बनकर दशहरे के दिन हाथी पर चढ़कर सिर पर चंवर ढलवाने की भी आकांक्षा रखता था। वह बड़ा तीन पाँच करने वाला और अपने मित्रों में अपना महत्व स्थापित करने के लिए ही उनकी राजकीय तथा सामाजिक योजनाओं में शामिल होता था। वाग्विवाद में एक ही था और बारी बारी से एक एक को मात देने के लिए वह बातचीत में पूरा-पूरा आनन्द लेता था। सरकार कांग्रेस धर्म समाज नीति ये सब खरे भी हैं और साथ ही साथ खोटे भी हैं यह उसने अपने दूसरे मित्रों से भी स्वीकार कर लिया था।

यह तो इस समय मनविनोद के लिए तथा मुदर्शन खुश न हो केवल इन दो बातों के लिये ही यहाँ आया था।

जो पाँच लड़के यह हैं वे सब देश भक्ति के उत्साह से पागल थे।

परिचय इस तरह है। धीरु शास्त्री बी० एस सी का अध्ययन और टेनिस का खेल—दोनों को एक साथ साधने का यथाशक्ति प्रयत्न करता था। आर्यसमाजियों की संगति में धर्मावलम्बी राष्ट्रीयता की दिक्षा प्राप्त की थी और सारी दुनिया को दयानन्द की नजर से देखता। इसे धार्मिक आडम्बरों के प्रति नफरत थी और प्रतिपक्षी यदि सीधी तरह न माने तो डन्डे के न्याय से उसे सीधा करने का पक्ष था। परीक्षा पास कर गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक होकर आर्यसमाजी धर्म प्रचारकों को निर्मित कर भारत में सतयुग का प्रसार करने के लिये उतावला बना हुआ था।

इसमें सन्तकुमार जोशी उम्र दिखाई देने पढ़ने वाला सशक्त लड़का। सामना करने के लिये लड़ाई झगड़ा करने का काम लेने के लिये सदा ही तत्पर। रोज सवेरे तीनसौ पचास दंड पेलता और शाम को हनुमानजी के दर्शन कर अखाड़े में लड़ने जाता। उसके स्नायु ढंग से बने रहे इसकी उसे बहुत चिन्ता रहती। जहाँ भी शारीरिक गोष्ठी देखता कि उसे ताव आ

जाता और चाय, बीड़ी मिठाई इत्यादि हानिकारक चीजों पर जहाँ-तहाँ भाषण देना। इसने भी रावपुरे में एक अखाड़े की आयोजना की और विद्यार्थियों का उठ-बैठ कराने में उसे जो आनन्द मिलता वह किसी दूसरी चीज में न मिलता था। छोटे और निर्बल शरीर वाले सुमन्त को तरफ उसका तिरस्कार किसी प्रकार भी शान्त नहीं होता था और उसे देखकर अपने हाथ के स्नायुओं की ओर गर्व से देखने लगता।

तीसरा गिरजाशंकर शुक्ल जूनियर बी० ए० का छात्र था। इसका भाई गायकवाड़ी फौज में किसी पद पर था अतः उसे फौज का बड़ा मोह था। उसने परेड की थी और फौज की योजना सम्बन्धी कुछ निर्जीव पुस्तकें पढ़ी थीं और बार बार उनमें से ज्ञान उपयोग ही करता था। दशहरे के दिन जब सवारी निकलती तो शुक्ल महाराज बड़े अभिमान से अपने भाई को पहचानने के लिये आतुर रहते। वह बड़ौदा की प्रजा और सयाजीराव गायकवाड़ का अनन्य भक्त था। उसे इस नरेश की शक्ति में पूरा विश्वास था। गायकवाड़ द्वारा देश का उद्धार करने की योजनायें वह हमेशा बनाता और बिगाड़ता रहता।

नारायण पटेल पैर फैलाकर हाथ पीछे टेके हुए बैठा था। कानभर की सी बकदरी से उसने सिर पीछे की तरफ ढाल रक्खा था। उसका मोटा शरीर जरा हास्यजनक लगता था। वह बी० ए० में था और गणित में एक ही था। बोर्डिंग की दीवारें उसके गणित प्रेम की सदा ही साक्षी देती रहतीं। और कागज न मिले तो कोट या कमीज पर दिन में अनेक बार उसे गणित के सवाल लगाते रहने में किसी को आश्चर्य नहीं मालूम होता था।

प्रोफेसर की मन्द वह कभी न लेता और समझ न सके ऐसे प्रश्न उनके सामने रखने में ही अपनी बड़ाई मानता था। मकाले से उसे चिढ़ थी, क्योंकि मकाले को गणित बिल्कुल न आता था—यह बात उसके मन में बिल्कुल स्पष्ट थी और गणित में कच्चाई होने के कारण ही नेपोलियन वाटरलू की लड़ाई हार गया ऐसा अभिप्राय वह प्रकट

राजकीय विप्लव के स्वप्न आते तो उनका मजाक उड़ाने में उसे मजा आता। इतना ही नहीं बल्कि किसी दिन गायकवाड़ सरकार का दीवान बनकर दशहरे के दिन हाथी पर चढ़कर सिर पर चवर ढलवाने की भी आकांक्षा रखता था। वह बड़ा तीन पाँच करने वाला और अपने मित्रों में अपना महत्व स्थापित करने के लिए ही उनको राजकीय तथा सामाजिक योजनाओं में शामिल होता था। वादविवाद में एक हो या और बारी-बारी से एक एक को मात देने के लिए वह बातचीत में पूरा-पूरा आनन्द लेता था। सरकार कांग्रेस धर्म समाज नीति ये सब खरे भी है और साथ ही साथ खोटे भी है यह उसने अपने दूसरे मित्रों से भी स्वीकार कर लिया था।

वह तो इस समय मनविनोद के लिए तथा सुदर्शन खश न हो केवल इन दो बातों के लिये ही यहाँ आया था।

जो पाँच लड़के बढ़े हैं वे सब देश भक्ति के उत्साह से पागल थे।

परिचय इस तरह है। धीरु शास्त्री बी० एस सी० का अध्ययन और टेनिस का खेल—दोनों को एक साथ साधने का यथाशक्ति प्रयत्न करता था। आर्यसमाजियों की संगति में धर्मावलम्बी राष्ट्रीयता की शिक्षा प्राप्त की थी और सारी दुनिया को दयानन्द की नजर से देखता। इसे धार्मिक आडम्बरों के प्रति नफरत थी और प्रतिपक्षी अगर सीधी तरह न माने तो डन्डे के न्याय से उसे सीधा करने का पक्ष था। परीक्षा पास कर गुरुकुल काँगड़ी में अध्यापक होकर आर्यसमाजी धर्म प्रचारकों को शिक्षित कर भारत में सतयुग का प्रसार करने के लिये उतावला बना हुआ था।

इसमें सन्तकुमार जोशी उग्र दिखाई देने पड़ने वाला सशक्त लड़का। सामना करने के लिये लड़ाई झगड़ा करने का काम लेने के लिये सदा ही तत्पर। रोज सवेरे तीनसौ पचास दंड पेलता और शाम को हनुमानजी के दर्शन कर अखाड़े में लड़ने जाता। उसके स्नायु ढंग से बने रहें इसकी उसे बहुत चिन्ता रहती। जहाँ भी शारीरिक गोष्ठी देखता कि उसे ताव आ

जाता और चाय बीड़ी मिठाई इत्यादि हानिकारक चाजों पर जहाँ-तहाँ भाषण देना। इसने भी रावपुरे में एक अखाड़े की आयोजना की और विद्यार्थियों का उठ-बैठ कराने में उसे जो आनन्द मिलता वह किसी दूसरी चीज में न मिलता था। छोटे और निर्बल शरीर वाले सुन्दरम की तरफ उसका तिरस्कार किसी प्रकार भी शान्त नहीं होता था और उसे देखकर अपने हाथ के स्नायुओं की ओर गर्व से देखने लगता।

तीसरा गिरजाशंकर शुक्ल जूनियर बी० ए० का छात्र था। इसका भाई गायकवाड़ी फौज में किसी पद पर था अतः उसे फौज का बड़ा मोह था। उसने परेड की थी और फौज की योजना सम्बन्धी कुछ निर्जीव पुस्तकें पढ़ी थी और बार-बार उनमें से ज्ञान उपयोग ही करता था। दशहरे के दिन जब सवारी निकलती तो शुक्ल महाराज बड़े अभिमान से अपने भाई को पहचानने के लिये आतुर रहते। यह बड़ौदा का प्रजा और सयाजीराव गायकवाड़ का अनन्य भक्त था। उस इस नरेश की शक्ति में पूरा विश्वास था। गायकवाड़ द्वारा देश का उद्धार करने की योजनायें वह हमेशा बनाता और बिगाड़ता रहता।

नारायण पटेल पैर फैलाकर हाथ पीछे टेके हुए बैठा था। जानवर की सी बेदरदी से उसने सिर पीछे की तरफ डाल रक्खा था। उसका मोटा शरीर जरा हास्यजनक लगता था। वह बी० ए० में था और गणित में एक ही था। बोर्डिंग की दीवारें उसके गणित प्रेम की सदा ही साक्षी देती रहतीं। और कागज न मिले तो कोट या कमीज पर दिन में अनेक बार उस गणित के सवाल लगाते रहने में किसीको आश्चर्य नहीं मालूम होता था।

प्रोफेसर की मन्द बहू कभी न लेता और समझ न सके एसे प्रश्न उनके सामने रखने में ही अपनी बड़ाई मानता था। मकाले से उसे चिढ़ थी क्योंकि मकाले को गणित बिल्कुल न आता था—यह बात उसके मन में बिल्कुल स्पष्ट थी और गणित में कचाई होने के कारण ही नेपोलियन वाटरलू की लड़ाई हार गया ऐसा अभिप्राय वह अक्सर

जाहिर किया करता।

कई बार होठ चबाता हुआ, रास्ते के बीच ही खड़ा होकर देश के विषय में विचार करता और क्रान्ति उत्पन्न करने की योजना बनाता रहता। वह क्रान्ति उसस अप्रतिम वक्तृत्व से होने वाली है, ऐसी श्रद्धा होने से वह भाषण तयार करने और रटने का काम किया करता।

मोहनलाल पारेख छात्र नही था गायकवाड़ी नौकर था। वह बी० ए० पास कर चुका था और अरविन्द बाबू से परिचित हो गया था। वह अच्छा खासा विप्लववादी था और गांव गांव बगावत का प्रचार करने में ही मुक्ति मानता था। वह दूरदर्शी न था पर उसकी दक्षता गजब की थी।

इन संस्कारी और विशुद्ध हृदय वाले युवकों के अन्तर में स्वातन्त्र्य और माता की ज्वाला प्रज्वलित हो उठी थी। पगम्बरों के प्रति उनकी अखंड श्रद्धा थी। गुजरात के प्रतापी आत्मा की चिनगारी सदृश इन लड़कों के हृदय में राष्ट्र निर्माण ही परम ध्येय था—उसे आजाद करना यही प्रथम कर्त्तव्य था।

(२)

केरशास्प ने पूछा 'पारेख! सब आ गये क्या?'

नहीं अभी वह बम्बई वाला नहीं आया।

आना ही चाहिये शिवलाल को जगह मालूम है।

तत्पश्चात् पाठक ने पूछा और सब सप के आस-पास बैठ गये। 'क्यों धीरजराम क्या बात चल रही है?

नरायण पटेल ने रोष में कहा मैं कब से कह रहा हूँ कि हमको 'सिक्रेट सोसायटी' की स्थापना करनी चाहिये। आज स्थापना करो। फ्रांस इटली—

शुक्ल ने प्रतिवाद किया 'सिक्रेट सोसायटी से कहीं कवायद हो सकती है?

पाठक ने व्यंग में कहा तुम में कवायद करवाने की हिम्मत भी है?'

सनत्कुमार जोशी ने अपने स्नायु वाले हाथों की तरफ अनजाने ही दृष्टि डालते हुए कहा तुम ऐसा समझते हो तो क्या हम सब बेकार ही हैं ?

लेकिन राष्ट्रीय उत्साह के बिना यह कस हो सकता है। धीरज-राम बोला।

तुम्हारा ठिकाना ही कहाँ ? पाठक ने कहा।

सुनो। आज़म नरेन्द्र के गौरव से केशनास्य न कहा। उसकी आँखों में और वाणी में हमेशा सत्ता समायी रहती। सब चुप हो गये। वक्त बहुत हो गया है आज का काम समाप्त कर मुझे अभी कैंप जाना है। वाद-विवाद का यह समय नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी बात कहना चाहे तो कुछ समझ में आ सकता है कि हम लोगों की किस विषय में क्या राय है ?

भारत स्वतन्त्र होना ही चाहिये। नारायण पटेल क सीधा बठने से ही जसे स्वतन्त्रता मिल जाती हो इस प्रकार जरा तन कर वह बठ गया।

सिर्फ यही सवाल क्यों है ? पाठक ने कटाक्ष किया।

यही खास बात है। केशनास्य न मजबूत हाथ पैर मारते हुए कहा।

अरे है कौन यह ! किसीको दूर से आते देख कर उसने पूछा।

मैं हूँ अंबालाल। आने वाले ने उत्तर दिया और दो युवक वहाँ आये।

हाँ। लपक कर शिवलाल सराफ और अम्बालाल देसाई बठ गये।

अब हम सब लोग इकट्ठे हो गये हैं। केशनास्य ने कहा 'हर आदमी अपनी अपनी योजना बताए। समय हो गया है। नारायणभाई ! तुम्हारी क्या योजना है ?

मेरी योजना तो बहुत आसान है। हम एक गुप्त मण्डल की

स्थापना करें—कार्बोनारी★ के समान। एक दिन इकट्ठे होकर सत्ता पर आक्रमण कर उसे ले लें और काम पूरा हो जाय। बहुत सहज काम बता रहे हो इस प्रकार नारायण भाई ने कहा।

तुमको तो यह लड्डू खाने जैसी ही बात लगती है। पाठक ने कहा।

पाठक अब विवाद बन्द करो ? केरवाला ने स्वयं लिए हुए प्रमुख पद से कहा।

अच्छा फिर ? हँस कर पाठक ने जवाब दिया।

पाठक है ही ऐसा। नारायणभाई ने कहा।

मैंने तो गणित की तरह हिसाब लगाकर रखा है। पचास हजार अंग्रेज तो वैसा ही पाँच लाख का गुप्त मण्डल—एक अंग्रेज के लिये दस हिन्दुस्तानी !

और तोपों की गिनती भाई। पाठक ने मुस्कान के साथ में कहा।

अच्छा मोहन भाई तुम्हारी क्या योजना है ?

लेकिन योजनायें इकट्ठी करने के बाद होगा क्या फिर ? अम्बा लाल देसाई ने पूछा।

केरवाला ने कहा आखिर देखना तो चाहिये कि कितनी जान कारी है ?

मैं तो उत्साह को प्रधानता देता हूँ। बिना उत्साह के त्याग नहीं होता। और यह उत्साह बिना राजद्रोही साहित्य के आ नहीं सकता। अतः पहले चुपचाप प्रेस की स्थापना कर चारों ओर चेतनता का साहित्य फैलाओ।

और प्रेस पकड़ा जाय तो ? पाठक से न रहा गया।

एक पकड़ा जाने पर दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा। प्रेस नहीं तो लिख लिखकर गाँव-गाँव और घर घर असंतोष फैला दो।

★ इटली का गुप्त मण्डल।

'ठीक, शास्त्री ! तुम्हारी क्या योजना है ? करशास्त्र ने पूछा ।

केरशास्त्र ! मेरी बात तो यही है कि हिन्दुओं का धार्मिक उत्साह जब तक परिवर्तित न किया जायगा तब तक कुछ हो ही नहीं सकता । मुझे तो एक विशाल गुरुकुल की स्थापना करनी ही होगी और उसमें महर्षियों को पैदा करना है । एक धर्म-ग्रन्थि में सबको बांधकर हम देश के उद्धार के लिए आग बढ़ेंगे तभी कुछ लाभ होगा ।

'सब महर्षि मन्तर हो मन्तर आपस में मर मिटेंगे मत हानि ही होगी । पाठक ने सुन्दान के कान में धीरे से कहा ।

सुदशन एकाग्र चित्त स सुन रहा था । चिढ़कर बोला अरे भाई सुनने तो दो ।

मैं तुम्हें अपनी योजना बतलाता हूँ । गिरिजाशंकर से चुप नहीं रहा गया मेरी योजना सबसे ठीक है । मैं बी० ए० पास करते ही गायक वाड़ी फौज में भर्ती हो जाऊंगा और फौज को अपने हाथ में लेकर उसको बढ़ाता रहूँगा । उसकी शक्ति स गायकवाड़ सरकार को हिन्द की गद्दी पर बैठाऊँगा ।

करशास्त्र को भी जरा हसी आई । इस फौज को बन्दूक चलाना आता है या नहीं ।

'नहीं आती होगी तो आ भी जायगी । शुक्ल ने विश्वास दिलाया पाठक ने उपेक्षा से आकाश की ओर देखा ।

'पंड्या तुम क्या कहते हो ? शुक्ल ने कहा ।

मैं यह समझता हूँ कि जब तक विलायत या अमेरिका जाकर इन पश्चिम वालों का रहस्य जान नहीं लिया जाय तब तक कुछ हो नहीं सकता । मुझे कोई पैसा दे तो पहले वहाँ जाकर सीख आऊँ । जापान का इसी तरह उद्धार हो गया था ।

'यह पत्ते की बात है न । जापान में तो सरकार लड़कों को सीखने के लिए परदेश भेजती थी । सन्तकुमार जोशी ने कहा ।

अपने यहाँ भी तो गायकवाड़ सरकार है । गिरिजाशंकर शुक्ल

बोला।

तुम्हारी क्या योजना है केरशास्प यह तो बताओ? पाठक बोला
'यहाँ तो एक दूसरे का मत मिलना ही नहीं।'

मेरी योजना तयार है पर एक बार सबको कह लेने दो—फिर मैं कहूँगा। तुम क्या कहते हो पाठक?

'जब सब कह लेंगे तो मुझे भी कुछ सूझ जायगा। यहाँ तो मतभेद ही इतना दीख पड़ता है कि क्या होगा कुछ समझ में नहीं आता।'

अच्छा दिवनाल तुम क्या कहते हो? केरशास्प ने पूछा।

देखो देश का उद्धार संस्थाओं पर है और संस्थाओं का आधार है उनके संचालकों पर। जो हम इन सब संचालकों को किसी तरह से अपने इशारों पर नचा सकें तो काम ठीक हो सकता है। सब संस्थाओं का हमें सूत्रधार होना चाहिए फिर और बातें तो अपने आप जल्दी-जल्दी हो सकती हैं।

'यह तो बिलकुल आसान बात है क्यों? पाठक ने कहा।

अरे भाई जाने दो। और अब्बासाल भाई तुम?

मेरी योजना तुम जानते ही हो। निश्चयात्मक धीमी आवाज से देसाम ने कहा मैं एक मित्र के साथ बम बनाने की तरकीब खोज रहा हूँ। बिना नाश के साधना के कुछ हो नहीं सकता। युवक की फौज और नारायण भाई के गुप्त मंडल का पूरा आधार उसी पर है। एक सुपारी जैसे बम से एक बड़ा महल उड़ जाता है फिर है क्या?

सब एकाग्रचित होकर गरदन आगे किये हुए सुन रहे थे।

समस्त यूरोप की सत्ता का आधार इसी ताकत पर है। जिसके पास गोला-बारूद हो वही बोल सकता है। हमारे पास बन्दूकें हैं नहीं बस' कुछ एसी खोज निकालें कि इन सबसे बढ़ कर निकले।

और छदुभाई तुम क्या कहते हो? केरशास्प ने पूछा।

जब यह सब लोग बोल रहे थे सा जैसे वह सो गया हो उस प्रकार वह चौंक उठा। उसके मुख पर खून भसक आया उसे जरा शोम

दृया।

मैं—मैं—पाठक तुम कहो।

'मैं सब क बारे में

'सुदुमार' इसमें हिचकचाते क्या हो ? तुम ने तो एसी योजनायें बहुत बार निकाली हैं। करुणाम्य ने उत्साह दिलाया।

दबी जरा कांपती हुई आवाज में मुन्धन ने कहा मेरे पास योजना नही पर एक दृष्टिकोण है। तुम सब ने एक-एक योजना कही पर अपने अपने विशेष दृष्टिकोण स माँ क दृष्टिकोण से नहीं।

कैसे ? नारायण भाई ने पूछा।

माँ बरा इन्तजार कर रही है। दुःख भरे स्वर में मुन्धन ने कहा उसकी आजानी चला गई है श्रद्धा चली गई है जो मस्कार का माँ है उस सब असंस्कारी समझते हैं। तुमने जो योजनायें कही हैं वे एक क बाद एक यदि अमल में लायी जाय तो माँ का भाग्य जागे। एक हाथ खींचता है तो दूसरा पर इस तरह स कहीं काम हो सकता है ? य सब योजनायें एक साथ अमल में लायी जायें एसी न्यायनियत कहाँ है ? भगीरथ प्रयत्न करने की तथा पार होने की और मानवता माँ क चरणों में धरने की शक्ति है ?

मैं तो यही कहता हूँ। शास्त्री ने कहा।

मैं भी। मोहनलाल न कहा।

नहीं जरा सा फेर है। धर्म क नाम पर कुछ कराग तो धर्मान्धता पैदा हो जायगी। शान्ति द्वारा करोग तो सिर्फ बातें करने का ही शौक बनेगा।

सचिन भाई तुम क्या कहना चाहते हो कहो ? नारायण भाई बोला।

'इतना ही कि भारतीय मानवता में व्यवस्था लाकर समस्त बन्धनों का कुचल डालो एसी शक्ति लिए बिना काम नहीं चल सकता। सब मुन्धन की गम्भीर आवाज़ को एकचित हो सुनने लग।

केरशास्प ने कहा 'यह तो कुछ समझ मे नही आता जरा स्पष्ट कहो न ?

कहूँ ? सुदर्शन बोला 'माँ की कमजोरी तुम जैसी समझते हो वह ऐसी नही। प्रस नहीं बनायोग तो लोग पढ़ेंगे नहीं बनायोग तो चलाने वाला नहीं मिलेगा फोज खडी करोग तो उसको जीतना नही आयेगा। यदि यह बात न होती तो मुट्ठी भर व्यापारी मग्रज तुमको इस प्रकार जीत न लेते। हम लोगा का रोग बहुत भयकर है हमारी मानवता कलंकित हो गई।

क्या कह रहे हो ? नारायण ने झिझके से पूछा।

जो मेरी समझ में आ रहा है वही। हम सड गये हैं। हम में बुद्धि है साहस हैं देश भक्ति है फिर भी हममें माँ के प्रति तल्लीन श्रद्धा और व्यवस्थित मानवता नही है। गिने चुने अग्रज जो चाहे वहाँ रहते है पर उनके उत्साह में उनक आवेश में व्यवस्था नही उत्साह नही उसे सफल होने पर ही तुम लोगों की योजनायें सरल हो सकेंगी।

यही होता तो हम लोग इस हीन दशा को पहुँचते ही क्यों ?

पाठक ने कहा।

केरशास्प ने पूछा अच्छा पाठक तुम ! तुम क्या कहना चाहते हो ?

तुम खुद ही कहो न !

तुम कहो।

नहीं तुम।

अब तुम्हारी योजना क्या है ? नारायणराव ने केरशास्प से पूछा।

केरशास्प ने शेर की तरह माथा ऊँचा करते हुए कहा इन सब योजनाओं का आधार तो पहले हाथ में आना चाहिये। पैसा है तो चाहे जो कर पहले पैसा आये तो सब कुछ हो। मैं अब बम्बई जाने वाला हूँ। कितने ही रुई के व्यापारियों से मेरा संबंध है। अगले साल

तुम्हें जितने रुपये की आवश्यकता होगी मैं पूरा कर दूँगा। मैं तो एक के बाद दूसरा कदम बढ़ाने का पक्षपाती हूँ।

एकमात्र मेरी योजना में पैसे की जरूरत नहीं है। छाती निकाल कर सन्तकुमार जोशी ने कहा गाँव-गाँव अखाड़े खोलना और भीमसेन तयार करना—इसमें जरूरत है एकमात्र जलवायु और कसरत का।

—और पीने को चाहिए दूध। करणास्त ने कहा देखो एक काम करो। साल भर तक हम सब अपनी अपनी योजना पर आग विचार करें। अगले साल हम जरूर कुछ काम शुरू कर सकेंगे।

'लेकिन इस समय मिली हुई सभा खत्म नहीं होनी चाहिए। नारायण भाई ने कहा।

नहीं मोहनलाल बोला इसी समय मंडल की स्थापना करो। एक मंत्री और एक प्रमुख नियुक्त करो। सब एक दूसरे के साथ पत्र व्यवहार रक्खो और अगले साल काम शुरू कर दो।

'लेकिन पाठक तुम्हारी क्या योजना है? कुछ है भी या नहीं? गिरजाशंकर दवे ने पूछा।

'मुझे तो यह सब हवाई किला लगता है। शांति से पाठक ने कहा। सब लोग विस्मय और अधीरता से पाठक के तेजस्वी मुख की ओर देखते रहे। तुम सब कहाँ हो जो बच्चों की तरह बतियाँ रहे हो। आँखें निकालकर करणास्त ने पूछा?

पाठक ने तिरस्कार से आगे कहा क्यों क्या? तुम्हारे गुड़ियों के इस खेल से ब्रिटिश सत्ता घबराने वाली नहीं है? और यदि घबरा भी गई तो तुम कर क्या लोगे? तुम तैंतीस करोड़ भेड़ के बच्चे क्या कर सकते हो? मुन्शन स्तब्ध होकर अपने इस प्रिय मित्र की प्रस्तावनी सुनता रहा।

'भेड़ के बच्चे! सन्तकुमार चिल्लाया सब हक्के से देखने लगे पर पाठक की दृष्टि मंद न हुई।

'भेड़ के बच्चे ही नहीं, बल्कि! तैंतीस करोड़ भेड़ भी एक नाश

गद्दारों के हाथ में नहीं रह सकती।

उसका उपाय क्या है ? केरशास्प ने पूछा। सुदर्शन अपने प्रिय मित्र के भयंकर वचन सुनकर दंग रह गया। पाठक इतना श्रद्धावान था कि उसे खबर न थी।

कुछ नहीं पर माँ की मांदी तो है। क्रोध में सुदर्शन ने कहा।

माँ ? जिसे तुम माँ कहकर सम्बोधन करते हो वह वास्तव में है क्या ? इसका भी कुछ ख्याल है ?

जवाब में सुदर्शन ने गुस्से भरी दृष्टि से देखा।

टाइम्स ऑफ इंडिया में नौकरी कर लो तुम ! नारायण—भाई ने कहा।

'तुम्हारी सलाह फिर पूछूंगा

तब तुम मंडल बनाने के विरुद्ध हो क्यों ?

बिलकुल। और न मैं शामिल ही होऊंगा। कहो तो चला जाऊं।

सब पर निरुत्साहमय शांति फैल गई। क्या करें यह किसी को भी नहीं सूझा। केरशास्प चला गया।

जाने की जरूरत नहीं। उसने कहा तुम्हारी प्रामाणिकता में हमें यकीन है। पाठक को यदि न पसन्द आये तो भले ही दूर रहे। शब्दों से नहीं बल्कि कामों से हम इसे अपना बना लेंगे। चलो अब देर हो रही है।

केरशास्प ! तुम अध्यक्ष का पद लो। सुदर्शन ने कहा।

अच्छा। शिवलाल सराफ ने अनुमोदन किया।

और सादुभाई तुम काबिल हो मंत्री हो जाओ।

मुझसे—

सादुभाई तुम्हीं काबिल हो। केरशास्प ने कहा और सादुभाई ने पद स्वीकार कर लिया। चला तब वन्देमातरम् ! पाठक रात में जरा विचार करना।

मैंने तो बहुत कर लिया है। तिरस्कार से पाठक ने कहा।

सुदर्शन ने उसकी ओर घूरकर देखा। उसके अन्तर में बसा हुआ मित्र-भाव झुलस गया था।

'अच्छा, वन्देमातरम—वन्देमातरम्—' सब ने एक दूसरे से आज्ञा ली।

सदुभाई! अम्बालाल देसाई बोला 'परीक्षा के लिये यदि बम्बई आओ तो मेरे यहाँ ही ठहरना।

और या मेरे यहाँ। शिवलाल सराफ ने कहा।

जरूर जरूर। कहकर सुदर्शन वहाँ से चल दिया।

(४)

सुदर्शन को आज का प्रसंग ऐतिहासिक लगा। आज के दोस्तों में उस देशोद्धारक महा संस्था की रेख दिखाई दी और वह स्वयं उस संस्था का मन्त्री है इस घमंड से उसकी योजना और स्वप्नों का वेग बढ़ा। एक साल में संपूर्ण योजनाओं को परिपक्व कर एक महान प्रवृत्ति माँ के उद्धार के लिये प्रारम्भ करना उसे एक आसान काम लगा। धार्मिक आवेश अखाड़े का व्यूह फौज जैसे प्रेस परदेश में सहयोगी संस्थाएँ—ये सब एक व्यवस्थित मंडल के कब्जे में रहेंगी फिर क्या चाहिये? माँ का प्राण वापस आने की पगध्वनि उसके कानों में सुनाई देने लगी।

पाठक के द्रोह से उसका दिल टूट गया। उसके लिये पाठक भाई से अधिक था। उसकी परिपक्वता शक्ति और साहचर्य उसका ही है ऐसा वह सदा समझता रहा। लेकिन वह तीव्रता की एसी तिरस्करणीय दशा में पड़ा है इसका उसे पता न था।

चुपचाप दोनों मित्र अपने कमरे में आये और कपड़े निकाल कर सोने की तैयारी करने लगे। थोड़ी देर में कृत्रिम हास्य से पाठक ने कहा गुड नाईट, सदुभाई! शांति से सोना!

मूक तिरस्कार से सुदर्शन ने जवाब भी नहीं दिया।

सुदर्शन ने सोने का यत्न किया पर वह अपने प्रयास में

सफल न हो पाया। योजनाओं की परंपरा उसके दिमाग में घूमती रही। अरविंद घोष का संदेश अलग अलग रूपों में उसे सुनाई देने लगा। भीमनाथ के तालाब पर हुई बातें बार-बार उसके कानों से टकराने लगीं। कालेज के आगे देखा हुआ भारत माता का भव्य मुख हर समय उसे दिखाई देता रहा। और प्रलय क्रांति पर चढ़े हुए उत्साह-सागर की प्रचंड उर्मियां उछलती ही रहीं।

जाग्रत स्वप्नों में मस्त बना हुआ सुदर्शन सवेरे जल्दी उठा और छज्जे में कुर्सी पर बैठ कर देश के उद्धार का विचार करने लगा। विचारों में वह इतना तल्लीन हो गया कि पाठक आकर पीछे खड़ा है यह भी उसे पता न चला।

पाठक की आंख में मैत्री का भाव था। उसकी बड़ी आँखें जागने से तथा खिन्नता से लाल हो गई थीं। बहुत देर तक वह मिठास से सुदर्शन की ओर देखता रहा।

सदु!

सुदर्शन ने जवाब नहीं दिया। एक देशद्रोही उसके विचारों में खलल डाले यह उसे अच्छा न लगा।

सदुभाई! तुमसे कुछ बात करनी है।

हमारी और तुम्हारी अब बात क्या हो सकती है? सुदर्शन ने बची हुई भावनाओं से कांपते स्वर में कहा।

बहुत कुछ सुनो। सामने आकर सत्ता से पाठक ने कहा मैं तुम्हारा दोस्त हूं। वर्षों से मैंने तुमको पहचाना है और अपने हृदय में स्थान दिया है। इस समय तुम कुएँ में कूदने के लिये तैयार हुए हो तब तुम्हें सचेत करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं। कहकर पाठक ने सुदर्शन के कंधे पर हाथ रखा।

मैं बिना सोचे विचारे कुछ नहीं करता। कहकर क्रूरता से सुदर्शन ने अपने कंधे पर से पाठक का स्नेह भरा हाथ खिसका दिया।

तुम आकाश नापते हो। अब जो मिले थे वे सब के सब मूर्ख थे

इन सबके लिये कल की बातें हवाई किले हैं—तुम्हारे लिए वे वास्तविक हैं। बारह महीने बाद इसमें से किसी का भी कुछ याद नहीं रहने वाला।

अश्रद्धावान को आशा नहीं होती—इस लोक में न या परलोक में।' सुदर्शन ने उच्चारण किया।

मुझे जो जी में आये सो कह लो। तुम में बुद्धि है महत्वाकांक्षा है शक्ति है बड़ाई प्रताप और द्रव्य सहज में ही मिल जायगा। इन सब को छोड़कर एक विकसित जीवन पर इस प्रकार पानी फेरता है यह देखकर मेरा दिल दुखता है। आवेश में पाठक ने कहा।

'तुम्हारा दिल दुखता है तभी मैं दुखी हूँ। अपने सूत्र किसी दूसरे के लिये रखो तो तुम्हारा और उसका दोनों का कल्याण होगा। माँ की कीर्ति प्रताप और समृद्धि के अतिरिक्त मुझे और किसी वस्तु की इच्छा नहीं।

फिर क्या होगा इसका भी विचार किया है ?

'मौत का मुझे भय नहीं।

'कुमौत मरोगे तो ?

'कितने ही करोड़ मरते हैं तो एक और भी सही।

तुम मेजीनी जैसे स्वप्न रखते हो पर यह इटली नहीं—हिन्दुस्तान है !

'अपने स्वप्नों से मुझे जागना ही नहीं है क्यों बेकार हाथ-पैर पटकाते हो ! कल रात से हम एक दूसरे से अलग हो गये हैं। तुम गुलामों की भी गुलामी कर किसी देशी नरेश के हाथी पर चढ़कर पछी उड़ाना। मैं किसी जल के कोने में सड़ूँगा। नहीं तो कोई गिलोटीन से मेरे शरीर को बेध देगा। हम दोनों के रास्ते अलग अलग हैं वे कभी मिल नहीं सकते।

हम दोनों की दोस्ती—

अधीरता से सुदर्शन उठकर खड़ा हो गया माँ के भक्त के अति

रिश्ता दूसरे की मर्जी मेरे लिये मना है। और पैगम्बर की-सी निस्पृहता से वह वहाँ से चला गया। पाठक की आँखों से आँसू बह निकले।

दिन भर पाठक बेचैन रहा और रात को सुदर्शन जब सोने आया तब उसके हाथ में एक कविता दी। आँसुओं से भीगे पत्र पर पाठक ने हृदय की व्यथा अंकित कर दी थी।

सुदर्शन ने शान्ति से उसे पढ़ा—

आ प्रेमी दिल पारेमु
छोद पाली पोपी सोपयु
को खाटको निष्ठुर ने
जाते न कां ए रेसवु
ममतालु मोलू मापदु
को वज्रसम सापे मत्यु
ना जाणलु न गरीबड़
मुज नाव हा! खड़ के पढ़यु!
कल्व कल्वो भई मसे
तो थाम कुदरत ने बसे

हिन्दी रूपान्तर

यह प्रेमी उर था एक विहग
जिसको जीवन में पाला था
पर किसी निठुर के हाथों में
क्यों हमने चुप दे डाला था?
स्नेहमय भोला बिचारा
वज्र से क्यों जा मिला यों?
वह भला क्या जानता था
मत्यु से क्या आ मिला यों?
उर उरों से आ मिला यह!
प्रकृति का अधिकार है रे?

तकदीर तेनां सांपडे !
बीजा बीचारा शु करे ?
थारी निहाली सीनीयु
धारीज में जाणी खरे !
बेमहेर आलिम नीवड्यु
ते वांक किस्मत नो अरे !
फरियाद ने ते दाद शी ?
उर वागीयां हाये कर्यां
लम्बे खरे ! छुटको थशे
दुःखो खुले पहोरी लीधा।
बेहया था धार धो
खुद दोस्त तेरा जोर मो ?
सकुमन थी ना सलाय तो
मृत्यु थी बहेतर सोरशो !

हो विधाता क्रूर तो कोई
भला फिर क्या करे ?
समझ कर सजीवनी
सौंपा तुम्हें था हृदय यह
हाय ! यह निमम हुआ तो
भाग्य को ही है प्रणय यह।
याचना कैसे करें हम ?
आँसुओं में प्राण बोरे
स्वय बन्धन में पड़े जो,
दुःख भी हमने बटोरे।
ओ विहग ! तू मौन रह
तेरा भला अधिकार क्या ?

एक क्षण भर के लिए सुदर्शन के हृदय में मैत्री भाव का संचार हुआ। उसने खाट पर पड़े हुए पाठक की तरफ देखा और उसकी पीठ पर हाथ रखा।

पाठक! माफ करो। मैं जरा जंगली हूँ। हम दोनों मित्र रहे हैं और रहेंगे। लेकिन हम दोनों अपने भविष्य का निर्माण अलग अलग रास्ते से ही करेंगे।

'जैसी इच्छा, पर हम मित्र ही रहेंगे बस। दोनों ने एक दूसरे का हाथ दबाया और खण्डित मैत्री को जोड़ने का प्रयत्न करते रहे।

—

सह सके तो वेदना सह
मृत्यु का फिर द्वार है या!

नौ

कपाडिया प्रोफेसर

सुलोचना माँ-बाप के साथ बम्बई पहुँची और अपना जीवन सदा की तरह शुरू करने में रत हुई। पर वह प्रयास जैसा सोचा था उस सरलता से सफल नहीं हुआ। नामदार जगमोहनलाल उसके साथ कड़े पन से बर्ताव करते उसकी माँ जैसे उसे फुसलाती हो इस तरह बात किया करती। इन सब का आशय वह समझती थी—आशय वही 'धींचू' था।

बटी हुई टांगें बटन खुला कोट और मैली धोती में देखे हुए 'धींचू' को बिलकुल भुला देना आसान न था।

एक तो उसकी विचित्रता ऐसी थी कि याद रह जाय दूसरे उसकी वजह से माँ-बाप के बर्ताव में परिवर्तन हो गया था और तीसरे वह स्वयं ऐसे धींचू के लिए है ऐसा कोई भी सोचे पर यह हीनता उससे नहीं सही जा सकती थी।

इसके बाद सुदर्शन की अमानुषी गंभीरता जैसे-जैसे उस चारों ओर से घर रही हो ऐसा उसे लगा करता।

नामदार जगमोहनलाल के बंगले की सुन्दरता में एल्फीन्स्टन कालेज के मोजीले वातावरण में प्रतिदिन के अध्ययन में और खेल-कूद तथा तफरीह के तूफान में भी एक अकल्पित सा काला बादल क्षितिज पर छा जाता था और उसकी गम्भीर छाया में मौज शौक तफरीह और तूफान पहले जैसी लहर में आते हुए दिखाई न देते थे।

यह परिवर्तन उस धींचू के स्मरण से ही होता है ऐसा सुलोचना को लगा और सुदर्शन को अपना दुर्भाग्य समझने लगी।

इस दुर्दैव का असर उसे एक दिन स्पष्ट दिखाई दिया। बड़ौदा से आने के बाद आठ दिन में केकी दस ने एक टेनिस का टूर्नामेंट जीता। टूर्नामेंट समाप्त हुआ। अत हमेशा की तरह सुलोचना के चरणों में अपनी जीत का तोहफा भेंट करने के लिए वह खोजता हुआ आ पहुँचा। सुलोचना एक बास्टी पर बैठी थी।

'केकी आज तो तुम अजीब थे।' सुलोचना ने प्रशंसा सूत्र का उच्चारण किया।

'बस नामदार! सुलोचना को उसके मित्र हानरेबल (नामदार) के नाम से पुकारते थे। मैंने तो तुम्हारी ओर देख कर खेलना शुरू किया था।

सुलोचना इस खुशामद से फूल उठी और हँस कर बोली तुम्हारे थाट से तो हद हो गई।

मुझे तो केवल रैकेट ही इस तरह रखना पड़ता था—कि बाल सटाक से जाते थे। केकी ने रैकट से प्रहार का अभिनय किया।

सुलोचना गर्व से हंसी पर जैसे ही उसने ऊंची आँख कर केकी के मुख की ओर देखा—पसीना भाल पर कढे हुए घुंघराले बाल कमीज और कोट की सफाई पर उसकी नजर पड़ी और उस बीनू के बेकदरी स रखे हुए बाल गन्दा कमीज और बठी टोपी की याद आई। केकी कसा स्वरूपवान् है। उसने सोचा पर कौन जाने क्यों नजर के आगे वही काला आदम प्रत्येक पल घिरता और उसके अपकार में केकी कृत्रिम निर्लज्ज छिछोरा और अविचारी दिखाई देता। उसने अपने दुर्दैव को गालियाँ दीं और हस कर उठी।

केकी! अब मैं घर जाऊँगी।

मेरी गाड़ी आ गई। छोड़ आऊ।'

'मेरी भी आ गई है।

हाँ चलो। कहकर सुलोचना दौड़ती हुए अपनी किताबें लेने गई। केकी दस जरा उसके शरीर की सुघड़ता देखता रहा और वह

बढ़ाया फाइन गल दट !

थोड़ी देर में सुलोचना झटपट जीने पर से उतरी। उसका मुँह लाल हो रहा था। उसके सुन्दर नथुनों में स्वाँस जल्दी-जल्दी आ-जा रहा था। एक सुमधुर हास्य उसके मुख पर था।

जैसे ही वह आई कि सामने के दरवाजे से गमन दलाल आया। ऊंचा और सुगठित शरीर वाला गमन सुलोचना को हंसते-हंसते निर्लज्जता से देख रहा था। उसकी छोटी सी टोपी असाधारण उद्दत पने से सिर का चौथाई हिस्सा ढक रही थी। एक छोटी सी सुनहरे किनारों वाली सिगरेट उसके हाथों में थी। उसके पप सूज में चारों ओर की शोभा प्रतिबिम्बित हो रही थी।

हलो ! नामम्गार साहब ! कहाँ चल दीं—इतनी उतावली से ? हंसते-हंसते वह बोला और दरवाजे पर तिरछा हाथ रख कर खड़ा हो गया।

सुलोचना आगे बढ़ते हुए रुकी और हंसी 'दलाल ! हाऊ डू यू डू ?

'ए गमन ने जवाब दिया। धींवू का कुछ समाचार ? गमन ने मजाक में पूछा। सुलोचना ने बड़ी" से आकर अपने कितने ही मित्रों से अपने नवीन परिचय की बात कही थी और परिणाम में सुलोचना के मित्रों में धींवू घा" का उल्लेख बहुत प्रचलित हो गया था।

'वेटिन्ग —वेटिन्ग फार दा मैरिज डे ?' सुलोचना ने कहा और निर्लज्जता से हँस पड़ी।

लेकिन इस निर्लज्ज हास्य के साथ एक समझ में न आने वाली उ"ासी भी छा गई। इस 'धींवू' को देखने के बा" से यह हिचकिचाहट क्यों हुआ करती थी।

इतने में उसकी आवाज सुन कर केकी दस आया नामम्गार ! चलो न ?

गमन ने घूम कर देखा और केकी से उसकी आँख मिली दोनों पर बम्बई की पालिश चढ़ी हुई थी अत वे हँसे तो प्रबन्ध पर हृदय

में बसा हुआ एक दूसरे के प्रति तिरस्कार आँख में झलक आया। सुलोचना तो पुरुष हृदय में प्रलय मचाने के लिये ही पैदा हुई थी अत-वह बिलकुल नहीं डरी। उसने हँसकर गगन से कहा आते हो हमारे साथ ? हम केकी की गाड़ी में जा रहे हैं।

विद दी प्रेटेस्ट प्लेयर' गगन बोला और टोपी उतार कर नीचे झुक कर आज्ञा पालन की।

केकी भी उस्ताद था चलो आज जरा ड्राईव ही ले आवें।

तीनों जने हँसते-हँसते और मजाक करते हुए चले।

(२)

औरत के हृदय में दो ही इच्छायें स्वाभाविक रूप से पाई जाती हैं।

पहली इच्छा है पुरुषों की प्रशंसा करना। इस इच्छा के सन्तोष के लिये धनवान स्त्रियाँ बाल सँवारने में मुँह रंगने में पचरंगी साड़ियाँ खरीदने और पहिनने में जेवरों की विविधता से अपने को सजाने में ही जीवन पूरा करती हैं।

शिक्षित स्त्रियाँ तेज प्रदर्शन करने में बातचीत से मोह उत्पन्न करने में गुलामों की परंपरा को जाल में फसाये रहने में ही अपनी विद्वत्ता को खर्च करती हैं।

और गरीब तथा अशिक्षित पति या पति के मित्रों की प्रशंसा प्राप्त करने का प्रयत्न करती है और उसके लिये भोजन बनाती है पानी भरती हैं बेगार करती है उपवास करती है बच्चों का पालन पोषण करती है।

उसकी दूसरी इच्छा शांति प्राप्त करने की और शांति प्रदान करने की होती है। यह इच्छा बहुधा स्पष्ट दिखाई नहीं देती—दबी रहती है।

पर चाहे जैसी भी स्त्री क्यों न हो उसके अंतर में किसी जगह शांति से बढ़ने की और किसीको शांति प्रदान करने की हौंस होती

है। प्रशान्त बनी ठनी प्रमागिन या गरीब भिखारिन स्त्री के जीवन में भी एक अस्पष्ट पर प्रबल सपना किसीके आँचल में शान्ति पाने और किसी को अपने आँचल में शान्ति देने का होता है।

इन दोनों इच्छाओं का खींचा-तानी में प्रत्येक स्त्री के जीवन का जहाज डगमगाता रहता है।

कभी कभी दोनों में से एक पवन का प्राबल्य पाते ही जहाज गति के साथ चल देता है—पर कभी-कभी दोनों पवन एक दिशा को होने पर जहाज का किसी अनुपम किनारे पर लगर डाल कर अपनी यात्रा समाप्त कर देनी पडती है।

सुलोचना को दूसरी इच्छा की अनुभूति न होती थी इस समय विकास पाते हुए यौवन में पहली ही इच्छा ने उसे आकर्षित किया था।

गमन दलाल और मंकी सरा जसे फक्कड सहाध्यायियों की प्रशसा किस कालेजियन के गर्व का कारण नहीं हो सकती ?

केकी और गमन की प्रशसा में मग्न सुलोचना का कितना रास्ता हँसी-मजाक में कट गया इसका उस कुछ भी ध्यान न रहा पर धर्नी रोड के आगे उनकी गाडी रुक गई। अत उसने चौंक कर देखा तो नामदार जगमोहनलाल दूसरी गाडी से उसको बुला रहे थे। सुलोचना घबरा गई।

उसका पिता उसे इस प्रकार देखेगा तो क्या कहेगा इसका विचार उसने नहीं किया था। उसने एकदम पुस्तकें ली और मित्रों से कुछ कहे बगर ही नीचे उतर गई।

नामदार जगमोहनलाल कोर्ट से वापस लौट रहे थे। उनकी गाडी की अगली सीट पर ब्रीफ बक्स पडी थी। अत उन्होंने हाथ के इशारे से सुलोचना को अपने पास बठने को कहा।

सुलोचना बठा और गाडी आगे बढ़ी।

'यह क्या सुलोचना ?

क्या पापा ? निर्दोष सुलोचना ने सवाल करने की हिम्मत की।

ज्ञान से और भी आगे को लचक गया था और कुछ-कुछ हाथी के माथे की याद दिलाता था। सिर सपाट—एकमात्र पीछे चोटी के दो तीन बाल हिल रहे थे।

जगमोहनलाल आओ भाई! प्रोफेसर ने अपनी जानी पहचानी मुस्कराहट मुख पर ला कर आने के लिये कहा और हाथ हिलाया।

कपाडिया! सुलोचना को पहचानते हो न?

कपाडिया ने सुलोचना की ओर घूम कर देखा और बोले सुलोचना! इसी का पहले थी। प्रोफेसर ने कपाल पर हाथ रख, फरवरी में मैं आया था—सतरह तारीख को—मुझे याद है।

मैंने इसको एल्फिन्स्टन कालेज में भर्ती कर दिया है।

क्यों हमारा कालेज देहाती है? आओ बैठो। दो कुर्सियों पर से पुस्तकों को जमीन में रखते हुए कपाडिया ने कहा।

कपाडिया के दीवानखाने में एक कदम भी इधर उधर चल सकना बड़ा मुश्किल था। चारों तरफ दीवाल में आलमारियों और तख्तों पर पुस्तकों के ढर पड़े थे। बीच में लम्बा मेज़ थी उसके ऊपर और नीचे किताबें ही किताबें खुली हुई अधखुली जैसे भी हों पड़ी हुई थीं। जितनी कुर्सियाँ थी उनके ऊपर उनके नीचे उनके आस पास भी उसी तरह दूसरी पुस्तकें पड़ी थी और इसके पीछे जहाँ घूमने की जगह थी वहाँ जमीन पर किताबों और कागजों का ढर लगा हुआ था। इन पुस्तकों से भरे हुए खड में स्वच्छता या व्यवस्था का नाम निशान तक न था और इन पुस्तकों को देखने पर ऐसा लगता है इस प्रश्न का हल करने में तो बुद्धि को भी मूर्छा आ जाय।

इन पुस्तकों से बनायी हुई गुफा में कपाडिया जिन्दगी बिता रहे थे और पिछले हिस्से में उनकी मौसी उनके लिए भोजन बनाती और एक तरह से सब काम काज करती थी।

प्रोफेसर में जितना ज्ञान था उतनी ही जीवन की सामान्य व्यवस्था के प्रति उनकी लापरवाही भी थी।

कितने ही वर्ष हो गये किसीने उनकी तनख्वाह नहीं बढ़ायी थी साधारणतया तो तनख्वाह मिली या न मिली यह याद रखने की तक-लीफ भी वह गवारा न करते थे।

दिन रात वह पुस्तकों में जटे रहते और जिस तरह फेफड़ा हवा लेता है उसी प्रकार उनमें से तत्व निकाल लेते थे। उन्हें ज्ञान का प्रदर्शन करना या उसका मूल्यांकन करवाने की पर्वाह न थी।

और दूसरे प्रोफेसर उनके द्वारा दिए हुए आधार पर पुस्तकें लिखकर पैसा कमाते तो इससे उन्हें जरा भी असंतोष न होता था।

सामान्य व्यवहार में वह एक छोटे बच्चे जैसे था।

भाई जगमोहन! अच्छा हुआ तुम आ गये। प्रोफेसर ने कहा मुझे एक बड़ी मुश्किल आन पड़ी थी।

'क्या? जरूर किताबें मगवाई होंगी?

हाँ!' प्रोफेसर ने एक छोटे बच्चे की-सी निश्छलता से हँसना शुरू किया और देने के लिए पैसा तक नहीं है।

नामदार जानते थे कि यह पुस्तक प्रेमी प्रोफेसर पुस्तकों की कीमत के सिवाय कभी भी भीख नहीं माँगते थे।

कितने रुपये चाहिये। कहकर नामदार ने जब से चेकबुक निकाली।

'पाँच सौ उन्तालिस रुपये पद्रह आने।

नामदार ने चुपचाप चेक लिखा और कपाडिया को दे दिया।

मैं फिर सब दे दूंगा। प्रोफेसर ने कहा।

नामदार हँसे। कितने ही चक उन्होंने कापडिया को दे दिये थे। चिन्ता मत करो मेरा कुछ अगला पिछला चाहिए ही नहीं।

अच्छा अब बोलो कैसे आना हुआ?

चश्मा नाक पर सरकाते हुए कपाडिया बोले।

मैं तो बैठ गया अब तुम बैठो भला बिना बैठे हुए बात हो सकती है?

जगमोहनलाल ने कहा मुझे तुम से बहुत कुछ पूछना है। उतावली

सुलोचना के पट में पानी पानी हो गया।

बोलो!' प्रोफेसर एक स्टूल पर से पुस्तक फेंक कर उस पर बैठ गये। क्या कहना है? हास्यजनक गंभीरता से उन्होंने कान के पास हाथ रक्खा।

तुम आजकल अखबार तो पढ़ते हो न?'

प्रोफेसर ने गर्दन हिलाकर हाँ कहा।

इस समय बंगाल में जो तूफान मचा है उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?'

प्रोफेसर ने उंगली और अँगूठा दोनों भौं पर रखे किस तरह? तुम क्या समझते हो?'

नव निर्मित राष्ट्र रोना शुरू कर जीना चाहता है।

पर बहुत से तो इसे संपूर्ण राष्ट्रीयता का उद्भव समझते हैं।

महा मूर्ख है!

सिर पर उंगली ठीक कर प्रोफेसर ने कहा। उनकी छोटी-छोटी आँखें बिल्ली का अनुकरण करती हुई खुलने और बन्द होने लगी। 'इतिहास का अज्ञान। संपूर्ण राष्ट्रीयता भौगोलिक सुसबद्धता के बिना संभव ही नहीं है।

नामदार ने जरा चिढ़ कर कपाड़िया से कहा तुम्हारे जैसे कायदे बाज ही तो गड़बड़ घोटाला करते हैं। भौगोलिक व्यक्ति हुए कि राष्ट्र का हाड़ पिंजर तयार हुआ।'

'बस इतना ही। जब भौगोलिक ससंबद्धता आव तब (कहुरचना) तयार हो। फिर जब राष्ट्रीयता का भाव हो तो प्राण आवे और राष्ट्र का जन्म हो।

पर अंग्रेजी राज्य से भौगोलिक सुसबद्धता ला आ गई।

कपाड़िया ने फिर सिर पर हाथ मारा सुनो नामदार! बीच बीच में अपना दिमाग मत झोको। प्रोफेसर ने जैसे क्लास में शांति बनाये रखने के ढंग से कहा। सुलोचना को चैन पड़ी। उसके बाप के

साथ कोई ऐसी तेज रीति से बर्ताव करे यह उसको इस समय अच्छा लगा।

(४)

प्रोफेसर ने आगे कहा 'जब राजकीय जीवन का जन्म हुआ तब पहले जन्म हुआ नागरिकता का। मगर यह गाँवों की पहली भौगोलिक इकाई हुई। एथेन्स स्पार्टा जैसे छोटे छोटे गाँव में तो यह खेल जैसी बात थी। पलक मारते ही सब लोग इकट्ठे हो सकते थे और विचार-विनिमय कर सकते थे। इस सुसबद्धता से जन्म हुआ विशिष्ट संस्कार का समझ गये ? प्रोफेसर ने पूछा।

लेकिन रोम का क्या हुआ ?

कपाडिया ने नाक पर उंगली रक्खी और नामन्जार चुप हो रहे।

'इस विशिष्ट जीवन-संस्कार में भाई नागरिकता समझे ! यह नागरिकता प्राचीन इतिहास की महाशक्ति है। समाज में जीवन में (व्यक्ति) देखें तो नगर है। उसमें रहने वालों में नगर व्यक्ति हैं यह भास हो जाए तो नागरिकता। राज्य-व्यवहार में युद्ध में इन्ही व्यक्तियों की मार-काट। रसाकसी जीवन विग्रह में छटपटाहट है। अब रोम को पूछते हो !

प्रजासत्तात्मक भौगोलिक व्यक्तित्व और सुसबद्धता—रोम में भी थी और अलग नागरिकता (कि रोमन शहरी हूँ)। तथा सत्य इस महामंत्र की व्युत्पत्ति हुई। समझे ये रोम का कुत्ता यह मंत्र पढ़ कर सीरिया और गाल में शेर बन बठा।

मिश्र और स्पेन के विजेता की भी दृष्टि आशा और शक्ति रुक गई टाइबर के किनारे पर। रोम के बाजार की छोटी सी दक्मार वही उसके लिये सृष्टि क्रम था समझ ?

कपाडिया ने साँस लिया और सूंघनी की चुटकी भर कर उसे उंगली से नाक में रखने की क्रिया पूरी की। छींक आई और नाक पोंछ दी।

हमारे यहाँ भी यह नगर धर्म था और उनके टूटे फूटे चिथड़े इस रूढ़िबद्ध देश में अब भी मिल जाते हैं। मोढ और श्रीमाली अपनी जाति को निराला समझते हैं और आपस में ही ब्याह-शादी करते हैं।

और मोढ़ तथा श्रीमाली की नागरिकता का ही दम भरते हैं। बड़नगर का नाम निशान मिट गया सदियों की सदियाँ बीत गईं इस बात को, पर यहाँ के एक समय के रहने वालों के हृदय में बसे हुए नगर-क्रम की प्रतिध्वनि आज भी प्रत्यक नगर में मिलती है और यह भूल जाने जैसी विशिष्टता भी कभी कभी दिखाई पड़ जाती है।

अब दुनिया का एक बड़ा भाग नागरिकता छोड़ कर राष्ट्रीयता के पास पहुँचने लगा है। बैलगाड़ी में यात्रा करने वाले हिन्दुस्तान ने अभी नागरिकता की सीमा पार नहीं की समझे ?

कहकर अपनी होशियारी पर कपाड़िया हँसा। जगमोहनलाल एकचित्त से सुन रहे थे। इस विषय में सलोचना को भी आनन्द आया।

पर हम लोग तो राष्ट्रीयता जगमोहनलाल ने पूछना प्रारम्भ किया।

फिर बीच में बोले ? कापड़िया ने उगली ऊँची की तुम्हें तो एकता रटने से पहले ही घुणा सवाल पूछना है। शांति रखो। हास्यजनक ढंग से प्रोफेसर ने कहा देखो रोम ने नागरिकता का विकास कर व्यक्तित्व प्राप्त किया पर जीवन विग्रह में विजेता होने के लिये मन शांति का मत्र रखा जो थी व्यवस्थित हरामखोरी। दूसरे देशों को जीतने के लिये उनको विवश करना और उनका रक्षण करने के बहाने उन्हें नि:शस्त्र करना फिर उन पर रोम का जुआ लाद देना।

रोम का जुआ अर्थात् दुनिया के व्यय पर एक नागरिकता को मस्त बना कर एक नगर को समृद्ध करना। रोम का मजदूर सीरिया में प्रीफेक्ट बने। रोमन सम्राज्य अर्थात् दुनिया की व्यवस्थित लूट करके

का एक नगर क रहने वाला का पहचान ।

पहले जमाने में एक राजा अपनी सत्ता और धौर के लिए सारे गाँव को दूसरे राजा की रक्षा करता और अपने लाभ क लिए उसका इस्तेमाल करता उसी प्रकार रोम ने भूमध्य सागर के किनारे की दुनिया को दूसरों से सुरक्षित रखा वह भी केवल दूसरों क उपयोग के लिए ही ।

'जैसे याज इगर ड कर रहा है उसी प्रकार

अरे नामग्गर— कपाड़िया न चिढ़कर कहा, तुम तो दाल पीसने से पहले ही तेल पी ज त हो । नामग्गर और सलोचना हँसे ।

प्रोफेसर न फिर शुरू किया प्रगति का रथ किसीका भी चुपचाप बठने नहीं देता ।

रोम न नागरिकता का सिद्धांत भुलाकर इटली को एक इकाई करने का प्रयत्न किया । सारे देश में थाड़े और वर्षों क दिनों में भौगोलिक समवद्धता कहाँ से आव ? नतीजा यह हुआ कि नगर धम का लोप हो गया और रोम का पतन हुआ । कपाड़िया ने फिर सूँघनी सूँघी । वास्तव में ठीक-ठीक देखा जाये तो वह सूँघनी सू घते न थे पर यथाशक्ति सू घनी नाक क नथुनों स उगली में ठस दत थे । उन्होने पहनी हुई सु गी क सिर स नाक पोंछी ।

रोम का पतन हुआ और यूरोप में नागरिकता समाप्त हो गई । हमारे यहाँ चित्तौड़ में पाटण में जब पूरी तरह से मुसलमान आ गय तब तक यह रही ।

इस देश में इतिहास और उत्क्रान्ति की चिन्ता किना ही पुराने राजों की किस प्रकार रक्षा की जाती है यह सोचने योग्य ही है । चीन ने रास्ता साफ कर दिया । तरह-तरह योधों को इकट्ठा लाना था । और रोमन साम्राज्य क खडहर में से नवीन घटना हुई तब भौगोलिक स्वाम्य का उपभोग करन वाले लोग अपने को एक मानन लगे ।

शीघ्र ही देश एक भौगोलिक व्यक्ति होने लगा—इटली फ्रांस

इग्लैड—'कपाडिया ने एक ओर की छींक खायी और साँस लिया।

'देखो अब राष्ट्र कैसे बने? हाथ घिसते घिसते कपाडिया ने कहा इटली में छोटे छोटे राज्य और रोमन सत्ता का वारिस कथोलिक चर्च—इसलिए वहाँ न जाने कब तक भौगोलिक व्यक्तित्व न आया दूसरा आ आवे ही कहाँ से?'

फ्रांस से भौगोलिक व्यक्तित्व आया—सुसबद्धता आई विशिष्ट संस्कारों का भास हुआ। राष्ट्रीय अंश का जन्म हुआ। लेकिन जैसे रोम ने नागरिकता दिखायी उसी प्रकार इग्लैंड ने राष्ट्रीय मान खूब कराया क्या समझे?'

देखा फिर से हाथ मसलते हुए प्रोफेसर ने कहा प्रकृति ने इंग्लैंड को भौगोलिक स्वास्थ्य और व्यक्तित्व दोनो दिये। चारों ओर समुद्र। बेचारे फ्रांस ने पहला कदम उठाया यह ठीक है लेकिन चारों ओर समुद्र कहाँ से लाये?

और भौगोलिक सुसंबद्धता जल्दी ही आ सके इतना छोटा सा विस्तार। एडिनबरा से लंदन आने में देर कितनी है? लदन तो एक मात्र अंग्रेजी फोरम है। चारों दिशा से चलकर मारते ही सब आ पहुँचते हैं।

राष्ट्रीय चेतना को प्रकट करने के लिये कैसा सरस स्थान है? आवश्यकतानुसार छोटा आवश्यकतानुसार बड़ा। परिणाम स्वरूप अंग्रेज जहाँ जायें वहाँ यह चेतना और उनका यूनियन जैक अपने साथ ले जाता है।

चाहे वह अफ्रीका के जंगलों में घूमे चाहे हिमाला की शीतलता में फूला-फूला फिरे लेकिन उसका दृष्टि टेम्स के किनारे बसे उसके राष्ट्रीय फोरम पर—लंदन पर ही रहती है।

वहाँ की वेषभूषा उसकी वेषभूषा वहाँ की भाषा उसकी देववाणी वहाँ का आनन्द उसका आनन्द वहाँ की कला वह उसके सौन्दर्य की

पराकाष्ठा, वहीं माने जाने वाला और बापू उसमें देवता—और वहाँ जा कर बुढ़ापे में किसी निर्जीव मुहल्ले में गरीबी में भी मरना उसके लिए मोक्ष है।

देखो कितने मुगल और पेशवा सरदारों ने स्वतन्त्र राज्य स्थापित किये—किसी अंग्रेज वायसराय को ऐसा सपना भी आया है? अरे डेढ़ सौ साल पुरानी मुगलायी की सड़क सड़क छोड़कर वारेन हेस्टिंग्ज भी अन्त में वहीं सड़ने के लिए चला गया। यही है राष्ट्रीयता—सम्पूर्ण राष्ट्रीयता। समझे?

कह कपाड़िया ने छींक ली और फिर सूँघनी सूँघी। अपने विषय में वह तल्लीन हो गए थे और शब्द ऊपर-नीचे एक दूसरे से सटे हुए जल्दी-जल्दी बाहर निकलते रहे।

'अब देखो नामर्दार अपनी राष्ट्रीयता को भौगोलिक स्वास्थ्य आ गया है पर फिर भी देश का विस्तार तीन चौथाई यूरोप जितना है। तीन चौथाई यूरोप में कितने राष्ट्र बन हैं? चन्द्रगुप्त मौर्य और चन्द्रगुप्त गुप्त ने राजकीय एकता को लाने का प्रयत्न किया पर पता भी नहीं लगा।

क्योंकि एक छोर से दूसरे छोर तक हाथी पर चढ़ कर जाने में कितने साल चाहिये। ब्राह्मणों की परंपरा ने बहुत प्रयत्न किया पर भौगोलिक सुसम्बद्धता बिना अकेला संस्कार क्या करे—कबूतर? कहकर प्रोफेसर हँसे देखो अब संक्षेप में कहता हूँ। ब्रिटिश साम्राज्य से भौगोलिक स्वास्थ्य आया है भौगोलिक व्यक्तित्व प्रकट हुआ है लेकिन सुसम्बद्धता सत्तर लाख चौरस मील में कैसे आये।

कलकत्ते और बम्बई के बीच टेलीफोन हो मद्रास से लाहौर दो दिन में आया जा सके, तब यह सुसम्बद्धता आये।

समझे! फिर एक संस्कार की चेतना आते-आते ही कितने युग बीत जायेंगे। इंग्लैंड जैसे भाग्यवान देश में नवीं सदी से शुरू होकर सत्रहवीं सदी तक—एडवर्ड दी कन्फेसर से विलियम और मेरी तक

जीवन का सुधार होता रहा तब सांस्कारिक शक्ति आ गयी। अब अपनी कठिनाइयों पर ध्यान दो।

प्रोफेसर ने उंगलियाँ गिनते हुए कहा, अगणित धर्मों को भुला कर राष्ट्र धर्म स्वीकार करने में कितने वर्ष लगेंगे?

दूसरे-तीसरे भिन्न भाषायें भुला कर एक भाषा कितने सालों में आ सकेगी? तीसरे देशी राज्यों को मिटा कर राजनीतिक एकता कितने वर्षों में आयेगी—ये तीनों वस्तुयें जब आयेंगी तभी सम्पूर्ण राष्ट्रीयता का विकास होगा।

आधुनिक ढंग से तो यह पुरातनवादी देश न जाने कब-जब राष्ट्रीयता पायेगा? समझे? कहकर प्रोफेसर हँसे।

धन्यवाद इसका मतलब यह कि ये बगावती कुछ कर नहीं सकते। मुझे तसल्ली हुई।

मैं यह नहीं कहता। मैंने जो बताया वह आजकल के अनुसार ही बतलाया पर कितने ही छोटे-छोटे रास्ते हैं। विद्रोह उनमें से एक है।

यह कैसे?

'विजयी विप्लवी अर्थात् उत्क्रांति कम थोड़े समय में ही समाप्त हो जाने वाला प्रयोग। एक ऐसा विप्लव हो कि जो धार्मिक और जातीय भेदों का एक झटके में विध्वंस कर दे और राष्ट्र धर्म का प्रसार करे तो इस प्रकार राष्ट्रीयता आ जाय।

बगावत ऐसी है कि जहाँ भौगोलिक सुसंबद्धता न हो वहाँ भी एकता उत्पन्न कर देती है और एक प्रकार की शक्ति फौरन पदा कर देती है। जहाँ विप्लव जागृत हुआ कि दस वर्ष में हो जो डेढ़ सौ वर्ष में भी न हो सके ऐसा परिणाम निकल आवे।

'तब तो ये विप्लववादी कुछ का कुछ कर देते हैं।

वायर्दिमा गर्व से [हँसे घबराओ मत। तुम्हारा नामदार पद

और तुम्हारा हाईकोर्ट नहीं ले लेंगे। हम लोगों में बगावत करने की शक्ति ही नहीं है।

"बंगाल में यह सब कैसा हो रहा है?"

"दूध का उफान जब तक भावना के लिये दूसरे जन्म की चिन्ता नहीं चली जाती और इस जन्म में भूखों मरने की हिम्मत नहीं आ जाती तब तक विप्लव नहीं हो सकता। हम लोगों में धर्मात्मा है और मन से जीवन व्यतीत करने की लिप्सा है?

यह दूसरे जन्म और इस जन्म की गठरी छूट नहीं सकती। और गरीब वर्ग इतना निर्बल और उत्साहहीन है कि वह तत्पर होकर विप्लव नहीं करा सकता। गरीब वर्ग में विप्लव के लिए भुखमरी और जुल्म चाहिये।

ब्रिटिश सरकार चतुर है। वह किसी को बिल्कुल भूखों नहीं मरने देती और तुम्हारे ऊपर जुल्म होते हुए भी वह जुल्म नहीं। ऐसे ख्याल उपजने के साधन हैं। अतः धनसम्पन्न व्यक्तियों का तो विप्लव यहाँ हो ही नहीं सकता।" प्रोफेसर ने एकदम खड़े होकर दिये की बुझी हुई बत्ती का ठीक किया और अपनी मूँछों को ऐंठी कसी।

सुरेन्द्रनाथ और उसके अनुयायी विद्यार्थी बगावत की योजना ही तो बना रहे हैं।

"विप्लव के साथ-साथ राजसत्ता की ओर से जुल्म होने और जुल्म को पचा जाने की शक्ति भी हममें दिखाई देती है? विप्लव के लिये तो समस्त देश का नहीं तो उसके शक्तिशाली विभाग का चारों ओर से ज्वार भाटे की तरह छाया होना चाहिये। बम्बई आयेगा इसमें पहल व कलकत्ते को कुचल देंगे। बगावत के लिए यहीं बहुत सुसंबद्धता भी चाहिये।

पर तुमने जो दूसरे संक्षिप्त रास्ते बताये वे कौनसे हैं। मैंने जब से इन विप्लववादियों को देखा है तब से कोई रास्ता सूझता तक नहीं।

एक पल भर प्रोफेसर चुप रहे।

' दूसरा रास्ता सरकार का है।

अर्थात्। नामदार ने पूछा।

जिस प्रकार जापान में हुआ। पाँच-सात दूरदर्शी राजनीतिज्ञों के हाथ राज्यतंत्र आ जाय तो पच्चीस वर्ष में राष्ट्रीयता आ सकती है। अत्याचार से दबाव से आवश्यकता पड़ने पर अन्याय से भी वे राष्ट्रीयता का प्रसार कर सकें। संपूर्ण शिक्षा को राष्ट्रीय कर दिया जावे। धार्मिक और जातीय विरोधों को भुला दें नहीं तो कुचल डालें। नवो लियन या भारतीय टीटो जैसा कोई प्रचंड इच्छा-शक्तिमाला सर्वसत्ता धारी चाहिये।

क्या ब्रिटिश ऐसा नहीं कर सकते ! नामदार ने पूछा।

कपाड़िया खिलखिलाकर हंस पड़े।

यह है। स्वातंत्र्य प्रेमी है। जगमोहनलाल ने कहा।

नामदार ! तुम भी मूर्ख ही रहे। मेरा अब तक का सब रोना झींकना बेकार ही गया ना।

क्यों ?

तुम उस फिरोजशाह महता के अनुयायी हो। वह बेचारा अच्छे जमाने में इंग्लैंड जाकर ग्रेडली ब्राइट और फासेट की नीति अपने साथ ले आया है। वह समझता है कि हम हिन्दुस्तानी भी ह्यर्नेल बन सकेंगे।

उस बेचारे को तो एकमात्र विक्टोरिया युग का व्यवस्थात्मक आन्दोलन का क ख ग घ सीखना आता है।

तुम भी उस भगवती सुदर्शन की तरह बोल रहा हो।"

मैं बोल रहा हूँ इतिहास के अभ्यास की दृष्टि से। इंग्लैंड न्यायी है और स्वातंत्र्य प्रेमी है अंग्रेजों के लिये नजर दूसरों के लिए वह रोम है। वह ब्रिटिश शांति के नाम पर अपनी शक्ति और समृद्धि बढ़ाने के साधनों की खोज करता है।

कर दिखाऊँगा और यह बात स्पष्ट करके दिखा दूंगा कि भारत और इंग्लैंड की मैत्री में भगवान की मर्जी है।

भगवान! बिल्कुल ठीक! प्रोफेसर ने व्यंग्य किया।

'देखो मैंने विचार कर लिया है। मैं शान्त नहीं बैठूंगा।"

बहुत ठीक। मुझे स्पष्ट हो जायेंगे।

तुम्हारे विचारों से मैंने बहुत कुछ समझा है।

धन्यवाद प्रोफेसर ने कहा।

हाँ खड़े होते हुए नामदार ने कहा 'सुदर्शन नाम का मेरे मित्र का लड़का अक्टूबर में यहाँ आयेगा। वह भगवती है। जरा उसे कुछ सिखाना।

जो मेरी सुनेगा उसको सिखाने के लिए मैं तयार हूँ।

'अच्छा साहब! सुलोचना! उठ सो रही है क्या!

सुलोचना आँखें मलती हुई उठी और बाप-बेटी ने विदा ली।

जब सुलोचना दरवाजे से अदृष्ट हुई तब कपाडिया को होश आया कि वह एक सुन्दर भामा के साथ दो घंटे तक रहा। उसने खिड़की में से सुलोचना को गाड़ी में बैठते देखा और जब वह अपनी पुस्तकों की ओर फिरे तो उन्हें ऐसा लगा कि उनके अन्तर में भी एक रहस्यमयी तृष्णा हो गई।

(१)

प्रोफेसर कपाड़िया के साथ बातचीत करने से नामदार जगमोह
साल का भ्रम मिट गया और कोई राह निकालने का प्रयत्न उन्हें
आरम्भ कर दिया।

भारतवासियों की दुर्दशा का उन्हें अच्छी तरह पता था और साथ
ही यह भी उन्हें पक्का विश्वास था कि भारत में अंग्रेजी अधिकारियों
की राजनीति अच्छी नहीं थी फिर भी अंग्रेज प्रजा के स्वातंत्र्य प्रेम
उनका अडिग विश्वास था।

भारत में विप्लव हो यह उनके लिए एक बड़े से बड़ा विस्मय था
और जिस राज्य ने उन जैसों को शिक्षा प्रतिष्ठा और सम्मान दिया
वह यदि उखड़ जाय तो देश का भाग्य फूट जायगा यह उन्हें स्पष्ट
दिखाई देता था।

इस राज्य की शांति व्यवस्था प्रगतिशील नीति बनी रहे अंग्रेज
अधिकारियों का गर्व हल्का हो प्रजा सुधरे और अंग्रेजी राज्य में
ही स्वतन्त्रता मिले ऐसा कोई रास्ता वह खोज रहे थे।

वह फीरोजशाह मेहता और गोखले से मिले। उनमें से किसी
को भी देश में कोई नवीनता दिखाई नहीं दी। बंगाल में थोड़े से
पागल छात्रों द्वारा किया हुआ विनाश उनके लिए एक निर्जीव प्रसंग
था। और दोनों को अंग्रेजी प्रजा की उदार राजनीति में श्रद्धा थी
और शुरू से ही कांग्रेस द्वारा अपनायी हुई नीति की सफलता में पूरा

विश्वास था।
जब उन्होंने फिरोजशाह के साथ और अधिक बात की तो बम्बई के
प्रजा-जीवन के सर्वसत्ताधिकारी की शान से वह हँसे और मेज
पर मुट्ठी ठोककर जवाब दिया जगमोहन अंग्रेजों के पास से अपने
हक हम छीन लेंगे तुम घबराओ मत।
इस समय के लोग फिरोजशाह के व्यक्तित्व के प्रताप को नहीं
जान सकें यह स्वाभाविक ही है पर १६०२ में बम्बई में उनके अनु
यायियों पर और प्रजा-मत पर उनका एक अदम्य प्रभाव था। प्रजा-
जीवन के पिता आजाद सेना के नायक देशभक्तों के शिरोमणि और
राजनीतिज्ञों में अग्रणी थे—समझे भी जाते थे। उनके सामने प्रत्येक
को लाघव का अनुभव होने लगता उसके हास्य से सब प्रसन्न हो जाते
और उनका भ्रू-भंग सबको कँपा देता था।
विश्वास-पूर्वक दिए हुये इस प्रतापी मनुष्य के आश्वासन के विरुद्ध
नामदार कुछ बोल न सके। उसके कान में बेचारे गरीब प्रोफेसर का
अट्टहास सुनाई दिया क्या कोई अर्वाचीन सूला या सीजर से आकर
यह कह सकेगा कि हमें हमारे हक दो? यह तो केवल विक्टोरिया
युग के अंगरेजी प्रजा-जीवन की एक प्रतिध्वनि मात्र है। राधाबाई
टावर के सामने वाली गुफा में बम्बई के बेसपो की मुछना के सान्निध्य
में शंका का समाधान हो गया हो ऐसा लगा।
फिर भी उन्हें कई शंकाओं ने घेर रखा था।

(२)

बाप की आज्ञा से पहले तो सुलोचना बहुत चिढ़ी पर अंत में
उसे मानना पड़ा। केकी दस और गमनलाल के साथ कालेज के बाहर
घूमना उसने बन्द कर दिया। थोड़े से शब्दों में बिना पते की चिट्ठी
से लायब्रेरी में या टेनिस कोर्ट पर बातचीत चला करती। कौन जाने
कैसे पर ज्यों ही वह कालेज में पाँव रखती कि दरवाजे के आगे से केकी
अन्दर जाता हुआ या गमन जीने पर चढ़ता हुआ दिखाई देता था।

वह जैसे ही छात्राओं के कम से बाहर निकलती कि उन दोनों में से एक गलरी में ही खड़ा मिलता था। वह लाइब्रेरी में किताब लेने जाती कि वे दोनों वहाँ भी मिल जाते। कुछ देर तक बातचीत हो जाती या दो दिन की अधूरी बात का जवाब मिल जाता नहीं तो हँसी से हँसी का प्रत्युत्तर ही मिल जाता। बिना बोले हुए नामदार की आज्ञा का पालन बाह्य रूप में तो सावधानी करती ही रही।

नवम्बर महीना शुरू हो गया और सुलोचना की परीक्षा पूरी हुई। अचानक सवेरे जगमोहनलाल ने सुलोचना को बुलाया। ग्रीक के डर और कानून की पुस्तकों के व्यूह से भयकर दिखाई देने वाली टेबल पर विराजमान नामदार ने सुलोचना के आगे एक पत्र रख दिया।

सुलोचना ! आज रात की गाड़ी से सदुभाई आने वाले हैं गाड़ी ले जाना और ले आना।

मैं जाऊं ? सुलोचना ने मिजाज में कहा।

क्यों तू बहुत बड़ी हो गई है क्या ? कठोरता से नामदार ने पूछा जाकर उसे यहीं ले आना है। समझी ? जगमोहनलाल ने स्पष्ट आज्ञा दी।

आलराइट' कहकर नाक भौंह चढ़ाकर सुलोचना चली गयी।

इस लड़की का क्या होगा। जगमोहनलाल बड़बड़ाये।

थोड़ी देर में नामदार कोर्ट गये कि तुरन्त सुलोचना बाप के कमरे में आई। उसने टेलीफोन उठाया और दो व्यक्तियों को फोन किया। दोनों को दो ही वाक्य कहे कम टूनाइट एट ८ १० ग्रान्ट रोड अप स्टेशन दीयर ईज गरेट फन।

रात के साढ़े आठ बजे केकी रंग भड़कदार कपड़े पहन कर ग्रांट रोड स्टेशन पर आ पहुँचा। बहुत दिनों बाद उसे सुलोचना का संदेशा मिला था अत उसका दिमाग आज आकाश से बातें कर रहा था।

जैसे ही वह प्लेटफार्म पर आया कि प्रकाश में उसने गमन दलाल को खड़े हुए देखा और तुरन्त उसके पेट में पानी पानी हो गया। वह

बनिया इस समय कहाँ-कहाँ से ? गमन निश्चिन्तता से सिगार पी रहा था। उसकी शांति देखकर केकी को मुक्का मारने का मन हुआ।

पल भर में दोनों की आँखें मिलीं क्षण भर के लिए गमन के मुख पर भी अशांति के भाव दिखाई दिये पर उसने तुरन्त मुख पर हँसी की रेखाएँ ला अनिच्छा से नमस्ते की।

ओ हो! तू यहाँ? केकी ने पूछा।

मैं भी तुमसे यही पूछने वाला था। दोनों ने प्लेटफार्म के दरवाजे की तरफ एक साथ नजर डाली और फिर एक-दूसरे की तरफ द्वेष से देखने लगे।

नामदार से मिलने आया है? गमन ने पूछा।

माइनड योअर ओन बिजनिस केकी ने रोष में उत्तर दिया।

क्यों? सिगार पर की राख झाड़ते हुए गमन ने कहा, तकरार करने की धुन में है क्या?

सवा न बन लड़के केकी ने कहा।

फिजिशियन हील दी सिल्फ गमन ने जवाब दिया लो वह शिवलाल शराफ आ गया।

दो लड़के प्लेटफार्म पर आये। भीमनाथ पर इकट्ठे हुए लड़कों में से—बम्बई वाले शिवलाल शराफ देसाई थे। शिवलाल सराफ एलीफन्सटन में नहीं पढ़ा था पर उसका प्रख्यात, बाप एक अच्छी दौलत छोड़ जाने और अपनी होशियारी से लगभग सभी कालेजों में वह नामी था। तूफानी लड़कों के वैसे ही सब लड़कों के—दोनों वर्ग में उसका स्थान था।

हलो कम।

कौन सराफ?

अरे यह केकी इस कहाँ से? सबने शेकहैंड किया।

यह मेरा मित्र अंबालाल देसाई एम० ए० का विद्यार्थी। यह

आह —हां—' दोनों हँसे पर अंतर में ज़रा निराशा हुई। इस विशेष निमन्त्रण के परिणाम-स्वरूप उन्होंने कुछ अभी तफरीह के स्वप्न सजाये थे।

'मुझे लगता है कि शिवलाल भी उसीको लेने के लिये आया है।' गमन ने कहा।

क्या शिवलाल सराफ है? सुलोचना ने पूछा चलो हम उसके साथ रहें नहीं तो पापा को पता चलेगा तो आफत आ जायगी।

ओह! मिस मैन बेकी ने अपने उद्‌गार निकाले और तीनों व्यक्ति शिवलाल सराफ के पास गये।

शिवलाल मिस सुलोचना को पहचानते हो? गमन ने कहा।

नाम सुना है मिलन का सौभाग्य आज ही प्राप्त हुआ। कैसी हो बहिन? कहकर शिवलाल ने समर्थन किया।

यह अम्बालाल दसाई। गमन ने कहा यह भी शिवलाल के साथ बिजनेस में ही है।

आई सा मिलकर बहुत खुशी हुई। कहकर सुलोचना ने शेकहैंड किया।

यह भी बड़ौदा के एक विद्यार्थी को लेने आया है। बेकी ने अंग्रेजी में कहा।

पर शिवलाल के जवाब देने से पहले ही गाड़ी आ गई और शिवलाल तथा अम्बालाल दोनों थर्ड क्लास के डिब्बे की तरफ भागते से गये। नारायण भाई फर्स्ट डिब्बे में अपना शरीर बाहर निकालकर आँखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था। उसने शिवलाल को पहचान कर सारा स्टेशन आकर्षित हो जाये ऐसे इशारे करना ही आरम्भ किया

सुलोचना ने अपने मित्रों से कहा जरा दूर से ही देखना फिर मैं परिचय करा दूंगी। वह सेकंड क्लास डब्बे की तरफ गई। उसके पिता में से कोई भी थर्ड क्लास के डिब्बे में यात्रा करे यह कल्पना तो उसने आज तक न की थी। उसने सेकंड क्लास के डिब्बे में नजर

छोड़कर आगे आया ।

तुम सदुभाई को जानती हो क्या ? उसने सलोचना से पूछा ।

मैं इन्हीं को तो लेने आयी हूँ । सुलोचना ने उल्लास मुख से कहा ।

मझे पापा ने मुझे स्वयं भेजा है ।

सुलोचना बहिन ! जगमोहन काका का मेरी ओर से आभार मानना । मैं कल अवश्य मिल जाऊंगा । इस समय मैं अबालाल देसाई के यहाँ ही जाऊंगा ।

यह कैसे हो सकता है ?

निश्चयात्मक आवाज मे सुदर्शन ने कहा मुझे अंबालाल के यहाँ ही पढने की सुविधा रहेगी ।

सबके साथ सलोचना ने दरवाजे की तरफ चलना प्रारम्भ किया और टिकट देकर बाहर निकले ।

अंबालाल । शिवलाल ने कहा मैं नारायणभाई को ले जा रहा हूँ ।

अरे हाँ मुझ तो पचास दूसरे मेहमान हों तो भी आपत्ति नहीं होगी । नारायणभाई ने चिल्लाकर कहा ।

अच्छा सलोचना बहिन ! नमस्ते । सुदर्शन ने हाथ जोड कर कहा और अबालाल की लाई हुई किराये की गाडी में बैठकर चल दिया ।

सुल चना को जय जय करने की इनी रीति भी पसन्द नहीं आई । केकी और गमन की हंसी ती नहीं सुनाई दी पर उसकी प्रति ध्वनि सुनाई द रही थी ।

फिर शिवलाल की गाडी आई और नारायणभाई पैडे पर चढ़ने लिए जस ही छलांग मारते हो ठीक उसी प्रकार कमानी वाली गाड़ी भी लचक जाय ऐसी छलांग मारकर ऊपर चढ़ गया ।

साहब ! सुलोचना बहिन ! गमन ! केकी ! साहेब जी ! शि लाल ने हाथ मिलाया ।

'यही था क्या तुम्हारा वहीदे वाला मित्र ?' केकी ने सुलोचना को प्रसन्न करने के लिए तिरस्कार से पूछा।

शिवलाल हँसा। "शीघ्रता में यह भूल गया मैं दोस्त केकी भाई! हम लोग काम भी इकट्ठे हो जायें तो भी इन दोनों में से एक को भी याद नहीं पा सकते। समझे?" शिवलाल अपनी गाड़ी में बैठा और गाड़ी चला गई।

शिवलाल के इस दिए हुये प्रमाण-पत्र से हीना ज़रा सहम।

सुलोचना की गाड़ी आई और वह उत्साह रहित-सी प्रणाम करके अपनी गाड़ी में बैठी। उसकी गाड़ी चलने से पहले ही और यह सुने इस प्रकार गमन न कहा सोना बिलकुल सौंपा था।

(३)

किराये की गाड़ी मन्नालाल और अंबालाल को लेकर गिरगाम की सड़क पार कर चौपाटी में होती हुई कल्याण मोती की चाल में पहुँचा। कल्याण मोती की चाल में पहली मंजिल पर अंबालाल अपनी माँ और बहिन के साथ रहता था।

अंबालाल जितना होशियार था उतना ही गरीब था मन लड़कों को पढ़ाकर अपना पालन-पोषण करता था और पढ़ता भी था। इसकी विधवा माँ सदा ही बीमार रहती। इसलिये अंबालाल पाँच बजे उठकर सात बजे तक की बहिन को नल से पानी लाने में मदद देता। फिर स्वयं अपना बिस्तर उठाकर अपनी बहिन को सीढ़ी सुलगाने में मदद करता— इतने में बहिन चाय बनाकर देती वह चाय पीकर नहा धोकर झट घटे कि पार के रूम में पढ़ता।

साढ़े सात होने पर वह कपड़े पहनकर बाहर निकलता और एक लड़के को मैट्रिक और दूसरे को पाँचवें स्टैंडर्ड का अभ्यास कराता और तीस रुपया कमाकर दस बजे वापस लौटता। इसके बाद खाकर वह कालेज जाता और लायब्रेरी में सन्ध्या के साढ़े चार बजे तक प्रयास करता।

पाँच बजे वह एक तीसरे शिष्य को एक रुपया रोज पर पढ़ाता और शाम को चौपाटी पर घूमकर आठ बजे घर आता। माँ वन्नि ने जो तैयार किया होता वह खाता और दस बजे तक अपने अध्ययन में लगा रहता।

अन्नालाल होशियार और दृढ़ था। उसके अन्तर में अन्याय का भाव बहुत ही तीव्र था। ईश्वर ने उसके साथ अन्याय किया था—क्योंकि उसके बिना पूछे ही उसे जन्म दिया और बिना उसकी आज्ञा के निर्धन बाप और बीमार माँ दी थी। समाज ने भी अन्याय किया था—क्योंकि इतनी वृद्धि होने पर भी उसे वह रास्ते का कूड़ा-करकट हो इस प्रकार उसके साथ बर्ताव करता था। विधाता ने भी उसके साथ अन्याय किया था—क्योंकि भाग्यवशात जो लड्डू पढ़ाने के लिए मिलते थे वे सब पत्थर के लट्टू निकलते। स्वभाव ने भी उसके साथ अन्याय किया था क्योंकि इन सब अन्यायों को सहने की उसमें सहिष्णुता नहीं थी। इन सब अन्यायों का पात्र वह स्वयं होने के कारण उसे समस्त सृष्टि के प्रति द्वेष था। इतना द्वेष अंतर में पोस रखा था फिर भी वह सीधा सरल भावुक और परदुःखभंजक था। एकमात्र इस द्वेष ने उसकी जीभ का मिठास छीन लिया था।

अन्याय के विरुद्ध सतत् विग्रह चलाते हुए उसके दो विश्राम-स्थान थे। एक उसकी खिलौने जैसी हँसमुख बहिन और दूसरी उसकी सह-पाठिनी मिस वकील। मिस वकील और अन्नालाल मैट्रिक से साथ थे और एक पारसी तथा दूसरा हिन्दू होने पर भी एम० ए० के अध्ययन तक उन्होंने मैत्री बनाये रखी थी। विज्ञानशाला में पाँच घंटे का प्रयोग यह अभ्यास न था लेकिन विलक्षण सहाध्यायिनी के साथ किया हुआ आनन्दमय साहचर्य था। इन पाँच घंटों में वह अन्यायों की स्मृति भुला देता और काँच की शीशियों और नालियों में जैसे अमृत भरा हो ऐसी सुमधुरता फैली रहती थी। सन् १९०७ में वह और मिस वकील एम० ए० में बैठने वाले थे।

अच्छा हमारा मंडल कैसा चल रहा है?

अब तो यह परीक्षा में जुटे हुए हैं फिर देखा जायगा। सुदर्शन ने कहा और किताब निकालकर पढ़ना शुरू कर दिया। मन्नालाल ने सोरठ मल्हार का सुर निकालना प्रारम्भ किया। घनी भीतर बर्तन माँज रही थी वह सुनाई दे रहा था और थोड़ी थोड़ी देर में वह किसी मारग से बहार आ आकर अपनी कोकिल वाणी सुना जाती थी। सुदर्शन अध्ययन में व्यस्त था फिर भी इस छोटी सी कोठरी में छिपी हुई भावुकता का प्रभाव उसके कोमल मनस्थल पर होने लगा।

घनी ने खाट बिछाई देखाई सो गया। सुदर्शन पढ़ता रहा। बारह बजे उसने किताब बन्द की और खाट पर लेटा। मच्छर भिनभिना रहे थे फौव्वाड़ी की गन्दी हवा चारों ओर फैल रही थी पढ़े हुए विषय के अंश उसके मस्तिष्क में तैर रहे थे फिर भी इस स्थिति में सपने सिद्ध करना आसान लगने लगा।

अचानक पुस्तक का आकार बदला और प्रतीत की एक नई किताब उसके सामने आ खड़ी हुई।

(४)

इस पुस्तक के पृष्ठ पर बीचाबीच पतले टाइप में स—मध्यस्थित उद्यान में लगी हुई छोटी और पतली घास में दुनिया के निर्माण काल की शान्ति से सोते हुए मानो देवता की देह रखा उड़ती हुई दिखाई दे इस तरह की एक आकृति दिखाई दी। यह आकृति भूरा आवरकोट और तिकोना टोपी पहने थी। आकार से दुर्जय और जाम से सुशोभित तेजस्वी—ठिगनी और स्थूल देह थी! मानव जीवन के प्रतापी प्रातःकाल के आदर्श सदृश अर्वाचीन महावीर अपनी छाती पर अपने स्वभाव से बदल कर हाथ बाँध रखे थे। आदत से इसका मुख पर देवों की सी दुर्लभ शान्ति प्रज्वलित थी। सुन्दर ओठ निश्चलता से बन्द थे। नाक का गाडीव धनुष गगनचुम्बी आकांक्षाओं को खींच रहा था। प्रचण्ड भाल पर उग्र एकाग्रता तीसरे नेत्र की सी ज्वलन्त बनाती

से विराजमान थी। और गम्भीर आँखों का भव्य स्थिरता में दिखाई देती थी। सृजन और संहार की वही ज्वाला के विधि रगों में एकाग्रता मानवता की ज्योति जो झिलमिला रही थी। जब उसे उसका व्यक्तित्व सम्बल के आगे विकसित होता गया वसे वैसे उसने नेपोलियन को अपना पराक्रम फिर से करते हुए देखा। उसकी जीत की आशा से दुकान और लाने के मशान गूंज उठे। उसके भयंकर उत्साह ने इजिप्ट और सीरिया की लड़ाई की जलती हुई विषमता का नाश किया और आल्प्स के हिमाच्छन्न शिखरों पर भी अपनी विजय-ध्वजा फहराई। त्रिपुरारी के त्रिगुणातीत प्रताप से उसने प्राची मारगो और आस्टरलीट्स के ताण्डव खेल खेले और मास्को से लौटती हुई हार में भी विजेता की महत्ता का परिचय दिया। वाटरलू में उसका पतन हुआ पर सेंटहेलना में अभंग गौरव सहित लड़ता रहा। मौत की वह आत्मा था ता और भाग्य विधाता बना वराव का। उसने संहार किया और नव प्राणों का सचार कर फिर से जीवनदान दिया। फिर से वह जीवित हुआ शासन किया और गरजा—सृष्टि भर के एकाकी सम्राट का वर्णनीय भव्यता से और मुस्तान के स्वप्नों को समेट कर उसकी मानवता को एक नव तेज से चमका दिया।

सुकुमार सुल्तान के एकान्त जीवन में ऐसे स्वप्नों के लिए स्थान होगा एमा उसके मित्र कभी भी नहीं सोचते थे। वह आकर्षक और बुद्धिशाली दिखाई देता था पर सम्पत्ति उसे नहीं मिली और उनसे हुए नये परिचय ने उसके सानों पर भी हमला नहीं किया। कभी कभी उस नयी नयी धुन सूझती या भिन्नता उसके अन्तर को दबोच-सी डालती।

कालेज की पढ़ाई और साथ ही अपनी विनाशकारी वृत्ति समझ करने के लिए महत्त्व पुस्तकों में मशगूल होने से उसे किसी भी तरह की घर में देखा भाल करने का समय न मिलता। उसे कोई भी सैर मनोविनोद न करता और शारीरिक विकास की भी उसे परवाह

न रहती। जब क्रिकेट का मैच या टेनिस का टूर्नामेंट चलता हो तो सुदर्शन को बगल में किताब लेकर कालेज की किसी गुम्बज की तरफ एकान्त की खोज में जाते हुए देखने की उसके मित्रों को कुछ आदत सी पड़ गई थी। वहीं तो गुम्बज के नीचे पड़े-पड़े या छज्जे में घूमते हुए वह पढ़ा करता था मनन किया करता था।

कालेज में आने के दो एक महीने बाद उसकी मुलाकात रामलाल देसाई से हुई। कालेज में रामलाल और उसके पिता मुकुन्ददास के नाम के प्रथमाक्षरों से आर० डी० या आरडी के नाम से प्रसिद्ध सीनियर बी० ए० का विद्यार्थी था। वह इस छोटे से लड़के के प्रति आकर्षित हुआ।

आर० डी० का हृदय निर्मल और उत्साह सर्वग्राही था। प्रमाणित और निश्चल रूप से वह सब की ओर स्नेह से देखता और गंभीर भावों को पहचानने में भावशील होने पर भी स्वच्छ भावों को स्थिर और प्रमाणित रूप में स्थापित करने में वह निपुण था। उसका उत्साह कभी न गगन को छूता और न कभी अस्त ही होता था। उसकी इच्छा की मर्यादा में जीवन के सभी कुतूहल और प्रश्न आ जाते थे और हरेक विषय का थोड़ा बहुत ज्ञान भी उसे आता था। पुस्तकों से वह अखबार प्रेमी अधिक था और विशेष कर भारत की हर प्रवृत्ति पर कुछ न कुछ नवीन बात से लड़कों को प्रभावित कर सकता था। ईश्वर और धर्म लोक शासन और स्त्री स्वातन्त्र्य जाति और विधवा विवाह अंग्रेजी सत्ता और स्वराज्य आकांक्षा—सब पर उसके विचार साफ होते थे। कितने ही समझते थे कि वह प्रोफेसर शाह की प्रेरणा से बंधा हुआ है फिर भी उसको प्रगति के पैगम्बर की पदवी अठोरा कालेज के विद्यार्थियों ने दे रखी थी। विद्यार्थियों में प्रगतिवाद के पक्ष का वह नेता था और डिबेटिंग सोसाइटी में पुराने विचारों का अपमानित करने वालों में मुख्य भाग लेता था।

आर० डी० के संसर्ग में आते ही सुदर्शन को अपना अपूर्णपन

स्वयमेवक होने की अ र्जी के काम से आया था और मह का ग्रौट रहा था। काँग्रेस में वाला पर हाना पर्या (कौंग्रेस का स्वना और जानना उसम स ायक ोक्र दा नवा करना नेतायो का स्वना और उनकी सेवा करनी थी। भार की मनिक इकट्ठा करने में आगे आये और निरुत्साहियों का उत्साह दकर तैयार करने का काम अपने ऊपर लिया।

सु ाभ को एसा महसूस हुआ कि उसके स्वप्नों को सिद्ध करने का समय आ गया है। देश को उन्नत और स्वतन्त्र करने का यज्ञ उसके गाँव म होने वाला था। जा लक्ष्य उसका था उसे पूरा करने के लिए हजारों भारतवासी इकट्ठ होने वाले थे। पल भर के लिए अपने आप को वास्ता भूल गया। इस यज्ञ में भाग लेने के लिए उसन भा स्वय सेवक हाने की अर्जी दी।

उसन अ र्जी दी है यह बात उसने अपने पिता को भी लिखी। प्रभातराय कु पत हुए। सरकारी नौकर के लड़के की यह हिम्मत कि कांग्रेस म जाय।

सदगाम न पत्र लिखा मनाया रोया चिल्लाया पर रायबहादुर टस स मस न हुए। आखिर तय हुआ कि सुभाष दर्शक की भाँति जा सकता है। उ अपने पिता पर गुस्सा आया गुस्से में उसने आर० बी० स अर्जी वापिस लकर फाड डाली और अपने को रतनबाई यह कह गुनामी का ब ना का अनुभव करत हुए उसने दूसरे स्वयमवकों को देश के उद्धार क लिए आग बढ़त हुए देखा।

१६ २ म शान्ति स्वम सादे और व्यवहार ज्ञान अहमदाबाद को देश म एक न पाराम बना दिया। एक प्रचंड राष्ट्रीय लहर उसकी रग रग म फल गई। अहमदाबाद नदी स्मशान गलियों में कंधे पर धनी लकर राष्ट्रध्वज की शान बढ़ाने के लिए निकल पड़े अहमदाबाद का पेन्ट स्थान थोड़े दिनों में राष्ट्र की आशा का केन्द्र-स्थान बन गया।

की आज्ञा पर अमल नहीं किया। लेकिन पाँचवें दिन अन्तिम विषय की परीक्षा होने पर वह और अन्नालाल नामदार जगमोहन लाल का चेंबर ढूंढने निकले।

थोड़ी सी कठिनाई से नामदार का चेंबर तो मिल गया पर वहाँ अदली ने खबर दी कि साहब फीरोजशाह मेहता के चेंबर गये हैं और एक घंटे से पहले नहीं आयेंगे।

सुदर्शन और अन्नालाल टावर के सामने फीरोजशाह मेहता के चेंबर के आगे जा खड़े हुए।

सुदर्शन ने एक बार अहमदाबाद कांग्रेस के समय फीरोजशाह को दूर से देखा था। वह फीरोजशाह की राजनीति का विरोधी था फिर भी उनके पास जाते हुए उसे जरा भी क्षोभ नहीं हुआ।

ये दोनों फुटपाथ पर खड़े थे कि एक गाड़ी आकर खड़ी हुई और मूंछों की भव्यता तथा चमकती हुई पगड़ी की तेजस्विता में फीरोजशाह गाड़ी से उतर कर आफिस में गये।

सुदर्शन ने आदर से प्रेरित होकर प्रणाम किया फीरोजशाह ने अपना दुर्जेय हास्य मुंह पर लाकर प्रणाम लिया।

'तीस साल तक इसने बम्बई में एक छत्र राज्य किया है। सुदर्शन ने कहा।

बेकारों का बदमाश है। चाह से अन्नालाल बोला।

अपने समय के अनुसार इसने भी ठीक किया है।

'सदुभाई इसका प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन प्रतिवर्ष पचास प्रार्थना पत्र सरकार को भेजता है। यह तो इस देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे लोग देश के नेता हो जाते हैं। चलो ऊपर चलें।

दोनों ऊपर गये और फीरोजशाह के चपरासी की मार्फत रायबहादुर का कार्ड जगमोहनलाल को भेजा। तुरन्त बाहर आ गये।

कौन सदुभाई! वाह! इतने दिन से आये हुए हो और मिले आज?

परीक्षा में फँसा हुआ था। सुदर्शन ने जवाब दिया।

'पन्द्रह मिनट बठो तो। अभी जरा मैं काम में हूं। सिपाही! दो कुर्सियाँ ले आओ यहाँ। चले मत जाना समझे बठना। कहकर नामदार चले गये। अन्ली ने दरवाजे के आगे दो कुर्सियाँ डाल दीं और दोनो जने बठ गय। जहाँ वे बठे थे वहाँ उनके सामने पर्दे पड़े हुए थे और पर्दों के हटने से अन्दर बठे हुए सब लोग दिखाई दे रहे थे।

सदुभाई!" धीरे से अबालाल ने कहा ये सब देश के उद्धारक देखने योग्य है।'

बगरिया का बादशाह तो नीचे देखा। वह दीनशा वाच्छा बादशाह का वजीर—चिम्मनलाल सीतलवाड सेनापति—उस कोन में जो बैठा है गोल पगड़ी पहन कर वह हरि सीताराम दीक्षित—गोकुल काका तो पहचान ही लिया—साधारणतया इनकी आँखें ही नही खुलती। इतने में दो और आदमी नये आये।

यह तो गोखले है न? सुन्दन ने एक की ओर उगली उठायी और अबालाल क कान में पूछा और दूसरा कौन है?

दूसरा व्यक्ति ऊँचा दुबला पतला और सुन्दर था। अंग्रेजी ढंग के कपड़े बेचने वाल के साइन-बोर्ड पर विचित्र नमूना सजीव होकर चला आ रहा हो ऐसी थी उसकी वेश भूषा। एक बडी सिगार उसके मुंह म थी।

यह जिन्ना बरिस्टर है।

सदर्शन ने नि श्वास छोड़ी।

देख बम्बई के महान् व्यक्ति। कटाक्ष से अंबालाल ने कहा।

कसी आफत है! सुदर्शन न कहा राष्ट्र की महत्ता से कहीं अधिक इन सब को सरकार की महत्ता में अधिक विश्वास है।

हमारा भी कोई राष्ट्र है यह इनमें से अभी कोई नही जानता। अबालाल ने कहा।

फिर इनको यह भी कहाँ से खबर होगी कि राष्ट्रीयता जागी है गलियों-गलियों में और गाँव-गाँव में—और इनका—इन जसों का तख्ता उलट देगी।

इतने में अन्दर वाद विवाद इतना अधिक होने लगा कि उसके सुनने में दोनों रुक गये।

अन्दर चर्चा चल रही थी थाने वाली कांग्रेस की और बंगाल आन्दोलन स्वदेशी व्रत बायकाट वन्दे मातरम् इत्यादि विषयों की—जिन्हें सुदर्शन प्राणों से प्रिय समझता था उनको ये लोग थोड़े या बहुत अश में मजाक उड़ा रहे थे।

कमरे मे व्यवहारिक वातावरण फैला हुआ था। सुरेन्द्रनाथ अविचारी है राष्ट्रीय आन्दोलन एक मात्र लड़कों की मूर्खता है, वन्देमातरम् बचपन की उदण्डता है बायकाट एक पाप है ऐसे-ऐसे अभिप्रायों पर वहाँ विचार हो रहा था।

प्रश्न केवल इतना ही था कि सबकी आँखों में धूल झोंककर इस थाने वाली कांग्रेस में कैसे काम किया जाय।

सुदर्शन का खून खौलने लगा। ये सब उसकी दृष्टि में देशद्रोही

दिखाई पड़े।

इन सब की दृष्टि पर पड़े हुए भ्रम के परदे को फाड़कर इन सब को कहने का मन हुआ कि जिसकी यह मजाक उड़ा रहे हैं वह राष्ट्रीयता विजय के प्राबल्य से बाहर प्रकाश में आ गई है और इन जसे सकड़ो के हाथ में भी रहने वाली नहीं।

आखिर सभा खत्म हुई और नामदार ने आकर सुदर्शन से अपने यहाँ आ जाने का आग्रह किया।

सुदर्शन मना न कर पाया। नामदार ने गाड़ी काँदावाड़ी की ओर मुड़वाई और सुदर्शन ने आवश्यक सामान ले लिया और अंबालाल को उतार दिया।

सुदर्शन ने जब से नामदार के बंगले में पर रखा तब स उसे ऐसा लगने लगा जैसे वह एक भयानक पाप कर बठा है।

कदिवासी की गन्दी कोठरी में गरीबी थी, भावना थी, देश भक्ति थी स्वदेशी व्रत था आत्म-त्याग था।

उन्हें छोड़कर जहां धमक और स्वच्छता साथ ही विहार करती हों जहां अभिमान और स्वार्थ का बर्ताव हो जहां विदेशी सामग्री और राष्ट्रद्रोह पग-पग पर दिखाई देता हो वहां आने पर उसका हृदय विदीर्ण हो गया। गोल्डस्मिथ का वाक्य उसे स्मरण हुआ।

निर्धन दुनियां की नग्नता धनवानों के कपड़ों की कतरनों से ढांकी जा सकती है। और उसके दिन में धर्म की आवाज सुनाई दी एसे मेरे पुत्र विदेशी विलास में सुमाकर मेरी पराधीनता को चिरजीवी करते हैं। सुदर्शन तुम जैसे कपूत से क्या आशा हो सकती है?

सुदर्शन को एक कमरा दिया गया। उसने वहां रखे हुए शीशे में अपने वाल वेशभूषा तथा मुह देखकर और साथ ही चारो ओर देखने से पता चल गया कि उसका स्थान इस सोफियानी दुनियां में नही लेकिन गाँधवाड़ी म गांव में, गंदगी में जहां उसके भाई सड रहे थे वहीं था। वह यहां स्वय कलंक रूप था वह विदेशी चमक-दमक भारत में कलक रूप ही थी।

ऐसे अनेक विचारों के बीच उसने कपडे निकाले मुह धोया और वह बाहर आया तो नामदार और सुलोचना उसकी प्रतीक्षा म थे।

'सदुभाई तुम यहां नहीं आये यह तुमने बहुत बुरा किया। अच्छा मैं और रायबहादुर तो बचपन के मित्र हैं।

नामदार ने पुराना सम्बन्ध निकाला।

मुझे लगा कि यहां ठीक नहीं रहेगा।

अरे कोई बात है? सब सुविधाएँ हो जातीं।

काका ! मुझे यह सुविधा और यह सुख परिचित नहीं। सुदर्शन ने नीचे देखते हुये कहा।

तो परिचय हो जायगा। तुम पास हो ही जाओगे फिर यहीं रहकर एल० एल० बी० करना।

सुदर्शन ने हँसकर गर्दन हिला दी।

क्या ? नामदार ने आश्चर्य पूर्वक पूछा।

इतने सुख में मुझसे पढ़ा नहीं जा सकता और विचार भी नहीं हो सकता। मुझे तो कठिनाइयों में ही आनन्द आता है। सुदर्शन ने जवाब दिया। उसकी नजर सुलोचना पर पड़ी। कहाँ यह अकड़ और अभिमान में बढ़ी हुई विदेशी ठाट में सजी हुई सुलोचना और कहाँ कृपापूर्ण स्वागत और वहाँ मजदूरी करती फटी धोती में भी गाँव का अनुभव करती हुई देश प्रेम में डूबी हुई, हसमुख धनी बहिन का स्नेहमय आतिथ्य ? उसे लगा कि इस घर का वातावरण यदि तीन दिन उसके आस-पास रहे तो जरूर आत्मघात करना पड़े।

बड़ौदा में बैठ बैठ तुमने भी जीवन के सिद्धांत खूब गढ़ निकाले हैं। नामदार बड़ी मुश्किल से झिझक को दूर कर हँसे।

सुदर्शन चुप रहा।

अभी तक कपाड़िया क्यों नहीं आया ? नामदार ने पूछा।

मैं समझती हूँ कि यह जो गाड़ी खड़ी है उनको ही लेकर आई होगी। सुलोचना बोली।

सुदर्शन के गंभीर व्यक्तित्व की छाप नामदार पर पड़ी। उन्हें लगा कि इस छोटे से लड़के में घुटन पैदा कर दे ऐसा वातावरण पैदा कर देने की शक्ति है।

इतने में प्रोफेसर कपाड़िया ऊँची धोती हाफ कोट और टोपी पहने आ पहुँचे।

अच्छा कपाड़िया आप आ गये क्या ? नामदार ने कहा।

आया—बस आया ! ' सुंघनी की एक चुटकी नाक में रखते हुए कपाडिया आये।

सुलोचना ! जा भोजन की तयारी कर। नामदार ने आज्ञा दी। कपाडिया ! यह मेरे मित्र का लड़का सदुभाई है—जिसके बारे में मैंने बात की थी न वह।

कपाडिया कमरे के बीच खड़े रहे। उन्होंने नाक पर चश्मा धीरे से बढ़ाया और सुन्दान जसे कोई अजीब जानवर हो इस तरह ऊपर से नीचे तक देखने लगे।

ठीक ! सदुभाई कैसे हो ?

'सब कुशल मंगल ही है। खड़े होकर विनय-पूर्वक सु ान ने कहा।

बी० ए० की परीक्षा देने आये हैं। नामदार ने कहा बड़ौदा कालेज में है विप्लववादी है अरविंद घोष के भक्त हैं।

कपाडिया एक सोफा पर बठ ान पोंछी और बोले कालेज में सब विप्लववादी मध्यावस्था में सब कांग्रेस वाले और बुढ़ापे म सब सरकार के सेवक। बचपन में कुछ बिगड़ता तो है नहीं इसलिये विप्लव वाद अच्छा लगता है मध्यावस्था में भाग बढ़ने के लिये व्यवस्थित आन्दोलन की आवश्यकता दिखाई देती है बुढ़ापे में जो कुछ इकट्ठा किया है उसकी रक्षा के लिये कानून और व्यवस्था की मदद की पुकार पड़ती है। क्यों हा ! कपाडिया ने कहा।

' इसका मतलब यह कि सदुभाई भी बुढ़ापे में कानून और व्यवस्था की हाँ भरने लगगा यही न ? नामदार ने पूछा।

सुन्दान को ये वाक्य कुनस देने वाले लगे। उसने ऊपर देखा और यथाशक्ति नम्रता से पूछा मैजिनी का क्या हुआ था ?

'यूरोप वालों की बात जाने दो। कपाडिया ने कहा भारत की बात करो।

इसका मतलब यह कि हम मनुष्य नहीं हैं ? सुदर्शन ने पूछा।

एक तरह से—एक विज्ञान-शास्त्री के अनुसार तो नहीं है।

समझे ? कपाडिया ने जवाब दिया ।
' तब दूसरे दो पर वाले करें और हम नहीं यह क्यों ? यह सदु
भाई का कहना है । सोफे पर लेटते हुए नामदार ने कहा । जमाई प्राप्त
करने के इस प्रयोग से उन्हें जरा दुख हो रहा था ।
यदि विप्लववादी है तो—कपाडिया ने उंगलियों को अलग-अलग
कर गिनती आरम्भ की, निर्धन होना चाहिये, भावुक होना चाहिये
स्वप्नों में जीवित रह सके ऐसा होना चाहिये और किसी एक महाद्वेष
से सदा ही जलता रहना चाहिये । भारतवासी के लिये निर्धनता इतनी
साधारण है कि उसे कुछ कठिनाई नहीं पड़ती और परिणाम-स्वरूप उसे
असन्तोष होता नहीं । उसकी भावुकता व्यावहारिक जीवन से इतनी
निराली है कि दोनों नदियाँ बिना मिले निराली बही चली जा रही हैं ।
उसकी स्वप्न दृष्टि इतनी सूक्ष्म और अवास्तविक होती है कि तुरन्त
बैकुण्ठ और राधाकृष्ण का नहीं तो ब्रह्म का साक्षात्कार करने के लिये
ही छलांग मारती रहती है और अहिंसा परमोधर्म उसकी धमनियों में
इस प्रकार बहता है कि चालीस घण्टे तक भी द्वेष का आवेश वह सहन
नहीं कर सकता । समझे ! शिवचन्द्र ने धार्मिक विप्लव आरम्भ किया ।
अन्त में उसने महाराज को लकड़ी दी और नरसिंह मेहता की तरह
करताल बजाने लगा । नर्मदाशंकर ने सामाजिक विप्लव शुरू किया अन्त
में धर्म और वर्ण के रहस्य परखने के लिए जा बैठा । बीस वर्ष बीतने
दो फिर तुम्हारा सदुभाई तो आडम्बरी धनाढ्य होगा या एक पहुँचा
हुआ भक्त हो जायगा । समझे !
कपाडिया का भाषण नामदार को फुरसत के वक्त बहुत अच्छा लगता
था अत धीरे से सिगार का धुआँ मुंह से निकालते हुए सुनते रहे ।
सुदर्शन को भी इस प्रोफेसर की बात में आनन्द आया उसने आतुरता
से प्रत्येक शब्द सुने इससे उसमें परिचित विचार विकल्प और सिद्धान्त
आये और कपाडिया के भाषण समाप्त करने पर उसकी बुद्धि सतेज हुई
और उससे टक्कर लेने के लिए वह तैयार हो गया ।

पर इतने में सुलोचना आई 'पापा ! समय हो गया।' 'चलो' कहकर नामदार उठे और अनेक विद्या के पारंगत की तरह उन्होंने नवीन विषय निकाला 'इस आने वाली कॉंग्रेस में बड़ा गड़बड़ होने वाली है प्रोफेसर आज हम उस पर विचार करने के लिए इकट्ठे हुए थे।

और तुम्हारे डायरेक्टर ने क्या किया ? हंसकर कपाड़िया ने पूछा।

हमारी कोई सुनता ही नहीं ?'

क्यों ? हा हा हा ! बंगाल के उपद्रव से मालूम देता है तुम सब बहुत घबड़ा गये हो।

क्यों ? पटरे पर बठते हुए नामदार ने कहा—

तूफान शुरू हुआ कि कछवे ने सुरक्षित रहने के लिये रेत में सिर दिया यही न।

अरे वे क्या कर सकते थे ? इन बाबुओं के दिमाग ठिकाने नहा। सदुभाई ! जरा तो लो !

जी मुझ से और नहीं खाया जाता।

सुलोचना कल सवेरे सदुभाई को घुमाने ले जाना।"

मुझे कल रात में चल जाना है इसलिए मुझे अपने मित्रा से मिलने जाना पड़गा।

सवेरे घूम आना।

जी।" सुदर्शन ने कहा।

और फिर दूसरी अनेक बातों में भोजन समाप्त हुआ। कपाड़िया ने विश्राम और नामदार अपने काम में लगे।

सुदर्शन अपने कमरे में जा बैठा। कपाड़िया के शब्दों ने उसकी कल्पना-शक्ति उत्तेजित कर दी थी। प्रोफेसर भी जैसे माँ के शब्द ही बोल रहा हो एसा लगा। क्या माँ के पुत्र मानवता में नहीं है ? क्या माँ का प्राण वापिस नहीं लौटा सकता वह।

पाँच दिन के सतत परिश्रम के बाद सुदर्शन की स्वप्नदृष्टि थक-सी गई। वह सो गया और जब आँख खुली तो सवेरा हो आया था।

सुलोचना सुदर्शन को लेकर घूमने निकली तो गाड़ी में क्षोम का वातावरण छाया हुआ था। इस धीच के साथ घूमने जाने से सुलोचना के अभिमान को आघात पहुँचा, और ऐसा न हो कि इस लड़के के साथ उसे कोई देख ले यह डर उसे हमेशा लगा रहा। शिवलाल मामदार और कपाड़िया पर वह अपना सिक्का जमा सका था इसका रहस्य वह न समझ सकी फिर भी उस अदृष्ट रहस्य की धाक उस पर भी जमने लगी। सुदर्शन को लग रहा था जसे सुलोचना से विवाह करने की योजना में ही एक प्रयोग हो अत जसे कोई ऋषिराज किसी अप्सरा से सावधान होकर चले वसे ही सुदर्शन भी चल रहा था। इस लड़क भड़क वाली अभिमानी और उद्धत लड़की के प्रति उसे तिरस्कार हो रहा था।

कुछ उलटी-सीधी बातें करता हुआ वह चौपाटी पर आया।

यह तुम्हारे शिवलाल सर्राफ का घर है। सुलोचना ने कहा।

हम यहीं से घूमना बन्द कर दें तो कसा रहे? सुदर्शन ने कहा मुझे शिवलाल से मिलना है।

पापा नाराज जो होंगे फिर जसी इच्छा। सुलोचना ने अनिच्छा से कहा।

वक्त थोड़ा है और मुझे बहुत काम है। सुदर्शन ने जवाब दिया मेरा सामान कालबादेवी में भेज देना नहीं तो मैं शिवलाल को भेज दूँगा।

सुलोचना ने गाड़ी रुकवाई और सुदर्शन उतर कर चला गया।

सुलोचना थोड़ी देर विचार-मग्न-सी देखती रही। एक छोटा सा लड़का भी कितना बड़ा वातावरण पदा कर सकता है? अन्त में मुँह चढ़ा कर उसने कोचवान से गाड़ी घर ले जाने के लिये कहा।

सुदर्शन ने शिवलाल के यहाँ भोजन किया दोपहर को कालेज में जाकर अम्बालाल से मिलकर मिस वकील से परिचय किया फिर

कालम्बा देवी पर थोडी सी पुस्तकें खरीदीं और शाम को अम्बालाल के यहाँ गया।

मधुभाई! तुम्हारे लिए मैंने एक रुमाल बुन रखा है। पत्नी ने यह कह कर तारों का एक छोटा सा रुमाल आगे रख दिया।

मन्सुख ने रुमाल में कढ़ा हुआ वन्दे मातरम पढ़ा। उसका हृदय उछलने लगा। प्रेरणा की कैसी अप्रतिम मूर्ति! उसने स्नेहार्द्र नयनों से रुमाल ले लिया और अपना सामान बाँधने लगा।

शिवलाल और नारायण भाई भी आज अम्बालाल के यहाँ ही जीमने वाले थे। वे सब जीम कर रात की गाड़ी से मन्सुख को बम्बई छोड़ने से पहले ही जब वह बम्बई में पढ़ने के लिये आये तो अम्बालाल के यहाँ ही पता लेकर रहे ऐसी व्यवस्था उन्होंने कर दी थी।

ग्यारह

बम्बई प्रवास

(१)

गदरान अपने गाँव पहुँचा और दूसरे दो दिन रायबहादुर प्रमोदराय के महान् क्रोध का भाजन बना। इस क्रोध का कारण नामदार जगमोहन लाल का पत्र था।

रा० प्रमोद भाई

चिरंजीव सुदर्शन बम्बई आ पहुँचा—और बहुत आग्रह करने पर भी हमारे यहाँ नहीं उतरा। कुछ अभिमान कुछ गलत धारणायें और कुछ मूर्खों जैसे आन्दोलों ने इस आशास्पद लड़के को बिगाड़ दिया है। बुरा तो नहीं मानोगे। मैं भी इसे अपने लड़के की तरह समझता हूँ इसलिए, लिख रहा हूँ। ये सब बातें देखते हुए हमें अपने सम्बन्ध गाढ़े करने के प्रयत्न स्थगित ही रखने पड़ेंगे बस—गंगा भाभी को प्रणाम !

तुम्हारा
जगमोहन

'तूने यह क्या किया रे मूर्ख !' प्रमोदराय ने पुकारकर सुदर्शन से कहा, 'दिन पर दिन बुद्धि खराब होती जा रही है। बम्बई जाकर क्या कर आया ?

'कुछ नहीं बाबूजी। अपनी जिन्दगी अपने ढंग से व्यतीत करने योग्य मैं हो गया हूँ।'

इसका मतलब यह कि जो जी में आये वह करने का अधिकार मिल गया मुझे।' लाल-पीले होकर रायबहादुर ने कहा।

खीझकर सुदर्शन ने कहा मैंने नामदार साहब का जरा भी अपमान नहीं किया। जहाँ मुझे अच्छा नहीं लगे वहाँ मैं उतरता किस लिए ? और उनकी सुलोचना का मैं करू क्या ? विवाह तो मुझे करना नहीं है। उसको रखने के लिए मैं काँच की आलमारी कहाँ से लाऊँ ?

'इसका मतलब यह है कि तू सुलोचना से शादी नहीं करेगा।

मेरी इच्छा नहीं है—सुलोचना की मर्जी नहीं। अब जगमोहन लाल जी के भी विचार बदल गये फिर बेकार किस लिए आशा रखते हो ?

'तुझे करना क्या है ?

'मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे प्रतिष्ठा की जरूरत नहीं मुझे कन्या भी नहीं चाहिए।

'फिर राख लपेट कर फिरना है क्या ?

मैंने तो बहुत दिनों से राख लपेट रखी है।

बढ़ तू ज्यादा मत मुझे। ज्यादा गड़बड़ करेगा तो घर से बाहर निकाल दूंगा।

'जब तुम कह दोगे तो मैं भी दूसरे ही क्षण यहाँ नहीं रहूँगा बाबू जी ! किस लिए गुस्से होते हो ? मैं शराबी हूँ ? मैं दुगुणी हूँ ? मैं पापी हूँ ? मेरा क्या अपराध है ? मुझे अपना जीवन अपने ढंग पर निर्माण करना है तुम्हारे ढंग पर नहीं।'

तू बहुत बुद्धिमान हो गया है !

मैं बालक तो हूँ।

इससे क्या ? यह पागलपन सा तुझे छोड़ना ही पड़ेगा। नहीं तो—

'बाब जी ! मेरा पागलपन जोर-जुल्म से कभी जाने वाला नहीं।'

जरा जोर से सुदर्शन न कहा।

नहीं जायेगा नहीं जायेगा ? चिल्लाकर रायबहादुर बिस्तरे पर से उठ और सुदर्शन के पास जाकर एक तमाचा जड़ दिया। नहीं जायेगा! दाँत किचकिचा कर रायबहादुर ने फिर कहा खबरदार जो ऐसी बेशर्मी मेरे मुह पर उठाई तो! जा मुह काला कर!

सुदर्शन की आँखों में पल भरके लिए क्रुध झलक आया पर अपने बाप के प्रति उसके हृदय में इतना सम्मान और प्रेम था कि वह हमेशा ही पुत्र के आदर्शों की रक्षा करने के लिए यथाशक्ति प्रयास किया करता था। वह चुपचाप नीचे देखता रहा उसके हृदय में कुछ कह डालने का आवेश हो आया था पर उसने उ। दबा दिया।

नीचे मुह झुकाकर वह चला गया। उसे लगा कि उसकी मानवता की कसौटी शुरू हो गई थी। वह अन्दर गया और कोने में बैठ कर संकल्प किया कि जिस घर में उसे अपनी इच्छानुसार जीने का अधिकार नहीं—जहाँ उसको माँ की भक्ति करने का हक नहीं वहाँ रहना बेकार है। जीवन आदर्श और बताये हुए प्रयत्न उसे घर से निकल जाने की प्रेरणा दे रहे थे। निरंकुश-देश भक्ति को अपनाने के लिए उसे स्वतन्त्रता की आवश्यकता दिखाई दी।

उसने घर से बाहर जाने का निश्चय किया। उसने अपनी धोती एक कमीज दो किताब, एक डायरी और पास में पड़े हुए पाँच रुपये बाँधे और आधी रात के बाद घर से निकल कर दो बजे की गाड़ी से बम्बई जाने का निश्चय किया।

माँ बाप उसका इरादा जान न जायें इसलिए हमेशा की तरह दस बजे बिस्तर पर आकर वह सोया। ग्यारह बजे के लगभग सारा घर शान्त हो गया तब उसने उठने का विचार किया और तीसरी मंजिल से रायबहादुर के आने की आवाज सुनाई दी। वह जैसे सो रहा हो इस प्रकार पीठ फेर कर सो गया।

प्रमोदराय और गंगा मामी धीरे-धीरे उसके पास आये। दोनों खाट के पास बहुत देर तक खड़े रहे। कहीं ऐसा न हो कि वे जान जायें कि वह जाग रहा है इसलिए सुदर्शन खुर्राटे भरने लगा।

मैंने बड़े जोर से मार दिया है। प्रमोदराय ने गंगा मामी से कहा। उसकी आवाज में स्नेह और खेद दोनों ही थे। 'लड़का हीरा है।

तुम व्यर्थ ही गुस्से हो जाते हो। गंगा मामी ने धीमे से जवाब दिया बड़ा होने पर स्वयं सीधा हो जायगा। यह तो जगमोहन भाई के मिजाज का ठिकाना नहीं जो ऐसा लिखा। उसकी सुलोचना नहीं मिले तो हमारा लड़का उसे क्वारा ही रह जायेगा?

सुदर्शन को यह भावयुक्त प्रदर्शन देख रुलाई आ गई। उसे लगा कि बहुत देर तक माँ बाप उसे स्नेह से देखते रहे एक बार तो उसे दोनों ने एक भाव के आवेश में एक दूसरे का हाथ पकड़ा हो ऐसा लगा एक बार प्रमोदराय ने उसके शरीर पर प्यार से हाथ फेरा। थोड़ी देर बाद दोनों धीरे से ऊपर चले गये।

उनके चले जाने पर सुदर्शन ने आँखें खोलीं—उसकी आँख में आँसू थे उसका गला रुंध गया था। वातावरण में अपार्थिव मृदुता तथा स्नेहार्द्रता थी। इस जादूभरे वातावरण में फिर उसकी आँखों के सामने बूढ़े माता पिता खाट के पास खड़े उसकी ओर ममता की वर्षा करते दिखाई दिये। इन दोनों के जीवन का आधार था। यदि वह चला जाय तो जैसे श्रवण के वियोग में उसके माता पिता मर गये थे वही हाल दशा इनकी भी हो जाय। क्या इनको बेमौत मरने देने में मानवता थी? क्या उनको दुःख देकर माँ की भक्ति नहीं हो सकती? इस समय माँ-बाप की सेवा और माँ की सेवा के लिए बहुत देर तक वह विचार करता रहा। उसने कई बार गठरी उठायी कपड़े पहनने का विचार किया पर मन दृढ़ नहीं हुआ।

बारह बजे एक बजा गाड़ी का वक्त हो गया सारी रात सुदर्शन

जागता हुआ खाट पर पड़ा रहा। उषाकाल हुआ तब उसने निःश्वास छोड़ी।

माँ! माँ! इन दोनों को इस तरह मरते हुए छोड़ कर मैं कहाँ जाऊँ? माँ! इनको छोड़ने की जरूरत हो तो आज्ञा देना।

वह खाट पर पड़ा रहा थोड़ी देर में उसे नींद आ गई।

(२)

दूसरे दिन प्रमोदराय और सुदर्शन—दोनों ने कल की बात भुला दी और हमेशा की तरह काम चलने लगा। जगमोहनलाल, सुलोचना और थप्पड़—सब स्वप्न जैसे लगने लगे।

थोड़े दिनों में सुदर्शन बी० ए० द्वितीय श्रेणी में पास हुआ इसकी खबर मिली। समस्त कुटुम्ब ने आनन्द महोत्सव मनाया पेड़े बाँटे गये चाय पिलाई गई मुबारकबादी के पत्र आये। रायबहादुर गर्व से घूमने लगे। गंगा भाभी की आँखों में हर्ष के आँसू आये और अपने जीवन के द्वार खुलने से सुदर्शन को भी हर्ष हुआ। पन्नालाल का साहचर्य, बम्बई का शक्तिप्रेरक वातावरण ध्येय को विकसित करने का अवसर, साथ ही मंडल को सजीव बनाने का लक्ष्य और धनी की स्नेहभरी सहानुभूति से युक्त प्रोत्साहन—इस प्रकार के नवीन और रमणीय जीवन के स्वप्नों का आनन्द अनुभव करने में वह व्यस्त हो गया।

भीमनाथ के तालाब के किनारे पर स्थापित मंडल के विषय में वह दिन में अनेक बार विचार करता। और उसके सदस्यों की प्रवृत्ति किस प्रकार केन्द्रस्थ होकर देश में राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता ला सकती है इसका विचार तो वह करता रहता था। उस एक ख्याल आया। मंडल का प्रत्येक सदस्य एक देशीय दृष्टि से राष्ट्रीय प्रश्न पर विचार करता था। एक मात्र वह अकेला ही भिन्न भिन्न दृष्टियों को समग्र रीति से देख सकता था और एक मात्र उसकी ही योजना सब ग्राही थी। प्रत्येक सदस्य की एकदेशीय प्रवृत्तियों के एकीकरण से

सर्वदेशीय आन्दोलन का कर्ने बन द्द इनका विचार वह किया करता था। इन विचारों के कारण उनकी स्वप्न अनुभव करने की शक्ति पर अंकुश रख गया। प्रत्येक व्यक्ति का पालन करने के लिये आवश्यक साधन क्या क्या चाहिए और वह कैसे प्राप्त किए जायें इसका विचार करते हुए स्वप्न विस्तार का व्यावहारिक मर्यादा हो गई।

इनमें स सबसे कठिन प्रश्न था मां के प्राण' को पहचानकर उस वापिस लाना था। प्राकृत कराडिया के शब्दों ने उसके हृदय पर आघात किया था मां का प्राण वही कराडिया की विध्वंसात्मक मानवता! और यह 'प्राण' मां को पुन नहीं मिलगा क्योंकि बाप डिया के अनुसार क्या हिन्दुस्तानी निर्धन भावुक स्वप्नद्रष्टा और महा द्रष्टी होने के लिये अशक्त थ ?

जनवरी आई और नरम पड़ गए रायबहादुर ने सु न कानून का अध्ययन करे इस इरादे से अम्बालाल के यहाँ पैसा देकर रहने की आज्ञा दे दी। अम्मोहनलाल के प्रति रायबहादुर को भी अरुचि हो गई थी अत उनके विषय में कुछ नहीं कहा।

बादों में एक दिन सवेरे सुमन एक ट्रक और एक विस्तर लेकर चर्नीरोड स्टेशन पर उतरा। और बुलाने आए हुए अंबालाल से मिला। दोनों मजदूर के सिर पर सामान रखाकर कांदावाडी गये और धनी का स्नेहमय स्वागत स्वीकार करते हुए सवेरा बीत गया। सुमन लॉ कालेज में जाने लगा और सारा समय पीटीट लाइब्रेरी में व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। उसे लगा कि इतिहास और जीवन चरित्रों में नर हुए रहस्यों का अध्ययन किए बिना मां का प्राण' पुन लौटना कठिन समस्या हल नहीं हो सकती।

ज्ञान-संचय के साथ-साथ उसने विचार का अधिक करना प्रारम्भ कर लिया और समय मिलने पर अहमदाबाद में विद्यार्थी मित्रों के साथ बातचीत करता था। उन सबका ध्येय एक ही था—मातृ भूमि। लक्ष्य एक ही था—माता का उद्धार।

साथ ही साथ वह मंडल के सदस्यों से भी गाढ़ा सम्बन्ध रखने लगा। केरशास्प रुई बाजार में व्यस्त रहा था पर सुदर्शन उससे बार बार मिलता और घड़ी दो घड़ी अलग अलग प्रश्नों पर चर्चा करता। मणिलाल और मिस वकील गुप्त रूप से बम तयार किया करते और यह प्रयोग थोड़े समय में सफल हो जायगा ऐसा विश्वास सुदर्शन को दिलाते रहते। शिवलाल सीनियर बी० ए० में था पर भिन्न-भिन्न संस्थाओं और उनके संचालकों के संपर्क में आकर प्रत्येक की चाबी क है यह निश्चय करने में ही प्रवृत्त रहता।

मगन पंड्या बी० एस-सी० के अन्तिम वर्ष के लिए बड़ौदे में मेहन कर रहा था और पास हो जाय तो बड़ौदा राज्य की ओर से उसे विदे भेजा जायगा इसी धुन में लगा हुआ था।

पाठक एम० ए० हो गया था और किसी अच्छी नौकरी में व्यव स्थित हो जाय इसी उधेड़-बुन में इधर उधर चिट्ठी लिखने में लोगों क प्रसन्न करने में फंसा रहता था।

घोष शास्त्री बी० एस-सी० में पास हो गया था और कसे भ आर्य-समाज की प्रवृत्ति का प्रधान हो सके इस अवसर की खो में था।

सन्तकुमार जोशी ने इन्टरमीडियट पास कर अखाड़ों के लिए संचालकों को शिक्षित करने की योजना हाथ में ले ली थी।

गिरजाशंकर शुक्ल सीनियर में आया था लेकिन अभ्यास की उपेक्षाकर सनिक कारवाई के बारे में बड़-बड़े विचार कर रहा है, इस तरह खबर दिया करता था।

नारायणभाई पटेल ने बी० ए० में गणित में फर्स्ट क्लास पाया और एम० ए० होना या आई० सी० एस० होने के लिये विलायत जाना इसका विचार किया करता था।

मोहनलाल पारेख विप्लववाद का प्रचार किया करता था।

लेकिन मुन्दान के मस्तिष्क में इन सब बातों में प्रमुख स्थान धनी बहिन लन लगी थी। मंडागाल की तरह वह भी घर के काम में मदद करता और दोपहर भर फुरसत होने के कारण उसको पढ़ाने और उसके साथ बातचीत करने का अवसर मिलता। धनी आतुर शिष्य थी और छोटी उम्र में भी उस दूसरे को आकर्षित करने की कला आती थी। वह मदु हसती और बार-बार हसी भी करती। धीरे धीरे इन दानों का समागम बढ़ता गया और दो घण्ट धनी के साथ पढ़ने में या बात करने में व्यतीत होना प्रति दिन की दिनचर्या का एक आवश्यक अंग हो गया।

मुन्दन धनी से विद्या और स्वदशी महात्माओं की जीवन-कथा कहता मातृभूमि के प्रति की गई सवाओं के विविध प्रसंगों का वर्णन करता अर्वाचीन देश भक्तों का परिचय देता। उसस अपन बचपन के सपने कहता और कालेज में अपनाय हुए स्वप्नों की रूपरेखा के विषय में कुछ बताता। आँखें खोले होठ बन्द किये धनी सब कुछ सुना करती और मुन्दन बोलता हुआ रुक कि फिर ? कहकर कायल की तरह कूक उठती। बस 'फिर' ? मुन्दन के कान में एक मधुर प्रतिध्वनि गुंजा देती।

स्त्री के आगे अपना हृदय खोलकर रख देना पुरुष को मोन से भी अधिक आह्लादक होता है—सच्चिदानन्द से भी अधिक आह्लादात्मक होता है पर जो स्त्री शिष्या हो—जो उस पुरुष को पूजती हो—जिसमें किसीको खोट देखना आता न हो और स्वतन्त्र धारणा बनाने का ज्ञान न हो—जिसमें पुरुष के दाम्पत्य जाल की मोहिनी में परवश होने की निबलता हो तो वह पुरुष के मन भर के लिए एक अद्भुत प्रेरणा देती है उसके व्यक्तित्व को विकसित करता है उसके स्वप्नों का महाराज्य का रूप देता है उसके भविष्य को भव्य बनाती है—उसे ऐसी प्रचण्ड महत्ता का भाव कराती है कि उसकी मानवता स्वाभाविक

स्वरूप का छोड़ कर देवी विस्तार ग्रहण कर लेती है, और पल भर के लिये जैसे वह दवी के समान हो गया हो ऐसा अनुभव कराती है। कोई कह सकेगा कि यदि मेरी मोडीलोन न होती तो ईसू खरा पगम्बर हो सकता था?

ऐसा ही कुछ सुदर्शन का भी हुआ। अपने विचार और अपने स्वप्नों को इस छोटी सी मासमझ लड़की के आगे व्यक्त करते हुए उसे अपनी मानवता की मान का पता चला और जैसे वह पगम्बर होने के लिए पदा हुआ हो ऐसा कुछ ध्यान आने लगा और साथ ही धनी का भी दवी स्वरूप उसे दिखाई दिया। वह एक साधारण लड़की नहीं थी वरन् उसकी आँखों में अगाध गांभीर्य उसने देखा और उसकी वाणी में एक अनोखी प्रेरणा उसे दिखाई दी। उसे इधर उधर फिरती, काम करती बात करती हुई देखता कि उसके छोटे से शरीर में तेजस्वी पारदर्शकता उसे दिखाई देती। वह अपने भविष्य का विचार करता तो उसमें धनी को स्वर्णमयी देहलता अद्भुत रूप से लिपटी हुई दिखाई देती अपने को देशनायक समझता तो धनी हाथ में माला लेकर उसे बधाई देने के लिए तयार दिखाई देती और अपने को गुप्त मण्डल का नायक समझता तो धनी उसके पास खड़ी हुई मण्डल की प्रेरणा देती हुई दिखाई देती। वह अपने को कारागृह में पड़ा हुआ समझता तो धनी बाहर व्रत कर उसकी प्रतीक्षा करती हुई दिखाई देती। अपने को सूली पर चढ़ाये जाने की कल्पना करता तो दूर न दिखाई दे इस प्रकार खड़ी हुई धनी के दिव्य चक्षुओं से शक्ति प्राप्तकर अपने अंतिम श्वासों को गौरवान्वित होते हुए देखता।

इन सब सपनों में पार्थिव तो नाम को भी न था। धनी उसकी स्वप्न-सृष्टि में देवी की तरह विराजमान थी वास्तविक जीवन में चाहे अच्छी भी न लगे तो भी स्वप्न जीवन में वह अपूर्व दवी बन कर मन को शासित करने लगी। इतना सब होने पर भी वह भावुक विद्यार्थी

उसके प्रति सगे भाई से भी बढ़कर निर्मल स्नेह और मान से बर्ताव करता था। उदीयमान निर्लेप संस्कारी मानव हृदय भावनाशील कल्पना की दृष्टि से विराम पाता हुआ स्त्रीत्व देख इस प्रकार वह धनी को दमता था।

एक सप्ताह में दो दिन लॉ क्लास से बाहर जाते समय प्रएउ सवाडी के चौराहे पर से सुप्रभात वंदेमातरम् खरीद कर घर को ले आता तब सुदर्शन छोर से सारा पत्र पढ़ जाता। और खाने के समय भवानीपाल के छोटे से कमरे में का राष्ट्रीयता महोत्सव होता। अवालास कभी कभी जागते जीमते दो चौर खाने के बीच में भी उसके वाक्य और दश भजन पढ़ते रहते। अरविन्द बाबू की ओजस्वती भाषा का प्रसाद वे अखते, बंगाल में चला हुई राष्ट्रीय भावनाओं की बौछारों में भीगते राष्ट्रीयता उनके हृदय में तूफान मचाती इस भक्ति से पागल होकर वे चुपचाप बैठ जाते या उसका प्रश्न करने के लिए मार्ग खोजते अब मां की ओर उसका द्रव विप भी हलाहल हो जाता और 'मां' और भगर से स्वसरकार और आत्म सिद्धि के साधन स्पष्टतया उनको मानती।

१६ ७ की क्या ठहरी महाकाव्य।

सितम्बर १९ ६ में सुरेन्द्र बाबू ने अभिषेक कराया था विद्यार्थी वर्ग ने उस राज्याभिषेक का नाम लिया और नये वर्ष से जिस तरह ब्रिटिश शासन नष्ट हो गया हो सुदर्शन और उसके मित्र अनुभव करने लगे थे।

दिसम्बर १९० म दादाभाई नौरोजी ने स्वराज्य का मन्त्र दिया और अबालाल दमाई ने दल में अंग्रेज रहने हैं यह विचार ही मस्तिष्क से निकाल देने का प्रयत्न किया।

प्रतिदिन बंगाल में स्वयंवर समिति से खबरें आतीं। नवीन युग शुरू होता हुआ आ पड़ा नवयुवक वर्ग बद्ध होकर स्वातन्त्र्य युद्ध में कूदने के लिए तैयार हो रहे थे।

कोमिला में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ मारामारी हुई थाका बहुत

खून भी बहा। वायु में समरांगण की ध्वनि गूंजने लगी और सुदर्शन के नथुने युद्ध तत्परता के गर्व से फूलने लगे।

पंजाब में भी रणभेरी की आवाज आई। लाहौर में 'पंजाबी' पत्र के सम्पादक को राजद्रोह के अपराध में कैद किया गया। जेल जाते हुए सम्पादक को लोगों ने बधाई दी। स्वतंत्रता के लिए सब कुछ सहना यह एक आदत सी हो गई।

रावलपिंडी के सरदार अजीतसिंह और लाला लाजपतराय गरजे। पंजाब अर्थात सिक्ख सिक्ख अर्थात सेना सेना अर्थात युद्ध अर्थात् विजय। अब क्या रह गया ?

लोगों ने सत्ता के खिलाफ विद्रोह किया। देश में अफवाह उड़ी कि १० मई अर्थात् सन् सत्तावन के विद्रोह की वर्षी के दिन जरूर स्वातंत्र्य होगा। बाल-हृदय आशा से पागल हो उठे।

९ मई को लाला लाजपतराय और अजीतसिंह को रिपोर्ट (समुद्र पार) किया गया। अब क्या रह गया ?

छठी मई को विद्यार्थियों को राजनैतिक प्रवृत्ति में भाग लेने से रोक दिया गया। सरकार क्रूर बनती है। धनी ने कहा।

११ मई को बंगाल और पंजाब में पब्लिक मीटिंग पर नियन्त्रण लगा दिया गया। कुछ परवाह नहीं जाहिर में नहीं तो छिपे तौर से एक दूसरा भारत कहाँ अलग अलग रहने वाला है ? नहीं।

सितम्बर में विपिन चन्द्रपाल पकड़े गये। 'जहाँ तीस करोड़ जल जाने को तैयार हैं वहाँ कितनों को पकड़ेंगे ? किस वकील ने सूत्र उच्चारण किया।

सितम्बर में महायोगी सदृश समझे जाने वाले अरविंद घोष अपने ऊपर चलाये गये केस से मुक्त हुए। स्वतन्त्रता धूप सेक रहा था इस बात से कौन इन्कार कर सकता है ?

हार्डी और नेविन्सन विलायत से भारत की अशान्ति का रहस्य जानने

के लिये भाये। इंगलैंड भी कांपने लगा था इसे कौन नहीं मानेगा ?

पहली नवम्बर को राजद्रोही सभा पर पाबन्दी का कानून पास में लाया गया। डा० रासबिहारी घोष और गोखले ने अपने भाषणों में बहुत क्षोभ प्रदर्शित किया। भाषणों म कहीं स्वतन्त्रता मिलने वाली है।

मोर्ली साहब पुस्तकों में निहित स्वातन्त्र्य के शौकीन थे। प्रसन्न होते ही कहने लगे कि कैनेडा जसा स्वराज्य भारत में एक नहीं रह सकता कैनेडा का फर कोट दक्षिण में सुसहृद कैसे हो ? विप्लववादी भारत की हँसी उड़ाने लगे मोर्ली के अभिनय के अतिरिक्त अंगरेजों के पास म और क्या मिलेगा ?'

इस प्रकार रोज कुछ न कुछ नवीन बात होती और सब 'वन्देमातरम्' जस राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन देने वाले सनातन मंत्रों का उच्चारण करने लगे। कर्मयोग—अशांति—स्वदेशी—बायकाट—विनाश—विप्लव और शत में स्वातन्त्र्य। कैसी भव्य परम्परा है।

सुदर्शन और पन्नालाल की मनोकामना बढ़ने लगी। घनों को आँखों का तेज प्रतिदिन अधिक और अधिक बढ़ा। मिस वकील के भाठ आवेश में और भी जोर से बन्द होने लगे।

आन्तरिक रुचियों में एक दिन सुदर्शन को प्रोफेसर कपाडिया स मिलने का मन हुआ। उस दिन जगमोहनलाल के यहाँ दो घण्टे उनके साथ बात की तभी सुदर्शन उनसे मिलना चाहता था। उस दिन स उसे ऐसा लगने लगा था कि वेद पण्डित लगने वाले कपाडिया की बातों में गम्भीर विचार अध्ययन समाया हुआ था और कहीं ऐसा न हो कि उसकी अपनी तैयारी में कमी रह जाये अत इस भय से उसने उनके ज्ञान के उपयोग करने की बात सोची।

एक दिन शाम को उसने प्रोफेसर का दरवाजा खटखटाया और वही हाथी के सदृश सिर और दुबले पतले शरीर वाले—एक अंगोछा पहने हुए कपाडिया ने दरवाजा खोला।

साहब आ सकता हूँ ? नम्रता से सुदर्शन ने पूछा।

'क्या काम है ?' उसे ठीक से न पहचानते हुए प्रोफेसर ने बीच में ही खड़े रह कर पूछा।

'आपने मुझे नहीं पहचाना क्या ? नामदार जगमोहनलाल के यहाँ नवम्बर के महीने हम मिले थे न ?

'हाँ हाँ ! प्रोफेसर ने माथा हिलाते हुये कहा।

आपको अवकाश हो तो एक बात पूछनी है।'

अन्दर आओ फिर तो तू मिला ही नहीं।'

जगमोहनलाल बड़े आदमी ठहरे उनके यहाँ मुझ जैसे को स्थान कहाँ।

तू तो विद्रोही है न ? यह तुझको शोभा देता ऐसा ही जवाब हैं। कहकर प्रोफेसर ने सुदर्शन को अन्दर बुलाया और दरवाजा बन्द कर दिया। पुस्तकों से भरे हुए कमरे को देखकर सुदर्शन पलभर चकित रह गया। इतना सारा कोई प* सके यह उसके ख्याल में न था। उसने इज्जत से प्रोफेसर की ओर देखा।

आपका समय तो नहीं ले रहा हूँ ? सुदर्शन ने क्षोभ से पूछा।

'जो बात करने के लिए तू आया है उस पर ही तो समय का आधार है। कहकर एक कुर्सी आगे करके उसने बैठने के लिये कहा।

सुदर्शन को जरा दुःख हुआ। इस छोटी सी निर्बल मूर्ति के भव्य कपाल पर बुद्धि के तेज ने और सरस्वती के मन्दिर के समान इस कमरे ने उसे जरा देर के लिए चकित कर दिया। पर उसको माँ की आशा उसे ध्यान आई। उसके मन की प्रेरणा ने उसे उत्साहित किया।

'प्रोफेसर ! आपने उस दिन कहा था कि हिन्दुस्तानी विद्रोही नहीं हो सकते आपके इसी सिद्धांत के विषय में मैं पूछने आया हूँ।

'अच्छा तो तेरे सिद्धांतों में भूल हुई है क्यों ? कहकर कपाळिया

ने मू घनी मू थी।

आपका सिद्धांत तो मुझे झूठा लगता है।
लगता है और पाँच वर्ष तक लगेगा भी समझा ?
१७८१ से पहले फ्रांस में यदि कोई आप जैसा होता तो
वह समझा था क्या ?

मुझे विश्वास नहीं ! १७८१ से पहले फ्रेंच राष्ट्र था
राज्यकर्ता अन्धे थे उसकी प्रजा में ताकत थी वह धार्मिक
और न वह निर्बल ही थी। उसमें व्यवस्था और शक्ति दोनो थ
भी वह भूखा मरती थी। क्या अपने यहाँ इनमें से कुछ भी
देता है ? तुम्हें ?

कपाडिया ने जैसे जैसे घटनायें कहना आरम्भ कीं वस वस सु
में अश्रद्धा का संचार होने लगा। घबराहट में उसके रोम रोम
हो गये।

आपको नहीं दिखाई देता ? उसने सम्मानपूर्वक प्रश्न किया।
लार्ड कर्जन क्या धोखेबाज़ दिखाई देता है ? क्या बंगाली अग
है ? क्या हमारे यहाँ भुखमरी नहीं है ?

क्या ! कर्जन अन्धा भले हो पर ब्रिटिश अन्धी नहीं। अप अ
प्रजा का इतिहास पढ़ा है ना ? यह प्रजा में कोई न कोई रास्ता लाम
निकालने में अति कुशल है।

अमरिका गवाने समय पर कारीगरी कहाँ चली गई था ?
कारीगरी ता लोग निकाली थी पर उसका अमल ८२ में हुआ।
पिट और चैतम के भाषण पढ़े हैं ? तरकीब ता तयार हो गई थी लेकि
राजा निकम्मा था। अमरिका खोया इसलिए तो अंग्रेजों ने तरकीब
निकालकर राजा को शक्तिहीन कर डाला। अब यह भूल नहीं हो
सकती और अगर ये करें भी तो उसका फायदा उठाना हम लोगों को
कहाँ आता है ? प्रोफसर ने पुन मू घनी मू थी।

'आप तो बिलकुल निराशावादी लग रहे हैं।

नहीं मैं तो उनकी और तुम्हारी आलोचना तटस्थ रीति से कर रहा हूँ।

इसका क्या मतलब ? मैं तो आपके पास रास्ता खोजने आया हूँ। आप कहते हैं कि विद्रोह की हमारे यहाँ शक्ति नहीं तब शायद होवे कैसे ?

हाँ ! हाँ ! कापड़िया हँसा मैं राष्ट्ररोग का डाक्टर नहीं हूँ।

फिर भी आपके ज्ञान का लाभ मुझे लेना है।

मेरे बच्चे ! विद्रोह अर्थात् सक्रिय करने की योजना। जो पुरुषत्व और शक्ति सौ वर्ष में पैदा हो उसे पाँच वर्ष में पैदा कर दिखाना उसका नाम है विद्रोह समझा ? सामान्य वीरता पर बीस गुना बढ़ना चाहिए। सामान्य भावनाओं की सचेष्टता बीस गुनी बढ़नी चाहिए यह पहली सीढ़ी है। यह तुम लड़कों से होनी नहीं। प्रत्येक वर्ष लड़के बी० ए० होते हैं। पर कालेज में अपनाई हुई भावनाओं का मन पर एक प्रतिशत भी छ महिने नहीं रख पाते। ये सब अशक्त बनकर संसार के साथ समझौता कर लेते हैं।

सुदर्शन मन ही मन हँसा। इस पुस्तक प्रेमी प्रोफेसर को क्या पता कि यह और अम्बालाल देसाई जैसे भावनाशील युवक अब अपने काम में परिपक्व हो रहे थे। वे अपने प्राण दे देंगे पर भावना नहीं छोड़ेंगे।

प्रोफेसर साहब, आप हमारे साथ में न्याय नहीं कर रहे हैं अब हम ऐसे नहीं रहे।

जितने लड़के मैंने पढ़ाये हैं उतने तो तूने देखे भी नहीं। तू पास हो जा फिर बताऊँगा। पत्नी होगी खाने को माँगेगी माँ होगी तो कमाने के लिए भेजेगी बाप होगा तो मदद चाहेगा और किसी आफिस में ४) मासिक लेकर तेरी भावनाओं को बच देगा।

सुदर्शन को यह मुस्कान चाबुक के सडाके के समान लगी। शान में आडम्बर में वह प्रोफेसर प्रथम से प्रथम निराशावाद का अपनाये हुए था। उसकी बात में केवल तिरस्कार ही नहीं बल्कि देश-द्रोह के बीज भी दिखाई दिये। क्या वह आज भी युवकों को शक्तिमान् बनाने का धंधा लेकर रहा है? अपने आप ही या सरकार की प्रेरणा से सबको निरुत्साही बनाय डाल रहा था?

शक्तिहीन दिखाई देने वाला प्रोफेसर जब भयंकर साँप हो इस प्रकार सुदर्शन उसकी ओर देखता रहा। सुदर्शन को माँ के दर्शन की याद आई। श्मशान पर एकत्रित हुए विप्लववादी याद आये सती की जैसी उत्साही वीरांगनाएँ याद आईं! उसने दाँत पीसकर बोलना शुरू किया प्रोफेसर। आपका ज्ञान निराशा के अन्धकार में है। आपको सही दुनियाँ दिखाई नहीं देती या आपने देखी नहीं। आप जिनको निकम्मा समझते हैं उन कालेजियनों में भावुकता बढ़ रही है। जिन्दगी उनके लिए खेल है। वे सब भारत माता की भक्ति में तल्लीन हो गये हैं। आपका ज्ञान हिसाबी है उसका ज्ञान प्रेरणा का है और स्वतन्त्र तथा स्वाधीन होने के लिये तत्पर हुई परम प्रसन्न माता उनको प्रेरित करती है।

शांति से कपाडिया हँसने लगे, यह तो भक्तिमार्ग हुआ ज्ञानमार्ग नहीं।

प्रोफेसर साहब यही तो कर्मयोग है। कर्मयोग इतिहास में नहीं समा सकता।

'कम्पयूटर' मूँछनी सूँघकर हाथ पोंछते हुए प्रोफेसर बोले कर्मयोग से मुक्ति मिल सकती है विद्रोह करो या न करो यह बात इसमें नहीं आती।

साहब कर्म की सिद्धि के विचार अविचार की स्पष्टता की बात देखा करें तो कर्मयोग कहाँ हो सकता है?

बपाडिया हस, मूर्ख लड़के सुन ! तू इस समय बंगाली विद्रोह के पीछे दीवाना हुआ है। या तो पाँच वर्ष में सब भूल जायेगा नहीं तो फाँसी पर चढ़ेगा पर यहाँ आया है तो एक बात सुनता जा। सिद्धांत समझे—चेतावनी समझ—चाहे जो समझ ? कर्मयोग राष्ट्रवाद या विद्रोह जो भी समझता हो और उसे अमल में लाना हो या उसका प्रचार करना हो तो उसको धार्मिक स्वरूप कभी न बनाना।

सुदर्शन हँसा ये सब धार्मिक ही हैं।

इस देश में इसका परिणाम यह होगा कि तुम जहाँ थे वहीं रहोगे। गीता में से कर्मयोग लोग तो फिर कर्मकाण्डी बन जायेंगे। वेदान्त में से लोग तो सिर्फ यह ब्रह्मास्मि गुनगुनाने में ही विराम पा जायेंगे।

हमारा धर्म राष्ट्रवाद ही है।

लेकिन तुम्हारा धर्म ही राष्ट्रवाद है ऐसा प्राचीन ब्राह्मणों का प्राचीन सिद्धान्त फिर से प्रकाश में नहीं लाओगे। जाओ अब तो तुम्हारा भाग्य तुम्हें जल में ले जाने के लिए बैठा है।

यह सौभाग्य का दिन कब आयेगा ?

माँ बाप से भी पूछा है ?

विप्लववादी के माँ बाप भी होते हैं क्या ? हँसकर सुदर्शन ने कहा।

तू तो नामदार जगमोहनलाल की सुलोचना से विवाह करने वाला है न ?

नहीं उससे विवाह कर मैं क्या करूँगा ?

विवाह नहीं करेगा ? प्रोफेसर ने चकित होकर पूछा। प्रोफेसर की आवाज में आश्चर्य के अतिरिक्त कुछ और भी ध्वनि थी। सुदर्शन उसे जान न सका।

नहीं मालूम नहीं।

मुन्नान न याशा की।

अच्छा भाई प्रोफेसर ने दरवाजा खोलते हुए कहा।

प्रोफेसर ने दरवाजा बन्द कर दिया और आकर सामने दीवार पर लटकते हुए मानदार जगमोहनलाल का सकुटुम्ब चित्र देखने लग। फोटो में आठ-नौ बरस की सुलोचना बाप के पास खड़ी थी। सब कुछ भूलकर वह सुलोचना को देखते रहे। थोड़ी देर बाद वह बड़बड़ाये अच्छा ही है यह पागल उससे विवाह न करे।' फिर जाने कसे-कसे ख्याल आये। आइने में उनने अपना चित्र देखा कुरूप और मद्दे आठ उभरा हुआ माथा और फिर निश्वास आज रात में उनसे पढ़ा नहीं गया।

सुन्धान निकला तो उसकी उलझनें और बढ़ गईं थीं। जिन सिद्धान्तों को वह निर्विवाद मानता था प्रोफेसर ने उनकी उपेक्षा की थी। जो विद्रोहवाद उसे चारों ओर प्रसारित होता हुआ जान पड़ता था कार्पाड़िया को उसकी सम्भावना के विषय में सन्देह था। उसकी भावना उसके सिद्धान्त उसका कमयोग—क्या य सब केवल स्वप्न मात्र थे?

प्रोफेसर के दृष्टिकोण ने उसके हृदय में अश्रद्धा का संचार कर दिया था। इस अश्रद्धा से उसका मन क्षुब्ध हो उठा। क्या वह गलत था? क्या उसका कार्यक्रम निष्फल होगा? क्या माँ के भाग्य में सदा निराशा ही रहेगी? पराधीन भारत स्वाधीन भारत होने के लिए ही नहीं हुआ।

उसे अपने आस-पास बहती मानव-सरिता का क्या भास ही नहीं रहा। दौड़ती हुई ट्रामें और गाड़ियाँ जस थीं ही नहीं। उसे लगा कि वह धारायों के सागर में डूब रहा था। अश्रद्धा ने उसे जकड़ लिया—उसके प्राण लेने के लिए तत्पर हो गई। पृथ्वी भारत वह सारा ब्रह्मांड उसे डगमगाता जान पड़ा।

भावनाहीन को अश्रद्धा के समान सुख नहीं और भावनाशील को अश्रद्धा के समान कोई दुःख नहीं। उसके लिए भावना ही जीवन है—उसमें निहित श्रद्धा ही उसे जीवन के साथ शृंखलाबद्ध करती है। इस श्रद्धा के नष्ट होते ही वह शव बन जाता है। जड़ हो जाता है—फिर उसे मृत्यु के अतिरिक्त दूसरा रास्ता दिखाई नहीं देता। क्राइस्ट क्या मृत्यु से भयभीत नहीं हुआ पर पिता के अविश्वास के ख्याल से वह दुखी रहने लगा। गांधीजी उसके स्पर्श का अनुभव करने से कठिन तपश्चर्या द्वारा प्राण त्यागने के लिए तयार हो जाता है।

अश्रद्धा के प्रहार से घबराये हुए सुदर्शन का मस्तिष्क ठिकाने नहीं रहा। उसका शरीर पसीने-पसीने हो गया। उसकी आँखें देख रही थीं पर उसे कुछ दिखाई न देता था। परिचित रास्ते से उसके पर उसे कादावाड़ी ले गये। वह घर की सीढ़ियों पर चढ़ा। उसके हृदय अन्तर से निराशा की हाय—उसके प्राण साथ लेकर—बाहर निकलने की तयारी करने लगी।

उसके पर रुके धर्मशाला की कोठरी की देहली पर टोबन पर बैठी हुई धनी को उसने सूरत से प्रकाशित होने वाले पत्र 'दाक्षिण' को पढ़ते हुए देखा। उसकी गर्दन एक अद्भुत छटा से झुकी हुई थी उसके मुख पर तेज—जैसे देवी हो ऐसा—दीप्त हो रहा था।

'धनी बहिन! क्या कर रही हो?

दाक्षिण पढ़ रही हूँ।

सुदर्शन थोड़ी देर खड़ा रहा, फिर जैसे उसके हृदय का तार टूट रहा हो इस प्रकार निराशा भरे स्वर में उसने पूछा धनी बहिन! माँ स्वतन्त्र होगी?'

धनी ने ऊपर देखा तो सुदर्शन को घबराहट की दशा में पाया। स्त्री हृदय की स्वाभाविक समझ से उसने सुदर्शन की ओर सहानुभूति से देखा और उठकर पास आई।

'सदुभाई! क्या पूछ रहे हो? क्या होगा? यह 'माँ' को स्वतन्त्र

करेंगे।'

तिलक महाराज प्रकार रूप में केवल एक ही वस्तु में विश्वास रखते थे—और वह थी राजनीति। निरस्त्र भारतवासियों के स्वातन्त्र्य युद्ध में प्रत्येक प्रकार से प्रत्येक रीति से प्रत्येक बात में सरकार को परेशान करने में ही उनकी नीति और राजनीतिज्ञता समाप्त हुयी थी। इनसे पर उनका कोई सिद्धान्त न था।

१९०७ में कांग्रेस नागपुर में होने वाली थी। नागपुर था अर्थात् पूना का मुहल्ला—तभी था और कितने ही अर्थों में आज भी है। खापर्डे अर्थात् तिलक का सेनानी।

बंगाल का राष्ट्रवाद एक मात्र भावनामय था पूना का राष्ट्रवाद संकुचित और व्यवहारशील था। राष्ट्रवाद को बंगीय भावना का स्वरूप नीला लाल पीला और काला एक ही भावना की त्रिमूर्ति हो इस प्रकार उसकी पूजा प्रारम्भ हुई और कांग्रेस को इस त्रिमूर्ति के पूजक बनाये जाने का प्रयत्न शुरू हुआ और पूना की आज्ञा नागपुर ने सिर माथे पर रक्खी।

कलकत्ते में पाल और सुरेन्द्र के बीच भारी विरोध हो गया था। नरम दल को समूल नष्ट करने के लिये पाल और अरविन्द घोष ने निश्चय कर लिया था। विरोध में वैर का जन्म हुआ, द्वेष प्रकट होने लगा और बन्देमातरम् पत्र आठ दिन में दो बार इस क्रोध की जलती हुई आग को देश में फैलाने लगा।

मामन्द्र जगमोहनलाल यह सब चिंताग्रस्त हृदय से देख रहे थे। उन्हें लगता था कि राष्ट्रवाद प्रबल होता जा रहा था। लोग (नेशन) राष्ट्र (निरंकुरी) स्वातन्त्र्य और (इनडिपेन्डेन्स) स्वाधीनता की जगह जगह चर्चा करते रहते थे। अरविंद बाबू की भयानक सशक्त विद्वता राजनीतिज्ञता, अंग्रेजों के साथ सहकार अव्यवस्थित राजकीय प्रगति जड़ प्राचीन आदर्शों पर तलवार चलाती रहती थी और काट छांट खोखलता त्याग और विप्लव की प्रेरणा का प्रसार करती हुई

रखा। नरमन्ली बाप क गरमदली बेटे ने बाप को त्याग दिया। गरम दल और नरम दल के भाई भाई खाना खाते खाते थाली और कटोरी से मारामारी करने लग। चबूतरे पर बैठकर गप्पें मारने वाली सहेलियों ने बोलचाल बन्द कर दी। गरम दलीय माप की बेटी को नरम दली पति ने पीहर जाने से रोक दिया। नगिन मण ने नरम दलियों को आदेश दिया— सुधरो या मरो।

स्वाभाविक रीति से सुदर्शन और उसके मित्रों को फीरोजशाह के प्रति द्वेष बढ गया। राजाबाई टावर के सामने से जाते हुए सुन्दर और अम्बालाल की मुट्ठियाँ काल्पनिक कटार से प्रत्याघी के टुकड़े-टुकड़े कर डालने के लिए अधीर होने लगी। शिवलाल सर्राफ रात-दिन फीरोज शाह के जीवन की छोटी से छोटी बात की हुसी उड़ाने लगा। धनी पड़ोसी क घर में आकर बिना पूछ एक कलडर पर छपी हुई फीरोज शाह की तस्वीर फाड़ लायी। यह बात मालूम होने पर ग्राम के प्रत्येक घर में धनी की वाहवाही हुई और जिसका कलडर फाड़ा गया था उसके यहाँ लाल पाल और बाल की तस्वीरों से सुशोभित दस कलडर भेंट के तौर पर भेज गए। सुदर्शन की छाती बालिश्त भर फूल गई। कसी थी उसकी जान ग्राफ ग्राम !

इस तूफानी वातावरण में सुदर्शन के मण्डल का कोई भी सदस्य योजना नहीं तयार कर सका और सवसम्मति स योजनाए ३१ जनवरी १६०८ के दिन मिलकर तय की जायेंगी यह निश्चय हुआ। समस्त देश सूरत की बाट अधीरता स देख रहा था। वहाँ देश की आन्तरिक व्यवस्था में से जो हुजूरी दूर होने वाली था फिर अग्रजी की जो हुजूरी क विषय में विचार करने की फुरसत किसे हो ?

नानपारा में केरवास्प का एक बड़ा-सा घर था वहीं सब उतरे एसा निमन्त्रण उसने दिया। लाइट ब्रिगड पर आक्रमण करने के लिए तयारी कर रहे हो इस प्रकार सुदर्शन और उसके मित्र सूरत जाने के लिए तयार हुए। सुन्दर को केवल इतना ही दुख था कि धनी साथ नहीं जा सकता थी।

बारह

कांग्रेस अधिवेशन सूरत में

(१)

२० दिसम्बर १९०७ के दिन शाम को सूरत स्टेशन पर सुदर्शन अम्बालाल देसाई तथा मगन पंड्या और शिवलाल धर्राफ उतरे और गाड़ी किराये पर कर नानपारा में गये।

सुदर्शन का हृदय कांग्रेस के लिए उत्साही था किन्तु उसका उत्साह उतना प्रबल न था जितना होना चाहिए। बनी बम्बई में रह गई थी। पाठक ने ठंडे दिल से लिखा था कि वह नौकरी ढूंढने के काम में उलझ गया है अतः सूरत नहीं आ सकता था। अब देश पर संकट के बादल मंडरायें तो उसका प्रिय मित्र नौकरी खोजे!

धोंडू शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी देखने गया था अभी वापस नहीं लौटा था। गिरिजाशंकर शुक्ल को पारेवड़ी संस्थान के ठाकुर ने बुलाया था अतः वह भी नहीं आ सकता था। सत्कुमार जोशी अपने अखाड़े के साथ बड़ौदे से पावागढ़ पहुंच गया था और अभी तक उसका कोई पता न था। इन सबकी गैर हाजिरी से सुदर्शन के हृदय को आघात पहुंचा। कांग्रेस की प्रवृत्ति इसके लिए पानीपत थी अवश्य परन्तु उसका छोटा सा मण्डल उसके लिए प्राणों से बढ़कर था। सबके साथ पत्र-व्यवहार रखकर सब के बीच एकता को चिरंजीवी रखने का जो भगीरथ प्रयत्न किया था वह जितना सफल होना चाहिए, उतना होता दिखाई न देता था। और ऐसे कांग्रेस के अवसर पर भी सब इकट्ठे न हुए यह बात इसके मन में खटकती रही।

फिर उसने अपनी योजना को तयार करने के लिए विस्तृत अध्ययन तथा कठिन परिश्रम भी किया था लेकिन दूसरे इस विषय में क्या करते हैं वह उसकी समझ में कुछ स्पष्ट नहीं आता था । ३१ वीं जनवरी पास आ रही थी और माँ का भाग्य सफल होने की यह घड़ी इससे अधिक पीछे हटा दी जाय इसका विचार मात्र भी उस पसहा था । यह अधीरता भी उसके उत्साह को प्रफुल्ल नहीं होने देती थी ।

इन चारों मित्रों का ऐसा ख्याल था ज्योंही नानपारा आयगा कि शेरशास्त्र का घर—कौन जाने कैसे—तुरंत ही दिखाई देगा और चबूतरे पर खड़े हुए आतुर शेरशास्त्र सब को बुलाकर अपनी बाहों में भर लेगा । रात के आठ बजे अपरिचित अंधेरी गलियों में अब जब नानपारे में शेरशास्त्र का घर खोजते हुए इन देशभक्तों की देश भक्ति और विजयोत्साह ठंडा होने लगा । वे थके हुए भूखे अपरिचित गाँव में थे । उन्हें मालूम हुआ कि इस नानपारा में एक हजार पारसियों के घर और सबह के लगभग कुछ करशास्त्र और सोलह शेरशास्त्री फिरोजशाह थे । नौ बजे रात को ही आधी रात समझने वाले कृपण पारसी कब के अपनी खिड़की-दरवाजे बन्द कर बिस्तरों पर पड़ रहे थे । किराये की गाड़ीवाला गली-गली भटकने से थककर इन सबको सुनाते हुए सूरती शब्दों से भरपूर स्वागत कर रहा था ।

रात के पौने दस बजे के लगभग देश भक्त सुलभ तपस्या करते हुए इन मित्रों को अपनी भग्न आशा को फिर से सजीव करने का कारण मिला । मुहल्ले के किनारे वाला एक बड़ा मकान शेरशास्त्र का का है यह खबर मिली और पारसी के घर के चबूतरे पर हुक्का पीते गाड़ीवालों को देखकर यहीं राष्ट्र-भक्तों के ठहरने की जगह होगी ऐसी कुछ-कुछ आशा हुई । मगन पड्या ने सभ्यता को ताक पर रख कर किराये की गाड़ी की खिड़की में से बुलंद आवाज से पुकारा शेरशास्त्र फिरोजशाह !

कौन है ?' चबूतरे पर बैठे हुए एक जवान बावा भाषड़ा ने

मुँह से हुक्के की नली निकालते हुए कहा।

केरशास्पजी सेठ हैं?

'बम्बई गये हैं।

शिवलाल सर्राफ की सौतेली माँ को गोपीपुरा में मकान की किसी को हिम्मत न होती थी इसलिए केरशास्प का घर न मिले तो अपरिचित सूरत में रात कहाँ बितायी जाय इसका निर्णय पहले से ये न कर सके थे। इसलिए चारों ने न डालते हुए निर्णय किया और गाड़ी से उतरे।

मगन पंड्या हिम्मत से चबूतरे पर चढ़ा। केरशास्प सेठ कब आयेंगे!

कौन जाने? दरवाजे के पास एक छोटी-सी खाट पर सोये हुए मजदूर ने कहा। नारायणभाई! कहकर उसने आवाज दी। गाड़ीवाले ने ऐसे मनमानी गालियाँ खाकर गाड़ी का किराया वसूल किया और इन लोगों ने अपने हाथ से दो ट्रंक उठाकर चबूतरे पर रख दिये और घबराते हुए अन्दर घुसे यह केरशास्प का घर—कौन है केरशास्प का—इसमें जगह है या नहीं—ये सब प्रश्न उनके हृदय में कूद रहे थे।

मगन पंड्या शुद्ध देहाती था। उसे प्रत्येक कमरे में बैठे हुए, पड़े हुए, सोये हुए लोगों की बातों में बीड़ी के धुएँ में और हुक्के की गड़गड़ाहट में अपने अफीमी के गाँव के प्रोत्साहक वातावरण की प्रेरणा हुई। प्रत्येक को क्यों भाई साहब कैसे हो? कब आये? कहकर वह प्रत्येक कमरे के सामने हाथ में ट्रंक और बगल में बिस्तरा लिए फिरने लगा और दूसरे तीन मित्र जैसे कोई महाप्रतापी वीर नायक के पीछे मरणोन्मुख चार सैनिक चलें इस प्रकार हाथ में पेटी और बगल में बिछौना लेकर चलने लगे।

प्रत्येक कमरे में प्रत्येक आसन पर से दमण नवसारी से साबरमती तक के भिन्न भिन्न गाँव की बोली बोलने—अच्छी लगे या न लगे—वाले फक्कड़ कांग्रेस की गप्पें मारते थे और कौन से हक से कौन यहाँ

था इसकी पूरी जानकारी किसी को न हो ऐसा न लगता था। बीच के चौक में भोजन हो रहा था और तीन रसोइये पत्तलों पर पतलें रखकर कांग्रेस वालों को दाल और भात परोस रहे थे। यह घर इनके केर दास्य का ही हो ऐसा लगा। सुदर्शन और उसके मित्र दूसरी मंजिल पर गये वहाँ छज्जे वाली एक कोठरी में तीनों जने बैठे थ और सामान आठ आदमियों का पड़ा था। सामान अभी खुला नहीं था। क्योंकि उसके मालिक आखिरी गाड़ी से आये थे और मौन रखे गये हों ऐसा लगता था।

उद्धतपन से मगन पड़्या ने पैर स एक आदमी का सामान खिसका कर पेटी और बिस्तरा रख और संकोची सदुभाई से अवसर न चूकना चाहिये इस विचार से दूसरे का सामान खिसकाकर कहा सदुभाई! सुदर्शन ने वसा ही किया और अंबालाल देसाई तथा शिवलाल भी बिना पूछे जगह पर बिस्तरे बिछाकर कपड़े निकालने बैठ गये।

खिसकाये गये सामान क मालिक धोती स मुह पोंछते हुए आने लगे और इन चारों को मालिकी हक से कब्जा किये हुए देखकर, अपना सामान लेकर केरदास्य के विशाल घर का कोई खाली कोना खोजने के लिए बाहर चल दिये।

अम्बालाल! मगन पड़्या ने कहा भोजन भी एसे ही करना पड़ेगा।

अरे चलो भी! कहकर चारों कोठरी से बाहर निकल। पड़्या न अपनी पेटी का ताला निकाल कर कोठरी में लगाया और नीच उतरा।

नीच उतर कर भोजन किया और प्रत्येक कमरा में अपने परि चितों को खोजने निकले। दूसरी मंजिल क एक कमरे में स आवाज आई अरे पड़्या कारा! सदुभाई!

कौन नारायण पटेल? पंड्या न आवाज दी कहाँ छिपे हो भाई!

कमरे में खिडकी के भाग खाट पर पडा-पडा नारायण पटेल हुक्का पी रहा था और एक आदमी उसके पर दबा रहा था।

इधर आओ इधर ! कहकर दबाये जाते हुए पर की धोती घटना स नीचे उतारकर नारायण पटेल ने भान क लिए कहा और मुह से धुए का गुब्बार निकाला अरे कहाँ से अब तक ?

यहाँ तो घर खोजते-खोजते प्राण निकल गए, और केरशास्प ने यह कर क्या रखा है ? शिवलाल सराफ ने कहा एसा मालूम होता तो मैं अपनी माँ क यहाँ ही उतरता।

खबरदार ! नारायण पटेल ने कहा फ्रेंच विप्लव के समय एसी बात कही तो बिजली के खंभे पर लटका दिए जाओगे। मिस्टर मरिस्पियेक्र—यही प्रजा—जिसके लिए हम युद्ध कर रहे हैं वह नेपो लियन जिसकी तलवार था वह !

"लेकिन केरशास्प का क्या हो गया ? सुदर्शन ने पूछा।

पाँच दिन पहले मुझे एक तार मिला था। नारायण पटेल ने पास वाले को हुक्का देते हुए कहा 'आओ दोस्त आओ सब मित्रों के साथ आओ नानपारा क घर।

इसलिए य सब तुम्हारे दोस्त हैं। केरशास्प उसको पहचानता तक नहीं।

नहीं ! गव स नारायण पटेल ने कहा 'मने अपने जितने मित्र थे उन सबको यात के लिए लिख दिया। व अपने मित्र ले आये। सारा घर भर गया। प्रमुख भाई बरार के लिए होता है। मदुभाई य सीक्रेट सोसीयेटर—गुप्त मंडल—एस ही शुरू होते हैं।

सुदर्शन क्रोध स देखता रहा य सब क्या तुम्हारे गुप्त मंडल क सदस्य हैं ?

हुक्का पानी बद करो नहीं तो सब में दुर्गन्ध आने लगगा। कड़वाहट स अम्बालाल देसाई ने कहा।

बिना हुक्के क कोई रह सकता है ? नारायण भाई ने जवाब

दिया।

सुदर्शन के अन्तर में अँधेरा छा गया था। कितने ही धाव न थे केरशास्त्र—प्रमुख—का पता न था और यह हुक्का बजाने वाला नारायण भाई गुप्त मंडल चलायगा उसने तो कठोर गम्भीर एक निष्ठ संस्था का संघ स्थापित करने की आशा रखी थी। यहाँ यह हाल। उसे अपने प्रति तिरस्कार हुआ।

क्या इन लोगों का अपराध था? नहीं यह अपराध मेरा ही था। मुझमें इतना आध्यात्मिक बल नहीं था कि इन सबको एक नवीन चेतना से प्रेरित कर देता। बुद्ध ने कैसे किया? शिवाजी ने कैसे किया?

क्या उसमें वैसा बल नहीं था? ऐसे ही विचारों में डूब रह कर उसने किसी तरह रात बिता दी।

(२)

केरशास्त्र सुबह आया। नारायण भाई की यजमान वृत्ति से अपना घर भरा हुआ देखकर उनके गुस्से का अन्त नहीं रहा। पर उसका स्वभाव नम्र था। उसकी यजमानवृत्ति की भावना विचित्र थी इसलिए उसने सबके सम्मान की व्यवस्था करना प्रारम्भ किया।

जिस कोठरी में मंगल पड़ा था न ठहराया। उसके अतिरिक्त बाकी सारा घर मेहमानों को दे दिया। इसी प्रकार उसने अपने मित्र के लिए सब प्रकार की सुविधा कर दी और एक खास आदमी उनको दे दिया।

अपने दोस्तों के लिए उसने भोजन का प्रबन्ध भी अलग किया। किन्तु निराशा में डूबे हुए सुदर्शन को कुछ अच्छा नहीं लगा।

चारों ओर आदमियों से भरे हुए घर में क्या काम हो बातें क्या क्या हों और क्या योजनायें गढ़ी जायें? कांग्रेस की चहल-पहल में मंडल की बातें सब भूल गये से लगते थे।

सबेरे सब सूरत शहर की शोभा का निरीक्षण करने निकले। चींटियों की चाल से चलते हुए—लेकिन चींटियों की-सी व्यवस्थित

रीति के बिना ही—परदेसियों से रास्ता पूछते जाते थे। किसी किसी स्थान पर 'वन्देमातरम्', 'तिलक महाराज की जय', 'लाल-बाल-पाल की जय' के घोष हो रहे थे।

शिवलाल सराफ सूरत के कितने ही नेताओं को पहचानता था। डाक्टर मोहनलाल दाजी के साथ भी उसने कुछ जान पहचान निकाला था इसलिए वह स्वयंसेवक हो गया।

वह मात्र रात को सोने के लिए लालपारा में आता था और नरम दल का बहुत-सा गप्प ले आता। लाइन्स के बंगलों में उतरे हुए नरम दल के महारथी सवेरे दोपहर और संध्या को मशविरा करते और हरिपुरा के गरम दल नेताओं के साथ बहसें चला करतीं। नरम दली नेताओं की घबराहट का पार न था, यह बात उड़ रही थी। जगमोहन दास रात दिन काम कर रहे थे यह भी खबर मिला था।

बैरिस्टर के घर प्रत्येक कमरे में सभा होती और उनमें हर बात की चर्चा होती। गरमदली हजारों का दल के रूप में साथ थे उनमें से कितने ही अपना धंधा छोड़कर सूरत से पैसा कमा कर ले जाने की हिम्मत रखते थे और उनमें से एक ने अपने उस्तरे से एक नरमदली बैरिस्टर का गला यहीं से अलग करने की धमकी दी थी। इस बात ने तो एक दिन बैरिस्टर के सारे घर को हंसी से भर दिया था। गरमदली प्रतिनिधि कारीगर के हाथ से नरमदल वालों का गला उड़े उससे अधिक गौरवशाली बलिदान का नमूना क्या हो सकता था?

बैरिस्टर के घर में थोड़े से नरमदली थे वे अपने पक्ष की बातें चलाते और उनके साथ वाद विवाद रात दिन चर्चा ही करते।

सारा घर एक समरांगण हो गया।

२४ तारीख को नरमदल और 'गरमदल' के बीच चली हुई बात चीत का समाचार पाया। फीरोजशाह ने कलकत्ता कांग्रेस के चारों प्रस्ताव गोखले के पास से वापस ले लिये।

स्वराज्य स्वदेशी बायकाट और राष्ट्रीय शिक्षा इन चारों बातों में फीरोजशाह कांग्रेस को सुधारने बैठे। फीरोजशाह कौन होता है? सुमन की आंखों में मून उतर आया। किसीने फिरोजशाही सूत्र का उच्चारण किया कि राष्ट्रीय शिक्षा क्या? यह उनकी समझ में नहीं आया।

अम्बालाल देसाई ने इसके विरुद्ध प्रश्न पूछा बेगारिया बादशाह शिक्षा क्या है यह कभी समझ सकता है? किसी ने बात चलायी कि फीरोजशाह बायकाट के विरुद्ध है। हाँ भाई! निवसाल ने कहा उस मखमल का कालर फिर कहाँ स मिलेगा?

पटेल नारायण भाई अम्बालाल पंड्या मगन और सुमन चौबीस को शाम को हरीपुरा गये। मोहन पारेख वहीं ठहरा था क्योंकि वह अरविन्द घोष का अंगरक्षक था और हर समय इसी काम में फंसा रहता था।

नारायण भाई पटेल १९०७ मे डा परांजपे के पास एम ए० की गणित की परीक्षा क लिए पूना में रहा था और वहाँ रहकर हिसाब से अधिक राजनतिक आन्दोलन में ध्यान देना सीख रहा था। परांजपे तिलक के भक्त थे और केसरी के दरबार में सब दरबारियों के साथ उन्होने दोस्ती गाँठ ली थी।

दाखिला होने ही हो हा कसा हाय ना? की हुँकारो से बधाई देते हुए और लेते हुए, मित्रों के साथ रहकर वह भाग बढ़े।

सभा मे अरविन्द घोष सबसे बड़े थे। बड़ौदा छोड़ने के बाद सुमन ने उन्हे फिर नही देखा था। इस समय छोटी सी धोती और शाल में खुले सिर बैठे प्रमुख को अपने पुराने विलायती पोशाक में सजे हुए प्रोफेसर को पहचानने में देरा देर नहीं लगी।

तिलक का कथन था चार प्रस्तावों पर कलकत्ते के प्रस्ताव कैसे बदले जायें? और बदलने वाला हो कौन? यदि नरम दल न माने तो रास बिहारी घोष को प्रमुख ही नहीं चुनने दिया जाय।

नहीं नहीं कभी नहीं। क्या लाला लाजपतराय का त्याग कम

था ? वह क्यों नहीं ? महाराज तिलक की जय नारायण भाई ने जोर से जयकारा लगा दिया। सारी सभा गूँज उठी। सभा ने प्रतिगान किया तिलक महाराज की जय।

फिर अरविन्द बाबू आये। उनकी आँखों में चमक थी। उनके शब्दों में रुद्र के शासन के समान निश्चलता थी। हमने अपना जीवन सर्वस्व दे दिया है दिसम्बर की छुट्टियों में मौज उड़ाने के लिए आये हुए भी क्या हिम्मत थी कि हमारा कार्यक्रम रोके ?

सुदर्शन ने देव-सदृश प्रोफेसर को सुना और सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा उसके हृदय में हुई।

वहाँ से रात को सब लाग वाला जा के टीले पर गये। अरविन्द की आवाज में आँसू आ गये थे। उनके शब्दों में चाख की प्रतिध्वनि थी। सुदर्शन की आँख भर आई। जब उनके प्रोफेसर ने दयायाचना की हमारे देश में हमें—बंगालियों को—परदेशी मत बनाओ—वह सन्न रह गया।

देश प्रेम की आग में झुलसते हुए वे आधी रात को शहर में—नानपारा में आये। मोहन पारेख हमेशा हरीपुरा में अरविन्द बाबू के पास रहता इस समय यहाँ खाने के लिए आया था। उसने खबर दी कहा ढाका के कलक्टर एलन को बंगालियों ने पिस्तौल से मार दिया।

जैसे बम फटा हो पहले तो सब चौंके फिर कितने हो नाचने लगे और कितने ही क्या परिणाम होगा इसकी चिन्ता करने लगे।

सदुभाई ! अम्बालाल ने दुखी होकर कहा, ये बंगाली हमसे आगे हो रहेंगे ! सुदर्शन थोड़ी देर विचार करते हुए चुप रहा और फिर बोला उतावला सो बावला धीरा सो गम्भीरा।

आधी रात के बाद दो बजे जब ये सब सो गये तब मोहन पारेख ने सुदर्शन से धीमे से कहा कल सवेरे मुझे लाला लाजपतराय के साथ स्टेशन पर जाना है। तुम्हें चलना है ?

जरूर मुझे भी जगा लेना। कहकर सुदर्शन ने करवट बदली।

गौरीशा वकील के बगल में सर फीरोजशाह मेहता ठहरे हुए थे। नामदार जगमोहन लाल जी पास वाले बगले में ही उतरे थे और सारा समय फीरोजशाह के साथ ही बिताते थे।

स्वदेशिपन ग्रान्दोलन के सब नारों के गर्व में फीरोजशाह को गरम दल की सूचनायें हास्यास्पद लगीं।

जब वह पार्लियामेन्ट के एक सम्य हो इस प्रकार सम्पूर्ण आन्दोलन का मूल्यांकन वह विलायत की पार्लियामेन्ट के दृष्टिकोण की कसौटी पर चढ़ाकर देखते थे। कनाडा या आस्ट्रेलिया जैसा स्वराज्य मिला कहीं यहाँ सम्भव है? कोई दे सकता है?

स्वदेशी से कुछ हो सकता है? सब पहिन सकें इतना कपड़ा कौन बनायेगा? और सस्ता विदेशी कपड़ा छोड़कर भला कोई स्वदेशी महँगा कपड़ा क्या पहन सकेगा? और बायकाट कैसी मूर्खता! उन्होंने भाय रिन आन्दोलन देखा था पावेल से सामना हुआ था। उसकी प्रशंसा भी की थी पर बायकाट अर्थात् विरोध—विरोध यानी अराजकता—अराजकता यानी विनाश। जो प्रवृत्ति आयरलैंड में न जीत सकी वह अशक्त नि शस्त्र हिन्द में न होगी? और राष्ट्रीय शिक्षा—इसका क्या अर्थ है? इसका तरीका क्या है? इसकी व्याख्या क्या है? इतने साल की मेहनत से बम्बई यूनिवर्सिटी ने जिस शिक्षा की नींव डाली वह गलत और राजकीय आन्दोलन के घेरे में स्थापित किये गये राष्ट्रीय कालेज है? पच्चीस दिसम्बर को सवेरे फीरोजशाह मूँछ पर भार घोरे ताव देते हुए बड़बड़ाये।

इतने में उनका लहरेव आया, गोखले साहब और नामदार जग मोहनलाल आये हैं।

बुलाओ। फीरोज न माना जी।

गोपालकृष्ण गोखले का मुख चिन्तातुर दिखाई दे रहा था। नाम दार जगमोहनलाल तो हमेशा चिन्ताग्रस्त रहते थे।

फिर चिन्ता की बात क्या थी ?

क्या उनका विचार गलत था ? अंग्रेजी राज्य जैसा सबल सत्ता को डराने से कुछ हो जाय ऐसी आशा न थी। साम्राज्य का सूत्र एक ही था—स्वातंत्र्य प्रेम, व्यवस्थित आन्दोलन से उस प्रेम को प्रभावित करने का कांग्रेस एक बड़ा कार्य कर रही थी। इस बात को ये छोटी अक्ल के गरमदल वाले रोकने के लिए तैयार हुए थे और उनको सीधा करने के लिए व्यवस्थात्मक नियम ही एक रास्ता था।

उन्होंने कपड़े पहनना शुरू किया।

आठ बजे कांग्रेस स्पेशल में कलकत्ते से डा॰ रासबिहारी घोष आने वाले थ। स्टेशन पर भीड़ का छोर न था। परेशान नेता क्या हो रहा है यह जानने के लिए ढेलीगेट उत्साही वालंटियर और चमकते दुपट्टे तथा भड़कदार अंगरखों म सुशोभित सूरत के नागरिक वहाँ इकट्ठे थे।

गोखले और जगमोहनलाल क पीछ उनकी छाया के समान शिवलाल सराफ सबसे आगे आया। प्लेटफार्म पर बीच में स्वयंसेवक द्वारा रखी हुई खली जगह में नेता लोग खड़े थे।

शिवलाल ने चारों ओर नजर दौड़ाई। माननीय चिमनलाल और पारेख एक तरफ थे। थोड़ी दूर पर लाजपतराय सादगी और सरलता के अवतार जैस खड़े थे। उनके पीछे थोड़े से कागज हाथ म लेकर खड़े हुए मोहन पारेख और सुदर्शन को उसने देखा। सपेरे की तरह भीड़ में सरकता हुआ शिवलाल वहाँ गया और मित्रों के कान में कहा 'कुछ नहीं हो सकता बादशाह की आज्ञा हो गयी है।

मोहन पारेख कृतनिश्चय विद्रोही की शांति से हँसा।

इतने में लाजपतराय सुदर्शन की ओर मुड़े जरा मि॰ गोखले से कहना कि मुझसे मिल जायें। सुदर्शन दौड़कर गोखले को बुला लाया। गोखले धीरे धीरे मुस्कराते हुए आये।

गुड मॉर्निंग मि॰ लाजपतराय ! बताइये क्या है ?

'कल रात मैं तिलक इत्यादि से भी मिला था। अत्यंत गंभीरता से लाजपतराय ने कहा पाँच ये लोग और पाँच हम मिलकर प्रस्तावों का निर्णय कर दें तो फिर इन लोगों को कोई आपत्ति नहीं होगी।

यह कैसे हो सकता है? गोखले ने दयनीय चेहरे से पूछा प्रस्तावों का फैसला तो विषय-समिति करेगी न?

हम लोग यकीन करने के लिए तैयार होंगे तो विषय-समिति मना थोड़े ही कर देगी!

यह कैसे कहा जा सकता है! सोचूंगा। अच्छा मैं फीरोजशाह से पूछ लूंगा।

लाजपतराय ने कंधे उचकाये और कांग्रेस स्पेशल का संकेत हो गया।

अच्छा हुआ इसे फटकार दिया। मोहन पारेख ने सुदर्शन के कान में कहा यह बहुत दिनों से अपनी योजनाओं पर ठंडा पानी उड़ेला करता था।

स्टेशन पर इकट्ठे हुए शिक्षितों ने वन्दे मातरम का जयघोष किया और काय से स्पेशल स्टेशन पर आई। सब दौड़े।

लोगों के धक्कम्-धक्के से ट्रेन के नीचे [illegible] की आहुति हो जाती लेकिन स्वयं सेवकों ने जैसे-तैसे उन्हें रोका। चारों ओर उत्साह फैल रहा था। किसी ने रूमाल तो किसी ने दुपट्टे फहराये किसी ने 'रासबिहारी की जय' बोली तो कुछ लोगों ने थू-थू की आवाज लगाई और ट्रेन में से रासबिहारी घोष बाहर आये।

उनके साथ सुरेन्द्रनाथ डा० रुथरफोर्ड नेविन्सन मोतीलाल घोष और अपूर्व यूरोपीय ठाठ में पंडित मोतीलाल नेहरू थे टिकट के दरवाजे की तरफ से आवाजें सुनाई दी। वंदे मातरम् कांग्रेस की पो पोम 'फीरोजशाह की जय' के मिश्रित उच्चारणों से स्वागत कराते हुए हँसते हुए चमकते हुए फीरोजशाह स्टेशन पर आए। वालंटियरों ने रास्ता

कौन कहता है ? नारायण भाई ने जोर से पूछा ।

कौन क्या कहता ? मोहन पारेख बोला खापरडे भो केलकर ने बार बार हिसाब लगाया । अब तो इन लोगों को किसी भी तरह आबरू रह जाय ऐसे साधन की जरूरत है । इनमें तो सब बिल्कुल निराश हो बठे हैं ।

तो अब ? केरशास्प ने पूछा ।

अब क्या ? कोई समाधान का मार्ग खोज रहे हैं । सुदर्शन ने कहा ।

तो जाकर फीरोजशाह से मिला जाय । केरशास्प ने कहा ।

यह उसीकी तो उस्तादी है यह तिलक से मिलता नहीं । दूसरे को माथे पर हाथ रखने नहीं देता । राहना थमने वाला बादशाह के दरवाजे पर आसन जमा दे ऐसी दशा तिलक और खापरडे की की गई ।

ओ तेरी की ! मगन पडया ने कहा ।

अरविंद बाबू क्या कर रहे हैं ! केरशास्प ने पूछा ।

क्या करें ? मोहन पारेख ने कहा । वह एकमात्र इतना ही कहते हैं कि कोई नहीं होगा तो मैं अकेला खड़ा होकर विरोध करूंगा । उससे कुछ हो सकता है !

तब एक दूसरा रास्ता है । केरशास्प ने कहा ।

'क्या ! सब बोल उठे ।

किसी दूसरे को बोलने ही न दिया जाय । कहकर केरशास्प ने जांघ पर हाथ मारा नारायणभाई यह काम तुम्हारा । तुम अपने सवा सौ भाई बन्धुओं को सारे मंडप में बांट दो और नागपुर तथा महाराष्ट्र कम्प में सन्देश पहुँचा दो कि अपने पक्ष के सिवा किसी दूसरे को बोलने ही न दिया जाय ।

शाबाश—शाबाश ! कहकर नारायणभाई कूदा यह तो एक [illegible] का काम है बेकार मक्ख मारते हैं ये लोग । शिवाजी महाराज

की जय !'

'अरे भाई ! केरशास्प ने हँसकर कहा 'कांग्रेस तो कल मिलेगी।

'लेकिन मुझे तो डर लगता है कि कहीं तिलक और खापरडे इतने में हो मान न जायें।

'अरविंद बाबू किसी तरह नहीं मान सकते।' मोहन पारेख ने जवाब दिया 'पर करशास्प की बात सच्ची है।

'आ सकता हूँ क्या ? शिवलाल सराफ का हँसता हुआ चेहरा जीने पर दिखाई दिया।

'आओ आओ तुम्हारी क्या खबर है ?

'ठहरो कहता हूँ। कहकर शिवलाल ने थोड़े से मुमुरे फाँके।

सब चुपचाप देखते रहे। 'ये सब तो काफी हैं भाई।

'क्यों ? करशास्प ने पूछा।

'इस समय भस्कली के बंगले पर सब इकट्ठे हुए थे।

'कौन कौन ?' अम्बालाल जो अब तक चुपचाप सुन रहा था बोला।

'सुरेन्द्रनाथ रासबिहारी घोष फीरोजशाह वाछा गोखले गोकल काका चिमनलाल मालवीय मोतीलाल नेहरू अंबालाल, साकरलाल और हमारी सुलोचना के बाप !' वह हँसा।

'फिर क्या हुआ ? करशास्प ने पूछा।

'और ये दो अंग्रेज—ह्यूम फोर्ड और वैडिंग्सन।'

'बिना अंग्रेजों के भला कहीं इन लोगों से विचार हो सकता है ? तिरस्कार से अम्बालाल ने कहा।

'फिर ? मोहन पारेख ने पूछा।

'आज इन लोगों को विश्वास हो गया कि तुम्हारे गरमदली कुछ नहीं कर सकते। फीरोजशाह ने साफ कह दिया कि हमें किसी तरह का समाधान नहीं करना। क्या हुआ और होने वाला था ? छटुभाई,

तुम्हारे गुह देव बीत श्वसुर साहब ने सरल भाषण दिया। फिर कुछ भी कमजोरी बताई नहीं। उन्होंने कहा कि गरमदल का मुह साम्राज्य के बाहर स्वाधीनता प्राप्त करने का है।

छी छी नारायणभाई ने कहा।

सुनो तो सही' केरशास्प ने कहा।

यही कि इन लोगों को जबरदस्ती कांग्रेस से बाहर निकाला जाय।

निकालो तो सही बेटा! नारायण ने धमकी दी।

ऐसा किये बिना ये लोग ठिकाने नहीं आ सकते।

देखूंगा देखूंगा। नारायणभाई ने गुस्से में कहा।

अब यह अपना बल हांकना बन्द करो न। मगन पंड्या ने नारायण की पीठ पर हाथ मारकर चुप रहने को कहा।

एकमात्र लालाजी के लिए यह समाधानवृत्ति बतानी पड़ती है।

यह है पंजाबी गुरु★। मोहन पारेख ने कहा।

मुझे लगता है कि कल सारा गरमदल मर जायगा। तिलक और खापरडे थक से रहे हैं।

एक ही राह मुझे दिखाई पड़ती है। सुदर्शन जो अब तक चुप था माथे का पसीना पोछता हुआ बोला।

क्या ?' पारेख ने प्रश्न किया।

समाधान होने ही न दिया जाय तो। सुदर्शन ने अपने ओठ कठोरता से बंद करते हुए कहा।

सदु! यह कहना सच है तुम लालाजी को जानते ही हो नहीं। केरशास्प ने कहा।

और तिलक खापरडे! —मोहन पारेख ने कहा।

'देखो सुदर्शन ने आगे आकर कहा शिवलाल दाराक गोखले की सुरक्षा में है। शिवलाल चाहे जैसे भी हो तू अम्बालाल को फीरोज-

★रासबिहारी घोष का द्वेष से दिया हुआ नाम।

चाह की तनात में स्वयंसेवक की जगह करा दे।

कैसे ?

वहाँ वह तेरा दोस्त नगीनम है न उसकी जगह।'

फिर ?

लाजपतराय के पास मोहन पारेख तो है ही और पारेख मुझे तथा पड़या काका को तिलक-खापरडे में तनात में करा देगा।

होगा क्या ? मोहन पारेख ने आतुरता से पूछा।

संदेशा कौन लाये और ले जायगा हम ही न ! फिर भारत माता का भविष्य—

'पुनजार। कहकर करगास्य ने ताली पीटी शाबाश दोस्त इस तरह से हम लोग काम करगे तो किसी दिन भी यह निकलने वाली नहीं। या तो कम्प में चलें। सारी रात है। देखें कौन-सा नरम दल वाला बोलता है। एक पल भर के लिए सब एक-दूसरे की ओर देखते रहे।

मैंने कहा नहीं था कि हमारा मडल क्या नहीं कर सकता ? नारायणभाई ने कहा निवाजा महाराज की जय !

छदुभाई। मोहन पारेख ने कन्धे पर हाथ रखकर कहा तुम्हारी योजना मेरी समझ में आ गई। अब देखना !

(४)

सूरत शहर में चिंता का वातावरण छाया हुआ था। क्या होगा इस ख्याल से बड़े बड़े बहादुर भी काँपने लगे। रात भर सलाह मशविरे चले प्रथक कम्प में वाग्युद्ध हुए।

लाला लाजपतराय अल्मी स आठ बज उठ और दो बज तक तिलक और अरविंद बा॰ से सलाह की। वह स्वयं नरमन्स के थे फिर भी नरमन्ल के भाग्यों को समझ सकते थे।

उनकी राय थी कि दोनों दल काँग्रेस में रहें।

इसी मद्दे को लेकर ये सब परिश्रम कर रहे थे। आखिर उन्होंने तिलक खापरडे और अरविंद बाबू से इतना स्वीकार करा लिया कि यदि कलकत्ता कांग्रेस के चारों प्रस्ताव ज्यों के त्यों कायम रहें तो प्रमुख के चुनाव में गरमदल को भी सम्मिलित होना चाहिए। अब केवल रह गया एक सवाल—चारों प्रस्तावों के स्वरूप का।

जैसे ही लालाजी उठे वैसे ही उनकी नजर मोहन पारेख पर पड़ी। दातुन पानी लेकर वह हाजिर था। लालाजी हँसकर बोले थैंक यू यह आदमी कितना काम कर रहा था? रात को उनके सो जाने पर वह सोया और उनके उठने से पहले वह हाजिर था।

चाय अगर हो तो।

हाजिर है। कहकर मोहन पारेख प्रसन्न मन हँसता दौड़ता हुआ चाय ले आया। लालाजी ने चाय पीकर कपड़े पहने।

गाड़ी मँगाओ।

जी अभी मंगाता हूँ। थोड़ी देर में मोहन वापस आया। बोला 'गाड़ी लाने के लिए कह दिया है।

पाँच—दस—पंद्रह मिनट बीत गये। आठ बज गये। लालाजी घबरा उठे। मोहन ने भी पाँच-सात बार दौड़ा दौड़ी की पर गाड़ी का कहीं पता ही न लगा।

किसको भेजा है?

एक स्वयंसेवक को। जरा ठहरिये साहब? मैं लिये आता हूँ। कहकर मोहन पारेख वहाँ से निकला। उसके मुख पर मुस्कराहट थी। नौ बजने से पहले के गोखले के पास से प्रस्तावों को ले आने का लालाजी ने तिलक को वचन दिया था और इस समय लगभग सवा आठ हो गये थे। मोहन पारेख रास्ते में गाड़ी खोजने के बजाय प[illegible] से एक पेड़ के नीचे जा बैठा।

लालजी बेचन हुए। मिनट पर मिनट बीत रहे थे और [illegible]

गाड़ी लाता न था। क्या हुआ ? वह अपने एक पंजाबी मित्र के साथ बाहर निकले। साढ़े आठ हो गये थे।

पारेख ने लालजी को निकलते देखा और वहाँ से दौड़ा। थोड़ी ही दूर पर एक गाड़ी हाथ लगी। उसपर चढ़कर वह सामने आया।

गाड़ी मिलने में बड़ी देर हो गई। वह बड़बड़ाया।

फिकर नहीं। गि० गोखले के यहाँ चलो। कहकर लालाजी गाड़ी में बैठे।

सूरती घोड़े को समझाते समझाते लोथा हुई, पर नौ बजने में दस मिनट पर वह लालजी को गोखले के यहाँ ले आया। शिवलाल सर्राफ द्वार पर स्वयंसेवक की पोशाक में हाजिर था। लालजी आगे और मोहन पारेख पीछे—दोनों दो-दो सीढ़ियाँ पार करते हुए ऊपर चढ़े। लालाजी अन्दर गये और मोहन दरवाजे पर शिवलाल के साथ खड़ा रह गया।

क्यों क्या हो रहा है ? शिवलाल ने हँसने हँसते पूछा।

'लालाजी तिलक से नौ बजे तक समाधान का सन्देशा लेकर मिलने वाले हैं।

पर नौ तो बज गये।

क्या करें ? इस सूरत शहर में गाड़ी ही नहीं मिलती। कहकर मोहन हँसा।

घड़ी में नौ के घन्टे बजे।

पहला दाँव तो सफल हुआ। उसने धीमे से सर्राफ के कान में कहा। इतने में एक स्वयंसेवक दौड़ता हुआ ऊपर आया।

'क्या है ?'

सिंधो कप में एक डेलिगेट मरने वाला है थोड़ी ही घड़ी का मेहमान है। कम्प में सबने कहलाया है कि काँग्रेस देर में आरम्भ होगी।

ठीक मैं गोखले से कह दूगा। पर यह काम तो त्रिभुवनदास मालवीय का है। उनसे कहने जाना न। यहाँ क्यों आये ?

यहाँ आना पड़ेगा। उस स्वयंसेवक ने पूछा।

पारेख तुझे शान्ति हुई।

क्यों ?

वह मरने वाला है इसलिए ?

सर्राफ अपने मित्र की मूर्खता पर हंसा पारेख! तुझे हो क्या गया है ? मिस्र अर्थात् पंजाब कम्प में कोई मरने वाला हो तो लालाजी के जाये बिना काम चल सकता है ?

शिवलाल! अन्दर से नामदार जगमोहन की आवाज आई।

जी! कहकर शिवलाल अन्दर गया। गोखले लालाजी और मोहनलाल बात कर रहे थे। गोखले ने शिवलाल से कहा कल रात के प्रस्तावों की कापी तुमने प्रेस में दे दी है न ?

जी हाँ।

अभी फौरन जाकर उनकी नकल मि० तिलक के पास पहुंचाओ।

और जल्दी! जगमोहन ने कहा।

'अभी साहब!

तुरन्त! लालाजी ने कहा मैं अभी तिलक के पास जाता हूँ।

लालजी उठे।

घड़ी में नौ बजकर दस मिनट हो गये थे।

लालाजी आये और पारेख के साथ सीढ़ियों से उतरे।

लालाजी! पंजाब कम्प में से आप को कोई बुलाने आया था।

मुझे! क्यों ?

'जी हाँ कोई पंजाबी डलीगेट मरने वाला है और आपको सब बुला रहे हैं। सब नेता वहीं हैं।

कौन होगा ? लालाजी ने बैठे हुए पंजाबी से पूछा।

कौन जाने। उसने कहा।

लालाजी गाड़ी में बैठे।

'साहब गाड़ी कहाँ ले चलूं ? पारेख ने हांकने वाले के पास बैठ

कर पूछा।

पजाब कम्प। लालजी ने कहा।

मोहन ने गाडी निकाली। सवा नौ हो गये थ। उसके मुख पर एक रहस्यमय हसी थी।

शिवनाथ सराफ प्रम क लिए रवाना हुआ। कांग्रेस की बहुत सी गाडियाँ थीं पर फिर भी धीरे धीरे अजब तरीके स चलकर वह नाना पारा में वेरगारप के घर आया। धीरे धीरे नहाया। भोजन किया और कपडे पहने। ग्यारह क घन्टे बजे। धीरे धीरे कदम रखता हुआ वह प्रम की ओर चल दिया।

तिलक महाराज और खापरडे हरिपुरा में बठ-बठ चिंता कर रहे थे।

फीरोजशाह और गोखल बम्बई और पूना के—अर्थात् भारत क—प्रतिष्ठित नेताओं के सर्वाधिकारी फीरोजशाह अर्थात् कांग्रेस क और प्रजाजीवन के सुधारक गोखले अर्थात् सुरेन्द्रनाथ और नाजन्न क विश्वस्त मित्र—सत्यता और सौजन्य की मूर्ति। सूरत अर्थात् फीरो शाह का घर और सारे हिन्दुस्तान में सभय वह खापरडे और अर्त्रि बीन शर्मा कारी ढोंग हांकने वाल कांग्रेस क विध्वंसक विचारों परम्परा स तिलक घबरा उठ।

(६)

तिलक महाराज के राजकीय जीवन में जो उद्देश्य—अटल मध्य सरकार का विरोध और सुख का त्याग। काय करते समय इन दो लक्ष्यों पर दृष्टि रखते हुए भी उनका मन डगमगाता। ऐसी डगमगाहट उन्हें दो-तीन दिन स परेशान कर रही थी सौ पूना क सौ नागपुर क और पचास बगाल के और अधिक से अधिक हुए तो सौ बम्बई और गुजरात क प्रतिनिधियों पर उनका आधार था। विरोधी पक्ष क पन्द्रह प्रतिनिधि चुने हुए मायर पार्लियामेंट के अग्रजो पत्र र जीवन क प्रतिनिधि फीरोजशाह की राजनीतिमत्ता गोखले की न्यायवृत्ति सुरेन्द्र

नाथ की वाकपटुता।

एकदम गरम मन का सम्मान रखने के लिए कलकत्ते के चारो प्रस्ताव रह आये तो कम था पर वे रहें तो कैसे ?

जिन सुरेन्द्रनाथ ने इन प्रस्तावों को रखा था वह इस समय प्रति पक्षी हो बैठ थे।

क्या किया जाय ?

उनकी बाइं आँख पल-पल में फड़क रही थी। उनका मुह व्याकुलता से पाल पड़ा रहा था। साढे आठ बज गय थे।

मोतीलाल घोष—कलकत्ते क प्रमुख गरमदली और अरविंद बाबू आ पहुँच। बहुत देर तक सब चिंतित रहे। दस बजे कांग्रेस मिलने वाली थी और घड़ी की सुई जल्दी जल्दी बढ़ी जा रही थी।

अरविंद बाबू के मुख पर निराशामय शान्ति थी। लालाजी की जय' की उनको परवाह न थी। हार ही जायेंगे न ? इस शांति स से तिलक महाराज को गुस्सा आता था। जय की आकांक्षा से रहित उत्साह उनकी समझ में नहीं आता था।

पौने नौ बज गये। सब ने घड़ी की ओर देखा। लालाजी अभी आये नहीं थे। या तो उन्होंने सलाह-मशवरे का काम छोड़ दिया। मिनट की सुई बहुत ही धीरे धीरे आग बढ़ रही थी। नौ बजने में दस मिनट कम—आठ कम—पाँच कम हुए। इतने में गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनाई दी सब बात करते चुप हो गये।

देखो तो कौन है ? खापरडे ने सुदर्शन से कहा। सुदर्शन बाहर देखकर लौट आया, कोई नहीं ये तो स्वयंसेवक आये हैं।

लाजपतराय को क्या हो गया ? मोतीलाल घोष ने कहा। घड़ी ने नौ के घंटे बजाये।

लाजपतराय हैज फेल्ड अरविंद बाबू ने कहा।

क्या करें अब ? तिलक ने पूछा।

मुदस्व निगत ।' जरा हंसकर अरविंद बाबू ने कहा ।

सुदर्शन और मगनलाल पड्या ने संताप का मुस्कराहट से एक दूसरे की ओर देखा ।

एक काम करें अन्तिम उपाय है । मोतीलाल घोष न कहा ।

क्या ?

'सुरेंद्र बाबू स मिला जाय । उन्हें हाथ में लेना चाहिये ।

'वह नहीं मानेंगे । तिलक ने कहा ।

वह तो अब पुलिस सुपरिन्टेंट क मित्र हैं । अरविन्द बाबू न ठडे दिल से कहा ।

'फिर भी हम और तुम दोनों चलकर यदि उनसे कह तो सुरेंद्र बाबू इकार नहीं कर सकते । उत्साहवश मोतीलाल ने सुरेन्द्रबाबू का तीस वष का अनुभव बताया ।

सो तब खापरड ने कहा और सब उठ । मगन पड्या और सुदशन गाड़ी ल आये और चारों व्यक्ति उसमें बठ । हांकने वाले के साथ पंड्या और सुदशन दोनो बठ ।

जब वे सुरेन्द्रनाथ की जगह पर पहुँचे तो पौने दस बज गये थे । चारों गरमदली नेता भीतर आये । मगन पड्या और सुदशन बाहर खड़े रहे ।

पड्या काका ! साढ़े दस तो हो गए । सारा काम इस समय तक तो ठीक ही चल रहा है ।

मुझे तो ऐसा लगता है कि मोहनभाई ने कोई उस्तादी अवश्य की है ।

देखते हैं । सुदशन ने कहा ।

दस बजकर चालीस मिनट पर चारों गरमदली' नेता बाहर निकले । सुरेन्द्रबाबू उनको विदा करने आये । वह बठे गले से बोल रहे थे ।

'रासबोस के पास जाओ वे सभापति हैं । कोई रास्ता ढूढ़ ही

ग्यारह

नई रोशनी पुराना चिराग

(१)

बम्बई में २२ दिसम्बर की शाम को केकी हक्ष चौपाटी पर घूम रहा था।

उसकी थी फलालैन की पतलून सफेद बूट बढ़िया कमीज और रकेट के साथ पूरी तरह से सुसज्जित। शायद ही कभी वह इस शोभा से रहित रहता हो। ऐसी कल्पना करना भी अशक्त ही था इस समय भी वह उसी ठाठ में था। सिर खुला हुआ था व भूरी जुल्फें उसके सिर पर चिपकी हुई थीं। उसकी ऐसी धारणा थी कि यदि इन जुल्फों से लोग मोहित न हों तो उनका [illegible] रुक जाय। वह साधारणतया टोपी पहनता ही न था। थोड़ी थोड़ी देर में वह रकेट को पर पर ठोकता रहता।

केकी धनी था, होशियार था सुन्दर था बूढ़ी माँ के हाथों पला होने के सबब से स्वच्छन्द स्वभाव का भी था, बाप के अभाव के कारण किसी की परवाह भी न थी। और बंबई की तफरीहों में उसे रस आता था। उसे यह मज़ा पहले पहल हुआ था इसलिए वह चिन्तित हो अपने सोचे के मुताबिक पर हाल में तो वह फल ही हुआ। इसकी भी उसे कोई चिन्ता न थी। पर कालेज बंद होते ही इस रोग के शुरू होने का उसे एक ही कारण लगा। पहले वह दिन के चार पाँच घंटे नामदार सुलोचना की साथ में बिताता था। कालेज बंद होने के बाद उसकी संगति विहीन हो गई। और शरीर में इस रोग के कीटाणुओं ने घर कर लिया था।

कि ी के साथ घूमने जाने की ता जगमोहनलाल ने सुलोचना पर पाबन्दी ही लगा दी परन्तु टेनिस खेलने के लिए व हमेशा इकट्ठे रहते थे। पर इतने से उसे संताप न होता था। मगन दलाल ने भी टेनिस का अभ्यास करना शुरू कर दिया था और खेलने के समय वह अक्सर साथ ही रहता था।

बाजार बनियाँ' बैठी बड़बड़ाता।

कभ। के दिल में एक बात खटकी। वह नामदार को खुश करने के लिए इतना प्रयत्न करता पर उसके साथ इसकी गाड़ी नहीं हो पाती थी। सुलोचना हंसती बोलती मुस्कराया करती पर फिर भी दूर की दूर— मगन के साथ उसी तरह—रहती। नामदार केवल उसका ही मित्र कसे हो इस प्रश्न पर वह विचार करता। एकदम उसने सुना कि मगन दलाल सूरत कांग्रेस में गया है। जीवन भर में जो अवसर न मिलता एसा अवसर आज हाथ आया खूब उसने पैर पर रकट पछाड़ते हुए कहा सबअसर उसने इस अवसर का लाभ उठाने का निश्चय किया और एक खास संदेशा भेजकर नामदार को चौपाटी पर बुलाया था।

बहुत देर से वह आने वाली गाड़ियों की ओर देख रहा था। अभी तक सुलोचना क्यों नहीं आई ?

इतने में उसकी गाड़ी दिखाई दी और बिजली की तरह चपल सुलोचना गाड़ी से उतरकर उसकी ओर दौड़ी। ऊंची छरहरे बदनवाली सुलोचना दि न ब दिन आकर्षक होती जा रही थी। उसके मुख पर चढ़ती जवानी की लाली चमक रही थी। उसके अंग अंग की मानिमा निखर आई थी। उसमें न तो एक हिन्दू लड़की जैसा घबराहट थी और न पारसी लड़की जैसी प्रगतिशीलता। कालेज के लड़कों के साथ हंसते बोलते और मिलते हुए उसका धर्मोपापन अनवता था पर बंगाली स्वभाव के योग्य गौरवशील महत्तर उसने अपना लिया था। तुनक मिजाजी तो वह थी ही और अपने स्वभाव का दिखाव का

यह प्रयास करती हो यह दिखाई न देता था।

उसे यह आवारा पारसी भाया और उसके भेजे हुए खास संदेश से वह भाई अगर उत्साह में आघात। केकी का अर्थ था मनोविनोद। इसकी बातें उसे अच्छी लगती थीं। उसका व्यवहार अच्छा लगता था। इसकी संगति रसपूर्ण थी। आनन्द के प्रसंग शुरू करने में यह एक था। उसकी संगति में एक मस्ती का अनुभव रहता था। कितनी ही बार, उसने यह अनुभव किया था।

वह फिर आई।

केकी!

हलो नामदार! छाती पर हाथ रखकर कृत्रिम नम्रता से हँसते मुख में अभिवादन करते हुए केकी ने कहा गुलाम हाजिर है।

क्या बात है? मुझे जाने की जल्दी है।

यह बात? केकी ने साथ-साथ चलते हुए पूछा मुझे तो ऐसा लग रहा था कि हमें शांति से घंटा भर तो मिलेगा ही। ठाक मैं तुमसे एक बात चाहता हूँ।

क्या?

मुझे तुमको एक पार्टी देनी है।

पार्टी! सहप सुलोचना ने कहा क्यों भला?

बहुत दिन हो गये हमने कोई बकवास नहीं की। बकवास—पाँच या पंद्रह मिनट की नहीं पूरे पाँच या पन्द्रह घंटे की बकवास।

कब?'

'अभी।

एकदम असंभव।

'तो क्यों?

मैं पापा और मम्मी के साथ सूरत जा रही हूँ।'

'सूरत जाये जहन्नुम में। केकी ने नाराजगी से रकेट पर पर पटकते हुए कहा।

वह क्यों जाय ? फिर काँग्रेस का क्या होगा ? ज़रा मजाक में सुलोचना ने कहा।

'वह भी जाय नरक में। तुम नहीं जाओगे किसी भी तरफ़ एक जाओ।

पर बात क्या है ?

बेबी-क्लब दावत दे रहा है।

बेबी क्लब क्या बला न ? हँसकर सुलोचना ने पूछा।

'घर में बेबी और क्लब। हँसकर बेबी ने कहा बनाकर एक क्लब। उसका सभापति मैं और सेक्रेटरी मैं।

और सदस्य।

वह भी मैं। और जब आवश्यकता पड़े तो आनरेरी मेम्बर बढ़े। घटें।

सुलोचना हँसी उसका क्या है ?

उसकी वर्षगाँठ है। बेबी ने हँसकर कहा सुलोचना भी खूब हँसी पापा से कह देना कि मेरे दोस्त के यहाँ पार्टी है।

ऐसे कहीं मान सकते हैं ? एक बात हो तो काम चल सकता है। किसी लड़की को बुला रहे हो ?

हाँ। बबी ने क्षण भर विचार कर कहा क्लार्क रईस मेरी सगी बहन जो इंटर में है। तुम नहीं जानतीं ? उस और उसके फ़ैड रुस्तम पहलवान दोनों को बुलाऊँगा।

पापा एक भी नहीं मान सकते।

क्या करूँ मेरे पापा नहीं नहीं तो सब का मनाना मिला देता नामुराद कुछ रास्ता निकालो प्लीज़। बेबी ने निराशा से विनती की।

एक काम करो तो पापा मान जायगे।

क्या ?

'क्या प्रोफ़ेसर कापड़िया का जानते हो न ?

हाँ उस बड़े गधे को कौन नहीं जानता।

तुम्हें मालूम है यह बूढ़ा गधा भी मुझसे इश्क करता है ? हँस कर सुलोचना ने कहा।

सच ! क्या कह रही हो ?'

'यही कि मेरी चौकसी के लिए,वह हमारे घर रहेगा। केकी,बोली, और वह होगा तो पापा मुझे यहाँ अकेला रहने देंगे पर पार्टी में आने की तो मुश्किल ही रहेगी।

तो यह किस काम का ? थोड़ी देर निराशा के आवेश में अप बालों में अंगुलियाँ डाल उन्हें सहलाता रहा। थोड़ी देर दोनों चुप रहे फिर एकाएक विचार आने पर केकी ने हथ से पर पटककर कहा, उस गधे मार्तंडकर को बुलाऊँ ? वह कई बार चुपचाप मेरे क्लब में हो गया है। कापड़िया के कालेज में संस्कृत का लेक्चरार है।

गुड। सुलोचना की आँखें चमक उठी। आदमी तो भद्र' है न ?

अरे हाँ पिछले महीने मुझसे दो सौ रुपये उधार ले गया है।

तो ठीक ! तो हम परसों पार्टी नहीं रख सकते ?

'परसों ! इससे क्या होगा ?

'चौबीस तारीख हो जाय तो पापा से कह सकती हूँ कि कांग्रेस से पहले सूरत आ पहुँचूँगी।

'हाँ यह भी सही है।

मगर है क्या ? जरा अजीब ढंग से सुलोचना ने पूछा।

'यह तो जा मरा कल सूरत। केकी ने तिरस्कार से कहा।

सुलोचना पल भर इस आडम्बरपूर्ण युवक की ओर देखती रही। उसे इसके साथ कैसा आनन्द आता है ?

ठीक तब मैं कापड़िया के यहाँ जाऊँ पर तब मार्तंडकर को कल सवेरे से पहले निमन्त्रण मिल जाना चाहिये।

जरूर, ! कर महूत !' कहकर दत्त ने सुलोचना के साथ ठीक हैं।

किया अलग से नहीं बल्कि थोड़ा गहरा थोड़ा भावयुक्त हन्द मिलाप हुआ।

(२)

सुलोचना की बात सच निकली। नामदार जगमोहन कांग्रेस की झंझट में इतने उलझ गये थे कि उन्हें लड़की पर दबाव डालने का मन तक न हुआ। २१ तारीख की रात का ग्रांटरोड पर नामदार तथा गौरी बहिन को सुलोचना और कापड़िया सूरत को विदा कर आये। जब तक नामदार वापस आये तब तक कापड़िया ने सुलोचना के साथ वाल्केश्वर में रहना मंजूर कर लिया।

विदेश से स्वामी के वापस लौटने पर जैसे हृद से रोमांच हो जाए ऐसे उत्साह से प्रोफेसर कापड़िया ने सुलोचना के साथ रहना स्वीकार कर लिया था।

पूछ फटकारने के बदले वह दिन भर हाथ मलते रहते। जीभ से चाटने के बाद अपने होठ फड़फड़ाते रहते। सूंघने के बदले वह हमेशा सूंघनी चढ़ाते। ऐसी चंचलता जब वह कोई सरस चीज पढ़ते—कोई नवीन दृष्टिकोण पाते नवीन सिद्धान्त पर विचार करते—तब उनके मुख पर हमेशा दिखाई देती थी इसलिए वह किसी के लिए असाधारण बात नहीं थी।

इस चंचलता ने कपाड़िया की बोलने की शक्ति हर ली थी। जैसे ठंड से ठिठुरता हुआ आदमी आग के सामने चुपचाप तापता हो वह भी बिना कुछ बोले चाले इस नई आई गर्मी का आनन्द लेते रहते। गर्मी से उन्हें संतोष ही था।

जब प्रोफेसर घर गये तो दीवान खाने में बैठी सुलोचना के साथ कुछ बात चीत करने का विचार था, पर सुलोचना को आने वाली कल के सपने देखने की जल्दी थी इसलिए शीघ्र ही वह सोने चली गई।

कपाड़िया हमेशा की तरह एक पुस्तक लेकर पढ़ने बैठे। अपने

साने के कमरे में जाकर उन्होंने कागज पेंसिल लेकर स ाप म ना मणन शुरू किय।

प्राणियों का माकषण

'पशु शास्त्र का नियम।

उसका मनुष्यों में परिवतन।

वद्ध मौर कुरूप का यौवन मौर सुन्दरता के प्रति खिंचाव।

प्रेम मौर माकषण में फक।

इस प्रकार विषयों के नोट्स लिखते हुए माधी रात बीती। सबे' चाय पीते समय सुलोचना ने कहा 'काका! सारे िन क्या करोगे? मैं तो एकदम सन्ध्या पड़े माऊँगी।

कपाडिया ने तस्तरी में से ऊपर देखा। 'क्या करूंगा? बठा-बैठा लिखता रहूँगा। मैं भी छोटा होता तो चलता। साथ में गनपत को लिये जा रही हो न!'

क्या जरूरत है? हम कोई मुसलमानी युग में थोड़े रह रहे हैं? मुझे कोई खा थोड़े ही जायगा?

कुछ काम ही पड गया।

'नहीं ये मेरे दोस्त मा गये।

इतने में एक गाड़ी में महेरा बसाक, रुस्तम पहलवान गनपतरा मार्तण्डकर मौर एक दूसरे दक्षिणी माये।

मोह! प्रोफेसर साहब कैसे हो? कहकर मातण्डकर ने प्रोफसर से हाथ मिलाया मिस सुलोचना तुम कैसी हो?

अरे महेरा! सुलोचना ने कहा 'क्यों रुस्तमजी चाय ना पियोगे हीं?

जरूर लूगी! महेरा ने घुमती हुई मावाज में जवाब दिया।

हाँ बहुत खुशी स।

यह मेरे दोस्त हैं।—मातण्डकर ने कहा मेहमान हैं पूना माये हैं— मि० मभयशंकर।

धन्यवाद धन्यवाद करते हुए मि० धमधमकर ने कर मर्दन किया और सब बैठे।

महेरा बलार मोटी और सीधी सादी दिखाई देती थी। उसके बाल जैसे चिड़ियों के घोसले के लिये खास और पर तयार किये गये हों ऐसे मोटे पाले-पोले फले हुए थे। वह चलती तो हिचकोले खाती हुई और हँसती तो तीखी आवाज गूंजती। चाहे जिसके साथ और चाहे जहाँ चाहे जसी हँसी मजाक करने में वह पूरी थी।

रुस्तम पहलवान के तो नाम से ही परिचय हो जाता है। ऊँचा और मोटा-ताजा था। फूले हुए उसके गाल, उसकी छोटी-सी नाक। महेरा जैसे तीक्ष्ण आवाज में हसती थी वसे ही रुस्तम कुरकुरी आवाज में हसता और दोनों साथ साथ हँसते तो जैसे कोई हार्मोनियम के परदे और टीप की चाबी पर चाहे जसे उल्टे-सीधे हाथ मारता हो ऐसा लगता था।

मि० गणपतराव मातण्डकर—उर्फ अन्ना साहब—पैंतीस वर्ष का गोल-मटोल काया अत्यंत गंभीर और अतिशय विद्वान् लगने वाला संस्कृत का अभ्यासी था। वह जन्म से गुजराती पर नाम से महाराष्ट्रीय था और पूना में रहने से संस्कृत भाषा के साथ समुद्र तर गया था। और 'मार्कंड' गोरवणील उपनाम न लगने से उसे मातण्डकर का रूप दे दिया था। उसके मुखपर आजन्म उपदेश का तेज सदा ही दिखाई देता था।

उसकी आँखों में शिक्षक की कठोरता भाग्य से ही अदृष्ट होती थी। उसके बोलने का ढंग ऐसा था कि जसे जीभ पर काँटा रखकर उससे तोल-जोखकर घी बेचता हो। वह हँसता तो जसे कोई महादरिद्री दयार्द्रता की धुन में दान के लिय एक पाई मुंह बनाकर अनिच्छापूवक अपनी गाँठ से खोलकर देता हो ऐसा लगता था।

शेकहैंड करता तो हाथ बहुत ऊँचा-नीचा हो जाने से कहीं शेषनाग पर भार अधिक न हो जाय इसलिये बहुधा धीमे से ही करता।

मन्ना साहब के शब्द सुनकर उसमें सम्मति देने के अतिरिक्त उसके पैदा होने या जीवित रहने का कोई उद्देश्य ही न हो ऐसा दिखाई देता था।

कपाडिया साहब आज हम सब वरसोवा जाने वाले हैं। सृष्टि सौन्दर्य से मन का फलाव होता है। इस छोटे से दिमाग पर खूबसूरती और आजादी की बार-बार छाप पड़े यह बहुत ही उत्तम होता है।

कपाडिया ने आँखें टिमटिमा कर सू धनी का सड़ाका लिया, 'इन सबको अच्छी तरह रखना। समझे? वह पुन हँसा।

मैंने नोटिस दे दिया है—प्रोफेसर कपाडिया!—कि हम उपदेश सुनने के लिये बिलकुल तैयार नहीं हैं।'

शिक्षा और उपदेश सुनने के लिए तैयार न रहना तो अधोगति का चिन्ह है। दिमाग हमेशा खुला रहना चाहिए' मन्ना साहब ने कहा।

हूँ।

मि० मातण्डकर! चाय ठंडी हो रही है। सुलोचना ने याद दिलाई।

मन्ना साहब कहने से बोलने में आसानी और प्यार में अधिकता की दो बातें हो जायगी। जरा गम्भीर मुद्रा में मन्नासाहब ने कहा।

ठीक। हँसकर सुलोचना ने कहा।

मूख मत बनो मन्ना साहब प्रोफेसर ने कहा उपदेश देने वाले के सिवा किसी दूसरे को सतोष नहीं देता उपदेश लेने वाला यदि उसके अनुसार चले तो स्वाभिमान भंग हो जाय, नहीं चले तो स्वग मुक्त हो जाय ऐसा असतोष उसे अभिभूत कर लेता है।

परन्तु आप तो रोज उपदेश देते हैं।

हाँ इसी से तो मेरी पाचन क्रिया चलती है। समझे। कपाडिया ने हँसकर कहा 'पर मैं शिक्षा ऐसे रूप में देता हूँ कि किसी की समझ में नहीं आती, इसलिए किसी को असुविधा भी नहीं होती समझे?

अच्छा तो मैं कपड़े पहन आऊं। कहकर सुलोचना चली गई और उसके पीछे महेरा दौड़ती हुई चली।

थोड़ी देर में जब सुलोचना दोस्तों के साथ चली गयी तो प्रोफेसर उसे बहुत देर तक देखते रहे। फिर वह निबन्ध लिखने बठे।

पूरा बनद बरसोवा गया। गाड़ी में महेरा सीटी बजाती और रुस्तम मुह से भकभक करता हुआ सबले बजाता। मातण्डकर सब की भलाई के लिए उपदेश देता और अभयाकर सब की बातें सुनता रहा। बेकी हँसता-हंसता बाल सवारता रहा। सुलोचना इस तफरीह का आनन्द का अनुभव करती रही। उसे आजादी का चस्का लगा।

बरसोवा।

प्रभात की समुद्र की लहरों का नाच करता हुआ यौवन सजातीय मित्र, फिर क्या चाहिए? महेरा और सुलोचना पुलकती फिरी। सब दौड़े, कूदे और लेटे।

और अन्त में पुरुषवर्ग समुद्र में घुसा। पहले स्त्रियां शरमाती और हिचकती हुई खड़ी रहीं फिर हँसकर नीचे देखा फिर महेरा ने स्नान की वेशभूषा पहनी आँखें मींचकर कूद पड़ी, सुलोचना नहाऊं या न नहाऊँ इस विचार में पड़ी रही—और लाज उसपर छा गयी।

दोपहर हुई और सब लोग किसी के खाली बगले में गये और माली को एक रुपया देकर दरवाजे खुलवाये। वहाँ जाकर सबने नाश्ता किया, खा-पीकर सबने थोड़ी देर आराम किया। शाम के पाँच बजते-बजते चाय बनाकर पी और फिर वहाँ से चलने की तयारी की।

रात होते-होते यह टोली फिर चौट रोड पर आया।

सुलोचना ने घर चलने को कहा पर सब ने उसे हँसकर टाल दिया। वास्तविक दावत तो अब शुरू होने वाली थी।

सब बेकी के घर आये। शौकीन बेकी का फ्लेट सुघड़ और सुशो भित था और वहाँ दावत की तयारियां हो रही थीं।

हर एक सदस्य हँसता तफरीह से उछलता हुआ आया और फूला

से सजी हुई टेबल देख तालो बजाकर हर्ष प्रकट किया । केवल अन्ना साहब न्याय के सिद्धांतों का स्पष्टीकरण करते रहे व० कहते रहे और एकमात्र अभयंकर हाँ हाँ करता हुआ अपने ध्यान से सुनने का प्रमाण देता रहा ।

सुन्दर छोटे से कमरे में सुलोचना और मेहरा कपड़े ठीक करने गई । सुलोचना का मुँह लाल-सा हो गया था—धूप मस्ती हास्य औ सफ़रीह से उसका खून उछालें मार रहा था । चोटी सजाते वक्त वह पड़ी हुई केकी के चित्र पर एकटक देखती रही । कितना रसमय यह जीवन है ! इस नायक का जीवन कितना सुन्दर होगा ?

मेहरा सीटी में ला कसीस बजाती आई और रुस्तम तालबद्ध हाथ पर ऊँचे-नीचे करता हुआ उसके पीछे-पीछे आया । कभी थिरकती हुई आँखों और बालों में नये कपड़े पहन कर सबका स्वागत करने के लिए तैयार था तीन-नौकर—आयं सफेद थीं नी पुतलों की तरह कुर्सियों के पीछे खड़े थे । अन्ना साहब और अभयंकर आये ।

अभयंकर ! इतना याद रखना कि हमारी आर्य संस्कृति का आधार हमारा चरित्र है और हमारे चरित्र का आधार संयम पर है और संयम का आधार—

'कुर्सी अन्ना साहब ! यह कुर्सी आपकी है' केकी ने कहा, और अभयंकर ! तुम यहाँ आओ ।

जरा शरमाती सी सुलोचना आई और केकी के पास बैठ गई मेहरा ने सीगों की ट्यून बजनी । रुस्तम ने टेबल पर तबला बजान शुरू किया । केकी ने बॉय को इशारा किया और उसने गाना प्रार किया ।

केकी ! अन्ना साहब ने कहा, पैर लटकाकर बैठना यह श विरुद्ध है । उसने जूते निकालकर धीरे से कुर्सी पर पलथी मा अभयंकर !

रुस्तम ! क्या लोग ? चाकलेट ? मेहरा तू ? केकी ने पू

इतना मान रखना कि भोजन के वक्त समय लिप्सा नहीं रखनी चाहिए इससे शरीर का सन्तुलन बिगड़ जाता है।

—मो मम्मा महेरा ने उत्तर दिया।

खाते समय उच्चस्तर की भावगोष्ठी से ही शरीर और आत्मा की शांति स्थिर रहती है। मन्ना साहब ने कहा केकी जी ! स्वास्थ्य ही महाशांति का मूल है—विशेषकर खाते समय। मुझे ठीक शामिल रहती प्रभयकर ! तू जरा चख तो !

और तुम नामवर।

ना।

यह कैसे हो सकता है ? फिर मेरी दावत ही क्या रहेगा ?

सुलोचना ने नीचा मुंह कर ना ना कहना प्रारम्भ किया।

यह नहीं हो सकता है मेरी कसम तुम्हें ! केकी ने कहा।

सुलोचना ने नीचे सिर झुकाकर आँखें ऊँची की। उसमें झलक रहा था।

तुम्हारी इच्छा—'

मिस सुलोचना मन्ना साहब बीच में ही कूद पड़े यद्यपि शुद्ध विरुद्ध ना करणीयम्' यह सिद्धांत हमेशा लागू नहीं होता। आजकल प्रवीन लोक विरुद्ध नहीं और मौन मगर आसव है अत शुद्ध होता है। कोई भी वस्तु वासना तृप्ति के लिये ली जाए तो वह अशुद्ध हो जाती है।

अच्छा ! मगर जरा सी— सुलोचना ने कहा।

उडेल' केकी ने कहा।

नहीं—नहीं इतनी ज्यादा नहीं।

तू उडेलना भी नहीं जानता है ? रुस्तम ने कहा।

किसी को कुछ आता ही नहीं। कहकर महेरा ने बॉय के हाथ से बोतल लेकर सुलोचना के गिलास में उंडेल उडेली।

अ र र र ! एक बड़ी मक्खी रकाबी में पड़ी हुई देखकर

न उठी।

यू इडियट!' कहकर केकी ने पाँग को धक्का दिया, यह मीट

ीस नहीं खाती समझा।

बाँय ने काँपते हुए हाथ से रकाबी उठा ली।

हिन्दू-शास्त्र में मांसाहार निषिद्ध है ऐसी कइयों की धारणा है

अन्ना साहब ने बोलना प्रारंभ किया।

जरा अण्डे तो ले आ! मेहेरा ने कहा और टेबिल के नीचे

से सुलोचना का पर दाबने की इच्छा से भूल में उसने केकी का पर

दबा दिया।

मेहेरा माय अपना पैर दबाये जाने से केकी ने हँसकर कहा

मेरा पर नहीं दुखता पहलवान के पर पर ही मारती रहो ना।

ओह अब पड़ी पड़ी रोती' मेहेरा चिल्लाई।

हाँ दगा का नाम ले रुस्तम ने मेहेरा की कमर पर हाथ रख

गुदगुदाया।

स्त्री अस्थिर नहीं स्थिर है! अन्ना साहब ने कहा 'शास्त्रों के

अनुसार नारी प्रत्यक्ष राक्षसी है इसका यह स्वभाव बदलता नहीं।

भयंकर! जबसे विश्वामित्र ने मेनका को।

शेम! शेम! मेहेरा ने कहा।

आर्डर! टेबल पर छड़ी पीटकर सुलोचना ने कहा।

नामदार! नामदार! सुनो!'

—मेनका को त्याग उस प्रसंग के कारण से स्त्री का एक है

प्रकार का स्वभाव है।

'अन्ना साहब! स्त्री से प्रसन्न न करियेगा नहीं तो मैं क्या

मेहेरा।

यह क्या गाली दे रहा है। मेहेरा ने आँखें निकालकर कहा।

मैं! मुंह का कौर जैसे-तैसे ठिकाने रखकर अन्ना साहब

बोले 'स्त्रियों को मैं तो महान् आदर के साथ देख रहा हूँ। मनु

महाराज का वचन है—कह उसने शैंपेन के गिलास की मन्द से कौर गले में उतारा यत्र नायस्तु—मालूम है न !

नामदार तुम्हारा मुंह लाल हो गया है। देखो इस गिलास में न्हिलाई देता है। कितना प्यारा है ! बेकी ने सुलोचना से कहा।

बेशरम मत बनो ? सुलोचना ने शरमाकर कहा।

बनो तो नहीं पर यह तो ! शैंपेन

जरा-सी ही तो ले रही हूँ

'यह नहीं हो सकता है

शैंपेन-शैंपेन ! नामदार उठाओ। मट्टेरा चिल्लाई।

नहीं धन्यवाद

जरा-सी तो ले। मन्ना साहब ने कहा थोड़ी सी ली तो क्या और अधिक ली तो क्या ? एक बार मुसलमान का पानी पिया या अनेक बार।

(४)

घण्टे भर में ही एक नवीन सृष्टि पैदा हो गई। मन्ना बेकी और पहलवान ने सिगार पीना प्रारम्भ कर दिया। कमरे में चारों ओर धुआँ ही धुआँ फैल रहा था। पेट भरते ही इन दोनों ने और मट्टेरा ने शैंपेन के दौर चालू रखे।

बेकी ! अस्थिर आँख और खोखले गले से मन्ना साहब बोल रहा था याद रखना कि चरित्र रहित मनुष्य जानवर है। यह ऋषि का वचन कभी भूलना नहीं।—उसे हिचकी आई, इसलिए उसको शान्त करने के लिए उसने गिलास उठाया वचन शास्त्र का मनु— ऐ बेकी !

मट्टेरा यह तेरे बाप और दादा, सबका टैस्ट ले रहा हूँ देखती ' पहलवान कह रहा था। उसने एक हाथ मट्टेरा की कमर पर रखा।

'चीम ! हाँ म अपने बाप दादा का टोस्ट ! मट्टेरा ने जवाब दिया।

नामदार ! धीरे से यालते बोलते केकी के मुह से जोर से निकला तुम कितनी सुन्दर हो

म—मनु महाराज ने कहा है केकी कि दृष्टि पूत दत्प म मल पूत आमचरेत । मय मुझे स्वच्छन्दता म विश्वास नही । मे सयम त तप और वराग्य म म मह मह—मेह—

'यह मनु कौन मरा है !— महेरा ने एक पैर मेज के नीचे फलाकर एक लात केकी को मारी ।

अच्छा केकी ! मेरे घर जाने का समय हो गया। चमकती आँखों से सुलोचना ने कहा ।

'नामदार ! इस समय क्या जल्दी है ? तुम चली जाओगी तो केकी ने टेबल के नीचे से हाथ फलाकर सुलोचना के पैर पर रक्खा ।

वाय ! जरा-सी डाल लो । सुलोचना अपने हाथ से उसका हाथ खिसकाने लगी लेकिन हाथ वहीं का वहीं रहा ।

मन्ना साहब ! ऐसा नान्सेन्स क्या बोलते हो ? तुम्हारे शास्तर और पत्तास्तर स तो बाज आये । मन्ना साहब ! खूब पियो । और— और—महेरा मरी रुस्तम ने काँपते हाथ से गिलास लिया ।

'नामदार ! तुम मेरो जिगर हो । केकी ने काँपती हुई आवाज से सुलोचना के कान में कहा ।

सुलोचना इसका जवाब देने वाली थी पर जोश सूझ जाने के कारण उसने एक स्नेह भरी दृष्टि फेंककर ही संतोष मान लिया ।

रुस्तम ! शास्त्र की म— प—मह—मह—तु प्रनाय पया समझे ? हम तपस्वी

'नामदार ! यह क्या बक रहा है ? महेरा ने पूछा, अरे रे गर रे तू ! कुर्सी खिसकाकर वह जोर से चीखी । रुस्तम ने गिलास भूल से उसके मुह पर उँडल दिया था ।

'तपस्वी अर्थात् जोगी—' सुलोचना ने कहा ।

जोगी—मैं—जो—गी अन्ना साहब ने कहा ।

जोगी— रुस्तम ने कहा और गाना आरम्भ किया

जिस कारण जोगी बना ओ मस की पकड़ी दुम।

महेरी खातिर जोगी बना था अन्ना साहब की पकड़ी दुम ॥

'मिस सुलोचना ! तप और याग में व—बहुत महू—महू तप में रस और रस सब का—तपस्वीम्याधिका योगी । अन्ना साहब का सिर कन्धे पर लटक गया।

रुस्तम ने गाना चालू ही रखा।

'गाड़ी धीरे हाँक रे मेहरबान गाड़ी वाले !

नामदार ! मैं तुम्हें चाहता हूँ। सुलोचना जैसे बहरी हो सब सुन सके इस प्रकार उसके कान के पास मुंह लाकर केकी ने कहा।

फन ! सुलोचना ने कहा और केकी का हाथ दबाया।

महेरी ने दोनों ओर देखा रुस्तम दिखाई देने से समझ में नहीं आया और ममयकर को रुस्तम समझ कर उसके कन्धे पर सिर रख कर कहा मैं तुम्हें चाहती हूँ।

ममयकर रोनी सूरत का हो गया और पाषाण की तरह बैठा रहा कुछ न बोल सकने के कारण उसका सिर सहलाना आरम्भ किया।

मुझे कोई तपस्वी कह ? है हि—म्मत किसी की—महू—मनु महाराज तपस्वी थो—केकी कहकर अन्ना साहब ने टेबल पर माथ रख दिया।

रुस्तम गाता ही रहा —

दरिया किनारे सोनो होटल
 पिया बरांडी सोर।
लेकर फिर देना मत भाई
 कहत मस्त फकीर ॥

महेरी ममयकर को रुस्तम समझकर उस पर शांति से सिर रख रही।

'नामदार ! मुझसे शादी करोगी ?

सुलोचना ने ऊपर देखा। उसकी आँखों के आगे बिजली की बत्ती नाच रही थी और केकी की धार बार बार आँखें मापती थीं। उसने हाथ फैला कर केकी का हाथ पकड़ा केकी ने बायाँ हाथ सुलोचना के पीछे रखा।

'माई स्वीट। माई लव। केकी की निस्तेज आँखें जल रही थीं।

मेरे दिलदार! महेरी अमयवर का हाथ सहलाती हुई बोल रही थी।

रुस्तम ने गर्दन हिलाकर गाना चालू रक्खा।

गाड़ी धीरे धीरे हाँक प्यारे मेहरबाँ गाड़ीवाल!

एकदम किसी ने दरवाजा बड़े जोर से खटखटाया। जैसे भूकम्प आगया हो। दरवाजा हिला और पूरी मंजिल गूंज उठी। कोई दरवाज पर लात मार रहा था।

सुलोचना घबरा उठी कौन है?

प्रियतम! केका ने कहा कोई नहीं। पड़ोसी के घर में लाल गधे जो बसते हैं उसने कुर्सी पर माथा रखकर आँखें बन्द कर लीं।

मेहरबाँ गाड़ीवाले!' रुस्तम ने अन्तिम बार गुनगुनाया।

दरवाजा जोर से भड़भड़ाया।

कौन है? रुस्तम ने कहा और वह उठा।

खोलते जो नहीं। सुलोचना ने विनीत स्वर में कहा।

क्यों खोल? रुस्तम ने तश में पूछा।

आओ दोस्त! कहकर द्वार के पास गया।

किस के बाप का डर पड़ा है रे लड़के! केकी अपने को ही धीमे धीमे सबोधित करके गाने लगा।

'घूंघट के पट खोल।'

गाते-गाते रुस्तम उठा और दरवाजा खोला। गमन दमाल का लातें मार-मार कर लाल हुआ मुख दिखा। रुस्तम उसके गले से लिपट गया।

मेरे दोस्त ! गमन ! आ। तेरी ही कमी थी।

गमन के पीछे प्रोफेसर कपाडिया आये, उन्होंने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया और स्तब्ध बनकर कमरे में देखते रहे।

'कौन कपाड़िया ? रुस्तम कपाडिया की कमर थपथपाने लगा, 'घबराओ मत। आओ महफिल तयार है

अग्ना साहब ने ऊपर देखा और बड़बड़ाया दृष्टिपूत न्यसेत्पादं शास्त्र । पूतवदेत् समाचारेत्।

बेबी अपने को सुलोचना के सहारे डालकर संतोष से बड़बड़ा रहा था।

महरा अभयकर के कंधे पर माथा रख कर छत की ओर देख रही थी। अभयकर कुर्सी पर माथा रखे सो रहा था।

सुलोचना केवल अकेली ही होश में थी और घबराहट द्वारा लौटी हुई चेतना से चारों तरफ देख रही थी। चारों ओर पड़े हुए मित्र का उसे तीव्र भास हुआ। इस मस्ती का नशा उसे बिल्कुल उतर गया था। शरमायी हुई घबराई-सी खड़ी रही कुछ भी उसे न सूझा।

उसकी आँखों के आगे कठोर भावनाशील सुदर्शन की निश्चल आँख दिखाई दी अदृश्य हो गई। उसने अधमता का पूरा-पूरा स्वाद चख ।

सुलोचना ! कापड़िया ने सूघती सूँघते हुए कहा।

गमन ! कुछ सोग ! कापड़िया क्या सोगे ? रुस्तम ने पूछा।

सुलोचना उठकर कापड़िया के पास गई।

चल सुलोचना ? स्नेह से कापडिया ने कहा उसकी आवाज में व्यंग का बिल्कुल अश नहीं था। गाडी से आया हूँ।

बेबी ! रात सुलोचना ने कहा।

सब सुने इस प्रकार वह बड़बड़ाया ! डियर ! कल सवेरे मिलेंगे वह कुर्सी पर से लड़खड़ाता हुआ उठा और दरवाजे के आग आया।

सुलोचना एक दृष्टि डालकर बाहर निकली उसके पीछे कपाड़िया भी निकला।

तू लज्जावती होती तो उनकी लायकी का तुझे पता लग जाता।'

सुलोचना ने पुन गर्दन हिलायी।

तुम्हें उसके साथ विवाह करना है ?

हाँ।

'पारसी है नौकर है पापा मना कर देंगे तो।'

मैं जानती हूँ।

तब ?

'जहाँ मेरा हृदय है वहाँ मेरा हाथ है।

मैं पापा को मना लूँ फिर ? आँखें टिमटिमा कर कापड़िया ने पूछा और एक सुँघनी का सड़ाका मारा।

बड़ी मेहरबानी होगी।

तब एक काम करो।

'क्या।

एक माह के लिए लाजवन्ती बन जाओ और यदि तब तक भी वह तुम्हारा प्रेमी बना रहे तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा।

'जरूर ! हँसकर सुलोचना ने कहा और उठी।

बाहर से गाड़ी आई। सुलोचना का मुँह लाल हो गया केकी आया है। उसने कहा।

प्रोफेसर बोले नहीं। एक नौकर ने आकर कहा, बहिन मगन सेठ आये हैं।

उससे कहो बहिन को बुखार आ गया है। कपाड़िया ने कहा।

धन्यवाद ! सुलोचना ने कहा।

वह उठकर बाहर गई। कपाड़िया बहुत देर तक देखते रहे। उनके मुख पर दीनता छा रही थी। सुलोचना को सामने से नौकर आता मिला।

'बहिन ! चिट्ठी आई है।

सुलोचना ने हृप से गद्गद् हो चिट्ठी ली और ऊपर अपने कमरे में चली गई। चिट्ठी पर केका के हस्ताक्षर थे।

प्रोफेसर कपाड़िया काफी देर तक सुधना सूंघते रहे। उनकी आँखें निस्तेज होती गईं उनका निचला होंठ नाक को सटकता गया। दो घंटे तक वह निराशा की मूर्ति बन ज्यों के त्यों बैठे रहे।

बारह बजे और चौंककर उठे। उन्होंने निजरात्रों छोड़ीं चश्मा हिला डुलाकर नाक पर ठीक करके रक्खा और नहाने जाने की तैयारी की।

स्नान से लौटकर थोड़ी देर तक उन्होंने सुलोचना का प्रतीक्षा की। फिर धीरे-धीरे ऊपर गए। सुलोचना का दरवाजा बन्द था उन्होंने खटखटाया लेकिन कुछ जवाब नहीं मिला। वह घबराये। क्या सुलोचना ने जहर खा लिया ?

फिर बहुत जोर से दरवाजा ठोका। सुलोचना ने उसे खोल दिया। कपाड़िया अन्दर जाते ही स्तब्ध रह गये। सुलोचना ने रो रोकर आँखें लाल करली थीं उसके बाल बिखरे हुए थे।

'सुलोचना ! क्या है यह ?

'कुछ नहीं। सलोचना ने गला सँभालकर जवाब दिया और खाट की पाँयत पर बैठ गई।

क्या ?

कुछ भी नहीं। दुख से कातर होकर उस लड़की ने फिर वही जवाब दिया।

'मुझे बतला तो दे।' विनीत होकर कपाड़िया ने कहा।

'देखो यह।' कहकर उसने केकी का पत्र दिया। कपाड़िया ने चश्मा ठीक कर उसे पढ़ना प्रारंभ किया। उसका भावानुवाद इस तरह था :—

प्रिय मित्र चन्द्रमोहन !

कल की बेवकूफी के लिए मैं माफी चाहता हूँ। शराब के नशे में

यदि मेरे मुख से कुछ ऊटपटांग निकल गया हो तो उस पर ध्यान न देना। मैं पारसी ठहरा और तुम वैश्य। मुझे जिस प्रकार तुम पहले समझती थीं उस प्रकार ही रहूँ तो?

तुम्हारा

केवो

एक मिनट के लिए कपाडिया चुप रहा। उन्होंने धीरे से चश्मा निकालकर पोंछा और फिर नाक पर चढ़ाया, सूंघनी सुंघी और हाथ फटकाकर घिसे।

'सुलोचना! तू इस पशु को चाहती थी न।'

सुलोचना ने सिर झुका कर हामी भरी।

'तुझे इस समय ऐसा अनुभव हो रहा होगा जैसे तेरा दिल टूट गया हो, पर यह भूल है। तू जवान है। परशुराम के अनुसार तू योग्य पुरुष की प्राप्ति के लिए प्रयास करे यह स्वाभाविक ही है और इस प्रयास में यदि चोट पहुँचे तो जैसे दिल टूट गया हो ऐसा लगता है। परन्तु प्रणय प्राप्त कर फिर उसके खोये बिना दिल भी टूटता नहीं। इस तरह ज़रा-सी बात हो जाने पर यदि सब कुछ समाप्त हो जाय तो एक स्त्री भी जीवित नहीं रह सकती समझी? सुन क्या कहा? उन्होंने सूंघनी सूंघकर आगे आरम्भ किया जीवन की ताकतें नारी और पुरुष को एक दूसरे के पास लाती हैं। नारी संतान का पिता खोजती है—खोजने के लिए कोशिश करती है। ऐसा प्रयास करना पड़े तो क्या उसके लिए निराश होना चाहिये?

सुलोचना खाट पर सिर रखकर रोने लगी। प्रोफेसर कपाडिया दोनों हाथ फलाकर भाषण देने लगे।

निष्फल प्रयास में अपने को आघात पहुँचता है हृदय के बाँध टूटे हुए से लगते हैं क्या समझी? जुगत करने पर ही चोटी मिलती है। लोक समाप्त हो जाय और फिर पाया हुआ भर खो जाय तभी मा… आकर्षित करने की हौंस खो बैठता है और जिसे हर्ट ब्रेक—हृदय…

भोग कहते हैं, उस दशा को प्राप्त होती है, समझी, सुलोचना ?'

कपाड़िया रुके और फिर बोले ।

'केकी तो एक मात्र प्रयास था । इससे मात्र पशुशास्त्र की शक्तियों के अभिमान पर आघात पहुँचा है, कुछ भाव भी मर जायगा और फिर प्रयास शुरू होगा ।

'बहुत ! बहुत हुआ !' रोकर सुलोचना ने कहा ।

'फिर कोशिश शुरू होगी । हाथ घिसकर कपाड़िया ने कहा और किसी शक्तियों की संतुष्टि हो सके ऐसा नर या मिलेगा ।

सुलोचना ने मात्र अपने रुदन से ही जवाब दिया ।

और उस नर सजीव होगा ।

'सब आदमियों से मैं घृणा करती हूँ ।

'कोई नारी नर से घृणा कर सकती है ? प्रयास करे और निष्फलता का ख्याल करने लगे तभी ऐसा अभिनय करती है , अथवा प्रत्येक नारी का हृदय एक नर की प्रतीक्षा में रहता है , अथवा वैज्ञानिक की दृष्टि से यौवन समृद्ध करने के साधन की प्रतीक्षा करती है ।

बस करो ! तुम्हारा विज्ञान ही तो मेरा प्राण ले रहा है ।

विज्ञान को प्राण या पत्थर किसी की परवाह नहीं । नर बिना नारी नहीं, नारी बिना नर नहीं ।

नर मात्र चरित्रहीन है—और नारी मात्र मूर्ख है ।

'नहीं, नारी एकमात्र भोगी है—यौवन की   नर एकमात्र ठग है—यौवन का । भोगी और ठग कभी एक दूसरे से मिले बिना रह सकते हैं ?'

'मुझे कुछ नहीं सुनना । कहकर सुलोचना खड़ी हो गई ।

'और हँसकर कपाड़िया ने कहा 'इतना याद' रखना कि यदि स्त्रीत्व प्रयास करे तो कहीं उसका हृदय टूट सकता है ? फिर से खड़े होकर प्रयास करो !

तुम जानवर हो' मिजाज में कहकर सुलोचना नीचे कमरे में आने लगी।

हम सब पहले प्राणी—फिर देव—इस समय प्राणी जीवन की प्रथम ति क्षधा उत्तजित हुई है। एक बज गया है।'

चला। कहकर गुस्से स सुलोचना खाना खाने के लिए नीचे उतरी।

तेरह

सूरत कांग्रेस सामन्त

(१)

बारह बजे कांग्रेस का दरवाजा खुला और ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे सारा हिन्दुस्तान खिंच गाहन में आने लगा हो।

उस समय कांग्रेस थी भारत की छोटी-सी प्रतिमा। वही अभेद विस्तार, वही अनेक दृष्टि वाला झिलमिलाता प्रकाश, वही अल्हड़ता, उत्साह, वही पचरंगी चित्रमयता, वही भव्यता का भास, वही सनातन अनन्तता का दर्शन, वही कायरता का अभाव और वही कार्यशील एकाग्रता के प्रति अरुचि। इसका स्वरूप बना था दो उद्देश्यों से—एक प्रजा में उत्साह का प्रसार करने के लिए—दूसरा अपना प्रतिनिधित्व सिद्ध करने के लिए।

इसने दोनों उद्देश्य पूरे किये। यहाँ तक निश्चयात्मक कार्यतत्परता का उपयोग किया जाय हर साल बीत जाने पर भी काम के समय दिखाई देने वाली बुराइयों का अन्त नहीं हो जाता। आज इण्डिया कांग्रेस और काम के करने वाली कमेटियाँ व्यवहारिकता लाने का प्रयत्न करती हैं—फिर भी तरह-तरह के मेले की-सी अस्थिर मनोदशा तबदीली नहीं।

लेकिन जो एक मात्र जिज्ञासा शान्त करने के लिए यहाँ जाता वह धीर स्वभाव से कभी बचा आता था। समग्र उत्साह की आग उठते रहती। दृष्टि की परिधि तक फैली हुई जनता भारत माता की प्रचण्ड शक्ति का ध्यान दिलाती। वसन्त में उगे हुए किसी विशाल महावन

को शोभा की विडंबना करता हुआ मंडप भव्यता के भाव से हृदय को भी दबा देता था।

उसी सिंधी डेलीगेट के मर जाने से कांग्रेस ढाई बजे शुरू होने वाली थी पर डेढ़ बजते ही वंदेमातरम् की आवाज बार-बार होने लगी और अधीरता के स्पष्ट दर्शन हुए। थोड़ी देर में दक्षिणी कैंप आया— शिवाजी महाराज की जय का घाव करते हुए—सूरत के सद्भाग्य से ही प्राप्त वास्तविक जयघोष। नारायण पटेल की थोड़ी सी सेना गुजरात डेलीगेटों के विभाग में बैठी थी। केरशास्प और थोड़े से दूसरे व्यक्ति बहुत दूर एक ओर दरवाज के आगे इधर-उधर अलग अलग जा बैठे। बाकी आधी सेना को नारायण भाई हाथ में डंडा लिये आग बढ़ाता हुआ महाराष्ट्र विभाग में आया।

दो सूरत-स्वयंसेवक आये भाई यह तो महाराष्ट्र है। गुजरात तो उस ओर है।'

हम महाराष्ट्री हैं। नारायणभाई पटेल ने एक सेनानी के रौब से डंडा जमीन पर ठोकते हुए कहा।

वह हँसा, चतुरभाई आगे चलो।' नारायण ने आज्ञा दी।

टिकट लाओ।

लो आँखें फाड़कर देखो!' नारायणभाई ने धौंस जमाई और चालीस टिकट महाराष्ट्र और नागपुर के बाहर निकालकर दिखलाये।

'खड़े हो मैं कप्तान को बुला लू ।

अपने कप्तान से कहना कि बैन हाँके बस! कहकर नारायणभाई और उसकी सेना महाराष्ट्र विभाग में गई और जयघोष किया 'शिवाजी महाराज की जय!

'गुजराती होकर शिवाजी महाराज की जय बोलता है ? शेम!' एक अभिमानी गुजराती ने कहा।

अरे ओ सूरती साला! जब सूरत लूटा गया था उसे भूल गया

क्या ?' नारायण बोला घोम तुझे और तेरी सात पीढ़ियों को !'

'छी—छी—छी—चुपचाप बैठ जाओ—वन्देमातरम —शिवाजी महाराज की जय—वंदेमातरम की जोर की पुकारें सुनाई दीं। केरदास्प खड़ा होकर रूमाल हिला रहा था। तुरन्त नारायण ने कुर्सी पर खड़े होकर वंदेमातरम् आवाज लगाई। चारों ओर वंदेमातरम् का घोष गूंज उठा कितने ही समझे-बेसमझे ही चिल्लाने लगे और तिलक खापरडे अरविंद बाबू और मोतीलाल घोष मंच पर आये। सब की आँखें अरविंद बाबू को देखने के लिए लालायित हो उठीं। कसी सादगी कैसा बुद्धि-तेज आँखों में कैसी दिव्य चमक! जैसे देव! परित्राणाय साधुनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् अवतीर्ण हुआ अवतार! वन्देमातरम्।

फिर आये पारेख अम्बालाल और जगमोहनलाल रूथरफोर्ड और नेविन्सन वन्देमातरम् के एक-दो जयघोष के साथ गोरी चमड़ी वालों की ओर तिरस्कार प्रदर्शन में "शेम" की आवाजें आईं।

सुदर्शन और मगन पड़्या साथ आये और उनके चरणों में बैठ गये।

फिर किसीकी समझ में नहीं आया। पर एक आदमी ठिगना और सिर पर काली पगड़ी बाँधे हुए पास से आया। रास्ता न होने के कारण रस्सियों के नीचे से आया पीछे मोहन पारेख आ रहा था।

'यह कौन ?' एक ने पूछा।

'लाला जी।' पारेख ने कहा।

'लालाजी की जय! जय! लाला लाजपतराय प्रफुल्लित लाला-बान पाल की जय। डेलीगेट खड़े हो गये—और अनेक ऊपर चढ़े। हाथ हिलाने लगे लालाजी की जय 'वन्देमातरम् का घोष उनके मुंह से निकला। दस मिनट बीते।

यह डिपोर्ट (देश) कर दिया गया देशनायक ? यह पंजाब का वीर! लालाजी की जय।

किसी तरह लोग बठे। बड़ी कठिनाई से स्वयंसेवकों ने शान्ति स्थापित की। सभा में चेतना आ रही और आ र से वन्देमातरम् की आवाज आई—

प्रेसीडेण्ट—प्रेसीडेण्ट—रासबिहारी घोष सुनाई दिया और स्वयंसेवकों की टकड़ी आई। पीछे कप्टन मोहनलाल दीक्षित—उसका छटादार शरीर, सहकारी पोशाक में देदीप्यमान हो रहा था और डा० रासबिहारी घोष आय—सौम्य और शांत विशाल भाल के नीचे माया की समृद्धि और धाराशास्त्र का भार वहन करते हुए—जरा क्षोभ ने उदास और विजय-गर्व से जरा हँसते हुए। फिर सर फीरोजशाह मेहता—चमकदार पगड़ी और भव्य मूछों में—चारों ओर देखते हुए, हँसते हुए—अपनी राजनीतिज्ञता में अकारण श्रद्धा का अनुभव करते हुए और सुरेन्द्रनाथ—गौरवशाली दाढ़ी तथा काले चोगे में छोटे छोटे परो से लम्बे कदम धरते हुए चारों ओर देखकर जमे जनता पर एक भावपूर्ण नजर फेंकते हुए, वाछा और सीतलवाड़—और गोखले—बैठ॰ चिन्ता से अस्वस्थ परेशान और क्षुभित थे पंडित मदनमोहन मालवीय किसी वदिक ऋषि के माथे सा गंभीर धारण किए हुए धनुष को तरह शरीर को खींचने के लिए तयार उसी छोटी और चपल आँखें ॰स तूफान में परिणाम के चिन्ह पर देखने के लिए अधीर तथा साथ में मोतीलाल नेहरू लन्न वे बहुत से दर्जो निराशा से हो एसे सुन्दर कपड़ा में समा नाच उठी।

दस हजार उत्साही मस्त आवाजों ने डा० घोष का स्वागत किया—समस्त पंडाल म स्वागतो की फरफराहट समूह-सुलभ उत्साह क बल से बढ़ती गई। दस हजार मनुष्यों ने नेता को अपने हृदय का प्रमुख प॰ दे दिया हो ऐसा लगा।

पन्द्रह मिनट तक उत्साह रहा। कुर्सी पर बठ हुए फिरोजशाह को शांति हुई। इस लोकप्रियता में किसकी हिम्मत थी कि विरोध का

सब नेता उठकर पीछे वाले दरवाजे की ओर चलने लगे उनके हृदयो में निराशा की वह्नि प्रज्वलित हो रही थी। क्या होगा? क्या होने वाला है?

लोग नहीं समझे कि क्या हुआ और भाग दौड़ शुरू हो गई। क्या कांग्रेस भंग हो गई?

अरविन्द बाबू तिलक के पास आये।

मि० तिलक तुम्हें श्रद्धा नहीं थी देखो? कहकर उन्होने तूफानी समुद्रसोद की ओर उ गली से सकेत किया। यह कितने राष्ट्र इसको ओर आज से हिन्द में यही एक मात्र सत्ता रही है।

लागों की भीड जमा हुई। नारायण तथा और कितने ही दक्षिणियो ने लकडियों खीच कर शिरच्छत्र बनाया तथा इस प्रकार की सुरक्षा में गरमदली नायक बाहर निकले।

सुदर्शन ने शिवलाल सर्राफ के साथ करमदन किया दोस्त! माँ का भविष्य तेजोमय है।

हाँ है। सर्राफ ने जवाब दिया

सुदर्शन ने अपने निवास स्थान पर आकर एक काड मनो को भी लिखा।

३

कलकत्ता कांग्रेस ने बहिष्कार आंदोलन को माना तिलक महाराज को मिले हुये प्रस्तावों में केवल परदेशी माल का बायकाट—अच्छा हो या बुरा पर जब तक विदेशी सरकार, शिक्षा न्याय विचार और आचार इन सबका बायकाट न हो तब हमें स्वराज्य कसे मिल सकता है? और कलकत्ता कांग्रेस ने यह स्वीकार किया तो फिर फीरोजशाह कौन जो उसे अस्वीकार करें?

फीरोजशाह भी इस विषय में दृढ़ थे। कांग्रेस हृयम ने स्थापित की उस उन्हों ने उसका पालन-पोषण किया उसका ध्येय ब्रिटिश साम्राज्य में स्वतन्त्र स्थान हो उसकी पद्धति नियमित हो, राज्य व्यव-

स्वात्मक भ्रान्दोलन हो उसकी प्रेरणा इग्लैंड के स्वातन्त्र्य प्रेमी लोग हों उसका मुख्य ग्रस्त्र स्वातन्त्र्य प्रेमी भोग्न प्रजा की न्याय वृत्ति हो।

यदि बहिष्कार का पूर्ण आन्दोलन कांग्रेस स्वीकार कर ले तो इन सब का क्या होगा ? और ये सब चले जायें तो फिर कांग्रेस न हो तो क्या ?

सर फीरोजशाह डा० घोष सुरेन्द्रनाथ गोखले वाछा मालवीय—ये सब इस बात पर पूर्ण रूप से सहमत थे। इन्होंने अपने मस्तिष्क में व्यवहारिकता को प्रधानता दे रखी थी।

जो न साधा जा सके उसकी इच्छा नहीं करनी चाहिए यह उन का सूत्र था। उनमें से बहुतों ने कौंसिलों में आकर व्यवहारिकता की विजय साधना की थी। सब ने ह्यूम और ब्रडले वेडरबर्न और

नेविन्सन जैसों से स्वातन्त्र्य प्रेम की मदद ली थी।

इनमें से बहुतों ने कांग्रेस रहित प्रजा-जीवन रहित अन्धकारमय विभक्त और निर्माल्य रूप में भारत देखा था भारत में राष्ट्रीय एकता है नहीं और होना आसान भी नहीं यह भी ये देख सकते थे, और उसका यह भी अनुभव था कि भारतीय चारित्र्य में कर्त्तव्य दक्षता और चेतना जितनी चाहिये उतनी नहीं है।

विद्रोह द्वारा—अठारहवीं सदी की अन्धाधुन्धी की पुनः स्थापना से डरते थे। ब्रिटिश साम्राज्य बिना विजय नहीं यह उनका एक सचेत सिद्धान्त था।

जगमोहनलाल ! यह अपनी योजना भाओ तो ! फीरोजशाह ने पुनः कहा।

मैंने कहा नहीं था ?

मैं अब देख सकता हूँ।

मस्कती के बँगले में डा० घोष के ठहरने पर भारतीय राजनीतिज्ञ

विशेष चिंतातुर थे।

तिलक महाराज के हृदय में अपूर्व श्रद्धा और शक्ति का सचार हो गया था। उनका तो एक ही दृष्टिकोण था पेशवा में रा य छीनने वाले ब्रिटिश का विरोध। बहिष्कार होगा या नही, यदि नहीं हुआ तो क्या विप्लव होगा ? इसका भी वह विचार नहीं करते थे। क्या प्रस्तावों द्वारा अंग्रेजी साम्रा य का प्रस्त हो सकता है—यह निश्चय करने से पहले इस पर विचार क्यों न किया जाय ? कोई भी प्रस्ताव कोई भी आंदोलन—जिससे और अधिक असन्तोष पदा हो वह स्वीकार किया जाय या नही—इसम पूछना ही क्या ? किसी भी प्रसग से लाभ उठाया जा सकता है।

सावजनिकता के जीवन में फीरोजशाह और गोखले के हाथ के नीचे रहते हुए उन्हें असन्तोष हो रहा था। रानाडे—पूना क प्रौढ़ सम्प्रदाय क सस्थापक—उनकी ओर कड़ी नजर रखते थे। इस सप्रदाय के माहगुरु। फीरोजशाह गोखले। यह सप्रदाय दफना दिया जाय यह उनका और उनके सम्प्रदाय का जीवन ध्येय था। उस ध्येय-साधना का अवसर सूरत में प्राप्त हुआ था। क्यों न उसका उपयोग किया जाय ?

उनकी पिछली रात की अश्रद्धा और घबराहट मिट रही थी। बाय काट-यही तो श्वास और प्राण था। यह स्वीकार न हो तो अवश्य ही वह दूसरे अध्यक्ष को दरखास्त पेश करें। हमें विद्रोह नहीं करना है, विग्रह के लिए हम दुःख है पर 'बायकाट बायकाट' तिलक महाराज ने दृढ़ता से सून उच्चारण किया था। शांत, नम्र धर्यशील अरविंद बाबू चुपचाप देखते रहे। उनकी आँखें जसी श्रीकृष्ण को देख रही हों इस प्रकार ध्यानस्थ दिखाई दी। उन्हें अकुलाहट नहीं थी और न थी अश्रद्धा ही। वह तो केवल एक ही वस्तु देख रहे थे अपूर्व अद्वितीय भारत राष्ट्र। वे एक ही पद्धति में विश्वास रखते थे-निष्काम कम वे एक ही शास्त्र मानते थे—बायकाट—बहिष्कार इस सवव्यापी बहिष्कार से अग्रेजी साम्राज्य को कँपा देने की उनकी एक महत्वकांक्षा थी। निर्बलता

उनको कहीं भी दिखाई नहीं देता थी। व्यावहारिकता का नाम सुनकर वह हसते थे। राजनीतिज्ञता वह उनके लिए एक पागलपन था। राज्य व्यवस्था वह उनके लिए एक क्षणिक बुलबुला आत्मा के खोज के समान ही राष्ट्र का जन्म होता है—यही उनके लिए व्यावहारिकता और यही राजनीतिज्ञता थी। वह टस से मस हो सके यह समय न था।

भाग्यशाली देश होता तो धीर गंभीर राजनीतिज्ञता अवसरवादी कौशल और राष्ट्र विधायक की दृष्टि इन तीनों का सुयोग बरता है व्यवहार पटु देश केवल राजनीतिज्ञता में विश्वास रखता है प्रगतिशील होने का इच्छुक देश अवसरवादी कुशलता का सत्कार करता है। स्वतन्त्र होने को तत्पर और अधीर देश आदर्शवादि स्वीकार कर लेता है। परन्तु सूरत में भारतीय राष्ट्रीयता कहाँ थी।

गुस्सा और उसके मित्र तो विजय के नशे में चूर बन गये थे। समाधान का प्रयास छिन्न भिन्न कर दिया कांग्रेस में तूफान पैदा कर दिया नेताओं द्वारा इतिहास का निर्माण कराया।

उस दिन सू त शहर में उबलते हुए वेग की तरह लोगों के दिलों में सनसनी हो रही थी। क्या हुआ! क्या होगा? गरमदल में शक्ति आ गई नरमदल में चिंता का पार नहीं था। सूरती नागरिक कहने लगे। ये शिवाजी की तरह सूरत लूटने आये हैं? अब क्या करें? समाधान कैसे हो? कल क्या होगा? कौन बीच में पड़ सके? ऐसे वार्तालाप चली सूचनाएँ दी गई। हम क्या करें? देश का क्या होगा कांग्रेस के गौरव का क्या होगा? कांग्रेस के दुश्मन हँसेंगे तो उनकी चाह बनेगा? स्वदेश भक्ति किस में जाये? समाधान में या उद्धतपन में? सध्या हो गई पर कुछ भी नहीं हो पाया।

न्यायी —विशाल नीति गोखले—कुछ न कर सकें? कौन बीच में पड़े? कौन मनाये? कौन माने?

तिलक निश्चय के पक्के थे। बहिष्कार का प्रस्ताव रहने दो नहीं तो प्रमुख के प्रस्ताव का सुधार पश कर दूँगा। हम तूफान न तो करना

है और न कराना पर देशद्रोह हो कैसे ?

(४)

१७ के सवेरे भी सबके मन उद्वलित और अनिश्चित थे पर आज सम शांति से काम होगा ऐसा लग रहा था।

स्वयं सेवक ध्यान से काम कर रहे थे डेलिगेट चिन्ता से एक बजे की प्रतीक्षा में थे नेताओं के प्राण ही व्यग्र थे। क्या मतभेद था यह भी अधिकांश व्यक्ति नहीं जानते थे क्या होने वाला था इसकी तो कल्पना करना भी असम्भव-सा लगता था। अस्वस्थता एक भयानक गहरे बादल की तरह कांग्रेस पर छा रही थी।

पहले दिन की तरह सब आ आकर बठने लगे। आज न तो तूफान करना और न करने देना है ऐसा शुभ सकल्प सबके मुख पर दिखाई देता था।

सवेरे मुकुन्द और उसके मित्रों ने विचार किया आज क्या हो ? क्या फिरोजशाही कांग्रेस रह सकती है ? रमन्स वाले ! मारो नहीं तो मरो ! नारायण भाई ने बड़े उन्माद से कहा कल की पानीपत की लड़ाई हमीने जाती थी। ऐसा लग रहा था।

नेता आने लगे। लोगों ने जयघोष से स्वागत किया। कल की अपेक्षा आज के जयघोष में अधिक उत्साह था।' शिवाजी महाराज की जय' बहुत कम बोली जा रही थी। आशा की किरणों ने सूर्य की किरणों से सहयोग कर पडाल के वातावरण में प्रफुल्लता ला दी थी।

फिर भी सब के मन शांत थ। होगा क्या ? प्रमुख पधारे। जयघोष-परम्परा की सीमा रही। कल की अपेक्षा आज स्वागत म—हृदय में भक्ति थी। नेता बठ गये। संगी आरम्भ हुआ।

तिलक महाराज ने मुकुन्द को बुलाकर एक चिट्ठी स्वागत समिति के अध्यक्ष मालवयजी को देने के लिये कहा। चिट्ठी मिलते ही मुकुन्द का हृदय प्रफुल्ल हुआ इस चिट्ठी में कांग्रेस को उड़ा देने वाला बारूद था। उसने जाकर मालवीय को दे दी। थरथराते हाथ और फीके मुँह

में उन्होंने सर फीरोजशाह को बताई। सर फीरोजशाह ने ले कर गोखले को दे दी।

सुरेन्द्रनाथ फिर मंच पर आये और बोलने लगे। लोगों ने उन्हें सुना जिस प्रकार मस्त साँप को मुरली नचाती है उसी तरह धीरे धीरे उनकी वाक्पटुता सावधानी से कांग्रेस को नचाने लगी। थोड़ी हँसी थोड़ी तालियाँ इत्यादि होने लगीं। सब जगह शांति फल रही और जब भाषण समाप्त हुआ तो सभा ने तालियों से उनका सत्कार किया, वह रूप अन्त में सभा उनके वशीभूत हो ही गई।

मोतीलाल नेहरू अनुमोदन करने के लिए खड़ हुए—थोड़ शब्दों में और मीठी आवाज से अनुमोदन हुआ।

इसके समाप्त होते ही मालवीय खड़ हुए और डा० घोष को पद लेने के लिए कहा—तिलक महाराज कुर्सी से उठकर व्यास-पीठ पर गये। अंग अंग से काँपते हुए पगड़ी को और दुपट्टे को लोम से सँभाले हुए बाईं आँख और होठ की चपलता से मानसिक व्यवस्था का परिचय देते हुए आगे बढ़े।

दो स्वयसेवक रोकने आये पर सुन्दन मोहन पारेख ने उन्हें मना कर दिया।

पल भर में शांति फम गई। प्रत्येक आँख व्यासपीठ के ऊपर बीच में खड़ हुए तिलक पर ठहर गई। कुछ हो रहा था। मरण और जीवन की धान पर बात आ गई थी। जिस क्षण के लिए देव और दानवों ने अवतार लिया था क्या वही क्षण तो नहीं आ गया?

मालवीयजी की आवाज उठ गई। क्या है? उन्होंने अस्पष्ट आवाज में पूछा। अध्यक्ष के सिंहासन पर डा० विराट् की तरह घघर खड़ थे।

मैंने नोटिस दे दिया है। मुझे सभा स्थगित रखने का प्रस्ताव रखना है। मेरा अधिकार है। कन्धे पर का दुपट्टा कमर पर लाकर और नाचे का छोर कंधे पर डालते हुए तिलक ने कहा।

'आप नहीं कह सकते। आप क्रम विरुद्ध हैं।

मुझे अध्यक्ष के चुनाव में सुधार का प्रस्ताव उपस्थित करना है।
तिलक ने कहा, आप प्रमुख नहीं हैं।
मैं हूँ आप क्रम विरुद्ध हैं। डा० घोष ने कुर्सी पर बैठते हुए
कहा।
'आप अध्यक्ष नहीं चुने गये
—और सभा ने भयंकर शोर-गुल आरम्भ किया। प्रत्येक व्यक्ति
खड़ा हो गया। जिससे हो सका कुर्सी पर चढ़ बैठा। जिससे बोला गया
वह यथाशक्ति बोलने लगा। सूरत वाले क्रोधवश में तिलक के और
दक्षिणी क्रोधावेश में प्रमुख के विरुद्ध और प्रमुख क्रोधावेश में सबके
विरुद्ध गरजने लगे।
डा० घोष खड़े हुए। मंच पर जाकर घंटा बजाया। प्रलय के समय
कोई औरतों को उतारे इस प्रकार घटाना" कुछ सुनाई दिया कुछ न
सुनाई दिया और समाप्त हो गया।
व्यासपीठ के संरक्षक स्वयं सेवक दौड़े। यह तिलक बालगंगाधर
तिलक! दो एक व्यक्ति लाठियाँ लेकर आये। अध्यक्ष का हुक्म मानना
चाहिए। डाउन दी प्लेटफार्म गोखले बीच में आये और हाथ फैला
कर खड़े हो गए खबरदार!
तिलक के जीवन में भव्य क्षण थे। सम्मुख मुख में गरजते हुए
उछलते हुए मानव सागर की तरंगों के सामने से उन्होंने स्वस्थता
अपनायी। गर्वयुक्त शांति से खड़े रहे।
तुम से जो हो सके करो मैं सुधार पेश करने आया हूँ सो करूँगा
ही वह बोले।
विरोधी मानव सागर ने मर्यादा भंग आरम्भ कर दी। कुर्सियाँ
गिर ई ग" रस्सियाँ टूट गईं पांच क लोग भाग आ गये और ठसाठ
भर गए। दक्षिण और मध्य प्रांत के डेलिगेटों के दिमाग दिस्त हो गय
क्या तिलक का—तिलक महाराज को—पूना के केसरी का म
डालेगा? किसी की हिम्मत है! नारायण भाई ने गर्जना की। उ

खून खौलने लगा तिलक महाराज पर आक्रमण! तेरी ऐसी-तैसी' कह कर नारायण भाई नाथे झुका — एक दक्षिणी जूता उठाया और ताक कर मारा फीरोजशाह को। वह पड़ा फीरोजशाह पर — वहाँ से उछला और पड़ा सुरेन्द्र बाबू पर।

कुछ क्षण तक यह सब क्या हुआ समझ में नहीं आया, सब के होश गुम हो गए। दक्षिणवालों ने आक्रमण किया यह जानकर सब खड़े हो गए। खड़े होते ही स्वयं सेवक उनकी मदद के लिए दौड़े। दौड़ते ही दक्षिणियों ने समझा कि तिलक महाराज के लिए आये उन सबने 'शिवाजी महाराज की जय' बोल कर नारायण न भाई प्लेटफार्म पर कूदकर तिलक महाराज को लाठी दी। दक्षिण और नागपुर के प्यारे से प्लेटफार्म पर आ धँसे और नायक को बचाने के लिए व्यूह को फिर रचा। नरमपन्थी नेता पीछे के दरवाजे से निकल भागे। सारा रचना गरजती कूदती आगे धँस आई। दो सौ मनुष्य मंच पर चढ़ आए और भयंकर कड़ाके साथ मंच टूट गया।

निःशस्त्र मनुष्य भी पल भर में शूरवीर हो गए, और कुर्सियाँ उठने लग टूटने। दस हजार भारतवासियों ने लड़की के बाद राजनैतिक प्रश्नों में पहली बार शूरता दिखाई।

पुलिस ने हाल पर कब्जा किया।

तीन सौ दक्षिणियों ने लाठियाँ ऊँची कर जाने के लिए सुरक्षित मार्ग बनाया, और तिलक महाराज — तिलक महाराज की जय और डाक्टर मि० रास बिहारी की पुकारों से बधाई प्राप्त करते पंडाल के बाहर निकले। नेता नेमरस घूमकर तबुओं में आ बैठे। उन्होंने तो पक्का विश्वास कर लिया कि गरम दल ने जान-बूझकर दंगेबाजी शुरू की थी।

'शेम! दिस पालिटिक्स?' एक ने कहा।

'जैसे सूरत लूटने के लिए झपटे हुए हों' दूसरे ने कहा।

'यू आर अनफिट फार ऐनीथिंग' तीसरे ने ठीक-ठीक अभिप्राय बतलाया।

सुरेन्द्र बाबू हाथ में दक्षिणी जूता उठाये और मानमग्न हो इतने क्रोध में उन्होंने सबके सामने ऊपर उठाया। चालीस वर्ष की सावजनिक सेवा का उपहार कहकर उन्होंने जूता जेब में रख लिया।

अब हमारे विषय में क्या सोचेंगे?' गोखले ने कहा।

और धीरे धीरे कॅंप गाउन खाली होने लगा।

रात को सुबह की बातें हुई थीं वे वहीं की वहीं भुला दी गईं।

नरम दल वालों ने साम्राज्य में ही रहने की स्वीकृति पर हस्ताक्षर कर दिये और नौ सौ मनुष्यों का कन्वेन्शन दूसरे दिन मिला।

तीसरे दिन एक सूरती लाला ने मंडल में प्रवेश करना चाहा। स्वयं सेवक ने उसे नहीं जाने दिया। तीन दिन टिकट के पैसे लिये और दो दिन ही देखने दिया वाह! कहते हुए इक्के में बैठकर अपने घर गया। उनको पसे वसूल होते हुए न दीखे।

सन्ध्या को हरि पुरा में गरमदल की सभा हुई इसके लिए सबने दुःख प्रदर्शित किया पर कांग्रेस हो तो प्रचलित राजनैतिक आदर्शों को ही यह स्पष्ट किया गया और ब्रिटिशों से भीख मांगने के दिन गये यह सर्वसम्मति से निश्चित हुआ। इसके बाद सभा समाप्त हो गई।

सुदर्शन और उसके मित्रों ने मानपुरा में कान्फ्रेंस की।

आज ही हम लोगों ने कांग्रेस को गम्भीरता का पाठ पढ़ाया है।

केरवालप ने बिना प्रस्ताव के ही प्रमुख स्थान लिया। अभिप्राय कितना प्रिय है इसे मापने का साधन मारपीट है।। कांग्रेस में रोज हड्डबाजी होती है।

लेकिन पुलिस से हम लोग सावधान रहें तो क्या? शिवलाल ने कहा।

ना — रासबिहारी घोष को भी मजा चखाया! नारायण भाई ने कहा।

आज राष्ट्र ने वास्तविक महत्ता प्राप्त की। अम्बालाल ने कहा परदेशियों की अब हम लोगों को परवाह नहीं है।

'लेकिन मदुभाई! तुम इस तरह क्यों पड़े हो?' केशवराम ने पूछा।

'कांग्रेस इस प्रकार भंग हुई यह मुझे अच्छा नहीं लगा।'

'फिरोजशाही कांग्रेस हो तो भी क्या और न हो तो भी क्या?' अम्बालाल ने कहा।

'कांग्रेस भंग हुई इसका मुझे दुख नहीं। जो संस्था पाँच दस नेताओं के मतभेद से भंग हो जाय वह संस्था रखने योग्य नहीं कही जा सकती। निकलाम की उस्तादी से नेता सुलह न कर सके। नारायण भाई के जूते ने दस हजार की सभा भंग कर दी। इस से क्या पता लगता है? यही कि हमारे नेताओं में और लोगों में कुछ ऐसी शक्ति भी है जो इतने—दस हजार को तो क्या दो हजार के एक समूह को भी व्यक्तित्व नहीं दे सकते।'

'तुम्हारी बात गलत है।' अम्बालाल ने कहा 'इस समय तो हम को विनाशवृत्ति की शिक्षा देनी है। नहीं तो आन्दोलन कैसे हो सकता है? और आज कितनी भव्य विनाशवृत्ति है!'

'और निश्चयात्मक विनाशवृत्ति भी कहाँ थी? एकमात्र आकस्मिक अव्यवस्था का परिणाम था।'

'नहीं गरम दल में वास्तविक सचेष्टता आती जा रही है' केशवराम बोला।

'कौन कहता है कि नहीं?' नारायण भाई बोला।

'अपने मण्डल ने भी क्या काम किया?' मगन पंड्या ने कहा।

'हम ने क्या काम किया? कुछ भी नहीं।' सन्तान ने कहा 'उस बन्दर ने लन्दन में तोप छोड़ी थी यहाँ भी कुछ ऐसा ही कुछ हुआ है'

'क्या हो गया है आज मदुभाई!' केशवराम ने पूछा।

'मेरी तबियत ठीक नहीं है।' उसने खीज कर कहा 'आज रात को ही मैं अपने गाँव चला जाऊँगा।'

मैं भी—'मगन पंड्या ने कहा।

'माँ! माँ! ये तेरे पुत्र? यह तेरा मन्दिर? तेरा क्या होनेवाला है?

कांग्रेस में इकट्ठे हुए इन लोगों में क्या दोष था? उसकी आँखें मिली नहीं। क्या कापडिया ठीक था? और यदि ठीक भी हो तो मूल कहाँ थी?

एक महानदी के विशाल द्वीप पर एक विशाल जन-समूह इकट्ठा हो गया था

कितने ही स्त्रियों के साथ थे कितने ही बाल-बच्चों को लाये। वे भड़कीली पोशाक पहने हुए गले मे हार डाले हुए और हाथ में रूमाल आदि लिये हुए थे। कितने ही कूदते कितने ही नाचते कितने ही हसते रहे थे। सब के सब खुशी मे विभोर थे। कुछ महान् प्रसंग था।

कई के पास घोड़े थे कितने पदम चल रहे थे तो कितने ही गाड़ी म बैठकर आ रहे थे। प्रत्येक अपने साथ खाने को लाये थे उसे खोल कर सकुटुम्ब बैठे मुरमुरे खा रहे थे। चारों ओर पान चबाये जाते और जगह जगह पिचकारियाँ उड़तीं—

स्थान-स्थान पर हास्य सुनाई देता था तो उनकी धुन छोड़ता मुँह से बासुरी की सुमधुर ध्वनि फैलाता। स्त्रियाँ ताली बजा-बजाकर गाती और मुस्कराती सुजलाम् सुफला

आनन्द का वातावरण दसों दिशाओं म व्याप्त था वसंत का आह्लाददायक सूर्य अपनी किरणों से सबको प्रोत्साहन दे रहा था। आठ-दस व्यक्ति घूम रहे थे—गम्भीर और तेजयुक्त नेत्रों से व खड़े हो मनुष्यों के समूह को कुछ कहते। मनुष्यों का समूह आनन्दित हो चने मुरमुरों के फके मारता। करताल मजीरे बजाता और उनके पीछे थोड़ी देर तक थमता। इतने में इनमें से कोई दूसरा आता, उसकी कुछ सुनने के लिए खड़ा होता। कोई ताली बजाता कोई पीठ ठोंकता और फिर आनन्द में मस्त हो जाता

गम्भीर मनुष्य एक दूसरे से मिलते तो एक दूसरे की ओर देखते।

एक-दूसरे के पास पहुंचते तो अपना अधिकार दिखाकर क्रोधित होते। वे क्रोधित होते और लोग आनन्द के आवेश में नाचते। धीरे धीरे एक दूसरे के गले में हाथ डालकर नाच फिरने लगे और गम्भीर मनुष्यों का ओर देखकर हसने लगे।

नाच बढ़ते ही जाते तालियाँ पिटती ही जातीं नाच हुआ ही करते अबीर और गुलाल उड़ते ध्वजा पताकाएँ फहरीं और प्रत्येक ने कुछ लेकर ऊपर उछालना आरम्भ किया।

उसकी समझ में नहीं आया कि यह क्या है! ये गम्भीर मनुष्य कौन? ये मस्त-मस्त स्त्री-मनुष्य कौन? यह गुलाल और अबीर क्या?

उसको चिन्ता बढ़ी। क्या यह शुक्लतोष की माया है? या असतोन्मुख?

एक पुरुष आनन्द की लहर में नाच रहा था। उसके एक हाथ में दक्षिणी झूला और एक हाथ में डंडा था। उसके गले में केसरी फूलों की माला थी और पैरों में घूंघरू। वह अपनी मस्ती और तान में जो भी आता उसे मारता और जिसे चाहता उससे मिलता। उसकी आँखें विशाल थीं। उसकी तोंद भी महान् था। उसे देखकर दूसरे हँसते और जितना अधिक हँसते उतना ही वह अधिक उछलता।

'भाई! यह क्या है?—एक आदमी ने पूछा पर नाचनेवाले का मुह उसे स्पष्ट दिखाई नहीं दिया—परिचित-सा लगा।

भाई! भाई! यह क्या है? कुन्ठे हुए अति तीव्र स्वर में उसने पूछा।

क्या कहते हो? नाचनेवाले ने आनन्द के आवेश में बालचाल की भाषा में कहा कि हम समस्त ब्रिटिश साम्राज्य सर कर आ रहे हैं—

सुल्तान की छाती बढ़ गई। जानता न?! उसने चूना चारों ओर घुमाया 'समभय वह काँपने सो लगा ही। नाच सिलाही धुस

उसका दम घुटने लगा। वह सचेत हुआ। उसने देखा कि एक

मुसलमान सहपाठी ने ऊंघते ऊंघते उसके कन्धे पर माथा रख दिया है।

एक मानसिक शूल से—त्रिकोण की तरह उसका हृदय भेद दिया। यह कांग्रेस! यह देश! मां! मां! अब क्या होने वाला? एकदम उसे याद आया कि अब उसे पहले जैसे स्वप्न नहीं आते। और पहले की तरह मां दर्शन नहीं देती इसका क्या कारण? मां क्या नाराज हो गई है? मां मां! क्या मैं योग्य नहीं हूं? मां मेरे शरीर में जब तक प्राण हैं तब तक मैं तुम्हारी सेवा करूंगा। मां! तू मुझे छोड़ना मत

शंका से पीड़ित उसके हृदय में अरविंद बाबू की मूक प्रेरणा मिली थी। उनके चक्षु कैसे दिव्य थे? उनकी स्वस्थता कैसी अभय थी? यही महात्मा राष्ट्र का निर्माण करेगा—उसका उद्धार करेगा क्यों न उससे जाकर मिला जाय और उसकी आज्ञानुसार प्रवृत्ति क्यों न बनायी जाय?

अरविंद बाबू का बायकाट में विश्वास था। यदि यह सर्वव्यापी हो जाय तो देश का भाग्य खुल जाय। एक मत हो तीस करोड़ मनुष्य अंग्रेजों का बहिष्कार करें तो एक पल में देश का उद्धार हो जाय

लेकिन जो दस हजार व्यक्ति सूरत में कॅम्प गार्डन में इकट्ठे हुए थे वे क्या ऐसा भीषण बहिष्कार करने के लिए शक्तिशाली थे?

चौदह

स्वप्न बने स्वप्न टूटे

प्राठ दिन रह कर सुदर्शन बम्बई गया तो एक महीने में देश के उद्धार के लिए योजना बनाने की भीष्म प्रतिज्ञा लेकर गया था। इस प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए उसने अपनी बालक बुद्धि शक्ति और निश्चयात्मकता का यथाशक्ति उपयोग किया। उसने देश-देश के इतिहास से सार लिया प्रत्येक देश की उद्धारक प्रवृत्ति में से तत्त्व ग्रहण किये प्रत्येक स्वातन्त्र्य सेना की रचना और स्वातन्त्र्य युद्ध के रहस्यों की तुलना की उसने प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति और अवनति के कारण एकत्रित किये वर्ष के अंतिम दिनों के अध्ययन का एकीकरण किया, उसने हिन्द की दशा कठिनाई और अनन्त की प्राँका आदर्श वास्तविकता और व्यवहारिकता तीनों दृष्टियों का यथाशक्ति सम्मिश्रण किया माँ की माला जपी भक्ति का रस पिया परदेशियों की शक्ति का हिसाब लगाया और उनके विरुद्ध मोहरों की योजना की और कहीं ऐसा न हो कि वे कल्पना में ही विलीन हो जाएं इसलिए शीतम तृप्त व्यवहारिकता की कसौटी पर कसा और रात-दिन परिश्रम कर सम्पूर्ण योजना का निर्माण किया।

मनो भी यथाशक्ति मदद करती रही। उसे जब चाहिये तब चाय, उसे जब चाहिए तब भोजन उसे चाहिए तब प्रेरणादायक दो बोल वह दिया ही करती थी और एका हारा सुदर्शन उसकी मुस्कराहट देखकर प्रेरणा पाया जाता। अंबालाल खूब उत्साहित हुआ। सवेरे दोपहर और शाम—और कभी रात को भी वह और मिस बकाल विज्ञान के प्रयोग करते और सुदर्शन का विश्वास दिलाते कि वह ३१ जनवरी से

पहले जो न देखा और न सुना ऐसा कल्पनातीत विनाश का अस्त्र खोज निकालेंगे। अब्बामाल ने पढ़ाने जाना छोड़ दिया और इस प्रयोग में बराबर लगा रहता था। जब वह घर आता ही उसके कपाल पर रौद्र रस की छाया सुदर्शन को दिखाई देती।

दोनों मित्र मिस वकील और धनी देश के स्वातन्त्र्य के उन्य की किरणें दर्शन लगे।

अरविंद बाबू बम्बई आ गये। दोनों मित्रों ने उनके दर्शन किये और भाषण सुन कर अपने उत्साह को एक नया जीवन दिया। उनके धर्म के मन्त्र सुदर्शन के कान में गूंजते रहे।

राष्ट्र धर्म ईश्वरीय देन है। उसका विनाश नहीं होना क्योंकि ईश्वर ही बंगाल को प्रेरणा दे रहा है। ईश्वर का कोई विनाश नहीं कर सकता। ईश्वर को कोई जेल में नहीं भेज सकता। तुम में वास्तविक श्रद्धा है तो एकमात्र राजनीतिक प्रेरणा—एक विस्तृत त्याग ?

निशीथ के अंधकार में अपने बिस्तरे पर मानसिक प्रणिपात करते और इन मन्त्रों को जपते हुए विशुद्ध और प्रोत्साहित हृदय से सुदर्शन माँ की विनती करता रहा माँ! प्रेरणा दे! शक्ति दे!! यही साधना थी।

योजना लिखी जा रही थी कागज पर कागज लिखे गये संशोधन या फाड़े गये और फिर लिखे गये। जनवरी का महीना धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। १० ११ १२ १३, १४ १५ को सबेर उस ने योजना समाप्त की। अपने सामने पड़े हुए कागज का बंडल को देख कर उसका मन गर्व से फूल उठा।

'धनी बहिन! मैं अपना काम समाप्त कर चुका।

शाबाश! धनी ने नहाने के लिए पानी रखते हुए कहा मुझे बताना न बतलाओगे न ?'

जरूर! सुदर्शन ने कहा। उसकी नजर पड़ते ही यह विचार

छाया—श्री प्रालाह्क सहचरी है। मन्त्री सुखी प्रिया शिष्य—
सलिल नहीं पर विप्लव बसी कठोर और भयकर बसा में सिद्धांत !
वह हुआ।

दोपहर को डाक आई। दूसरे मित्रों के पत्र के साथ पाठक का भी
पत्र था।

'सन्माई !

मुझ मद्रास में नौकरी मिल जाने का तार आने स मैं आज वहाँ
पहुँच गया हू। (१२) रुपये और खाना पीना। जितना सोचा था उस
से अच्छी तनख्वाह है।

मैं ३१वीं तारीख को वहाँ न नहीं आ सकता और आने स भी क्या
फायदा ? मेरे जस—जिसके कधे पर सारे कुटुम्ब का भार हो—उसे
नहीं बिना पसा पदा किय काम चल सकता है ?

स्नेहाधीन

पाठक

सुन्दन को स्मरण आया। निम इक बट आई वाल सलिल सब
शर्ट पार ए मस भाफ बोज (इसे मैं रोटी के टुकड़े के लिए जन्म
सिद्ध अधिकार का विक्रय करता हूँ।)

मैं जानता ही था कि पाठक निकम्मा है। मन्नालाल ने कहा
अच्छा हुआ वह नहीं आया। ऐसा लचर-पचर आदमी हाजिर
हो, तो कई विघ्न उपस्थित कर देता है।'

ठीक बात है। यनी बीच में ही बोली।

मन्नालाल उग्रता से चारों ओर देखता रहा और एक दम सद्‌भाई
का हाथ पकड़ा सद्‌भाई ! कुछ नहीं मृत्यु पर्यन्त हम दोनों साथ
रहेंगे ?

ऐसा ही बात है मन्नालाल ! जब तक हम हैं तब तक दुनिया
मख मारती है। मेरी राष्ट्रसंघ की योजना और हम दोनों सृष्टा और
मूल हैं।

प्रयोग किया। ताप टॅपरेचर, समय सबको सयोग जुगाया और जीता हुआ परिणाम निकला। एक कतरे के हजारवें भाग ने दस गज जमीन खोद डाली। तीन कतरे की ट्यूब एक मिनट म राजा बाई टावर को उगा देगी। अब फौज की जरूरत नही तोप की जरूरत नही। सदु भाई! सदु भाई! अब तो विजय अपने ललाट पर लिखी है। अपना मण्डल ही देश का उद्धार करेगा। आज सध्या को एक प्रयोग और। मैं दो चार ट्यूब और तयार कर रहा हू। सदु भाई! मैं तो अमर हो गया—हम सब अमर हो गये।

इस उत्साह की बाढ म सुदर्शन बह गया। उसका खिन्न हृदय उछलने लगा। उसकी श्रद्धा की पुन स्थापना हुई। ऐसे शस्त्र द्वारा वे क्या नही कर सकते? केरशास्प नहीं होगा तो भी काम चल जायगा। उसने अम्बालाल से सवेरे की बात कही। उत्साह स पागल अम्बालाल को केरशास्प की तनिक भी परवाह नही थी।

पर वह भूल नहीं सकता बड़ौदा अवश्य गया होगा। सुदर्शन ने कहा।

मुझे भी ऐसा ही लगता है।

खाना खाकर अम्बालाल कालेज म प्रयोग पूरा करने गया और सुदर्शन अपनी योजना फिर स उलटने और हो सके तो सुधारने के लिए बठा। अम्बालाल को इसमें योग्य स्थान देना चाहिये।

आज रात को पूना से नारायण भाई पटेल आने वाला था। वह अम्बालाल और नारायण भाई तीन आदमी तो थ ही और अम्बालाल की इस विश्व विप्लव कर दे ऐसी खोज की महत्ता से तीन होंगे तो तीन करोड़ को भारी पड़ जायेंगे। फिर केरशास्प न हो तो भी काम चल जायगा।

परन्तु केरशास्प बिना कसे काम चल सकता है? उसकी योजना म दस मनुष्य और एक प्रमुख की समिति ही केन्द्रबिन्दु थी। प्रमुख सवसत्त सिकारी था ग्यारह आदमियों की समिति एक व्यक्ति जसी

सुदृढ़ता और एकता वाली थी। केरशास्प बिना यह सुदृढ़ता या एकता कौन लाए ? उसके पिता बिना सबग्राह्यत्व की शिक्षा कौन दे सकता है ?

केरशास्प से मिलने के लिए फिर एक प्रयत्न करने का मन हुआ। छः बजे तक उसने अम्बालाल की प्रतीक्षा की पर वह नहीं आया इसलिये वह अकेला ही रवाना हुआ। अम्बालाल की खोज से उसका हृदय आशा से उछल रहा था और उसके मस्तिष्क में इस खोज के परिणाम स्वरूप रूपक बनती हुई हजारों योजनाएं आकार ग्रहण कर रही थीं। केरशास्प के घर के आगे आते ही तीसरी मंजिल पर प्रकाश दिखाई दिया। उसका हृदय नाच उठा। जाकर केरशास्प को विजय-संदेश देकर तयारी करके बड़ौदा ले जाने की ही देर थी छलांग मारता हुआ जीने पर चढ़ा और दरवाजे के पास आते ही चौंककर खड़ा हो गया।

एक छो -से टेलीफोन के स्तम्भ के आगे दोनों हाथ माथे पर रखे केरशास्प बैठा था। उसका मजबूत भराबदार शरीर जसे दुसह भार से कुचला गया हो ऐसा दिखाई देता था। उसके भरे हुए मुख को जागरण चिंता और निराशा की रेखाओं ने भयानक बना दिया था। उसकी आँखें सूजी हुई थीं। सामने आधा पिया हुआ चाय का प्याला और बिना छुए हुए नमकीन बिस्कुट पड़े थे। केरशास्प इतनी निर्बलता का अनुभव कर सकता है यह विचार सुदर्शन को कभी स्वप्न में भी नहीं आया था।

सुदर्शन बोलने वाला था कि केरशास्प ने उसको देखा—और टेलीफोन बजा। केरशास्प ने सुदर्शन को चुप रहने का हाथ से इशारा कर टेलीफोन उठाया।

हलो प्यारेलाल ! दो पाउन्ड ! क्या—पोलर आया—कहाँ—ओह अच्छा —सौ गोडे कवर करो। देखा जायगा—कितना भाव ?—देखो—हाँ— अच्छा एकदम कवर करो— उसने टेलीफोन रख दिया और फिर माथ पर हाथ रखकर बोला 'ओह देव !

केरशास्प क्या है ?'

'सदु !' मैं बरबाद हो गया। उसने गला खखारकर बोलना आरम्भ किया, एक एक घंटे में तीस हजार खो रहा हूँ

ओह—सुदर्शन ने आँखें फाड़कर कहा। क्या बोले यह भी उसे न सूझा।

'दुर्भाग्य' केरशास्प ने कहा और निःश्वासें छोड़ीं।

मैं सवेरे आया था।

'मैं दिनभर घर पर था ही नहीं।

क्यों ?

'रुपये वाले मेरे प्राण खाते हैं मेरे विरुद्ध डिगरी भी है।

'सब ३१ को वन्दा—

३१वीं को बर्बाद ! मृत्युशय्या पर पड़े हुए मनुष्यों-सी निस्तेज आँखें ऊँची करते हुए केरशास्प ने कहा।

आप—

इसी बीच—टेलीफोन बोला। सुदर्शन चुप रहा। हलो कौन सौभाग ! केरशास्प ने टेलीफोन में बोलना आरम्भ किया। हाँ फीवर आ गया ? हाँ—हाँ क्या ?—हलो—दो पाइन्ट—ज्यादा मरीकान क्या है ?—हलो—बस मिलूँगा—हलो 'कहकर उसने फौरन टेली-फोन रख दिया और वेदना उसके कपोल पर फैल गई।

इस समय क्या बोले सुदर्शन यह विचार कर रहा था। कहाँ माँ का उद्धार और कहाँ प्यारेलाल और सौभाग ? कहाँ देश भक्ति और कहाँ मरीकान के फीवर ? मरीकान के फीवरों में देश भक्ति के पोषण का गुण जो उसने समझ रखा था आज उसे असत्य लगा।

'केरशास्प— उसने कहा।

'केरशास्पजी सेठ है क्या ? एक व्यक्ति ने पुकारा।

हां केरशास्प ने कहा और उसका मुख पहले से भी अधिक फीका पड़ गया।

मैंयाजी ! वह काँपते हुए होठों से बड़बड़ाया और स्वस्थ होने का

प्रयत्न करने लगा।

कौन है यह ? सुदर्शन ने पूछ ही लिया।

रुपये मांगने वाला है। मुझे इनका तेरह हजार देना है। करशास्त ने जवाब दिया और दरवाजे पर आये हुए मारवाड़ी को देखकर हँसकर बोलना शुरू किया, कौन सेठजी ! बैठो-बैठो। सदुभाई ! ठीक है न सब ! हाँ मजमूसनदास से कहना कि मुझे कल पच्चीस हजार की हुंडी भेज दे। अच्छा साहेब !

सुदर्शन विमूढ़ हो वहाँ से चल दिया। उसे भास हुआ कि उस मारवाड़ी को संतोष देने के लिए ही गप्प मारी थी। वह सीढ़ियाँ कैसे उतरा यह भी उसे याद नहीं रहा। जब वह रास्ते पर गया तो जैसे प्यारेलाल सौभागचन्द और मेघाजी उसके पीछे पड़ हों इस प्रकार घबराकर उसने पीछे मुड़कर देखा। देर हो गई है यह ध्यान आते ही वह कांदावाड़ी की ओर गया

(३)

रात के दस बजे वह चर्नीरोड से रवाना होने वाला था। लेकिन आठ बजे के बाद घर पहुँचने पर भी अम्बालाल अभी तक नहीं आया था। करशास्त के यहाँ मिले हुए अनुभव से वह अत्यन्त खिन्न हो गया और उसे यह भय लगने लगा था कि ३१ तारीख को सभा ठीक-से पार उतरने वाली नहीं। जिस सभा के लिए उसने सालभर भूख-प्यास और जागरण सहा था क्या वह इस तरह धूल में मिल जायगी ? इसी सभा पर माँ का भविष्य अवलंबित था इस पर उनके महल के अस्तित्व का आधार था और अब उसका वध होने जा रहा था।

मिनट पर मिनट बीते पर अम्बालाल नहीं आया। पत्नी के साथ बात करने का मन हुआ कोठरी में पड़े-पड़े थक गया—छज्जे में झाँक झाँककर वह ऊब गया कब भोजन करेगा और कब ट्रेन पकड़ेगा ? अम्बालाल को भी क्या हो गया ? सबसे उसने सुदर्शन के साथ रहकर माँ के उद्धार करने की प्रतिज्ञा ली थी। इस उत्साही निडर अम्बालाल

के आने की आवाज सुनाई दी।

'मनी बहिन भोजन परोसो।' सुदर्शन ने आवाज दी। वह दरवाज की ओर दौड़ा।

दरवाजे में अम्बालाल को हँसते हुए पाया—पर कैसा अम्बालाल ? उसके सिर पर पट्टी बंधी थी उसका हाथ झोली में लटका हुआ था और उसके कोट पर रक्त की छींटें थीं और फिर भी उसके मुख पर और आँखों में किसी अद्‌भुत आनन्द का तेज चमक रहा था।

अम्बालाल ! यह क्या ? घबराकर सुदर्शन ने पूछा।

कुछ नहीं सदुभाई ! यह तो मेरा प्रयोग सफल हुआ। हा हा !

गंभीर अम्बालाल को इस तरह छोटे बच्चे की तरह हँसते हुए देखकर सुदर्शन चकित रह गया। प्रयोग सफल हुआ उसका यह आनंद !

तब चलो भोजन कर लें दिन का वक्त हो गया।'

अम्बालाल हँसा। उसकी आँखों में अपरिचित तूफान चमक उठा। ट्रेन ! मैं बड़ौदा जाऊँगा।

ऐं स्तब्ध बने हुए सुदर्शन से इतना ही बोला गया।

नहीं मैं बाज आया। हँसकर अम्बालाल ने कहा मैं अब राजनीति में भाग नहीं लूँगा।'

'क्या कह रहा है अम्बालाल ! आज सवेरे—

सदुभाई ! सवेरे कलियुग था इस समय सतयुग है। इधर आओ समझाऊँ। कहकर दूसरा हाथ सुदर्शन के गले में डाल उसे बाहर ले गया। जीने की ओर देखते हुए धीरे धीरे बात करना आरम्भ किया सदुभाई ! तुम्हारा विस्मय स्वाभाविक है। देखो मैं और मिस वकील मैट्रिक से बी० ए० तक साथ-साथ थे।

हाँ।

हम साथ पढ़ते थे।

हाँ।

'साथ ही घूमते थे।

'हाँ।'

देशोद्धार के साथ ही स्वप्न रचते थे।

फिर ?

पर हम जानते नहीं थे —हँसकर अम्बालाल ने कहा।

क्या ?

कि बिना जाने ही हम प्यार कर रहे हैं। जसे सुन्दर मिस वकील हो अम्बालाल ने उसे दबाया।

'सवेरे प्रयोग सफल होने लगा। दोपहर को फिर करने गए तो परिणाम आया बहुत माथा मारा, अन्त में तार बढ़ जाने के कारण ट्यूब फट गया—और जसे आकाश से इन्द्र ने पुष्पवृष्टि की हो ऐसे आनन्द से अम्बालाल ने आगे चलाया काँच के टुकड़े टुकड़े हो गए।

अच्छा ! तिरस्कार से सुन्दर ने कहा।

और मेरे सिर और हाथ में घुस गये। लोहू-लुहान हो गया। उस क्षण पल में हमारे हृदय के द्वार खुल पड़ों का भ्रम दूर हुआ हमारी आत्माओं ने एक-दूसरे को बाहुपाश में कस लिया। सदुभाई! जीवन का जंजाल ही खत्म हो गया। उसने मुझसे विवाह करना स्वीकार कर लिया है। मुझे आशीर्वाद दो मित्र ! सुन्दर का हाथ पकड़ कर वह हँसने लगा।

सुन्दर को लगा कि यह स्वप्न तो नहीं है? उसे अम्बालाल पागल जान पड़ा—अम्बालाल जिसकी खोज से साम्राज्य उखड़ने वाला था जिसकी प्रतिभा से माँ का उद्धार होने वाला था। वह तो विमूढ़ हो गया।

सदुभाई ! उस गाड़ी में वकील बैठी है। मिलो तो सही।

अम्बालाल हँसा सदुभाई ! भारत स्वतन्त्र होने में बहुत समय लगेगा तब तक क्या इसी तरह रहा जा सकता है? मेरे जीवन में विधि ने यह पहला सुख दिया है। क्या मैं इसे खो दूँ? मुझे अब नौकरी खोजकर वकील से विवाह कर लेना चाहिए। फिर

फिर क्या सिर तेरा ! क्रोधावेश में सुदर्शन ने कहा अर्थात् तुम बड़ौदा नहीं आओगे ?

'कैसे आ सकता हूँ ? सदुभाई ! विचार तो करो वकील राह देख रहे हैं । हमें ग्रीन' में भोजन कर नाटक देखने आना है । तुम आओ, मुझसे स्टेशन पर भी नहीं आया जा सकता माफ करना । पर समझते हो न आज मेरा पुनर्जन्म हुआ है ? वहाँ क्या होता है यह मुझे लिखना नहीं तो वापस आओ तब । लेकिन सुदर्शन तो उस कक्ष का छोड़ गया था । भयंकर उग्रता से मजदूर को बुलाकर सुदर्शन कोठरी में गया ।

धनी बहिन ! उसकी आवाज में अकला थी मैं जा रहा हूँ ।

क्यों कहाँ जा रहे हो ? भाई कहाँ है ? खाना तयार है । धनी हाथ में कड़छी लेकर आगे आई ।

अम्बालाल इस समय नहीं आयगा । वह रात को आयेगा । मैं अकेला ही बड़ौदा जा रहा हूँ । मुझ नहीं खाना ।

धनी ने देखा कि कोई असाधारण बात हो गई है । वह हाथ की कड़छी रखकर पास आई ।

सदुभाई ! क्या हो गया है ? तुम एसे क्यों हो गये ? भाई क्यों नहीं चल रहे ?

मुझ कहने की बात नहीं ! सुदर्शन ने कहा ।

मुझ कहो मेरी कसम ! धनी बोली, सदुभाई ! क्या हो गया है ?

धनी बहिन ! मडल समाप्त हो गया 'माँ का उद्धार हो गया और मेरा जीवन कर्तव्य पूरा हो चुका । आँख में आये हुए आँसू पोंछते हुए सुदर्शन ने कहा ।

पर है क्या यह तो बताओ ।

केशवलाल कजदार हो गया शिवलाल श्रीनाथ जी चला गया पाठक ने नौकरी कर ली अम्बालाल मिस वकील के साथ विवाह निश्चित कर कल से नौकरी ढूँढना आरम्भ कर देगा ।' उसने आक्रन्द करते हुए कहा ।

क्या कह रहे हो ? धनी चकित हो कर बोली।

यह तो मैं तुमको अपना समझ कर कहता हूँ और अब मैं अकेला माँ का उद्धार किस प्रकार करूँगा यह पल भर के लिए मौन रहा। उसे एक कपकपी सी आई। थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे और धनी ने आकर सम्पत के हाथ पर हाथ रक्खा।

अकेले क्यों हो तुम ? मैं नहीं हूँ क्या ? सुम्पत ने चौंक कर ऊपर देखा और धनी की आँसू भरी आँखों की प्रेरणा पी ली। उसने साहस से उसका हाथ दबाया।

हाँ जब तक तुम्हारी प्रेरणा है तब तक मैं पीछे कदम रखने वाला नहीं। मैं आऊँगा, विजयी होकर। सुम्पत में दृढ़ता का संचार हुआ। उसकी आँखें तेजस्वी बनीं।

'और तब तक मैं प्रतीक्षा में बैठी रहूंगी—आवश्यकता हुई तो जीवन भर—

सुम्पत ने धनी के सारे मुख पर दबी सौन्दर्य का तेज चमकता हुआ देखा—और मजदूर के साथ वह स्टेशन चला गया।

(४)

नारायण भाई पटेल सूरत कॉलेज के बाद घर में रहने वाला था। सूरत कॉलेज का सारा वर्ग उस अकेले का ही था यह बात तो उसे दीपक जमी जागते-सोते स्वप्न लगा करती थी इसलिए उसके आत्म और आत्म-श्लाघा का पार न था। यह स्वयं उसके मित्र और इसके ग्रामीण भाई मिल कर अंग्रेजों को बाहर निकाल दें यह तो उसको खेल सा लगने लगा।

कॉलेज के बाद वह पूना गया तो सही परन्तु उसका पढ़ने का इरादा नहीं था। गणित में तो उसको सोचना था नहीं और जब उसे यह मालूम हो गया था कि नेपोलियन भी गणित में भूल कर बैठा था तब से वह अपने को उससे एक दर्जा आगे समझने लगा क्योंकि वह कभी भूल करता ही न था।

पूना में तिलक के अनुयायियों में घूमना देश को आज़ाद करने की बातें करना मीटिंगों में जाना आवश्यकता पड़ने पर भाषण देना— यह तो उसका प्रतिदिन का कार्यक्रम हो गया था धीरे-धीरे उसे अपने प्रौढ़ व्यक्तित्व का विचार आने लगा। जहाँ जाता वहाँ हो लोग हंसकर स्वागत करते मित्र उसके साथ हम ।। ही रहते। बहुत स ता उसकी गदन से लिपट जाते। कितने ही उसको जीमने के लिए बुलाते और दाँता नेपोलियन इत्यादि की बातों का डरा घुमा कर बोलने की भान्त से मुग्ध हो जाते थे। उसे ऐसा लगा कि विप्लव शुरू होने से पहले कोई एक आवश्यक और प्रेरक व्यक्ति देश म उत्पन्न होता है—ऐसा वह स्वय था। वह मीराबो बनेगा या नेपोलियन सिफ यही प्रश्न अब विचाराधीन था मीराबो की तरह उसकी आवाज स्तब्ध और सवव्यापी कार्यशीलता थी —वसा ही नेपोलियन जसा गणित का शोक दूरदर्शिता और सम्राट सुलभ स्वभाव था—लेकिन यह बात होकर रहेगी ऐसा समझ लेने पर—इस विषय में अधिक समय बरबाद नहीं करेगा।

३१ वीं जनवरी को उसके मंडल का समारभ —अर्थात् लगभग बास्टील लेने का सा महाप्रसग था। उस दिन से उसके विजयी कारनामों का प्रारम्भ हुआ। या तो वह गुप्त मडल का प्रमुख बन कर चारों दिशाओं में कहर ला देगा या समाप्त ग्रामीणों को साथ लेकर खुल्लम-खुल्ला अन्यायी का गढ़ जलाकर भस्म कर देगा।

२६ वीं को दोपहर को वह बम्बई आने के लिए रेलगाड़ी म बठा। आने वाले महाप्रसग की महत्ता म वह प्रफुल्ल था। उसन खिड़की में म गदन निकाली आँखें फाड कर देखता रहा। गाड़ी चलने का वक्त हुआ और नामदार जगमोहनलाल आकर फर्स्ट क्लास में बठे।

नारायण भाई ने पहले तो इस नरम दल वाले के सामने तिरस्कार देखा पर गाड़ी चलने पर वह उसके प्रति नरम हो गया। आदमी बुरा नहीं है। सदुभाई की जाति का है और ससुर मीन भी हो जाय हो जाय क्यों—है ही। इसकी लड़की और दौलत सदुभाई की माप

राष्ट्रीय उद्धार के लिए ही तो आखिर आने वाली है। यह धनवान चतुर और प्रतिष्ठित है। यदि यह हो तो मंडल को कितना लाभ पहुँचे ? पर ऐसे घमंडी मनुष्य को कहना किस काम का।

खड़की स्टेशन आया और नारायण भाई उतर कर फस्ट क्लास की ओर आया। पूरी कार में अकेले नामदार जगमोहनलाल उपन्यास पढ़ रहे थे। नारायण भाई का मन उनकी ओर आकर्षित हुआ। इतना अच्छा आदमी नरम दल में। पर इनके पास जाने का उसे मन न हुआ। वह फिर अपने डब्बे में चढ़ गया।

नारायण भाई को अपने व्यक्तित्व में और अपनी शक्ति में श्रद्धा थी। उसने सूरत कांग्रेस भंग की तो क्या वह एक जगमोहनलाल को नहीं तोड़ सकता ? जो आने वाले विप्लव का मध्यस्थ नेता होने के लिए पैदा हुआ था क्या यह नरमपन्थी को नहीं समझा सकता ? हूँ इसको तोड़ना तो सहज बात है। नारायणभाई ने मन में कहा।

नारायणभाई का स्वभाव इस समय जरा मिजाजी हो गया था। साधारण रूप से नारायणभाई और उसके हृदय के बीच ऐसा भाई चारा था कि कभी वे दोनों एक दूसरे के सामने मिजाज नहीं दिखाते थे। ऐसे परम मित्रों के बीच इस समय तकरार हुई।

नारायणभाई ! उसके हृदय ने जरा तिरस्कार से कहा तुम गलत समझे हो गलत ! तुम्हारा नामदार से परिचय करने—उसकी खुशामद करने का मन हुआ है

हृदय ! गुस्से में आकर आकाश के सामने आँखें फाड़ कर नारायणभाई बोला तू भी अपनी मनचाही कहता है—पर मैं सहन करने का नहीं। मैं निःस्वार्थी हूँ देश भक्त हूँ, विप्लववादी हूँ। मैंने कांग्रेस भंग की मैंने फिरोजशाही का जूता मारा। मैं खुशामद करूँ ? यह कैसे हो सकता है ?

फिर नामदार के प्रति इतना आकर्षण क्यों है ? हृदय ने खीज कर पूछा।

हाँ, सवाल ठीक है। समाधान वृत्ति से मिठास से नारायण भाई ने फिर सँभालना प्रारम्भ किया मैं केवल सामान्य मनुष्य नहीं हूँ देश का नेता हूँ। भारत में विप्लव करना मेरा फर्ज है। देश के सब तत्वों को हाथ में रखना मेरा कर्तव्य है। नामदार एक तत्व है। इस लिये उसको साथ रखना मेरा कर्तव्य है समझा? क्यू० ई० डी० जरा मुस्कराते हुये नारायणभाई ने कहा।

कुआड इरट डोमासट्रडम्म (जो सिद्ध करना था सिद्ध कर चुके।)

तब फस्ट क्लास में क्या नहीं गये? यों कहो कि प्रतिष्ठा प्रभाव से प्रभावित हो गये नहीं तो खिड़की पर से क्यों लौट आते? चिढ़ से मन ने पूछा।

तू क्या समझे? झ झलाकर नारायणभाई ने कहा मैं किसी से डरता थोड़े ही हूँ जो ऐसे निर्जीव नामदार से डरूँ?

'जानता हूँ। हृदय ने कठोरता से कहा यह तो मुँह ही बकता रहा है न? तू एक देहाती है और वह है जबरदस्त धारासास्त्री। तीन मिनट मे तुझे पराजित कर देगा।

अरे घतरडे! तू तो बिना समझ ही बोले जा रहा है। पराजित कर इसको और इसके बाप को नारायणभाई ने गौव से जवाब दिया मुझे क्या पराजित करेगा? ऐसे तो जाने कितनों को मात दे दी है।

'तब उठ देखता हूँ— इस प्रकार बड़ी देर तक नारायणभाई और उसके मन के बीच सघर्ष होता रहा।

सुस्त भूखा थका और निस्तेज कर्नीरोड आ पहुँचा। उसके मन में निराशा बसी हुई थी। उसमें बड़ोदा जाने का हौसला न रहा था। एकमात्र उसे असफलता हासिल की हो ऐसा शुष्क वक्तव्य उसे लिए भाग आ रहा था।

वह स्टेशन पर आया कि थोड़ी देर बाद नारायणभाई घर

माया। उसके एक हाथ में डण्डा था और दूसरे में पोटली उसका मुख भव्य गास्य से खिला हुआ था और उसकी आंखें दो अंगारों की तरह चमक रही थीं। उसकी टोपी खिसकती खिसकती बिल्कुल सिर के पिछले पर आ गई थी।

क्या मेरे सद्भाई ? आ गया क्या ? सुदर्शन को देख कर वह उसकी ओर आया 'दोस्त ! हमारी जात है। उसने नीचे झुककर कान में कहा।

सुदर्शन अपनी निराशा की वेदना से अस्वस्थ था। उसे मौज में आए हुए इस नारायणभाई के मुंह पर एक तमाचा मारने का मन हुआ। पर नारायणभाई का दम्भ और उसका उल्लास—इन दोनों का उस पर असर पड़ा। वह हंसा।

सुदर्शन और अधिक न सह सका। उसके क्रोध का पार नहीं रहा। उठ कर हंसते हुए मोटे नारायणभाई की गर्दन मरोड़ डालने की उसे तीव्र इच्छा हुई पर वह ओठ दबा कर मौन रहा।

मेरे विषय में क्या सोचा ! आत्म-सतोष के अन्दाज से नारायण भाई ने पूछा।

मैंने सोचा होंठ चबाते हुए धीरे धीरे सुदर्शन ने अपने क्रोध का जहर निकाला कि तुम सिर से पैर तक बिल्कुल कुम्हार के गधे हो !

मतलब ? नारायणभाई ने चौंक कर कहा।

मतलब क्या बच्चे खासे गये ! सुदर्शन बोला, 'नामदार जग-मोहनलाल जैसे पक्के उस्ताद को अपनी सब योजनायें बता आये। अब हम सबकी आफत आ गई। कल सब पकड़े जायेंगे इसका भी होश है ? जरा तो अकल रखनी थी।'

'तुम मूर्ख हो मैं नहीं। तब से नारायण ने कहा 'तुम्हारी मेरी दोस्ती आज से खत्म। आज से मैं तुम्हारे मण्डल में नहीं। मैं अकेला ही देश का उद्धार करूंगा। देखना छः महीने में ही मैं तुम्हें नीचा दिखाता हूं या नहीं। कहकर उसने आकाश की ओर ताका 'आप

कितने ईर्ष्यालु हैं—दखते ही आग लग जाती है।

इतने मे स्टेशन आया। नारायणभाई की आँखें भरी हुई थीं। क्रोध में उनके नथुने धमनी की तरह बोल रहे थे। उसने दरवाजा खोला गठरी उठायी ईर्ष्यालु आदमी का मुह नहीं देखना चाहता, वह बड़बड़ाया।

नारायणभाई उस डिब्बे को छोड़कर दूसरा खोजने निकला। सुदर्शन को तिरस्कार से देखता रहा।

ट्रेन चलने पर सुदर्शन खिलखिलाकर हँसा—आत्म तिरस्कार स, भग्न हृदय की व्यथा से।

जसी उसके मित्रों की दशा थी वसी ही उसे अपने नेताओं का भी लगी।

इन अकल्प्य शंकाओं म विचरण करते-करते वह व्याकुल हो उठा। उसने अपना सिर पीट लिया। उसका पुण्य समाप्त हो गया। रो रोकर उसकी आँखें लाल होने लगीं और थकन तथा जागरण के प्रभाव से उसे नशा-सा चढ़ने लगा।

एकाएक वह जाग पड़ा। 'धनो बहिन की आवाज! यहाँ क से?' उसने घबराकर चारों ओर देखा। पास वाले महिलाओं के डिब्बे में से वैसीकी आवाज आ रही थी। उसे भ्रम हुआ।

अन्तिम बार चलते समय धनी बहिन न कसे साहस से उसमें अपनी श्रद्धा प्रदर्शित की थी! इस श्रद्धा का पात्र था वह? उसके मस्तिष्क म भावनात्मक वातावरण छा गया। अधखुली आंखो स उसने धनी का रोता हुआ मुख देखा वह निस्तब्ध हो गया।

स्वप्न मिट गया। अन्धकार ही अन्धकार था और समय के साथ व मन्द गये।

कसे रत्न थे! वे उसके थे? नहीं! माँ की प्रेरणा से मेरी कलम ने लिखे थे उसकी आँखों में आँसू आ गये इन रत्नों का नाश!

केरदास—गर्विस्ट धनाढ्य उत्साही बुद्धिमान मण्न्त के लिए
सा इकट्ठा करता हुआ भिखारी और मानहीन हुआ।
नारायणभाई—योग्य गणित शास्त्री एम ए की परीक्षा और
काम काज छोड़कर अवारा हो गया।
गिरजाशुक्ल—परीक्षा और अपने भविष्य को भुलाकर प्रतिमा की
बलि दे रहा था।
और स्वय उसने वय गँवाये पिता का प्रेम गवाया आकर्षक वधू
और उज्ज्वल भविष्य को छोड़कर इस समय इस पीड़ा का अनुभव कर
रहा था।

क्या करे?

माँ! माँ मुझे जवाब दे मेरी श्रद्धेय माँ। जननी भारती! एक
बार दर्शन दे मुझ बता मैं क्या करूँ? तू मुझ मिलती और मैं प्रतिदिन
होता। तू आज्ञा करती और मैं पालन करता। तू हँसती और
मैं प्रफुल्ल होता! माँ माँ! तेरा प्राण लौटा लाने का वचन मैं भूला
नहीं। मैं निकम्मा निकला भागक निकला पर मैंने यथाशक्ति उपाय
किया। माँ उसकी आँखों से लगातार आँसू वह रहे थे माँ! एक
बार तो दर्शन दे? मुझ एक बार तो स्वप्न दे। मुझ सूझता नहीं मैं
अधकार म हूँ। तेरे बिना अन्धा हूँ। मुझे बिल्कुल छोड़ दिया! अबा!
जननी एक पल के लिए मुझ दर्शन देकर बचा। माँ! माँ! वह सिसक
सिसककर रोने लगा। चारों ओर उसकी अश्रुमिश्रित आँखें माँ को खोज
रही थीं।

सूर्य का ताप बढ़ने लगा। एक ओर गुबज था। सामने इदबन्नी क
उस पार स्टेशन के पास पेड़ दिखाई दे रहे थे थोड़ी देर वह चुपचाप
रोता रहा।

माँ! मैं बिल्कुल नालायक हूँ। हाँ हूँ ही तो। केरदास ने द्रव्य
की भेंट चढ़ायी राजम ने प्रतिमा की उपहार दिया मैंने कुछ किया ही
नहीं? माँ तुझ सर्वस्व चाहिए? तो ले अम्बा भवानी!

क्षण भर उसने अपनी योजना को माता की-सी प्राणवेधक ममता से निहारा। उसके हृदय के बंध टूट रहे थे। दाँत भींचकर उसने दियासलाई जलाई और योजना के पन्ने-पन्ने में आग लगा दी।

जलते हुए पन्ने सलवटदार राख बनकर बिखरने लगे। जलते जलते जब उँगली के पास आग आ गई तो उसने राख फेंक दी।

हो गया समाप्त हो गया। उसने क्रूरता से हँसकर कहा।

उसकी आत्मा शरीर से ऊब गई थी। उसे अब माँ की गोद में जाकर विश्राम लेना था। उसने अन्तिम बार माँ के दर्शनों का प्रयत्न चारों ओर देखते हुए किया। निश्चेतन धूप चारों ओर प्रकाश फैला रही थी।

अन्तिम

उपसंहार

(१)

१६ मार्च सन् १९११ के दिन स्वर्गीय नामदार जगमोहनलाल के घर में आनन्द छाया हो ऐसा दिखाई दे रहा था।

गंगास्वरूप जमना काकी उर्फ गोरी पल्थी मारे बैठी हुई थीं। पास में हुष में डूबी जमना भाभी मुस्करा रही थीं। नावपुरा के दीवान साहब खुशी से इधर उधर फिर रहे थे। ऊँची तथा पतली-दुबली सुलोचना चाय बना रही थी। उसकी भवों और पलकों में मोहकता थी पर उसके मुख पर गंभीर छाया हुआ था। कभी-कभी वह जरा हंस देती। उसके पास कुर्सी पर एक छोटी सी धोती घुटा हुआ सिर कुरूप मुख और मोटे चश्मे से विभूषित एक छोटी सी बेडौल मूर्ति विराजमान थी। प्रोफेसर कपाडिया मुस्कराते हाथ घिसते हुए सूंघनी सूंघ रहे थे और चाय में शक्कर डालती हुई सुलोचना के हाथ पर नजर जमाये बैठे थे।

एक उदास दुबला-पतला युवक मुंह कठोरता से बन्द किये हुए, पर पर पर रक्खे सामने कुर्सी पर बैठा था। उसकी वेष भूषा पर से वह विलायत से अभी आया हो ऐसा मालूम होता था। उसके मुख से प्रतीत होता था कि चारों ओर व्याप्त आनन्द ने उसे स्पर्श किया नहीं है।

वह सुदर्शन था। उसने सवेरे ही स्टीमर पर से उतरकर अपनी जन्मभूमि पर पर रक्खा था।

'मैंने नहीं कहा था। रायबहादुर ने जमना भाभी से हँसते हँसते कहा 'तेरा बेटा बाप से भी सवाया होगा?

'तुम्हारा कहना कभी झूठ होता है।' जमना मामी ने कहा। वृद्ध पति-पत्नी के उत्साह का अनुभव करने लगा।

सबने चाय पी। हँसे बोले बातें की और फिर अपने अपने काम में लग गये।

सुदर्शन भी उठा। बिना कपड़े बदले ही बाहर चल दिया।

स्टीमर पर से उतरने के बाद वह उतने ही शब्द बोला था जितने शिष्टाचारवश उसे बोलने पड़े। हँसना तो वह भूल ही गया था।

तीन वर्ष में उसने बाप के अतिरिक्त किसी के साथ पत्र व्यवहार नहीं किया था। एक बार उसने धनी को पत्र लिखा था वह डेड लेटर आफिस में वापिस आ गया था।

(२)

सवेरे उसने एक काम किया। अपना पापी मन कोई स्वयं ही दूर से खुरच रहा हो इस प्रकार उसने अपने मित्रों का विवरण प्राप्त करने की कोशिश की। टेलीफोन की किताब में से केरवास्प का उसे तुरन्त पता मिला। वह छोटी सी कोठरी में टेलीफोन लगाकर सट्टा कर रहा था। पेट भर कमा ले यही उसका परम ध्येय था। उसने बहुत से लोगों का हाल बताया।

पाठक ने मद्रास छोड़कर इंदौर में अध्यापक का काम स्वीकार कर लिया था।

मगन पढ़ता अमरिका में अभी अध्ययन कर रहा था। भारत से नई-नई चीज मंगा कर वहाँ के प्रोफेसर को भेंट देने की प्रवृत्ति सिवा कोई दूसरी प्रवृत्ति उसकी न थी।

धीरू शास्त्री आर्यसमाज से असंतुष्ट होकर गुजरात में किसी स्थान पर पाठशाला की स्थापना करने का प्रयास कर रहा था अभी भी सरकार से स्वतन्त्र शिक्षा देने की आशा रखे हुए था।

सत्कुमार भारी धार्मिक विश्वास का तिरस्कार कर आबू पर किसी महात्मा की शरण में योग साधना कर कालभैरव की सिद्धि कर

रहा था।

नारायणभाई पटेल अपने बाप दादा की खेती करने में उलझ
हुआ था।

मोहन पारेख भभूत रमाये गाँव-गाँव फिरता और जहाँ क ए का
अभाव हो वहाँ लोगों को कुआँ बनवाने की प्रेरणा करता था।

गिरजाशंकर शुक्ल साल भर बड़ौदा में पागलों के अस्पताल में रह
कर एक दिन भाग गया। अब उसका पता न था।

शिवनाथ सराफ बम्बई में मौज करता था।

अम्बाप्रसाद एक मारवाड़ी के यहाँ मनेजर बन गया। उसकी स्त्री
मिस वकील घर का काम करती और बच्चों का पालन पोषण करती
थी।

ट्रीं—ट्री—ट्रा—केरशास्त्र का टेलीफोन अधीर हो गया।

(३)

वह सुलोचना के घर गया और भोजन किया।

वह और मधुभाई अकेले मिलें ऐसा षड्यन्त्र बड़े-बूढ़ों ने दो बार
रचा था—पर या तो सुमन या सुलोचना के उठ जाने से वह सफल
नहीं हुआ था। आखिर सुमन बहुत ऊब गया था। मृत्यु आने से पहले
ही उसके सामने जाना बुरा है।

भोजन करने के बाद सब बड़े-बूढ़े तो इधर उधर चले गये वह
बैठा रहा। सुलोचना उठकर जाने लगी।

सुलोचना! उसने शांति से कहा।

क्या? सुलोचना मुड़ी।

जरा बैठो न।

क्यों?

जब तक हम अकल नहीं कर लेंगे तब तक ये सब भाग दौड़ करते
ही रहेंगे।

सुलोचना भी शांति से नीच दृष्टि किए खड़ी रही फिर तुरन्त ही

ऊपर देखकर बोली क्या कहना है ।

मेरे साथ विवाह करना है ?' वसे ही तिरस्कार से सुदर्शन ने कहा ।

'तुम क्या सोचते हो ? शान्ति से सुलोचना ने पूछा ।

'देखो' सुदर्शन ने अत्यन्त कटुता से कहना प्रारम्भ किया और उँगली के पोरुओं पर गिनने लगा, कन्या विवाह योग्य है सुन्दर है, पढ़ी लिखी है । वर भी विवाह योग्य है कुरूप नहीं है, पढ़ा लिखा— भगवान करे हाईकोर्ट का जज भी हो सकता है ।

'अब तुम कहो । समाज ने बहुत आवश्यक लग्न ठहराया है । पशु शास्त्र के अनुसार अब तुम्हारे पसन्द करने का अधिकार रह गया है ।

सट्टू ! जरा क्रोध से सुलोचना ने कहा ।

नाराज मत हो । मैं तुम्हारा अपमान नहीं करता पर एक समय था जब मैं सपनों में ही जीवित रहता था । आज सपने देख नहीं सकता । मुझ जो ठीक बात लगती है वह तुम्हारे आगे रख देता हूँ । समाज को खुश करने के लिए विवाह करना है । यह सवाल माता पिता के लिए था उसका तो निराकरण हो गया । मैं कहता हूँ कि पशु शास्त्र के अनुसार तुम्हारा निर्णय करना बाकी रह गया है । सुबह स्लेशन की अन्तिम समस्या है उसने कटुता से कहा ।

इसके सिवा तुम्हारी कोई दूसरी समस्या नहीं ? सुलोचना ने नम्रता से कहा ।

'एक समय था जब मैं पुरुष को चाहती थी । वह कुलम्न पशु निकला, आज तुम भी पशु हो तुम खुद स्वीकार कर रहे हो । दो पशुओं के सिवा मुझे किसी दूसरे को पसन्द करने का समय नहीं मिला ।

'तब इन्कार कर रही ?'

मैं 'हाँ' कह दूँ तो तुम क्या कराग ? सुलोचना ने पूछा ।

'मैं हाँ करने से पहले विचार करूंगा । धीरे से सुदर्शन ने कहा ।

तब अभी कर लो न ! मैं उससे पहले विचार करने का कष्ट क्यों

उठाऊँ ?" सुलोचना ने उपमा से कहा।

विचार करने के लिए साधन नहीं। कठोरता कुछ कम हुई।

'साधन प्राप्त करो।

कब प्राप्त हो यह कहे कहा जा सकता है ?

तो तब तक हमारा कुछ बनता बिगड़ता थोड़ा ही है।

'सुलोचना ! तुम बहुत कठोर हो।'

'तुम भी तो वस ही हो लेकिन हम में स्वप्नों के अपनाने की तथा उनकी रक्षा करने की शक्ति नहीं। उसने खड़े होकर द्वार की ओर जाते हुए कहा।

अपनाने की तो है नहीं रक्षा की तो कौन जाने—सुन्दरन बड़बड़ाया।

(४)

सुन्दरन अम्बालाल के घर—परेल गया। मुंह पर कठोरता का गहरा छाप था।

थोड़ी देर में उसको एक बड़े सेठ के कम्पाउंड में एक छोटी-सी बर्णनिमा के दरवाजे पर अम्बालाल मिला। उसने द्वार पर दस्तक दी।

कहार ने आकर दरवाजा खोला।

सेठ हैं ?

बाहर गये हैं।

उनकी पत्नी हैं ?

वे भी।

कुछ देर सुन्दरन खड़ा रहा। वापस लौट जाने का विचार किया पर पर उठ नहीं। उसने गला साफ कर धीरे से पूछा अनी बहिन है?

है। चाटी ने कहा।

'जरा बुलाओ तो। कहना कि एक सेठ मिलने आया है। सुन्दरन दरवाजे के अन्दर घुसा। उसकी आवाज में जो स्वाभाविक कठोरता थी

वह जाती रही । और उसकी जगह प्रसन्नता समा गई। वह सन्न्र आकर खड़ा हो गया। ध्यान से देखने की उसमें शक्ति नहीं रही थी।

घाटी ने आकर मेज पर डिटमार का लैंप रखा। क्षणभर के लिए सुदर्शन को कोदावाड़ी की कोठरी याद आई। वहाँ दीये की ज्योति जैसी ही यह भी मोहक हो ऐसा कुछ कुछ दिखाई दिया। इस प्रकाश में एक विचित्र उल्लास का प्रोत्साहन था। तीन वर्ष की मानसिक नष्ट हो गई। स्वप्न द्रष्टा की नजर में एक लड़का और एक लड़की सौम्य-प्रतिज्ञा लेते हुए दिखाई दिये। सुदर्शन के रक्त में अपरिचित प्रफुल्लता

कौन हो भाई! किससे काम है? एक असरकारी आवाज सुनाई दी।

सुदर्शन ने ऊपर ताका।

एक लड़की—एक औरत दरवाजे में खड़ी थी।

उसके बाल बिखरे हुए थे। कमजोरी के काले दाग उसकी विशाल आँखोंके आस-पास फल गये थे। मुंह मुस्कराया हुआ निस्तेज था। वह किसी खाई हुई चीज को अभी तक याद कर रही थी और खांसी गंध उसके मुंह से आ रही थी। उसके आँचल के नीचे एक बच्चा था और गर्भवती भी दिखाई दी।

वह सुदर्शन को पहचानती हो ऐसा नहीं लगता था।

सुदर्शन ने देखा—वह उठा दियासलाई से कहूं देता कि मैं कल आऊँगा। उसने कहा।

दो लम्बे कदम रखता हुआ वह दरवाजे से बाहर निकल गया।

एक भयंकर, जालिम हँसी गूँजी और पूरा वातावरण अमानवीयता के गर्त में धँस गया।

। समाप्त ।

के० एम० मुन्शी की अन्य रचनायें

लोपमुद्रा	५ ५०
गुजरात के गौरव (प्रथम भाग)	५ ००
गुजरात के गौरव (दूसरा भाग)	५ ५०
गौरव का प्रतीक	४ ५०
मरी कमला	६ ००
पर्दे के आर पार	२ ५०
प्रतिशोध	५ ५०
अभिशाप	५ ५०

रजनी साहित्य सदन, दिल्ली

व॰ जाती रही । और उसकी जगह प्रसन्नता समा गई । वह मन्
भावर खड़ा हो गया । ध्यान से देखने की उसम शक्ति नहीं रही थी ।

पाटी ने आकर मेज पर हिटमार का लप रखा । क्षणभर के लिए सुदर्शन को कोदावाडी की कोठरी याद आई । वहाँ दीये की ज्योति जैसी ही यह भी मोहक हो ऐसा कुछ कुछ दिखाई दिया । इस प्रकाश में एक विचित्र उल्लास का प्रोत्साहन था । तीन वर्ष की आसक्ति नष्ट हो गई । स्वप्न द्रष्टा की नजर में एक लड़का और एक लड़की भीष्म प्रतिज्ञा लेते हुये दिखाई दिये । सुदर्शन के रक्त में अपरिचित प्रफुल्लता

कौन हो भाई ! किससे काम है ? एक असरकारी आवाज सुनाई दी ।

सुदर्शन ने ऊपर ताका ।

एक लड़की—एक औरत दरवाजे में खड़ी थी ।

उसके बाल बिखरे हुए थे । कमजोरी के काले दाग उसकी विशाल आँखों के आस पास फैल गये थे । मुँह मुस्कराया हुआ निस्तेज था । वह किसी खाई हुई चीज को अभी तक चबा रही थी और बासी गन्ध उसके मुँह से आ रही थी । उसके आँचल के नीचे एक बच्चा था और गर्भवती भी दिखाई दी ।

वह सुदर्शन को पहचानती हो ऐसा नहीं लगता था ।

सुदर्शन ने देखा—वह उठा दिखाई से कह देना कि मैं कल आऊँगा । उसने कहा ।

दो लम्बे कदम रखता हुआ वह दरवाजे से बाहर निकल गया ।

एक भयंकर जालिम हँसी गूँजी और पूरा वातावरण अमानवीयता गर्त में धँस गया ।

। समाप्त ।